



सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

Ministry of Information and Broadcasting
Government of India



फ़िल्म समारोह निदेशालय
Directorate of Film Festivals

67^{वें}

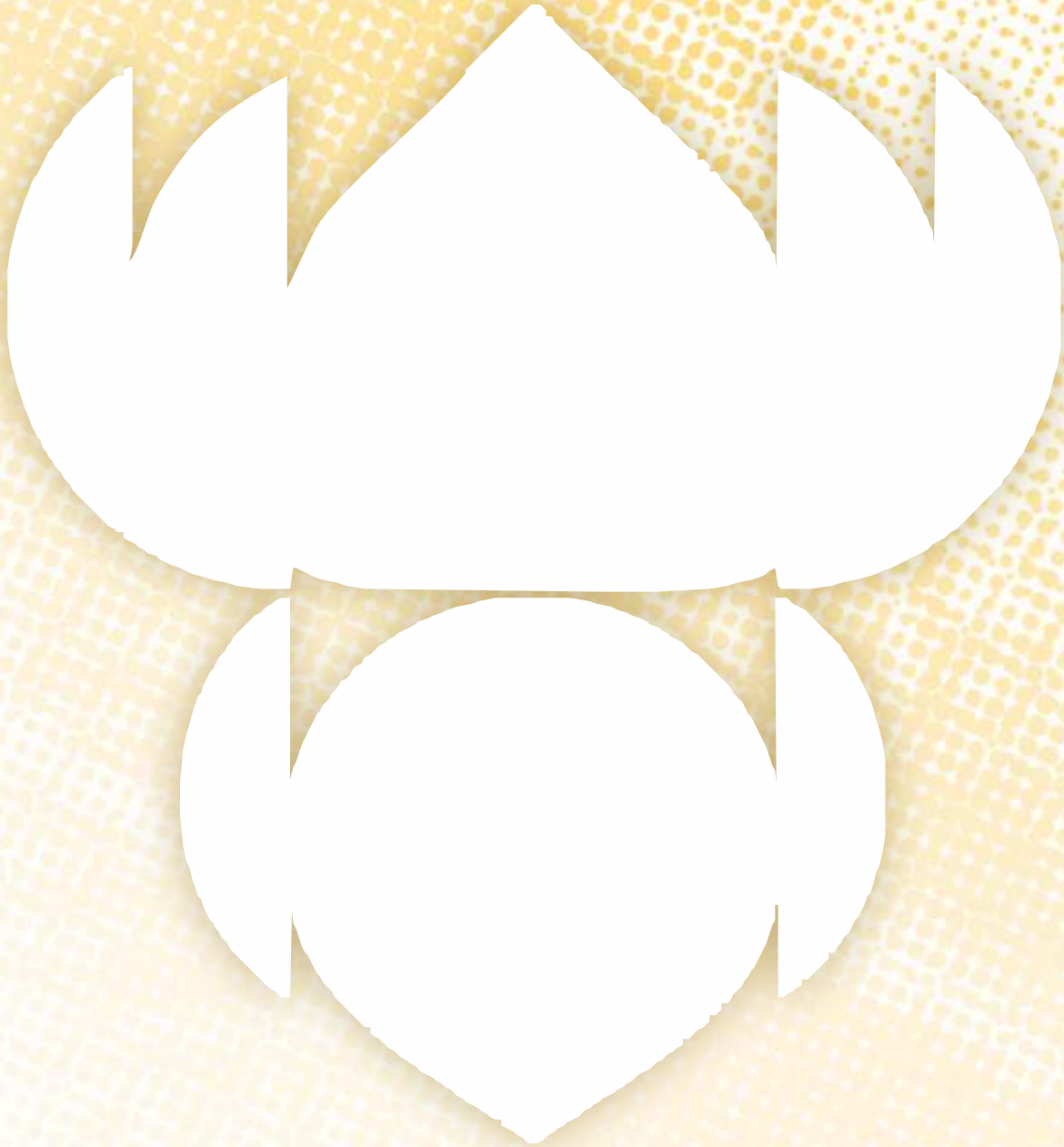
राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2019

National Film Awards 2019

आधिकारिक विवरणिका

THE OFFICIAL CATALOGUE





आधिकारिक विवरणिका

THE OFFICIAL CATALOGUE

चैतन्य प्रसाद (अपर महानिदेशक)

Chaitanya Prasad (Additional Director General)

तनु राय (उप निदेशक, एनएफए)

Tanu Rai (Deputy Director, NFA)

सम्पादक: शम्भू साहू (अंग्रेजी), पंकज रामेंदु (हिन्दी)

Editors: **Shambhu Sahu** (English), **Pankaj Ramendu** (Hindi)

सहयोग: कौशल्या मेहरा, अरविंद कुमार, कमलेश कुमार रावत

Assisted by: **Kaushalya Mehra, Arvind Kumar, Kamlesh Kumar Rawat**

संयोजन: रूद्र प्रताप सिंह, नवदीप यादव, अनीशा राठौर, कृतिका मेहता

Co-ordination: **Rudra Pratap Singh, Navdeep Yadav, Anisha Rathore, Kritika Mehta**

डिज़ाइन: इम्बोस, डिज़ाइन एण्ड प्रिंट स्टूडियो

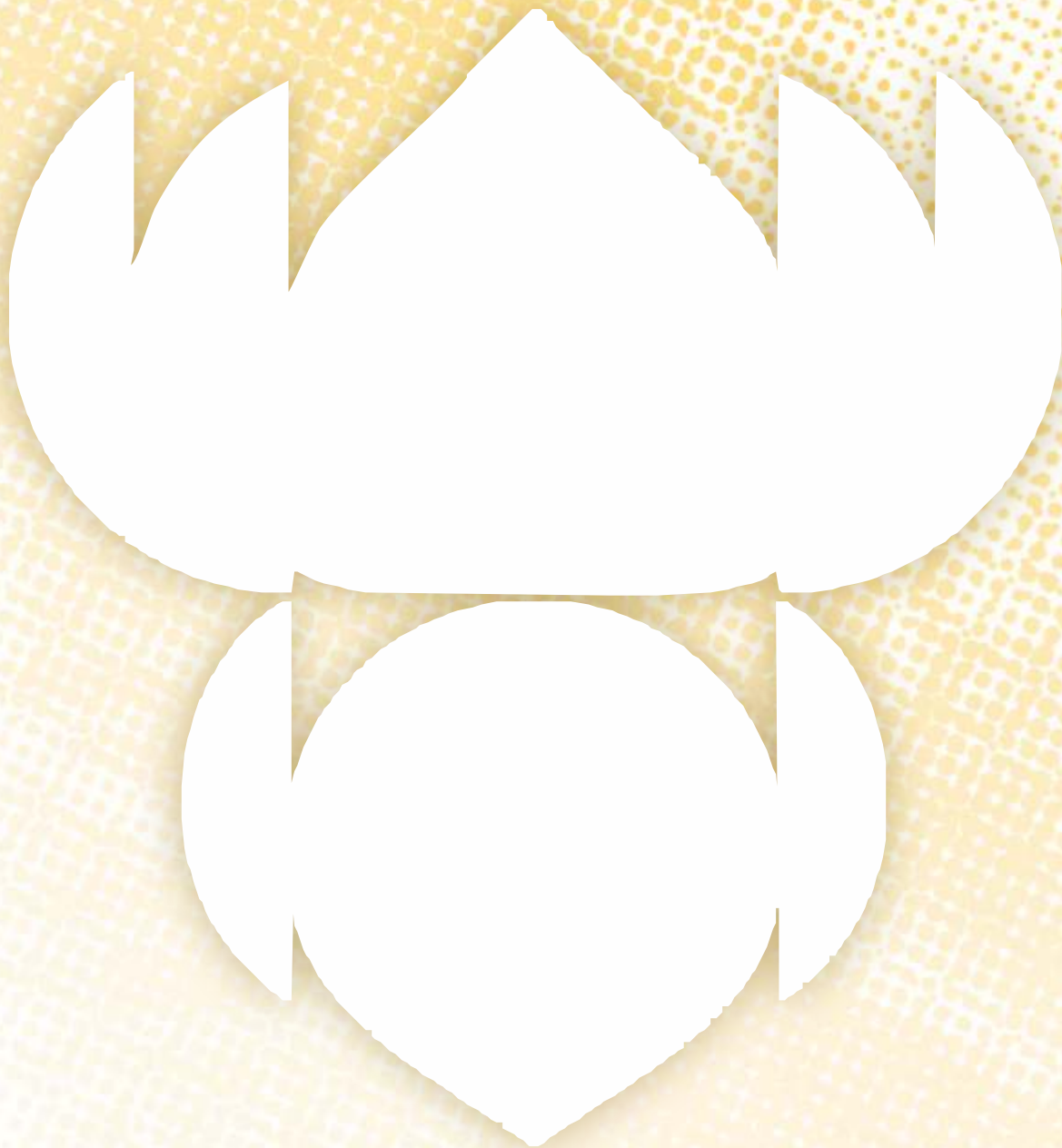
Design: **EMBOSS**, design and print studio

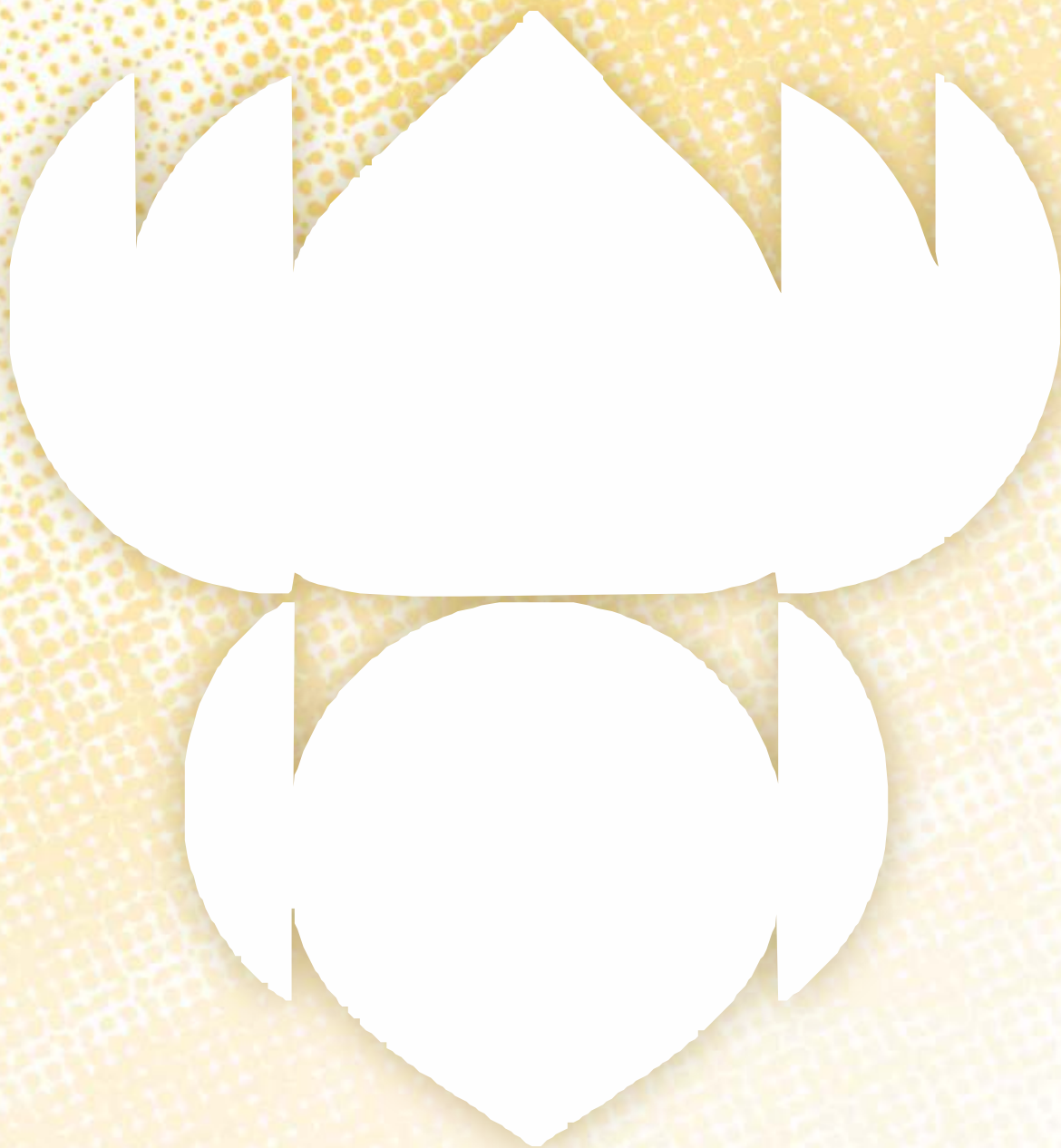
कला निर्देशक: मुकेश चंद्रा

Creative Director: **Mukesh Chandra**

प्रकाशक: वि.दृ.प्र.नि., सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

Publisher: **DAVP, Ministry of Information and Broadcasting**





विषय सूची

CONTENTS

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार

DADASAHEB PHALKE AWARD

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार के विषय में	09	About Dadasaheb Phalke Award
दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार : अब तक सम्मानित	13	Dadasaheb Phalke Award Past Recipients
पुरस्कार चयन समिति	18	Award Committee
रजनीकांत – प्रोफाइल	23	Rajinikanth - Profile
निर्णायक मंडल (फ़ीचर फ़िल्म)	26	Feature Film Jury
निर्णायक मंडल (गैर-फ़ीचर फ़िल्म)	32	Non-Feature Film Jury
निर्णायक मंडल (सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन)	36	Best Writing on Cinema Jury
प्रादेशिक निर्णायक मंडल (फ़ीचर फ़िल्म)	38	Regional Feature Film Jury
फ़िल्म अनुकूल प्रदेश निर्णायक समिति	43	Film Friendly State Jury Committee

फ़ीचर फ़िल्में

FEATURE FILMS

फ़ीचर फ़िल्में - एक नज़र में	46	Feature Films - At a Glance
सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म	48	Best Feature Film
इन्दिरा गांधी पुरस्कार: निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	50	Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	52	Award for Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म का नर्गिस दत्त पुरस्कार	54	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	56	Best Film on Social Issues
पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	58	Best Film on Environment Conservation/Preservation
सर्वश्रेष्ठ बाल फ़िल्म	60	Best Children's Film
सर्वश्रेष्ठ असमिया फ़िल्म	62	Best Assamese Film
सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फ़िल्म	64	Best Bengali Film
सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फ़िल्म	66	Best Hindi Film
सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फ़िल्म	68	Best Konkani Film
सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फ़िल्म	70	Best Kannada Film
सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़िल्म	72	Best Marathi Film
सर्वश्रेष्ठ मलयालम फ़िल्म	74	Best Malayalam Film
सर्वश्रेष्ठ मणिपुरी फ़िल्म	76	Best Manipuri Film
सर्वश्रेष्ठ उडिया फ़िल्म	78	Best Odia Film
सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फ़िल्म	82	Best Punjabi Film
सर्वश्रेष्ठ तमिल फ़िल्म	84	Best Tamil Film
सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म	86	Best Telugu Film
सर्वश्रेष्ठ छत्तीसगढ़ी फ़िल्म	88	Best Chhattisgarhi Film
सर्वश्रेष्ठ हरियाणवी फ़िल्म	90	Best Haryanvi Film
सर्वश्रेष्ठ खासी फ़िल्म	92	Best Khasi Film
सर्वश्रेष्ठ मिशिंग फ़िल्म	94	Best Mishing Film
सर्वश्रेष्ठ पनिया फ़िल्म	96	Best Paniya Film
सर्वश्रेष्ठ तुल फ़िल्म	98	Best Tulu Film

विषय सूची

CONTENTS

फीचर फ़िल्में

FEATURE FILMS

सर्वश्रेष्ठ निर्देशन	100	Best Direction
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (साझा)	101	Best Actor (Shared)
सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री (साझा)	103	Best Actress (Shared)
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता	105	Best Supporting Actor
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री	106	Best Supporting Actress
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार	107	Best Child Artist
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक	108	Best Male Playback Singer
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका	109	Best Female Playback Singer
सर्वश्रेष्ठ छायांकन	110	Best Cinematography
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौलिक)	111	Best Screenplay (Original)
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित)	112	Best Screenplay (Adapted)
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद)	113	Best Screenplay (Dialogues)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (लोकेशन साउंड)	114	Best Audiography (Location Sound)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (साउंड डिज़ाइन)	115	Best Audiography (Sound Design)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन	116	Best Audiography
सर्वश्रेष्ठ सम्पादन	117	Best Editing
सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिज़ाइन	118	Best Production Design
सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा डिज़ाईनर	119	Best Costume Designer
सर्वश्रेष्ठ रूपसज्जा कलाकार	120	Best Make-up Artist
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (गीत)	121	Best Music Direction (Lyrics)
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (पार्श्व संगीत)	122	Best Music Direction (Background Music)
सर्वश्रेष्ठ गीत	123	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	124	Special Jury Award
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफ़ैक्ट	125	Best Special Effects
सर्वश्रेष्ठ नृत्य संयोजन	126	Best Choreography
सर्वश्रेष्ठ एक्शन निर्देशन पुरस्कार	127	Best Action Direction Award (Stunt Choreography)
विशेष उल्लेख	128	Special Mention
कथासार	132	Synopsis

विषय सूची

CONTENTS

गैर फीचर फिल्में

NON-FEATURE FILMS

गैर फीचर फिल्में - एक नज़र में	142	Non-Feature Films - At a Glance
सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म	144	Best Non-Feature Film
निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फिल्म	146	Best Debut Non-Feature Film Of A Director
सर्वश्रेष्ठ नृवंशविज्ञान फिल्म	148	Best Ethnographic Film
सर्वश्रेष्ठ जीवनीक फिल्म	150	Best Biographical Film
सर्वश्रेष्ठ कला सांस्कृतिक फिल्म	152	Best Arts Cultural Film
सर्वश्रेष्ठ प्रचार फिल्म	154	Best Promotional Film
सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फिल्म	156	Best Environment Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म	158	Best Film on Social Issues
सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फिल्म	162	Best Educational Film
सर्वश्रेष्ठ अन्वेषण फिल्म	164	Best Exploration Film
सर्वश्रेष्ठ खोजपरक फिल्म	166	Best Investigative Film
सर्वश्रेष्ठ एनिमेशन फिल्म	168	Best Animation Film
सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फिल्म	170	Best Short Fiction Film
पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म	172	Best Film on Family Values
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	174	Special Jury Award
सर्वश्रेष्ठ निर्देशन	175	Best Direction
सर्वश्रेष्ठ छायांकन	176	Best Cinematography
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन	177	Best On-Location Sound Recordist
सर्वश्रेष्ठ संगीत आलेखन	178	Best Audiography
सर्वश्रेष्ठ संपादन	179	Best Editing
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन	180	Best Music Direction
सर्वश्रेष्ठ प्रकथन / वॉइस ओवर	181	Best Narration/ Voice Over
कथासार	182	Synopsis

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन

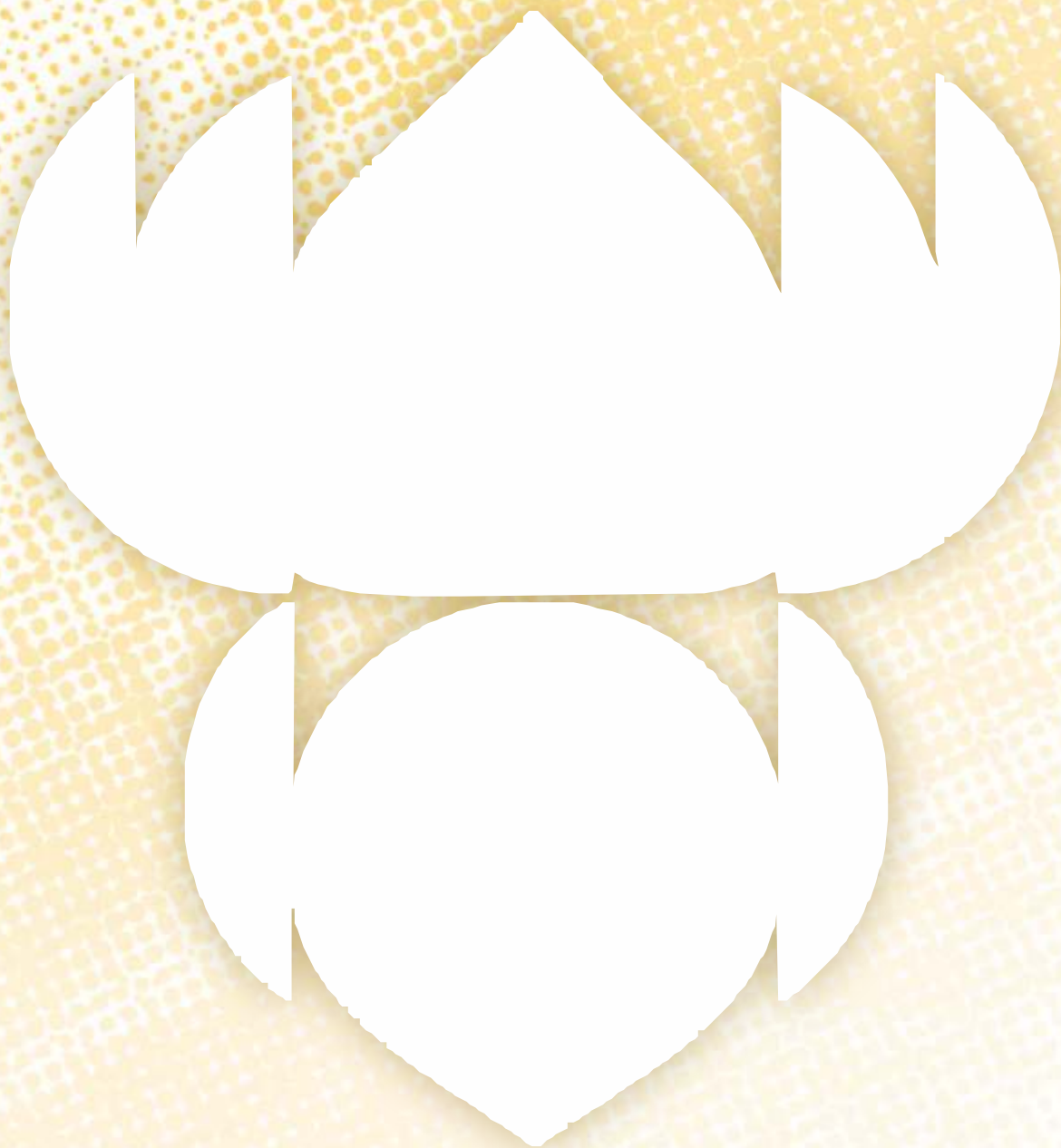
BEST WRITING ON CINEMA

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक	186	Best Book on Cinema
विशेष उल्लेख	188	Special Mention
सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक	190	Best Film Critic

फिल्म अनुकूल प्रदेश पुरस्कार

FILM FRIENDLY STATE AWARD

फिल्म अनुकूल राज्य	194	Film-Friendly State Award
सर्वश्रेष्ठ फिल्म अनुकूल राज्य		Most Film-Friendly State



67^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2019

NATIONAL FILM AWARDS 2019

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार

भारतीय सिनेमा के संवर्धन और विकास में अप्रतिम योगदान के लिए किसी एक फ़िल्मी व्यक्तित्व को दिया जाता है। इसके अंतर्गत पुरस्कार स्वरूप स्वर्ण कमल, ₹10,00,000/- प्रशस्ति पत्र तथा शॉल प्रदान किया जाता है। भारत सरकार ने वर्ष 1969 में भारतीय सिनेमा के जनक, धुंडिराज गोविन्द फ़ाल्के के सम्मान में इसे स्थापित किया था।

The Dadasaheb Phalke Award

is given to a film personality for his / her outstanding contribution to the growth and development of Indian Cinema. The Award comprises a Swarna Kamal, a cash Prize of ₹10,00,000/- (Rupees Ten Lakh) and a shawl. The award was instituted in 1969 by the government in honour of the father of Indian cinema, Dhundiraj Govind Phalke.



दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार DADASAHEB PHALKE AWARD

भारतीय सिनेमा के जनक धुंडिराज गोविंद फाल्के या दादासाहेब फाल्के (1870–1944) ने 1913 में भारत की पहली फीचर फिल्म *राजा हरिश्चंद्र* के द्वारा एक विलक्षण नवोन्मेषी फिल्मी जीवन की शुरुआत की। निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक के रूप में उन्होंने अपनी कंपनी हिंदुस्तान फिल्मस के द्वारा सिर्फ 15 सालों में 95 फीचर फिल्मों और 26 लघु फिल्मों का निर्माण किया। उनकी महत्वपूर्ण फिल्मों में *मोहिनी भस्मासुर* (1913), *सत्यवान सावित्री* (1914), *लंका दहन* (1917), *श्री कृष्ण जन्म* (1918) और *कालिया मर्दन* (1919) शामिल हैं।

तेजी से बदलता कैरियर, हठी स्वभाव और विदेश यात्राएं, 20वीं सदी के उषाकाल में एक पारिवारिक व्यक्ति के बजाए उन्हें 21वीं सदी के किशोर के ज्यादा नजदीक ले आते हैं। मुद्रण व्यवसाय में प्रवेश करने से पहले उन्होंने फोटोग्राफी स्टूडियो से अपना कार्य शुरू किया। फिर कला की शिक्षा प्राप्त की और वे एक ज़ादूगर और मंच कलाकार भी बने। चित्रकार राजा रवि वर्मा से प्रेरित होकर उन्होंने लीथोग्राफी और ओलियोग्राफी में दक्षता हासिल की। बाद में उन्होंने अपना प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया। आधुनिकतम प्रौद्योगिकी और मशीनरी के बारे में सीखने के लिए उन्होंने जर्मनी की यात्रा भी की। हालांकि अपने भागीदार के साथ विवाद होने पर उन्होंने मुद्रण व्यवसाय छोड़ दिया। एक मूक फिल्म *दि लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट* से गहरे रूप में प्रभावित होने पर उन्होंने फिल्म बनाने का निर्णय

लिया। उन्होंने लंदन से एक कैमरा, प्रिंटिंग मशीन, परफ़ोरेटर और कच्चा माल खरीदा। उन्होंने वहीं पर फिल्म बनाने का क्रैश कोर्स भी किया। इसके बाद उन्होंने भारत की पहली फीचर फिल्म *राजा हरिश्चंद्र* बनायी। इस फिल्म को 1913 में बंबई के कोरोनेशन सिनेमा में प्रदर्शित किया गया और उसे अपार सफलता मिली। प्रथम विश्वयुद्ध के कारण भयंकर वित्तीय और कच्चे माल का संकट पैदा हो गया था, फिर भी उनका हौसला पस्त नहीं हुआ। उन्होंने लघु, वृत्तचित्र, शिक्षाप्रद, ऐनिमेशन और हास्य फिल्में बनायीं। जल्दी ही उन्होंने पाँच व्यावसायिकों की भागीदारी में एक फिल्म कंपनी हिंदुस्तान फिल्मस की स्थापना की, जिसमें एक स्टूडियो था और प्रशिक्षित टेक्नीशियन और अभिनेता भी थे। एक बार फिर वे अपने भागीदारों के साथ संकट में फंस गये और उन्होंने कंपनी छोड़ दी।

फाल्के ने कुछ और फिल्मों का निर्देशन किया लेकिन वे अब अवरोध महसूस करने लगे थे। 1931 के बाद उनकी मूक फिल्में सवाक फिल्मों के साथ प्रतिद्वंद्विता नहीं कर पा रही थीं। उनकी अंतिम फिल्मों में *सेतु बंधन* (1932) और सवाक फिल्म *गंगावतरण* (1937) थीं। 1944 में उनका देहावसान हो गया। दादा साहब फाल्के ने फिल्मों की एक महान परंपरा का सूत्रपात किया। उन्होंने कई विपत्तियों और निजी त्रासदियों को झेला और ऐसे भारतीय फिल्म उद्योग की बुनियाद रखी जो आज विश्व में सर्वाधिक सफल और वैविध्यपूर्ण फिल्म उद्योग है।



दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार DADASAHEB PHALKE AWARD



Dhundiraj Govind Phalke or Dadasaheb Phalke (1870-1944) is regarded as the father of Indian cinema. He directed India's first feature film, *Raja Harishchandra*, in 1913, flagging off a remarkably inventive career. A producer, director and screenwriter, he is believed to have made 95 feature films and 26 short films - a significant number - that his company Hindustan Films made in barely 15 years. His amazing body of films include *Mohini Bhasmasur* (1913), *Satyavan Savitri* (1914), *Lanka Dahan* (1917), *Shri Krishna Janma* (1918) and *Kaliya Mardan* (1919).

His rapid career switches, headstrong nature and trips abroad, more closely characterise a teenager in the 21st century, than a family man at the dawn of the 20th century. Starting out in a photography studio, he studied art, was a magician and stage performer, before joining the printing business. Inspired by the painter Raja Ravi Varma, Phalke specialised in lithographs and oleographs. Later, he started his own printing press, and even travelled to Germany to learn more about the latest technology and machinery. However, following a dispute with his partners, he quit the printing business. Greatly impressed by a silent film, *The Life of Christ*, he decided to make a film. He sailed London and bought a camera, printing machine,

perforator and raw stock, and even got a crash course in film making. He soon made *Raja Harishchandra*, on a righteous king who sacrifices his family and kingdom to fulfil a vow and uphold the truth. India's first feature film *Raja Harishchandra* was exhibited at Bombay's Coronation Cinema in 1913, and was a grand success. Undeterred when World War I brought a severe financial and raw stock crunch, he made shorts, documentary features, educational, animation and comic films. Soon he established a film company, Hindustan Films, in partnership with five businessmen, with a studio, and trained technicians and actors. Again he ran into trouble with his partners and quit.

Phalke directed a few more films, but felt constrained. More-over, his silent films were unable to cope with competition from the talkies after 1931. Among his last films were *Setu Bandhan* (1932) and a talkie, *Gangavataran* (1937). He died in 1944. Dadasaheb Phalke leaves behind a pioneer's legacy, not only of his astonishing films, but a joyous inventiveness, and a resilient, unbowed spirit that weathered many reverses and personal tragedies. Little did he know then that he was laying the foundation for the Indian film industry, today the most prolific and diverse in the world.

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता

DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS



01

देविका रानी रोरिच
Devika Rani Roerich
■ 1969 ■



02

बी.एन. सरकार
B.N. Sircar
■ 1970 ■



03

पृथ्वीराज कपूर
Prithviraj Kapoor
■ 1971 ■



04

पंकज मल्लिक
Pankaj Mullick
■ 1972 ■



05

सुलोचना (रूबी मेयर्स)
Sulochana (Ruby Myers)
■ 1973 ■



06

बी.एन. रेड्डी
B.N. Reddy
■ 1974 ■



07

धीरेन गांगुली
Dhiren Ganguly
■ 1975 ■



08

कानन देवी
Kanan Devi
■ 1976 ■



09

नितिन बोस
Nitin Bose
■ 1977 ■



10

आर.सी. बोराल
R.C. Boral
■ 1978 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS



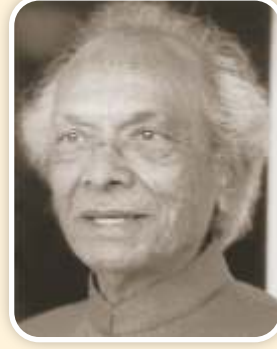
11

सोहराब मोदी
Sohrab Modi
■ 1979 ■



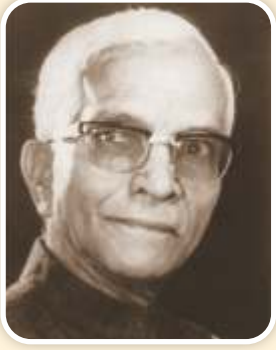
12

पी. जयरज
P. Jairaj
■ 1980 ■



13

नौशाद अली
Naushad Ali
■ 1981 ■



14

एल. वी. प्रसाद
L.V. Prasad
■ 1982 ■



15

दुर्गा खोटे
Durga Khote
■ 1983 ■



16

सत्यजीत राय
Satyajit Ray
■ 1984 ■



17

वी. शांताराम
V. Shantaram
■ 1985 ■



18

बी. नागी रेड्डी
B. Nagi Reddy
■ 1986 ■



19

राज कपूर
Raj Kapoor
■ 1987 ■



20

अशोक कुमार
Ashok Kumar
■ 1988 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता

DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS



21

लता मंगेशकर
Lata Mangeshkar
■ 1989 ■



22

ए. नागेश्वर राव
A. Nageswara Rao
■ 1990 ■



23

बी.जी. पेंठारकर
B.G. Pendharkar
■ 1991 ■



24

डॉ. भूपेन हज़ारिका
Dr. Bhupen Hazarika
■ 1992 ■



25

मज़रूह सुल्तानपुरी
Majrooh Sultanpuri
■ 1993 ■



26

दिलीप कुमार
Dilip Kumar
■ 1994 ■



27

डॉ. राजकुमार
Dr. Rajkumar
■ 1995 ■



28

शिवाजी गणेशन
Shivaji Ganesan
■ 1996 ■



29

कवि प्रदीप
Kavi Pradeep
■ 1997 ■



30

बी.आर. चोपड़ा
B.R. Chopra
■ 1998 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS



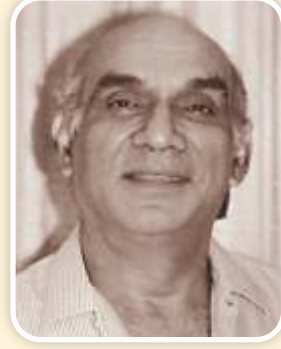
31

ऋषिकेश मुखर्जी
Hrishikesh Mukherjee
■ 1999 ■



32

आशा भोंसले
Asha Bhosle
■ 2000 ■



33

यश चोपड़ा
Yash Chopra
■ 2001 ■



34

देव आनंद
Dev Anand
■ 2002 ■



35

मृणाल सेन
Mrinal Sen
■ 2003 ■



36

अदूर गोपालाकृष्णन
Adoor Gopalakrishnan
■ 2004 ■



37

श्याम बेनेगल
Shyam Benegal
■ 2005 ■



38

तपन सिन्हा
Tapan Sinha
■ 2006 ■



39

मन्ना डे
Manna Dey
■ 2007 ■



40

वी.के. मूर्ति
V.K. Murthy
■ 2008 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता

DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS



41

डी. रामानायडू
D. Ramanaidu
■ 2009 ■



42

के. बालाचंदर
K. Balachander
■ 2010 ■



43

सौमित्र चटर्जी
Soumitra Chatterjee
■ 2011 ■



44

प्राण
Pran
■ 2012 ■



45

गुलज़ार
Gulzar
■ 2013 ■



46

शशि कपूर
Shashi Kapoor
■ 2014 ■



47

मनोज कुमार
Manoj Kumar
■ 2015 ■



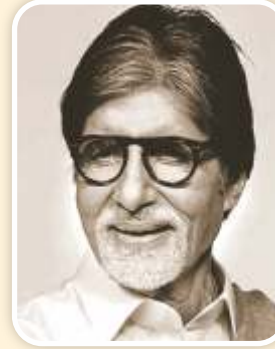
48

के विश्वनाथ
K Viswanath
■ 2016 ■



49

विनोद खन्ना
Vinod Khanna
■ 2017 ■



50

अमिताभ बच्चन
Amitabh Bachchan
■ 2018 ■

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार समिति

DADASAHEB PHALKE AWARD COMMITTEE



आशा भोंसले (Asha Bhosle)

आशा भोसले एक चर्चित पार्श्व गायिका और उद्यमी हैं, संगीत इतिहास में सर्वाधिक रिकॉर्ड किया जाने वाले कलाकार का गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड भी उनके नाम दर्ज है. सात दशकों में फैले हुए अपने फिल्मी सफर में उन्होंने 1000 से अधिक फिल्मों में 12000 से अधिक गाने गाए हैं. हिंदी भाषा के अलावा वह 20 भारतीय और विदेशी भाषाओं में भी गायन कर चुकी हैं. गायन क्षेत्र में उनकी विविधता से कोई अंजान नहीं है. इनके काम में फिल्म संगीत, पॉप संगीत, गजल, भजन, पारंपरिक भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, कव्वाली, रबिन्द्र संगीत और भारत एवं विदेशों में कई एकल संगीत कार्यक्रम शामिल हैं. उन्हें 2000 में दादा साहेब फालके और 2008 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया. 2013 में इन्होंने माई फिल्म में अपनी अदाकारी के जौहर भी दिखाए.

Asha Bhosle is a renowned playback singer and entrepreneur, who was acknowledged by the Guinness Book of World Records as the 'most recorded artist in music history' in 2011. In a career spanning over seven decades, she has sung over 12000 songs in about 1000 movies. Apart from Hindi, she has sung in over 20 Indian and foreign languages. Renowned for her soprano voice range and often credited for her versatility, her works include film music, pop music, ghazals, bhajans, traditional Indian classical music, folk songs, qawwalis, Rabindra Sangeet and numerous solo concerts in India and abroad. She was conferred the prestigious Dadasaheb Phalke Award in 2000 and the Padma Vibhushan in 2008. She made her acting debut in 'Mai' (2013), and earned critical acclaim for her performance.

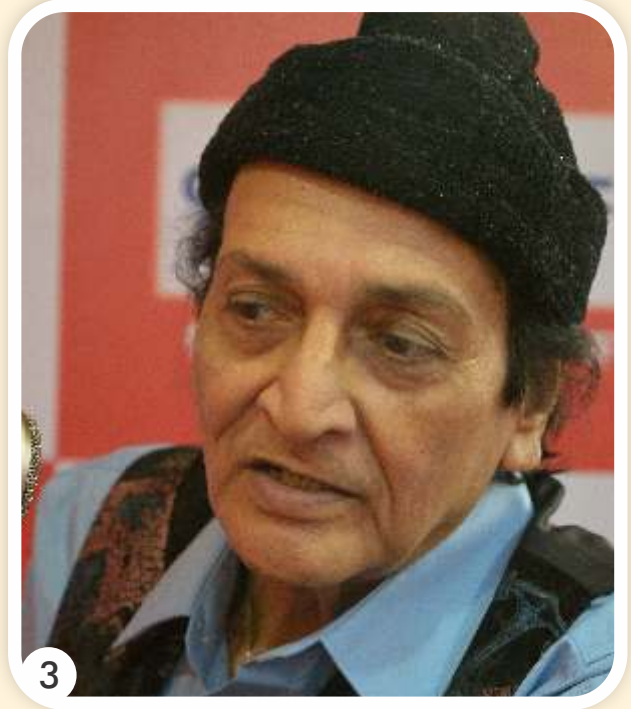


2

मोहनलाल विश्वनाथन (Mohanlal Viswanathan)

मोहनलाल उर्फ मोहनलाल विश्वनाथन एक कलाकार, निर्माता, गायक, वितरक और समाजसेवी हैं, वह मलयालम, तमिल, तेलुगू, कन्नड़ और हिंदी फिल्मों में काम कर चुके हैं। इन्होंने अपने फिल्मी सफर की शुरुआत मंजिल विरिनिया पोक्कल (1980) से की, राजाविते माकन से उन्हें सितारा छवि हासिल हुई, आगे चलकर इन्होंने इरुवर (1997), कंपनी (2002) और जनता गैराज (2016) जैसी चर्चित फिल्में दीं। अपने 4 दशक लंबे फिल्मी सफर में इन्होंने करीब 340 फिल्मों की। इन्हें पांच बार राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड – दो बार सर्वश्रेष्ठ कलाकार, एक बार स्पेशल ज्यूसी मॅशन, और अदाकारी के लिए स्पेशल ज्यूसी ओर एक बार सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म (निर्माता)। नौ बार केरला स्टेट फिल्म अवार्ड, दक्षिण फिल्म फेयर अवार्ड और कई सम्मान हासिल हो चुके हैं। इन्हें भारत के दो प्रतिष्ठित सम्मान पदम श्री 2001 और पदम भूषण 2019 से भी नवाजा जा चुका है।

Mohanlal, aka **Mohanlal Viswanathan**, is an actor, producer, playback singer, distributor and philanthropist, who has worked in Malayalam, Tamil, Telugu, Kannada and Hindi films. He made his acting debut with 'Manjil Virinja Pookkal' (1980). He attained stardom with 'Rajavinte Makan' (1986), followed by many hits including 'Iruvar' (1997), 'Company' (2002), 'Janatha Garage' (2016). In a career spanning over four decades, he has featured in over 340 films. He has won five National Film Awards—two as Best Actor, a Special Jury Mention, a Special Jury Award for acting, and an award for Best Feature Film (as producer); nine Kerala State Film Awards and Filmfare Awards South and numerous other accolades. The Government of India conferred on him the Padma Shri and Padma Bhushan in 2001 and 2019 respectively.



3

बिस्वजित चटर्जी (Biswajit Chatterjee)

बिस्वजित के नाम से मशहूर बिस्वजित चटर्जी एक कलाकार, निर्माता, निर्देशक, गायक, राजनीतिज्ञ हैं। मायामृगो और दुई भाई जैसी बांग्ला फिल्मों में काम करने के बाद इन्होंने मुंबई की ओर रुख किया। इनकी मशहूर फिल्मों में बीस साल बाद, कोहरा, बिन बादल बरसात, मजबूर, कैसे कहूं, पैसा या प्यार, मेरे सनम, शहनाई, आसरा, नाइट इन लंदन, ये रात फिर ना आएगी, अप्रैल फूल, किस्मत, दो कलियां, इश्क पर जोर नहीं, और शरारत शामिल हैं। इन्होंने बांग्ला सिनेमा में भी उल्लेखनीय योगदान दिया जिसमें चौरंगी, गढ़ नसीमपुर, श्रीमान पृथ्वीराज, जय बाबा तारकनाथ, और अमर गीती शामिल हैं। 1970 में इन्होंने दो आधुनिक बांग्ला एल्बम तोमार चोखेर काजोले और जय जय दिन में काम किया, इन दोनों का संगीत सलिल चौधरी ने तैयार किया था।

Biswajit Chatterjee, known mononymously as Biswajit, is an actor, producer, director, singer and politician known for his work in Hindi and Bengali cinema. After working in Bengali films like 'Mayamrigo' and 'Dui Bhai', he relocated to Mumbai in early 1960s. He then acted in many popular Hindi films, including 'Bees Saal Baad', 'Kohraa', 'Bin Badal Barsat', 'Majboor', 'Kaise Kahoon', 'Paisa Ya Pyaar', 'Mere Sanam', 'Shehnai', 'Aasra', 'Night in London', 'Yeh Raat Phir Naa Aaygi', 'April Fool', 'Kismat', 'Do Kaliyan', 'Ishq Par Zor Nahin', and 'Sharaarat'. In between, he also worked in Bengali films such as 'Chowringhee', 'Garh Nasimpur', 'Srimaan Prithviraj', 'Jai Baba Taraknath' and 'Amar Geeti'. In the 1970s, he cut a disc of two Bengali modern numbers 'Tomar Chokher Kajole' and 'Jay Jay Din', both composed by Salil Choudhury.



4

शंकर महादेवन (Shankar Mahadevan)

गायक – संगीतकार **शंकर महादेवन** संगीकार तिकड़ी शंकर – एहसान – लॉय का हिस्सा हैं. इन्होंने हिंदी, तमिल, तेलुगू, मराठी और इंग्लिश फिल्मों के लिए संगीत की तर्ज तैयार की है. इन्होंने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और कर्नाटकी संगीत का ज्ञान बचपन से लेना शुरू कर दिया था और महज 5 साल की उम्र में वह वीणा बजाने लगे थे. संगीत के आगे उन्होंने सॉफ्टवेयर इंजीनियर का काम त्याग दिया. इन्होंने (तिकड़ी के साथ) 1999 में अपना संगीत सफर शुरू किया और 60 से ज्यादा फिल्मों में संगीत दिया. इन्हें फिल्म कोंदुकोन्देइन कोंदुकोन्देइन (2000) के लिए सर्वश्रेष्ठ गायक का राष्ट्रीय अवार्ड प्राप्त हुआ था. अपने पहले अल्बम ब्रेथलेस (2019) से इन्हें काफी प्रसिद्धि हासिल की थी. संगीत के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया.

Shankar Mahadevan is a singer and a part of the music director trio Shankar–Ehsaan–Loy, known for their compositions in Hindi, Tamil, Telugu, Marathi and English films. He learned Hindustani classical and Carnatic music as a child, and began playing the Veena at the age of five. Initially, he worked as a software engineer but soon quit to pursue a career in music. He (as the trio) started his music journey in 1999 and went on to give music in over 60 films. He won a National Film Award for Best Male Playback Singer for his song ‘Yenna Solla Pogirai’ in ‘Kandukondain Kandukondain’ (2000). He gained popularity after the release of his first music album, ‘Breathless’. He was conferred the Padma Shri in 2019.

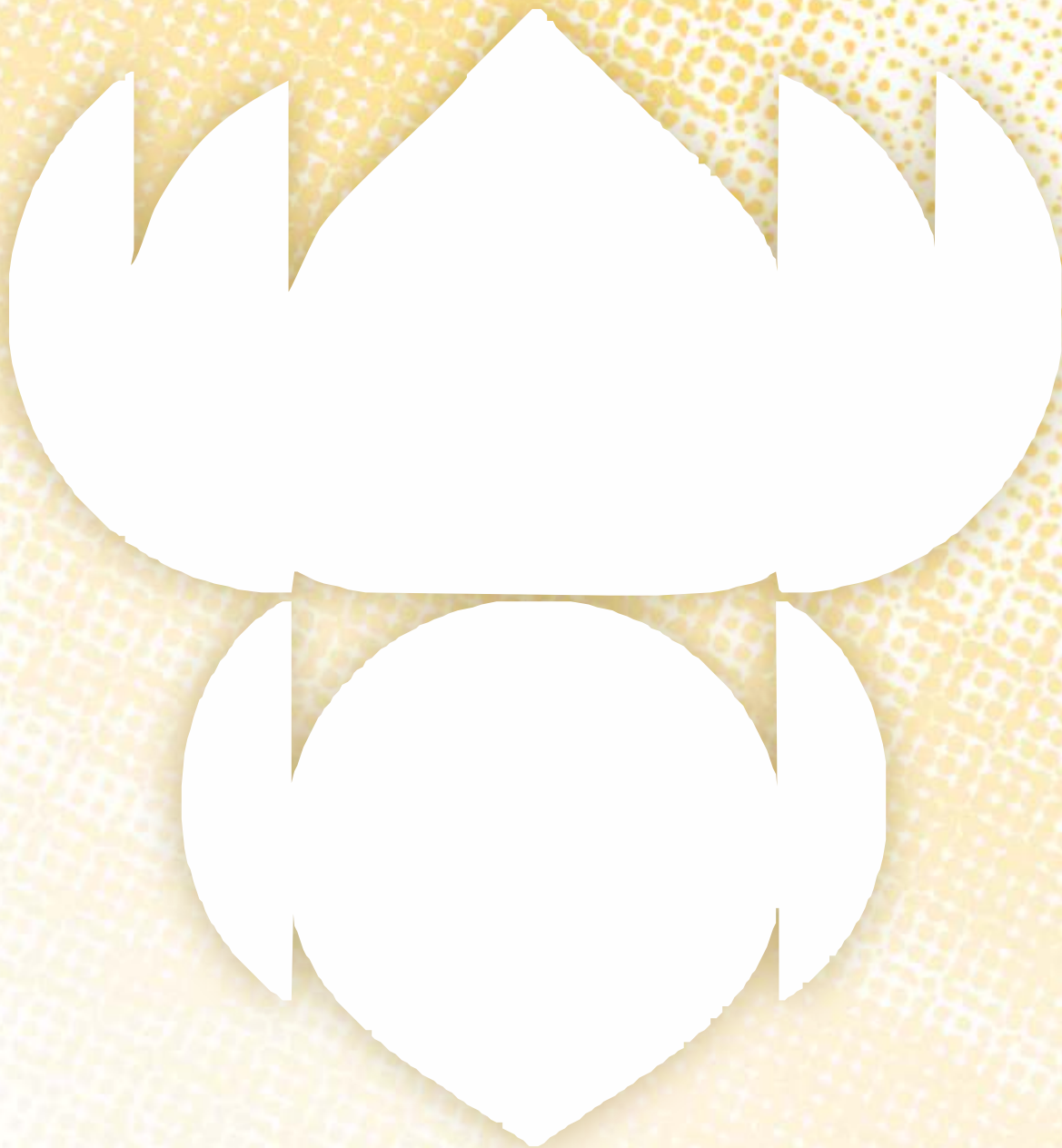


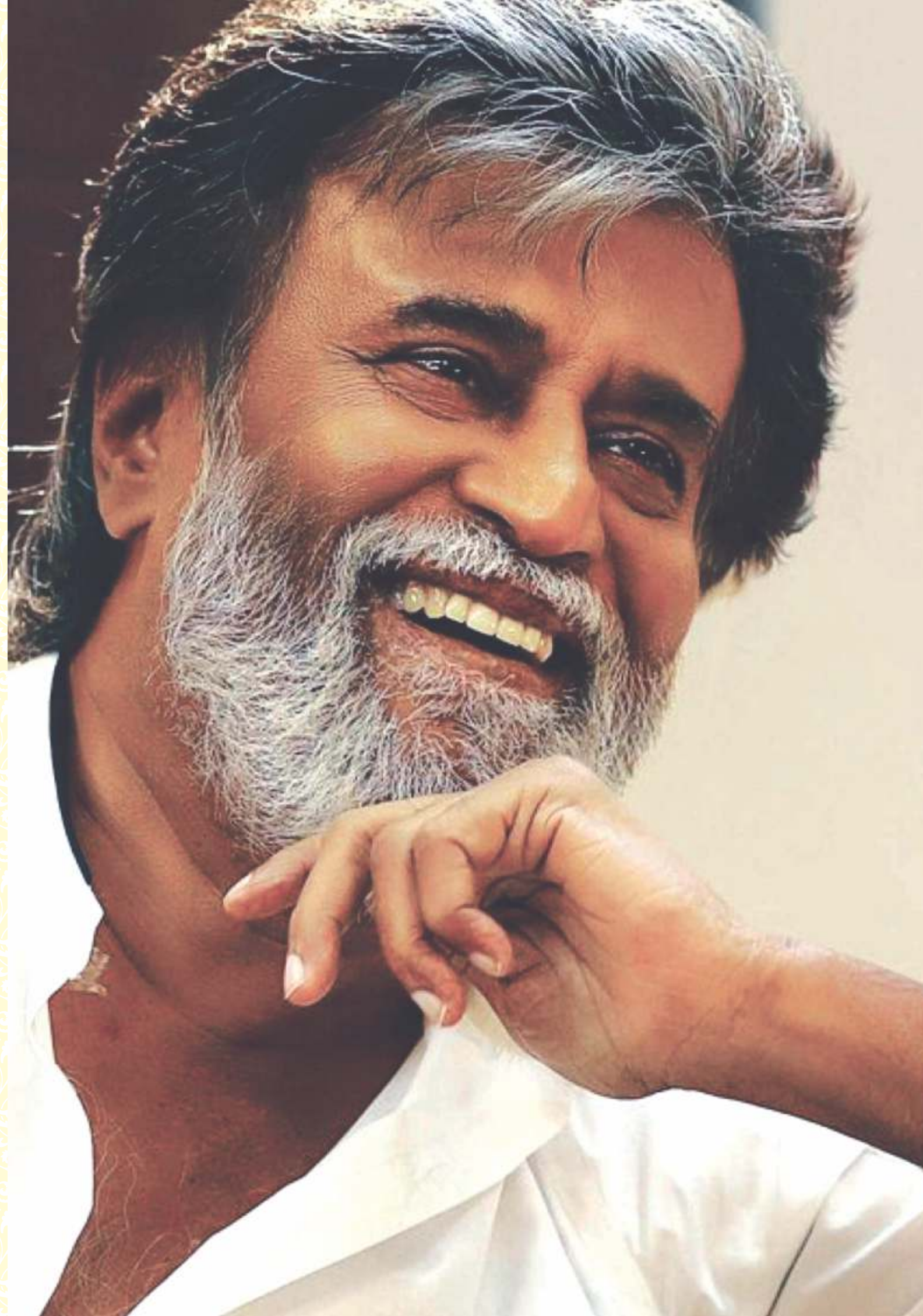
5

सुभाष घई (Subhash Ghai)

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे के पूर्व छात्र **सुभाष घई** यानी शो मैन, हिंदी सिनेमा के एक चर्चित नाम हैं. शुरुआत में इन्होंने तकदीर, आराधना, उमंग, और गुमराह जैसी फिल्मों में छोटी-छोटी भूमिकाएं निभाईं. 1976 में कालीचरण फिल्म के साथ निर्देशन की दुनिया में कदम रखा. आगे चलकर कई सफल फिल्में दी. जिसमें विश्वनाथ, कर्ज, हीरो, विधाता, मेरी जंग, करमा, राम लखन सौदागर, खलनायक, परदेस, ताल, किसना, ब्लैक एंड व्हाइट फिल्में शामिल हैं. 1982 में मुक्ता आर्ट्स नाम से फिल्म कंपनी की शुरुआत की इनके प्रोडक्शन में बनी फिल्म इकबाल ने 2006 में दो राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीते जिसमें एक अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म का और दूसरा सर्वश्रेष्ठ सह-कलाकार के लिए था. इन्हें दो बार फिल्म फिल्मफेयर अवार्ड भी मिल चुका है. इन्होंने 2006 में मुंबई में विसलिंग वुड्स इंटरनेशनल नाम से फिल्म एवं मीडिया संस्थान की स्थापना की.

Subhash Ghai is a film director, producer and screenwriter in Hindi cinema. An alumnus of Film and Television Institute of India (FTII), Pune, he tried his hand at acting and appeared in films like ‘Taqdeer’, ‘Aradhana’, ‘Umang’ and ‘Gumraah’. He made his directorial debut with ‘Kalicharan’ in 1976, followed by many hits including ‘Vishwanath’, ‘Karz’, ‘Hero’, ‘Vidhaata’, ‘Meri Jung’, ‘Karma’, ‘Ram Laxhan’, ‘Saudagar’, ‘Khalnayak’, ‘Pardes’, ‘Taal’, etc. Popularly known as ‘Showman’, he started his film company Mukta Arts in 1982. One of his productions ‘Iqbal’ won two National Film Awards – Best Film on Other Social Issues and National Film Award for Best Supporting Actor – in 2006. He has won two Filmfare awards. He established a film and media institution, Whistling Woods International, in Mumbai in 2006.





दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय

DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE

रजनीकांत

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता, 2019

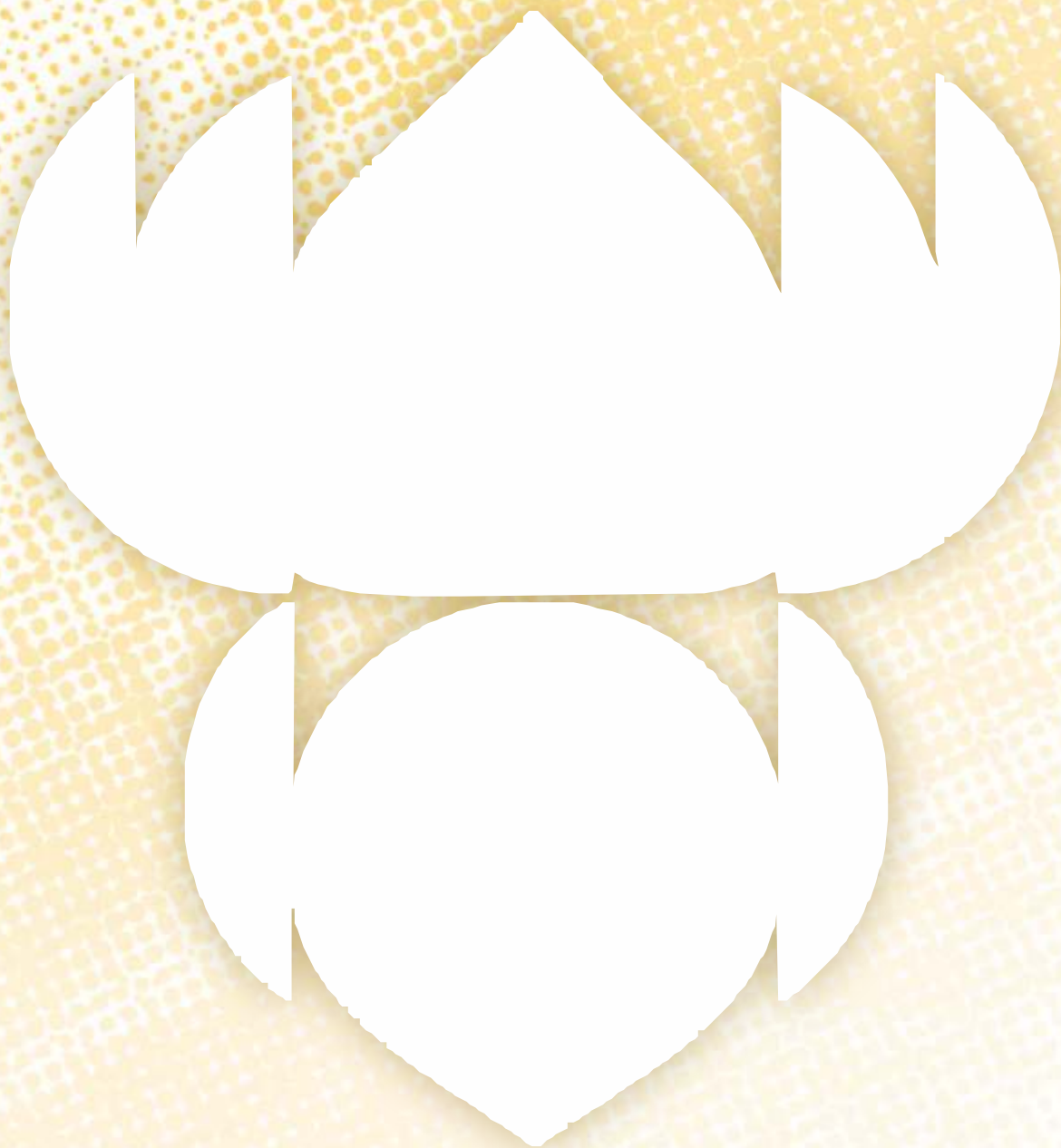
रजनीकांत यानी शिवाजी राव गायकवाड़ तमिल सिनेमा उद्योग का ऐसा नाम जो किसी परिचय का मोहताज नहीं है. दक्षिण भारतीय सिनेमा के ऐसे अभिनेता, स्क्रीन पर जिनके नाम आने से पहले सुपरस्टार लिखा जाता है. जो दक्षिण भारत में एक अभिनेता से कहीं ऊपर हैं. उन्होंने अपनी फिल्मी सफर की शुरुआत 1975 में के. बालाचंदर की फिल्म अपूर्वा रागांगल से की. इनका फिल्मी सफर चार दशक पुराना है. इन्होंने हिंदी और तमिल की 200 से ज्यादा फिल्मों को अपने अभिनय से सार्थक किया है. इन्हें 2016 में पद्म विभूषण और 2000 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया. सिनेमा में इनके उल्लेखनीय योगदान के लिए इन्हें 2014 में वर्ष के भारतीय फिल्म व्यक्तित्व का शताब्दी पुरस्कार और 2019 में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में आइकन ऑफ ग्लोबल जुबली सम्मान दिया गया. इन्हें कई बार फिल्म सम्मान प्राप्त हुआ है जिसमें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए 4 बार तमिलनाडु स्टेट फिल्म अवार्ड, सर्वश्रेष्ठ फिल्म फेयर अवार्ड शामिल है . इनके चाहने वाले इने थलाइवा (नायक या बॉस) कहते हैं. इन्होंने फिल्म निर्माण और पटकथा लेखन में भी हाथ आजमाया है.

Rajinikanth

Dadasaheb Phalke Award Winner, 2019

Rajinikanth, a.k.a. Shivaji Rao Gaekwad, is a renowned Indian actor who works primarily in Tamil cinema and is known for his charismatic screen presence. He made his debut with K. Balachander's film 'Apoorva Raagangal' (1975). In his illustrious career spanning four decades, he has starred in over 200 films in Tamil and Hindi. He was conferred 'Padma Bhushan' in 2000 and 'Padma Vibhushan' in 2016 by the Government of India. He was bestowed with two special cinema honours – the 'Centenary Award for Indian Film Personality of the Year' and the 'Icon of Global Jubilee' Award' at the International Film Festival of India in 2014 and 2019 respectively. He has won many film awards including, four Tamil Nadu State Film Best Actor Awards and a Filmfare Best Tamil Actor Award. Fondly referred as 'Thalaiva' (meaning leader) by his fans, he has also dabbled in to film production and screenwriting.







राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2019

NATIONAL FILM AWARDS 2019

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार तीन वर्गों में दिये जाते हैं—फ़ीचर फ़िल्म, गैर-फ़ीचर फ़िल्म तथा सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन। प्रत्येक वर्ग के लिए अलग निर्णायक मण्डल होता है।

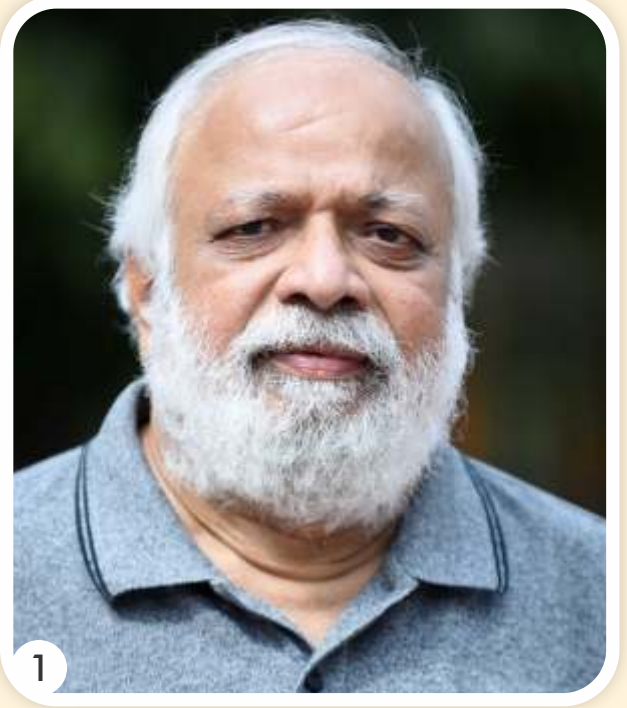
57वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों से फ़ीचर फ़िल्म श्रेणी में विजेताओं का चयन द्वि-स्तरीय समिति द्वारा किया जाता है। ये हैं पाँच प्रादेशिक समितियाँ और एक केन्द्रीय समिति। चयन समिति के सदस्य सिनेमा, संबद्ध क्षेत्रों और मानवीय शास्त्रों से जुड़े हुए प्रतिष्ठित लोग होते हैं। चयन प्रक्रिया के दौरान विचार-विमर्श पूर्ण रूप से गोपनीय होते हैं जिससे सदस्यों को बाहरी प्रभावों से दूर रखने में मदद मिलती है और पूरी स्वतन्त्रता, निष्पक्षता के साथ पुरस्कार विजेताओं का चयन किया जाता है।

The National Film Awards are given in three sections, viz., Feature Films, Non-Feature Films and Best Writing on Cinema. Each section has a different jury.

Since the 57th National Film Awards, the awards in feature film section are decided through a two-tier selection process comprising five regional panels and a central jury. The juries are distinguished persons in the field of cinema, other allied arts and humanities. The jury deliberations are confidential, which provides an enabling environment to insulate the jurors from external influences, and also facilitates selection with impartiality, freedom and fairness.

अध्यक्ष (Chairperson)

फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्यूरी (FEATURE FILMS CENTRAL JURY)



एन. चंद्रा (N. Chandra)

एन. चंद्रा उर्फ शेखर दीनानाथ नर्वेकर महज 17 साल की उम्र में फिल्मी दुनिया से जुड़ गए थे. आज 55 साल की उम्र में इनके पास फिल्म निर्माण और इन्फोटेन्मेंट व्यवसाय से जुड़ा हर तरह का अनुभव है, जिसमें संपादन, लेखन, निर्देशन, वितरण, और लैबोरेटरी में फिल्म प्रोसेसिंग तक शामिल है. इन्होंने फिल्म प्रोडक्शन और उससे जुड़े सभी विभागों को एक बाहरी व्यक्ति की नजर से देखा और एक लेखमाला भी तैयार की, साथ ही इन्होंने इसे भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान के बोर्ड में रहते हुए एक शिक्षक के तौर भी देखा. वह मुंबई में जन्मे और बांबे युनिवर्सिटी इन आर्ट्स से साहित्य में ऑनर्स के साथ डिग्री हासिल की. इनके पिता एशिया की सबसे बड़ी फिल्म लैबोरेटरी फिल्मसेंटर के ब्लैक एंड व्हाइट विभाग में लैबोरेटरी इन्चार्ज थे.

N. Chandra, aka Shekhar Dinanath Narvekar, entered the field of cinema and television at the young age of 17 and today, at the age of 55 he has got 38 years of all-round experience in filmmaking and infotainment business including editing, writing, direction, distribution and film processing in the laboratory. He has also looked at film production and all its departments through the eyes of an outsider having written a series of articles on it and has also viewed it as a teacher/academician having been on the board of Film and Television Institute of India (FTII), Pune. He was born in Mumbai and completed his graduation in Literature from the University of Mumbai. His father was the laboratory in-charge of the Black & White department in Asia's biggest film laboratory 'Filmcentre'.

फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्युरी (FEATURE FILMS CENTRAL JURY)



2

सी. उमामहेश्वर राव (C. Umamaheswara Rao)

सी. उमामहेश्वर राव एक निर्देशक, पटकथा लेखक, सौंदर्यशास्त्री और निर्माता हैं जो मुख्यतौर पर तेलुगू सिनेमा से जुड़े हैं। इनकी फिल्म – अंकुरम – मानवाधिकार और नागरिक स्वतंत्रता पर बनाई गई अपने आप में पहली अनोखी फिल्म है जिसे 1992 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और 1993 में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का आंध्रप्रदेश राज्य सम्मान दिया गया। उनकी फिल्म – श्रीकरम – बचाव पक्ष के वकीलों द्वारा महिला पीड़ित के साथ असंवेदनशील जवाब-तलब से लैस कोर्ट की कार्रवाई दिखाती है जिसे 1996 में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का आंध्रप्रदेश राज्य सम्मान दिया गया। इनकी अन्य कृति में हैं – स्त्री, भारतीय महिलाओं के शोषण पर वृत्तचित्र, लोकप्रिय टीवी सीरियल – हिमाबिंदू, मिस्टर ब्रह्मानंदम, टेलीफिल्म हमसफर (हिंदी) और मछू बोम्मा समेत कई विज्ञापन और लघु फिल्में हैं। इन्होंने फिल्म सौंदर्य पर 15 एपिसोड बनाए हैं जिन्हें कई टीवी चैनल और लघु फिल्म महोत्सवों में दिखाया गया। हाल ही में उन्होंने तेलुगू फिल्म – इतलु अम्मा – का निर्देशन किया।

C. Umamaheswara Rao is a director, screenwriter, aesthetician, and producer associated primarily with Telugu cinema. His film 'Ankuram' (1993), the first of its kind on human rights and civil liberties, won a National Film Award and Andhra Pradesh State Award for Best Director. His 'Srikaaram' (1996), based on a hazardous in-camera trial of a woman rape victim by defence lawyers, won Andhra Pradesh State Award for Best Feature Film in 1996. His other works include 'Sthree', a documentary on the exploitation faced by Indian women; popular TV serials such as 'Himabindu', 'Mr. Brahmanandam'; Telefilms like 'Hamsafar' (Hindi) and 'Manchu Bomma', and many shorts and ad films. He did 15 episodes on film aesthetics, which have been shown on many TV channels. He has recently directed another Telugu movie 'Itlu Amma'.



3

मंजु बोराह (Manju Borah's)

असम में जन्मी **मंजु बोराह** की फिल्में उत्तर पूर्वी क्षेत्र की संस्कृति और व्यक्ति तथा समाज पर उसके असर को दिखाती हैं। 1999 में उनकी पहली फिल्म बाईभाब ने राष्ट्रीय फिल्म अवॉर्ड (विशेष उल्लेख) जीता। उनके द्वारा बनाई गई अन्य फिल्मों जो राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुकी हैं, वो हैं 2003 की आकाशीतोरार कोठारे (सर्वश्रेष्ठ असमी फीचर फिल्म और सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका), 2008 की आई कोट नाई (राष्ट्रीय अखंडता पर आधारित सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए नरगिस दत्त अवॉर्ड), 2012 की को याद (सर्वश्रेष्ठ मिशिंग फिल्म और सर्वश्रेष्ठ छायांकन), 2015 की दाउ हुदुनी मेथाई (सर्वश्रेष्ठ बोडो फिल्म)। उनकी फिल्मों लाज, जॉयमती, दाउ हुदुनी मेथाई, और इन द लैंड ऑफ पॉयजन विमेन को इफकी के भारतीय पैनारोमा के लिए चयनित किया गया। कई सम्मान और फेलोशिप जीत चुकीं मंजु राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों के निर्णायक मंडल में भी रह चुकी हैं। उनकी असम भाषा में लघु कहानियों की तीन किताबें और एक उपन्यास प्रकाशित हो चुका है।

Born in Assam, **Manju Borah's** films explore the North East region's culture and its impact on the person and society as a whole. Her debut feature 'Baibhab' (1999) won a National Film Awards (Special Mention). Her other National Award-winning films include 'Aakashitorar Kothare' (2003, Best Feature Film in Assamese & Best Female Playback Singer); 'Aai Kot Nai' (2008, Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration); 'Ko: yad' (2012, Best Mishing Film and Best Cinematography), 'Dau Huduni Methai' (2015, Best Bodo Film). Her films 'Laaz', 'Joymati', 'Dau Huduni Methai' and 'In the Land of Poison Women' were selected in the Indian Panorama, IFFI. Recipient of many accolades and fellowship, she has served as a jury at several film festivals, and published a novel in Assamese and short story collections.

फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्युरी (FEATURE FILMS CENTRAL JURY)



4

दिलीप शुक्ला (Dilip Shukla)

दिलीप शुक्ला हिंदी फिल्म जगत के संवाद और पटकथा लेखक हैं, वह बॉलीवुड फिल्म जैसे अंदाज अपना-अपना (1994), घायल (1990), दामिनी (1993), मोहरा (1994) के चर्चित संवादों के लिए जाने जाते हैं। उनके हालिया फिल्मों में जय हो (2014), वीरे की वैडिंग (2018) और सलमान खान की चर्चित फिल्म श्रंखला दबंग (2010), दबंग 2 (2012) और दबंग 3 (2019) शामिल हैं।

Dilip Shukla is a film dialogue and scriptwriter who works predominantly in Hindi film industry. He is known for his popular dialogues in well-known Bollywood films such as 'Andaz Apna Apna' (1994), 'Ghayal' (1990), 'Damini' (1993), 'Mohra' (1994), and many others. His more recent projects include 'Jai Ho' (2014) and 'Veerey Ki Wedding' (2018) and the popular Salman Khan film franchise – 'Dabangg' (2010), 'Dabangg 2' (2012), and 'Dabangg 3' (2019).



5

बिजया जेना (Bijaya Jena)

बिजया जेना राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड से सम्मानित फिल्मकार और फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से प्रशिक्षित हैं। कई क्षेत्रीय, हिंदी फिल्मों और टीवी शो में काम करने के बाद, इन्होंने लेखन, निर्माण और खुद की फिल्म के निर्देशन की ओर रुख किया। इनकी पहली फिल्म तारा (उडिया, 1992) को राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड हासिल हुआ और इन्हें सर्वश्रेष्ठ अदाकारा के लिए नामांकित किया गया। इनकी दूसरी फिल्म आभास (1997) को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई और इसे बीबीसी चैनल 4 में प्रदर्शित किया गया। ओड़ीशा राज्य अवार्ड की ओर से 1984 में सर्वश्रेष्ठ अदाकारा से सम्मान, 2012 में इन्हें लाइफटाइम डेडिकेशन अवार्ड से नवाजा गया। 2014 में अर्जेटीना के पिनामार फिल्म फेस्टीवल में भी सम्मानित किया गया। वह कई अंतर्राष्ट्रीय निर्णायक मंडल का हिस्सा रह चुकी हैं।

Bijaya Jena is a National Film Award-winning filmmaker and a trained actress from Film and Television Institute of India (FTII), Pune. After acting in several regional and Hindi films and TV shows, she moved on to write, produce and direct her own films. Her debut feature film 'Tara' (Odia, 1992) got a National Film Award and she was nominated for Best Actress title. Her second feature 'Abhaas' (1997) received international acclaim as it was shown on BBC Channel 4. She received the Odisha State Award for Best Actress in 1984 and Lifetime Dedication Award in 2012 and another at the Pinamar Film Festival, Argentina in 2014. She has been on the jury of several international film festivals and has also held script writing masterclasses.

फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्युरी (FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

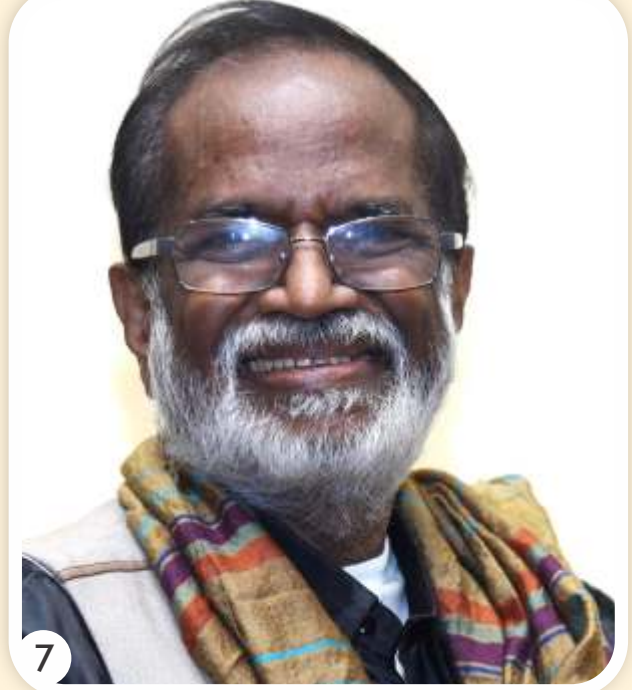


6

मनोज नवनीत जोशी (Manoj Navneet Joshi)

मनोज नवनीत जोशी हिंदी और मराठी फिल्मों के एक चर्चित कलाकार हैं। इन्होंने 70 से अधिक फिल्मों में काम किया है जिसमें फिर हेरा फेरी, भूल भुलैया, हलचल, धूम, भागम भाग, चुप चुप के, हंगामा, बिल्लू शामिल हैं। सर जे जे स्कूल ऑफ आर्ट्स से स्नातक करने के बाद इन्होंने मराठी रंगमंच की ओर रुख किया, बाद में वे गुजराती और हिंदी रंगमंच से जुड़े। अपने फिल्मी सफर की शुरुआत सरफरोश से की। इन्होंने कई चर्चित टीवी सीरीज में भी अपनी अदाकारी के जलवे दिखाए, जिसमें, चाणक्य, चक्रवर्तिन अशोक सम्राट, एक महल हो सपनो का, संगदिल, कभी सौतन कभी सहेली शामिल हैं। साथ ही मराठी सीरियल राऊ, मूरा रस्का माई ला में भी काम किया है। इन्हें 2018 में पद्म श्री से नवाजा गया।

Manoj Navneet Joshi is an actor known for his works in Hindi and Marathi films and also television serials. He has also acted in over 70 films and is known for his performances in films such as 'Phir Hera Pheri', 'Bhool Bhulaiyaa', 'Hulchul', 'Dhoom', 'Bhagam Bhag', 'Chup Chup Ke', 'Hungama', 'Billu', etc. After graduating from Sir J.J. School of Arts, he began his career in Marathi theatre, later also got involved in Gujarati and Hindi theatre. He made his film debut in 'Sarfarosh'. He has also acted in popular Hindi TV series such as 'Chanakya', 'Chakravartin Ashoka Samrat', 'Ek Mahal Ho Sapno Ka', 'Sangdil', 'Kabhi Souten Kabhi Saheli', etc., and Marathi serials including 'Rau', 'Mura Raska Mai La', etc. He was awarded Padma Shri in 2018.



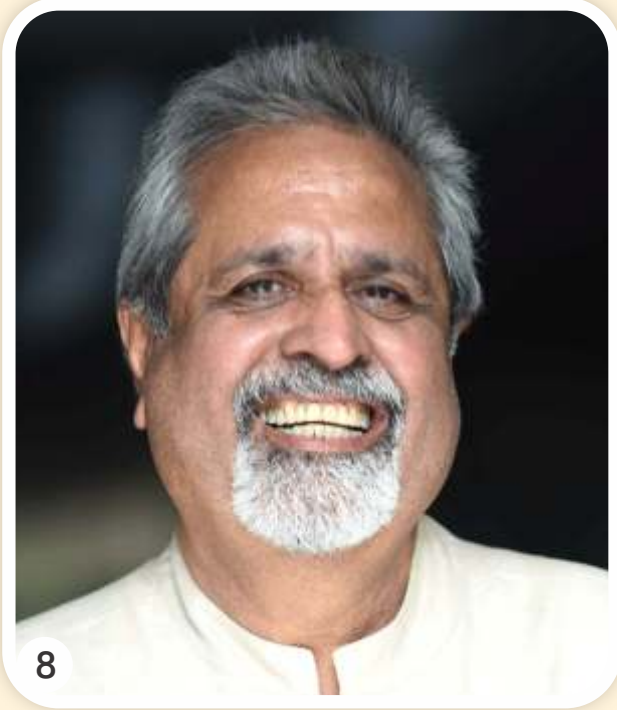
7

गंगाई अमारेन (Gangai Amaran)

गंगाई अमारेन उर्फ अमर सिंह थेनाई, गीतकार, संगीतकार, गायक, निर्देशक और निर्माता हैं। इन्होंने महज 14 साल की उम्र में गीत लिखना शुरु कर दिया था, तब से अब तक वह करीब 3000 गीत लिख चुके हैं। 16 वायाथिनिले में लिखा गया इनका पहला गीत सेंथूरा पूवे को राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड से नवाजा गया था। इन्होंने करीब 180 से अधिक फिल्मों के लिए संगीत तैयार किया। कोजी कोवुथु (1982) के साथ इन्होंने निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखा और करीब 16 फिल्में बनाई, जिसमें सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए तमिलनाडु राज्य सम्मान जीतने वाली ब्लॉकबस्टर फिल्म करागट्टाकरन (1989) भी शामिल है। पन्नीर पुष्पांगल (1981) के साथ इन्होंने फिल्म निर्माण में भी सफलता हासिल की। साथ ही इन्होंने कई संगीत निर्देशकों के लिए गाने भी गाए हैं।

Gangai Amaren, aka Amar Singh, is a lyricist, music director, singer, director and producer from Tamil Nadu. He started writing lyrics at the age of 14 (used later in films in the 1980s) and has now written over 3000 songs. His first song 'Senthooora Poove' in '16 Vayathinile' (1977) got him a National Film Award. He turned music director with 'Oru Vidukadhai Oru Thodarkadhai' (1979) and went on to compose music for over 180 films in Tamil, Telugu, Kannada and Malayalam. He turned director with 'Kozhi Koovuthu' (1982), followed by 16 movies including 'Karagattakaran' (1989), which won him Tamil Nadu State Award for the Best Director. He successfully turned producer also with 'Panneer Pushpangal' (1981). He has also many sang for music directors, including his music composer brother Isaignani Ilaiyaraaja.

फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्युरी (FEATURE FILMS CENTRAL JURY)



8

सुभाष सहगल (Subhash Sehgal)

सुभाष सहगल फिल्म संपादक हैं, इनके नाम करीब 250 से अधिक फिल्मों हैं। इनकी कुछ चर्चित फिल्मों में वारिस, इजाजत, लेकिन, तेरी मेहरबानियां, रोमांस, अरमान, सलमा, बादल, और एक चादर मैली सी (जिसके लिए इन्हें सर्वश्रेष्ठ संपादन का फिल्म फेयर अवार्ड मिला) शामिल हैं। इनकी तीन पंजाबी फिल्म – छन्न परदेसी, माधी दा दीवा, और काछेहारी ने क्रम से राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड जीते। इन्हें आठ बार केरला स्टेट अवार्ड से नवाजा जा चुका है। एफटीआईआई से गोल्ड मेडलिस्ट रह चुके सुभाष ने कई चर्चित टीवी सीरियल्स के लिए संपादन का काम किया है, जिसमें रामायण, मिर्जा गालिब, विक्रम बेटाल, दादा दादी की कहानियां, श्री कृष्णा शामिल हैं। इन्होंने हिंदी फिल्म प्यार कोई खेल नहीं (1999) और यारा सिली सिली (2016) का निर्देशन किया दूरदर्शन के लिए सीरियल एक कहानी और मिली का निर्माण किया। इनके 15 कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

Subhash Sehgal is a film editor who has worked in as many as 250 films. Some of his well-known films include 'Waaris', 'Ijazat', 'Lekin', 'Teri Meharbanian', 'Romance', 'Armaan', 'Salma', 'Baadal' and 'Ek Chaddar Maili Si', which won him a Filmfare Award for Best Editing. Three of his Punjabi films – 'Chann Pardesi', 'Madhi Da Deewa', and 'Kachehari' – won National Film Award consecutively. He has also won eight Kerala State awards among others. A gold medallist from FTII Pune, he has worked as an editor for popular TV serials such as 'Ramayan', 'Mirza Ghalib', 'Vikram Betal', 'Dada Dadi Ki Kahanian', 'Shri Krishna', etc. He has directed Hindi films 'Pyar Koi Khel Nahin' (1999) and 'Yaara Silly Silly' (2016) and produced a serial 'Ek Kahani Aur Mili'. He has written 15 poetry books.



9

अरुणोदय शर्मा (Arunoday Sharma)

पांच दशक तक बतौर ऑडियोग्राफर कई फीचर फिल्मों वृत्तचित्र और हजारों टेलीविजन धारावाहिकों के लिए काम कर चुके **अरुणोदय शर्मा**, फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे से 1972 में साउंड रिकॉर्डिंग कोर्स में गोल्ड मेडलिस्ट हैं। इन्होंने अपने दौर के सबसे बेहतरीन लोगों जैसे देव आनंद, विजय आनंद, चेतन आनंद, बी नरसिंहराव (तेलुगु), सिद्धार्थ काक, गिरीश कर्नाड, ए.के. बिर और कई लोगों के साथ काम किया है। इन्होंने डिजिटल प्लेटफॉर्म के लिए चार किताबें लिखीं और प्रकाशित कर चुके हैं। 2011 और 2014 में पहले भी दो बार राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड के निर्णायक मंडल में रह चुके हैं। सीबीएफसी में परीक्षक भी रह चुके हैं। इन्हें 2017 में सर्वश्रेष्ठ साउंड इंजीनियर के लिए दादा साहेब फालके फिल्म फाउंडेशन अवार्ड भी प्राप्त हो चुका है।

In a career spanning five decades, **Arunoday Sharma** has been the audiographer for numerous feature films, documentaries and thousands of television episodes. He completed his sound recording course with a gold medal in 1972 from the Film & Television Institute of India, Pune. He worked with the best professionals of their time such as Dev Anand, Vijay Anand, Chetan Anand, B Narsingrao (Telugu), Siddharth Kak, Girish Karnad, A. K. Bir, and others. He has produced and directed few educational documentaries. He has authored and published four books on digital platforms. He has been a National Film Awards jury previously too, in 2011 and 2014. He is also an examiner with the CBFC. He is a recipient of 'Dadasaheb Phalke Film Foundation Award' for 'Best Sound Engineer' in 2017.

फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्युरी (FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

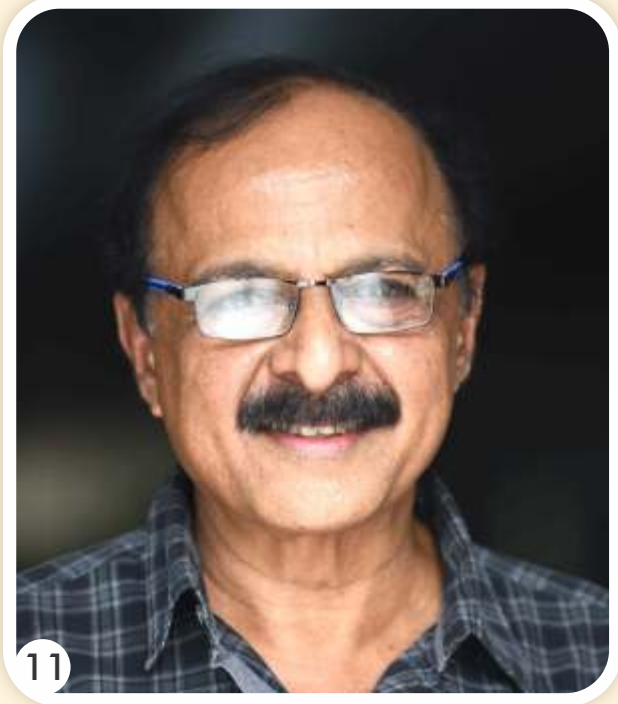


10

जी पी विजय कुमार (G.P. Vijay Kumar)

जी पी विजय कुमार ने 35 साल पहले चैन्नई में सेवन आर्ट्स इंटरनेशनल नाम की फिल्म कंपनी की शुरुआत की थी. उनकी कंपनी ने अब तक मलयालम, तमिल, तेलुगू और हिंदी भाषा में 43 फीचर फिल्मों का निर्माण, 75 फिल्मों का वितरण किया है. कई बॉक्स ऑफिस हिट के अलावा उनकी कई फिल्मों ने राष्ट्रीय और क्षेत्रीय फिल्म पुरस्कार जीते हैं और भारतीय पैनारोमा के लिए चयनित भी हुई हैं. वह केरल राज्य फिल्म विकास निगम के निदेशक और केरल फिल्म चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष रह चुके हैं. वह फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया के उपाध्यक्ष हैं. वह अभी भी अलग अलग भूमिका में भारतीय फिल्म उद्योग में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं.

G.P. Vijay Kumar is Managing Director of Seven Arts International, a Chennai-based film company he established 35 years ago. His company has so far produced 43 feature films in Malayalam, Tamil, Telugu and Hindi languages, and distributed 75 films. Apart from many box office hits, a good number of his films won National/Regional film awards and were selected for the Indian Panorama. He was the Director of Kerala State Film Development Corporation and the President of the Kerala Film Chamber of Commerce. He has been an executive committee member of the South Indian Film Chamber of Commerce for 25 years. He is a Vice President of the Film Federation of India. He is still actively associated with the Indian film industry in various capacities.



11

एस कुमार (S. Kumar)

एस कुमार एक सिनेमेटोग्राफर हैं, 43 साल के लंबे फिल्मी सफर में वह फिल्म निर्माताओं की 4 पीढ़ियों सहित सभी दिग्गज कलाकारों के साथ काम कर चुके हैं. उनके नाम 100 से ज्यादा फिल्में हैं. अपने फिल्मी सफर की शुरुआत इन्होंने मेरीलैंड स्टूडियो के निर्माता-फिल्मकार पी. सुब्रह्मण्यम के साथ की, आगे इन्होंने मधु अंबत शाजी, एन. करुण. भारथन, जी. अराविंदन, मुकुल एस.आनंद, सुधीर मिश्रा, शशिलाल नायर के साथ काम किया. प्रियदर्शन की फिल्म किलुककम के लिए इन्हें पहली बार सर्वश्रेष्ठ सिनेमेटोग्राफी का केरला स्टेट अवार्ड प्राप्त हुआ. इनकी पहली हिंदी फिल्म मुस्कुराहट के लिए इन्हें फिल्मफेयर अवार्ड प्राप्त हुआ. तमिल और तेलुगु सिनेमा में इनके काम को काफी सराहना मिली और एम.टी.वसुदेवन नायर-हरिहरन की फिल्म परिनायम के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला, और श्यामप्रसादज अकाले के लिए केरला स्टेट अवार्ड मिला.

S. Kumar is a cinematographer, who has worked with four generations of filmmakers and with major actors across film industries in a career spanning 43 years. He has over 100 feature films to his credit. He started his career with Merryland Studio of producer-filmmaker P. Subramaniam, and went on to work with many established filmmakers including Madhu Ambat, Shaji N. Karun, Bharathan, G. Aravindan, Mukul S. Anand, Sudhir Misra, Sashilal Nair. His work in Priyadarshan 'Kilukkam' won him his first Kerala State Award for Best Cinematography. His first film in Bollywood 'Muskurahat' earned him a Filmfare Award. He has done notable work in Tamil and Telugu cinema and won the National Film Award (Special Mention) for M.T. Vasudevan Nair-Hariharan film 'Parinayam' and the Kerala State Award for Syamaprasad's 'Akale'.

अध्यक्ष (Chairperson)

गैर-फीचर फिल्म ज्युरी (NON-FEATURE FILMS JURY)



अरुण चड्ढा Arun Chadha (Chairperson)

अरुण चड्ढा भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई) पुणे से स्नातक हैं। इनके नाम पर सामाजिक-आर्थिक, पर्यावरण, स्वास्थ्य, मानवशास्त्रीय और विकास संबंधी मुद्दों पर 100 से ज्यादा वृत्तचित्र, लघु फिल्म और टीवी सीरियल्स का लेखन, निर्माण और निर्देशन है। इनकी कई फिल्मों विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टीवल और वैश्विक सम्मेलनों में दिखाई जा चुकी हैं। इन्होंने कई सम्मान हासिल किए हैं जिसमें राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड, मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टीवल (एमआईएफएफ) 2000 और 2004 के सर्वश्रेष्ठ वृत्तचित्र के लिए गोल्डन कोच सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय वृत्तचित्र फिल्म फेस्टीवल केरला में सर्वश्रेष्ठ फिल्म सम्मान शामिल हैं। इन्होंने भारत और विदेशों में कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टीवल में निर्णायक मंडल सदस्य के तौर पर सेवाएं दी हैं।

Arun Chadha, a graduate of the Film and Television Institute of India (FTII), Pune, has written, produced and directed more than 100 documentaries, short films and TV serials on socio-economic, environmental, health, anthropological and development issues. Many of his films have been shown at various national and international film festivals and global conferences. He has won multiple awards, including the National Film Awards, two 'Golden Conch' awards for the best documentary at the Mumbai International Film Festival (MIFF) in 2000 and 2004; the Best Film award at the International Documentary Film Festival, Kerala and many others. He has served as a Jury Member for many national and international film festivals in India and abroad.

गैर-फीचर फिल्म ज्युरी (NON-FEATURE FILMS JURY)



2

सेसिनो यहोशु (Sesino Yhoshu)

सेसिनो यहोशु के निर्देशन और निर्माण में बनी फिल्म सीमाओं के आर-पार, महिला सशक्तिकरण, एचआईवी एवं एड्स, युवा और पर्यावरण के विषयों को खंगालती है। इन्हें हाइ स्कूल में ही अपने सिनेमा प्रेम के बारे में पता चल गया था, इसलिए इन्होंने मास कम्यूनिकेशन विषय में पढाई की और इलेक्ट्रॉनिक सिनेमेटोग्राफी, और वृत्तचित्रों के निर्माण की तैयारी करती रही। कहानियों से जुड़ाव और फिल्मों के प्रति इनके जुनून की वजह से नागालैंड में इन्होंने टेकवन नाम से प्रोडक्शन हाउस की स्थापना की। तब से वह अपने कहानीकारों की टीम के साथ दुःश्यात्मक कल्पना की दुनिया की असीमित संभावनाओं को खंगाल रही हैं। वह दो बच्चों की मां हैं और अपने परिवार के साथ कोहिमा में रहती हैं।

Sesino Yhoshu has directed and produced films that explore borders, women empowerment, HIV & AIDS, youth and environment. She discovered her love for films in high school and went on to study mass communication, electronic cinematography and documentary by practice. Her passion to engage with stories through films led her to start TakeOne, a production house based in Nagaland. Since then, she along with her team of storytellers has been exploring this limitless world of visual imagery. She is a mother of two and lives with her family in Kohima.



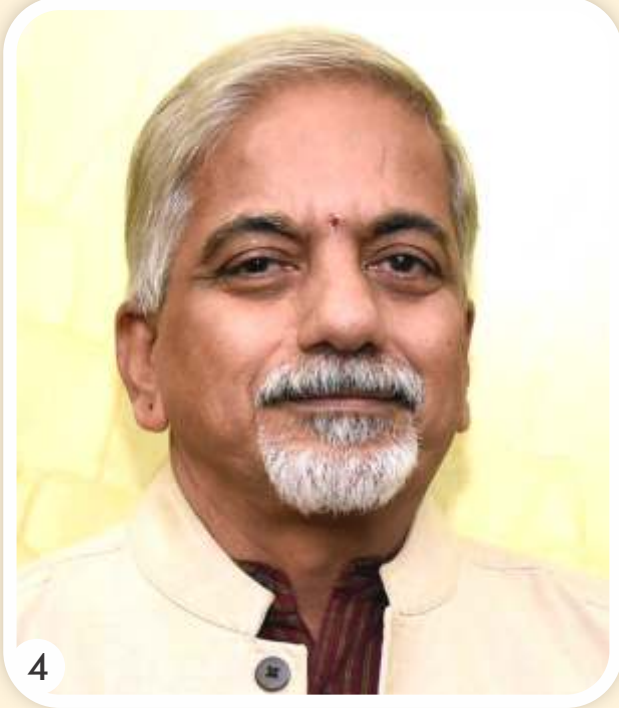
3

डॉ. मीना लोंगजाम (Dr. Meena Longjam)

डॉ. मीना लोंगजाम एक अवार्ड विजेता स्वतंत्र फिल्मकार मणिपुर की पहली महिला फिल्मकार हैं, जिन्हें अपनी पहले वृत्तचित्र ऑटोड्राइवर के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। ये वृत्तचित्र कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में चयनित हुआ और इसने खूब वाहवाही बटोरी। इनकी लघु फिल्म ईको को भी काफी सराहना मिली। इनकी हाल में बनी फिल्म, अचोउबी इन लव 2019 में काठमांडू, नेपाल में हुए फिल्म साउथएशिया में काफी सराही गई। 2015 में इन्होंने एयरामीन मीडिया नाम से प्रोडक्शन शुरू किया जो सामाजिक और लैंगिक मुद्दों पर बनी फिल्म को प्रचारित करती है। इन्होंने मास कम्यूनिकेशन में डॉक्टरेट किया है और वर्तमान में मणिपुर यूनिवर्सिटी ऑफ कल्चर के संस्कृति अध्ययन विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं और वहां पढ़ाने का काम कर रही हैं। इनकी किताबें भी प्रकाशित हो चुकी है।

Dr. Meena Longjam is an award-winning independent filmmaker and the first woman filmmaker from Manipur to win a National Award for her debut documentary film 'Autodriver'. The film was selected for screening in a at many national and international film festivals and won a few accolades. Her short film 'Echo' (2016) also earned her critical acclaim. Her recent work 'Achoubi in Love' was screened at Film Southasia (FSA), Kathmandu, Nepal in 2019. In 2015, she launched Airameen Media to produce and promote films on social and gender issues. She has a doctorate in mass communication and currently teaches as an assistant professor at the Department of Culture Studies, Manipur University of Culture.

गैर-फीचर फिल्म ज्युरी (NON-FEATURE FILMS JURY)



4

श्रीप्रकाश मेनन (Sriprakash Menon)

श्रीप्रकाश मेनन ने 15 सालों से अधिक वक्त तक बतौर पत्रकार काम किया, इन्होंने दि प्री प्रेस जरनल, दि डेली, दि इंडियन एक्सप्रेस, दि इंडियन पोस्ट, दि इंडिपेन्डेंट और दि मेट्रोपोलिस ओन सैटरडे जैसे पत्र-पत्रिकाओं के लिए काम किया. इन्होंने तील लघु फिल्मों का निर्माण और निर्देशन भी किया. इन्होंने खासतौर पर भारतीय सिनेमा, संस्कृति, मीडिया, राजनीति और कॉरपोरेट के लिए लिखा. वर्तमान में वह केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के पैनल सदस्य हैं, वह टीवी प्रोडक्शन कंपनी के साथ रचनात्मक और प्रोडक्शन दोनों ही तरह से जुड़े रहे हैं. इन्होंने 2004 से प्रिंट लेखन और टीवी के रचनात्मक कार्य के लिए फ्रीलांस सेवा देना शुरू किया. 2009 में वह टीवी 9 मुंबई के साथ जुड़े. वह 2018 में मुंबई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के क्षेत्रीय चयन पैनल में थे.

Sriprakash Menon has worked as a journalist in print medium for over 15 years. He also has produced and directed three short films. During 1983-1996, he worked with 'The Free Press Journal', 'The Daily', 'The Indian Express', 'The Indian Post', 'The Independent', and 'The Metropolis On Saturday'; and has written extensively on Indian cinema, culture, media, politics, corporate, etc. Presently, he is a panel member of the Central Board of Film Certification (CBFC). He has been associated with TV production companies on both the creative and production sides. In 2004, he started freelance writing and TV creative work. In 2009, he joined Hindi news channel TV9 in Mumbai. He has been on the selection panel of the Mumbai International Film Festival 2018.



5

सुशील राजपाल (Sushil Rajpal)

सुशील राजपाल फिल्म सिनेमेटोग्राफर और निर्देशक हैं. इनकी पहली फिल्म हिंदी फीचर फिल्म अंतर्द्वन्द्व को 2009 की सामाजिक मुद्दों पर बनी सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय अवार्ड प्राप्त हुआ था. इन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से पोस्ट-ग्रेज्यूएट डिप्लोमा किया है. बतौर डायरेक्टर ऑफ फोटोग्राफी के तौर पर कई फिल्म, वृत्तचित्र और टीवी सीरियल के लिए काम किया और कई चर्चित भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रोडक्शन हाउस से जुड़े रहे हैं. इन्होंने 100 से भी अधिक टीवी कमर्शियल बनाए हैं. वर्तमान में वो अपने निर्देशन की अगली फिल्म के लिए तैयारी कर रहे हैं.

Sushil Rajpal is a film cinematographer and director. He won the National Award for Best Film on Social Issues in 2009 for his directorial debut, 'Antardwand', a Hindi feature film. He is a Post-Graduate Diploma holder from the prestigious Film and Television Institute of India (FTII), Pune. As a Director of Photography (DoP), he has worked in feature-length films, documentaries and TV serials and has associated with well-known Indian and international production houses and directors. He also has hundreds of TV Commercials to his credit. He is currently preparing for his next directorial venture.

गैर-फीचर फिल्म ज्युरी (NON-FEATURE FILMS JURY)



6

हरीश भिमानी (Harish Bhimani)

हरीश भिमानी – भारत के दिग्गज पार्श्व स्वर कलाकार (जिसमें महाभारत का समय किरदार शामिल है), फिल्मकार, लेखक, प्रस्तुतकर्ता और अभिनेता है. 2016 में पार्श्व स्वर के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ, एचएमवी गोल्ड डिस्क अवॉर्ड और एशियन मीडिया अवॉर्ड से भी सम्मानित, जो ब्रिटिश संसद द्वारा दिया गया विशेष सम्मान है. बतौर प्रस्तुतकर्ता, वह 24 देशों में 250 कार्यक्रमों का हिस्सा बन चुके हैं – सिडनी ओपेरा हाउस से मैडिसन स्कायर्स गार्डन और विजय चौक से रोबर्ट अल्बर्ट हॉल तक शामिल है. उन्होंने वृत्तचित्र, वेब सीरीज, धारावाहिक और कई किताबें हैं जिसमें जीवनी इन सर्च ऑफ लता मंगेशकर (तीन संस्करण, चार भाषाओं में प्रकाशित), सिनेमा के दिग्गजों पर छह लघु किताबें और टैगोर की – चंडालिनी – का अनुवाद शामिल है.

Harish Bhimani is one of India's foremost narrators (top-lined by Mahabharat's Samay), filmmaker, writer, and anchor. He is a recipient of the National Film Award for narration in 2016, HMV's Gold Disc Award and Asian Media Award – a unique distinction received in the British Parliament. As an anchor, he has traversed continents with some 250 concerts in 24 countries – from Sydney Opera House to Madison Square Garden and from Vijay Chowk to Royal Albert Hall and many in between. His writing oeuvre include documentaries, web series, serials and books including 'In Search of Lata Mangeshkar' (published in 4 languages, 3 editions); six mini books on cinema legends, and a translation of Tagore's 'Chandalini'. He has also directed 35 docs, shorts, corporates ads and three TV serials.



7

संजिब पारासर (Sanjib Parasar)

संजिब पारासर 2008 से ही कॉर्पोरेट कंपनी, निजी चैनल, प्रसार भारती और अन्य संगठनों के लिए डॉक्यूमेंट्री ध्वंक्षुसीरिज का निर्देशन, लेखन और सिनेमेटोग्राफी कर रहे हैं. इन्होंने अपना सिनेमेटोग्राफी का कोर्स डॉ भूपेन हजारिका क्षेत्रीय शासकीय फिल्म एवं टेलिविजन संस्थान, आसाम से किया था. जहां पर वो अब पढ़ाते भी हैं. इनकी डॉक्यूमेंट्री लिविंग-दि नेचुरल वे कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में सम्मान हासिल कर चुकी है. वह मुंबई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, 2019 के लिए चयन समिति (अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता) के सदस्य भी रहे हैं. वह गुवाहाटी अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल 2017, 2018, 2019 के लिए सह-संयोजक रहे हैं. और गुवाहाटी अंतर्राष्ट्रीय डॉक्यूमेंट्री, लघु और एनिमेशन फिल्म फेस्टिवल 2018 में संयोजक की भूमिका में निभा चुके हैं. वर्तमान में वह साहित्य एकेडमी की डॉक्यूमेंट्री पर काम कर रहे हैं.

Sanjib Parasar has been producing, directing, scripting and cinematographing documentaries/docuseries for private channels, corporate companies, Prasar Bharti and other organisations since 2008. He did his cinematography course from Dr. Bhupen Hazarika Regional Government Film & Television Institute (DBHRGFTI), Assam, where he teaches now. His feature-length documentary 'Living...The Natural Way' won several awards at national and international film festivals. He was a selection committee member for the Mumbai International Film Festival, 2019. He has also been a co-coordinator for the Guwahati International Film Festival in 2017, 2018 and 2019; and the festival coordinator for the Guwahati International Documentary, Short and Animation Film Festival in 2018.

अध्यक्ष (Chairperson)

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन ज्यूरी BEST WRITING ON CINEMA JURY



सैबल चटर्जी Saibal Chatterjee (Chairperson)

सैबल चटर्जी – राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके फिल्म आलोचक हैं, गुलजार पर लिखी गई किताब के लेखक हैं, फिल्मों पर लिखी गई कई किताबों के सह-संपादक और वृत्तचित्र लेखक हैं. वर्तमान में वह एनडीटीवी के लिए फिल्म समीक्षा करते हैं. वह फिल्म क्रिटिक्स सर्किल ऑफ इंडिया (एफसीसीआई) के संस्थापक सदस्य है. वह हिंदी सिनेमा के ब्रिटानिका एन्सायक्लोपीडिया के संपादक मंडल के सदस्य हैं. वह कई अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों के निर्णायक मंडल के सदस्य रहे. वह आगामी पुदुचेरी अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के निदेशक हैं. वह बीबीसी न्यूज, बिजनेस स्टैंडर्ड, हिंदुस्तान टाइम्स और फाइनेंशियल एक्सप्रेस में स्तंभकार है. टेलिग्राफ, द टाइम्स ऑफ इंडिया, आउटलुक में वह स्टाफ लेखक रहे, टीवी वर्ल्ड के संपादक और जी प्रीमियर के सलाहकार भी रहे.

Saibal Chatterjee is a National Film Award-winning film critic, an author of a book on Gulzar, co-editor of a book on films; and a documentary scriptwriter. He presently writes film reviews for NDTV. He is a founding member of the Film Critics Circle of India (FCCI). He was a key member of the editorial board of Encyclopaedia Britannica's Encyclopaedia of Hindi Cinema. He has served on the team as well as a jury of a variety of international film festivals. He is the festival director of the upcoming Pondicherry International Film Festival. He has been a columnist at BBC News, 'Business Standard', 'Hindustan Times' and 'Financial Express'; a staff writer with 'The Telegraph', 'The Times of India', and 'Outlook'; the editor of TV World; and a consultant to Zee Premiere.

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन ज्युरी

BEST WRITING ON CINEMA JURY



2

प्रो. राघवेन्द्र पाटिल (Raghavendra Patil)

प्रो. राघवेन्द्र पाटिल पूर्व प्रोफेसर और कन्नड़ भाषा के उत्तरआधुनिक लेखक हैं जिनके नाम कई किताबें हैं। जिसमें लघु कथा संग्रह, आलोचना पर निबंध, उपन्यास, यात्रा संस्मरण शामिल हैं। इनके उपन्यास अमृतवाहिनी पर इसी नाम से फिल्म भी बनी है। इन्हें अपने उपन्यास तेरु (द चेरियट के नाम से डॉ जी.एस अमुर द्वारा अनुवादित) को साहित्य अकादमी से नवाजा गया है। इन्हें अपनी लघु कथाओं, उपन्यास और आलोचना के लिए तीन बार कर्नाटक साहित्य अकादमी अवार्ड मिल चुका है। इन्होंने दर्जनों पुस्तकें और दो साहित्यिक जर्नल का संपादन किया है। वह दो बार साहित्य अकादमी, नई दिल्ली और तीन बार कर्नाटक साहित्य अकादमी, बंगलुरु के निर्णायक मंडल में रह चुके हैं। वह धारवाड़ साहित्य सम्ब्रह्म ट्रस्ट के सभापति भी हैं।

Prof. Raghavendra Patil is a former professor and postmodernist writer in Kannada and authored a number of books including anthologies of short stories, essays of criticism, novels, and a travelogue. His novel 'Amritavahini' was made into a film with the same name. He won Sahitya Akademi Award for his novel 'Teru' (translated as 'The Chariot' by Dr. G.S. Amur) in 2005, and Karnataka Sahitya Academy Award thrice, for his short story, novel and criticism. He has edited a dozen books and two literary journals. He has served twice as a jury for Sahitya Akademi New Delhi, and thrice for Karnataka Sahitya Academy, Bengaluru. He has worked as lecturer in Biology and retired as the principal of A.S.T. P.U. College, Malladihalli. He is also the Chairman of Dharwad Sahitya Sambhrama Trust.



3

राजीव मंसद (Rajeev Masand)

राजीव मंसद करीब दो दशक से फिल्मों की समीक्षा कर रहे हैं। वह कई प्रकाशनों जैसे ओपन मैगजीन, फर्स्ट पोस्ट, न्यूज 18 और द विवंट के लिए मनोरंजन उद्योग से जुड़े स्तंभ भी लिखते हैं। वह समाचार चैनल सीएनएन-न्यूज 18 के साथ भी जुड़े थे जहां वे सप्ताहंत शो, नाओ शोइंग के प्रस्तोता थे। वह हिंदी फिल्म और भारत में रिलीज हुई चयनित हॉलीवुड फिल्म की समीक्षा करते हैं। इससे पहले वह द टाइम्स ऑफ इंडिया में बतौर रिपोर्टर और इंडियन एक्सप्रेस में सहायक संपादक के तौर पर भी रह चुके हैं। इन्होंने अपनी टीवी पत्रकारिता का सफर 2003 में स्टार न्यूज के साथ शुरू किया, जहां वह मंसद की पसंद शो प्रस्तुत करते थे। बाद में इन्होंने सीएनएन-आईबीएन (अब न्यूज 18) में मंसद वर्डिक्ट शो और टू कैच ए स्टार किया।

Rajeev Masand has been reviewing films for almost two decades. He also writes entertainment-industry columns for several publications, such as 'Open Magazine', 'Firstpost', 'News18', and 'The Quint'. He worked news channel CNN-News18 where he hosted his weekend show 'Now Showing'. He has reviewed Bollywood films and select Hollywood films released in India. Previously, he has worked as a reporter for 'The Times of India' and as an assistant editor at 'The Indian Express'. He started his TV journalism career with STAR News in 2003 where he hosted a show 'Masand Ki Pasand'. Later in 2005, he moved to CNN-IBN (now News18) where he did film reviews in his show 'Masand's Verdict' and also hosted an entertainment series titled 'To Catch a Star', etc.

फीचर फिल्म ज्यूरी | पूर्व पैनल

FEATURE FILMS JURY | EAST PANEL



जी पी विजय कुमार (अध्यक्ष) G.P. Vijay Kumar (Chairperson)

जी पी विजय कुमार ने 35 साल पहले चैन्नई में सेवन आर्ट्स इंटरनेशनल नाम की फिल्म कंपनी की शुरुआत की थी. उनकी कंपनी ने अब तक मलयालम, तमिल, तेलुगू और हिंदी भाषा में 43 फीचर फिल्मों का निर्माण, 75 फिल्मों का वितरण किया है. कई बॉक्स ऑफिस हिट के अलावा उनकी कई फिल्मों ने राष्ट्रीय और क्षेत्रीय फिल्म पुरस्कार जीते हैं और भारतीय पैनारोमा के लिए चयनित भी हुई हैं. वह केरल राज्य फिल्म विकास निगम के निदेशक और केरल फिल्म चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष रह चुके हैं. वह फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया के उपाध्यक्ष हैं. वह अभी भी अलग अलग भूमिका में भारतीय फिल्म उद्योग में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं.

G.P. Vijay Kumar is Managing Director of Seven Arts International, a Chennai-based film company he established 35 years ago. His company has so far produced 43 feature films in Malayalam, Tamil, Telugu and Hindi languages, and distributed 75 films. Apart from many box office hits, a good number of his films won National/Regional film awards and were selected for the Indian Panorama. He was the Director of Kerala State Film Development Corporation and the President of Kerala Film

Chamber of Commerce. He has been an executive committee member of the South Indian Film Chamber of Commerce for 25 years. He is a Vice President of the Film Federation of India. He is still actively associated with the Indian film industry in various capacities.

राजेश कुमार सिंह (सदस्य) Rajesh Kumar Singh (Member)

राजेश कुमार सिंह लेखक और निर्देशक हैं, जो रंगमंच से जुड़े हुए हैं. वह टीवी कार्यक्रम के निर्देशन, निर्माण और लेखन में भी शामिल रहे हैं. पिछले 20 सालों से वह सिनेमा और फिल्म उद्योग के विषय में लिख रहे हैं. वह फिल्मों की समीक्षा करते रहे हैं और कई अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल के लिए ट्रेड मेगजीन, न्यूज पोर्टल और अपने ब्लॉग और यूट्यूब चैनल खुल्लम खुल्ला न्यूज एंड व्यूज में विस्तार से लिख चुके हैं. वह मामी मुंबई फिल्म फेस्टिवल और इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (इफ्फी) की चयन समीति का हिस्सा भी रह चुके हैं. इन्होंने अपना स्नातोकोत्तर प्रबंध अध्ययन में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से पूरा किया और मार्केटिंग, विज्ञापन और जनरल मैनेजमेंट में भी हाथ आजमा चुके हैं.

Rajesh Kumar Singh has been associated with theatre as an actor, writer and director. He has also been involved in writing, producing and directing TV programs. For the past 20 years, he has been writing about cinema and the film industry. He has been reviewing films and extensively covered various international film festivals for trade magazines, news portals, and also for his blog and YouTube channel known as 'Khullamkhulla News, Views & Reviews'. He has also been part of the Selection Committees of the MAMI Mumbai Film Festival and International Film Festival of India (IFFI). Previously, he completed his post-graduation in management studies from Banaras Hindu University and has had stints at marketing, advertising, and general management.



मनिराम सिंह (सदस्य) Maniram Singh (Member)

मनिराम सिंह पिछले 20 सालों से डॉक्यूमेंट्री, लघु फिल्म, टीवी सीरियल, फीचर फिल्म का निर्देशन और निर्माण कर रहे हैं. इन्होंने असमिया फीचर फिल्म 'मॉजाई' को लेखन, निर्देशन और निर्माण किया है. ये फिल्म 2008 में इफ्फी के भारतीय पैनारोमा खंड के लिए चुनी गई थी. और 56वें राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड 2008 में इसे रजतकमल भी प्राप्त हुआ था. इनकी अन्य असमिया फीचर फिल्म 'झिख्ख्यो' 2015 में भारतीय पैनारोमा खंड के न्यू होराइजन द नॉर्थ ईस्ट की ओपनिंग फिल्म थी. इस फिल्म को 2016 में जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक (आलोचक) अवार्ड हासिल हुआ. वे 2012, 2016 और 2020 में राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड के निर्णायक मंडल के सदस्य भी रहे हैं. और गुवाहाटी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल 2019 के सदस्य की भूमिका भी निभा चुके हैं.

Maniram Singh has been directing and producing feature films, TV serials, short films and documentary films for last 20 years. He wrote, produced and directed Assamese feature film 'Monjai' (2008). The film was selected in the Indian Panorama section of IFFI, Goa in 2008, and also won the Rajat Kamal at the 56th National Film Awards 2008. His another Assamese feature film 'Xandhikkhyon' (2015) was the opening film in the Indian Panorama's section 'New Horizon- The North East' in 2015. He won the best director (critic) award for the film in Jaipur International Film Festival in 2016. He has also served as the jury member for the National Film Awards in 2012, 2016 and 2020 and also for the Guwahati International Film Festival in 2019.

अजय रौत्रय (सदस्य) Ajaya Routray (Member)

अजय रौत्रय उड़ीया फिल्म उद्योग से जुड़े एक निर्देशक, लेखक और निर्माता हैं. इनकी निर्देशित पहली संथाली फिल्म 'जीवी जुरी (जीवनसाथी)' ने झारखंड में सर्वश्रेष्ठ फिल्म और सर्वश्रेष्ठ निर्देशन का सम्मान हासिल किया था. इनके टीवी सीरियल 'नाबाकेलेबारा (ब्रह्म परिवर्तन के रहस्यमयी रिवाज या भगवान जगन्नाथ की आत्मा के बदलाव पर आधारित)' ने 2016 में आयोजित राजकीय टेली पुरस्कार उत्सव के चौथे संस्करण में कई सम्मान हासिल किए, जिसमें सर्वश्रेष्ठ सीरियल और सर्वश्रेष्ठ निर्देशन का अवार्ड भी शामिल है. इन्होंने अपने काम की शुरुआत 1985 में बतौर असोसिएट निर्देशक की थी और आगे चलकर 300 से अधिक वृत्तचित्र, फिल्म और टीवी सीरियल का निर्माण किया. अजय रौत्रय का भुवनेश्वर, उड़ीसा में एक प्रोडक्शन और पोस्ट प्रोडक्शन हाउस है.

Ajaya Routray is a director, writer and producer associated with the Odia film industry. He directed first Santali movie 'Jivi Juri' (Life Partner), which won the best film and best director honours at an awards in Jharkhand. His TV serial 'Nabakalebara' (on the secret ritual of Brahma Paribartan or changing the soul of Lord Jagannath) bagged highest numbers of awards at the fourth edition of State Tele Purashkar Utsav 2016, including for the best TV serial and best director. He started his career as an associate director in 1985 and went on to produced and directed over 300 documentaries, films and TV serial. A graduate of arts and law, he also runs a production house and a post-production studio in Bhubaneswar, Odisha.



अरिजीत हलदर (सदस्य) Arijit Halder (Member)

अरिजीत हलदर एक फिल्म पेशेवर हैं जिनके पास फिल्म और टीवी जगत का 23 साल का व्यापक अनुभव है. 1998 से शुरू हुए अपने सफर में ये अब तक 100 से ज्यादा टेलीफिल्म और विभिन्न प्लेटफार्म जैसे दूरदर्शन बांग्ला, स्टार जलसा, आकाश आथ, जी बांग्ला और कलर्स बांग्ला पर 10 से ज्यादा मेगासीरियल कर चुके हैं. इनकी खासियत है कि वह अपनी काबिलियत के दम पर और स्क्रिप्ट आकलन के अपने अनुभव की बदौलत शूट को बेहतर तरीके से व्यवस्थित और समन्वित कर देते हैं और जहां जरूरत है वहां स्क्रिप्ट के जरूरी बदलाव के सुझाव भी देते हैं.

Arijit Halder is a film professional experienced in a wide range of film and video projects. In his 23 year-long film and TV career, which started in 1998, he has completed more than 100 telefilms and 10 mega serials for various platforms such as Doordarshan Bangla, Star Jalsha, Akash Aath, Zee Bangla, and Colours Bangla. His ability is to efficiently organize and coordinate shoots with his experience of script analysis and providing input for any necessary script changes.

फीचर फिल्म ज्यूरी | उत्तर पैनल

FEATURE FILMS JURY | NORTH PANEL



मंजु बोराह (अध्यक्ष) Manju Borah's (Chairperson)

असम में जन्मी मंजु बोराह की फिल्में उत्तर पूर्वी क्षेत्र की संस्कृति और व्यक्ति तथा समाज पर उसके असर को दिखाती हैं। 1999 में उनकी पहली फिल्म बाईभाब ने राष्ट्रीय फिल्म अवॉर्ड (विशेष उल्लेख) जीता। उनकी राष्ट्रीय पुरस्कृत फिल्म हैं – 2003 की आकाशीतोरार कोठारे (सर्वश्रेष्ठ असमी फीचर फिल्म, सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका), 2008 की आई कोट नाई (राष्ट्रीय अखंडता पर आधारित सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए नरगिस दत्त अवॉर्ड), 2012 की को याद (सर्वश्रेष्ठ मिशिंग फिल्म और सर्वश्रेष्ठ छायांकन), 2015 की दाउ हुदुनी मेथाई (सर्वश्रेष्ठ बोडो फिल्म)। उनकी फिल्में – लाज, जॉयमती, दाउ हुदुनी मेथाई, और इन द लैंड ऑफ पॉयजन विमेन – को इफ्फी के भारतीय पैनासोमा के लिए चयनित किया गया। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों के निर्णायक मंडल में भी रह चुकी हैं।

Born in Assam, **Manju Borah's** films explore the North East region's culture and its impact on the person and society as a whole. Her debut feature 'Baibhab' (1999) won a National Film Awards (Special Mention). Her other National Award-winning films include 'Aakashitor Kohare' (2003, Best Feature Film in Assamese & Best Female Playback Singer); 'Aai Kot Nai' (2008, Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration); 'Ko: yad' (2012, Best Mishing Film and Best Cinematography), 'Dau Huduni Methai' (2015, Best Bodo Film). Her films 'Laaz', 'Joymati', 'Dau Huduni Methai' and 'In the Land of Poison Women' were selected in the Indian Panorama, IFFI. Recipient of many accolades and fellowship, she has been serving as a jury at national and international film festivals. She is also a writer who has published three books of short story collections and a novel in Assamese.

ससि पारावूर (सदस्य) Sasi Paravoor (Member)

ससि पारावूर मलयालम फिल्म उद्योग के लेखक और निर्देशक हैं। इनकी चर्चित फिल्मों में नोट्टम (2007), कादाक्षम (2010), सायबर कैफे (2013), बर्ड्स विथ लार्ज विंग्स (2015) और क्रॉसरोड है। इनकी पहली फिल्म नोट्टम को दर्शकों और समीक्षकों के काफी वाहवाही मिली थी। ये फिल्म कोदियात्तम पर आधारित थी जो एक तरह का संस्कृत रंगमंच है। इनकी अगली फिल्म कदाक्षम थी जो, महिलाओं पर पड़ने वाले सामाजिक दबाव पर आधारित थी। आगे इन्होंने झामा फिल्म सायबर कैफे और फेमिली झामा क्रॉसरोड का निर्देशन किया। ये फिल्म दस महिलाओं की जिंदगी की कहानी और उनके नारीत्व को दर्शाती है।

Sasi Paravoor is a film writer and director who has worked predominantly in the Malayalam film industry. He is known for films such as 'Nottam' (2007), 'Kadaksham' (2010), 'Cyber Café' (2013), 'Birds with Large Wings' (2015) and 'Crossroad'. His debut film was 'Nottam' which received commercial success as well as critical acclaim. It was based on Koodiyattam, a form of Sanskrit theatre. His next was the 2010 Malayalam film, 'Kadaksham' which was a women-oriented drama about the societal pressures that women faced. It was followed by the 2013 drama 'Cyber Café'. In 2017, he made a family drama titled 'Crossroad', which celebrates womanhood through the stories of lives of 10 women it featured.



डॉ अनुराधा सिंह (सदस्य) Dr. Anuradha Singh (Member)

डॉ अनुराधा सिंह एक स्वतंत्र फिल्म संपादक और वृत्तचित्र निर्माता हैं। इन्होंने कई ख्याति प्राप्त संगठनों और अंतरराष्ट्रीय प्रोडक्शन हाउस जैसे वॉल्ट डिजनी पियवर्स, ड्रीम वर्क्स, नेटफ्लिक्स, बीबीसी स्टोरीविले श्रृंखला आदि के साथ काम किया है। वह हिंदी और अंग्रेजी भाषा में 20 से ज्यादा फीचर फिल्म, वृत्तचित्र और लघु फिल्म के लिए काम कर चुकी हैं। इनके अहम कामों में एकेडमी अवार्ड विजेता फिल्म स्लम डॉग मिलेनियर, बॉलीवुड फिल्म चिटगांग, और यंगिस्तान और चर्चित बीबीसी डॉक्यूमेंट्री इंडियाज डॉक्टर (निर्माणा कांड पर आधारित) जैसी फिल्में शामिल हैं। इन्होंने अपनी फिल्मी जीवन की शुरुआत बतौर सहायक निर्देशक मिशन कश्मीर से किया। इसके बाद इन्होंने फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई) पुणे से फिल्म संपादन में डिप्लोमा हासिल किया।

Dr. Anuradha Singh is an accomplished film editor and documentary filmmaker. She started her career as an assistant director in 'Mission Kashmir', after which she attended Film and Television Institute of India (FTII), Pune where she graduated in film editing in 2005. She has worked in over two dozen feature films and documentaries in English and Hindi for 20th Century Fox, DreamWorks, Walt Disney, Netflix, BBC and others. Her filmography includes movies such as 'Slumdog Millionaire', 'Hundred Foot Journey', 'Million Dollar Arm', 'Extraction', National Award-winning Hindi film 'Chittagong' and acclaimed BBC documentary 'India's Daughter' which won the prestigious Peabody Award in the United States for Best Documentary in 2016.

अदीप टंडन (सदस्य) Adeep Tandon (Member)

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से छायांकन में प्रशिक्षण प्राप्त, अदीप टंडन ने बतौर छायाकार बासु भट्टाचार्य, महेश भट्ट, श्रीमति विजय मेहता, चेतन आनंद, देव आनंद, विजय आनंद जैसे कई ख्याति प्राप्त फिल्मकारों के साथ काम किया। इन्होंने 35 से अधिक कॉर्पोरेट और फीचर फिल्म, 120 विज्ञापन फिल्म और 100 के करीब वृत्तचित्र (हिंदी, पंजाबी, और बांग्ला भाषा में) का छायांकन किया है। उनकी चर्चित फिल्मों में गृह प्रवेश, सारांश, ठिकाना, राओ साहेब, चिरुथा, मेरे साथ चल, सेंसर, जाना ना दिल से दूर, आनंद निकेतन आदि फिल्में शामिल हैं। इन्होंने एक हिंदी फिल्म नाजुक सा मोड़ और दो पंजाबी फिल्मों का निर्देशन भी किया है। इसके अलावा इन्होंने फिल्म लिखने का काम भी किया है। इनकी फिल्म राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान अर्जित कर चुकी है।

A trained cinematographer from Film and Television Institute of India (FTII), Pune, **Adeep Tandon** has worked as the Director of Photography (DoP) with filmmakers Basu Bhattacharya, Mahesh Bhatt, Mrs. Vijaya Mehta, Chetan Anand, Dev Anand, Vijay Anand and many more. He has shot over 35 corporate and feature films (in Hindi, Punjabi and Bengali), 120 Ad commercials, and 100 documentaries. His notable films 'Griha Pravesh', 'Saaransh', 'Thikana', 'Rao Saheb', 'Chirutha', 'Mere Saath Chal', 'Censor', 'Jana Na Dil Se Door', 'Anand Niketan', etc. He has also directed one Hindi film 'Naazuk Saa Modd' and two Punjabi films, and written movie scripts too. His films have won national and international awards, and he has been on the jury of many reputed film festivals.



अतुल पांडे (सदस्य) Atul Pandey (Member)

अतुल पांडे टेलीविजन उद्योग के साथ बतौर प्रोग्रामर पिछले दो दशक से जुड़े हुए हैं। इन्होंने कई विषयों पर वृत्तचित्रों का निर्माण और संपादन किया। उनका फिल्मी दुनिया से सबा 1994 में हुआ, जब दिल्ली विवि फिल्म एप्रेशियेशन सोसाइटी स्थापित की गई जिसमें सुभाष घई की सक्रिय भागीदारी रही। इन्होंने अपने काम की शुरुआत बी.ए.जी फिल्म के साथ किया जहां इन्होंने कई टीवी सीरियल का निर्देशन किया जिसमें लेंस आई, हिट थी हिट है, और जायके का सफर शामिल है। बतौर प्रस्तुतकर्ता इन्होंने चुनाव आधारित व्थिंग कार्यक्रम जैसे ताऊ की खरी खरी, शब्द बाण, चुनावी चाय की चुस्की किए। इन्होंने इन्फोटेन्मेंट कार्यक्रम जैसे अदाबी कॉकटेल और उर्दू बाजार का निर्माण किया। इन्होंने डीडी किसान के लिए देश भर की उद्यमी महिला किसानों पर 55 एपिसोड की श्रृंखला भी लिखी है।

Atul Pandey has been working with the television industry as a programmer for over two decades. He has produced, edited documentaries on various subjects. His formal association with the film world started when he established the Delhi University Film Appreciation Society in 1994 with the active participation of filmmaker Subhash Ghai. But he started his career with B.A.G. Films where he directed several TV series including 'Lens Eye', 'Hit Thi Hit Hai' and 'Zaike Ka Safar'. He also worked as an anchor/presenter in election-based satirical programs like 'Tau ki Khari Khari', 'Shabda Baan', 'Chunavi Chai Ki Chuski', etc. He has produced infotainment programs like 'Adabi Cocktail' and 'Urdu Bazar'. He has written a 55-episode series on enterprising Female Farmers from across India for DD Kisan.

फीचर फिल्म ज्युरी | दक्षिण- I पैनल

FEATURE FILMS JURY | SOUTH-1 PANEL



अरुणोदय शर्मा (अध्यक्ष) Arunoday Sharma (Chairperson)

पांच दशक तक बतौर ऑडियोग्राफर कई फीचर फिल्मों वृत्तचित्र और हजारों टेलीविजन धारावाहिकों के लिए काम कर चुके अरुणोदय शर्मा, फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे से 1972 में साउंड रिकॉर्डिंग कोर्स में गोल्ड मेडलिस्ट हैं. इन्होंने अपने दौर के सबसे बेहतरीन लोगों जैसे देव आनंद, विजय आनंद, चेतन आनंद, बी नरसिंहराव (तेलुगु), सिद्धार्थ काक, गिरीश कर्नाड, ए.के. बिर और कई लोगों के साथ काम किया है. इन्होंने डिजिटल प्लेटफॉर्म के लिए चार किताबें लिखीं और प्रकाशित कर चुके हैं. 2011 और 2014 में पहले भी दो बार राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड के निर्णायक मंडल में रह चुके हैं. सीबीएफसी में परीक्षक भी रह चुके हैं. इन्हें 2017 में सर्वश्रेष्ठ साउंड इंजीनियर के लिए दादा साहेब फालके फिल्म फाउंडेशन अवार्ड भी प्राप्त हो चुका है.

In a career spanning five decades, Arunoday Sharma has been the audiographer for numerous feature films, documentaries and thousands of television episodes. He completed his sound recording course with a gold medal in 1972 from the Film & Television Institute of India, Pune. He worked with the best professionals of their time such as Dev Anand, Vijay Anand, Chetan Anand, B Narsingrao (Telugu), Siddharth Kak, Girish Karnad, A. K. Bir, and others. He has produced and directed few educational documentaries. He has authored and published four books on digital platforms. He has been

a National Film Awards jury previously too, in 2011 and 2014. He is also an examiner with the CBFC. He is a recipient of 'Dadasaheb Phalke Film Foundation Award' for 'Best Sound Engineer' in 2017.

कोंदापानेनि उमामहेश्वर राव (सदस्य) Kondapaneni Umamaheshwar Rao (Member)

कोंदापानेनि उमामहेश्वर राव फिल्म पत्रकार, लेखक, निर्माता, और रामोजी फिल्म सिटी हैदराबाद के व्यवसायिक सलाहकार हैं. इन्होंने कई फिल्म पत्रिकाओं के लिए काम किया है जैसे सितारा, ज्योति चित्र, सिनेमा रंजनी, मूवी मार्केट. बतौर फ्रीलांसर छह साल इंडीवी चैनल और हैदराबाद के लिए काम किया और 200 से ज्यादा फिल्मों के जनसंपर्क अधिकारी रहे. बतौर लेखक इन्होंने जयश्री, ज्योति, और कृष्णा जैसी चर्चित पत्रिकाओं में लघु कथाएं लिखी हैं. हैदराबाद फिल्म प्रमाणन बोर्ड के तीन बार सदस्य रहे और आंध्र प्रदेश राज्य के नंदी फिल्म अवार्ड्स के लिए 2005, 2009, 2013 और 2014 में निर्णायक मंडल सदस्य बने. 2016 में क्षेत्रीय निर्णायक समिति —फीचर फिल्म अवार्ड (नॉर्थ पैनल) के सदस्य भी रहे हैं. वह अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव 2017 के भी निर्णायक मंडल के सदस्य रहे हैं.

Kondapaneni Umamaheshwar Rao is a film journalist, writer, producer and a business consultant with Ramoji Film City, Hyderabad. He has worked with different film magazines such as 'Sitar', 'Jyothi Chitra', 'Cinema Ranjani', 'Movie Market', etc. He has also worked as a freelancer in ETV Chennai and Hyderabad for six years and as a P.R.O. for over 200 films. As a writer, he has written many short stories for popular Telugu magazines 'Jayasri', 'Jyothi' and 'Krishna Patrika'. He has been a member of Censor Board of Film Certification, Hyderabad thrice; a Jury Member for State 'Nandi' Film Awards in 2005, 2009, 2013 and 2014; and a member of the National Film Awards (North Panel) in 2016. He has also been a jury member of the International Children's Film Festival, 2017.



डॉ विनोद मंकारा (सदस्य) Dr Vinod Mankara (Member)

डॉ विनोद मंकारा, एक फिल्मकार और लेखक हैं जो केरल से ताल्लुक रखते हैं. इन्होंने कई सम्मान हासिल किए हैं जिसमें राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड, आठ केरल राज्य सम्मान, दो केरल कलामंडलम सम्मान और सात केरल फिल्म आलोचक सम्मान शामिल हैं. इन्होंने मलयालम, संस्कृत और तमिल भाषा में छह फीचर फिल्में बनाई हैं. इन्होंने 600 से ज्यादा वृत्तचित्र बनाए हैं जिनका प्रसारण अलग-अलग चैनलों पर हो चुका है. इन्होंने छह किताबें और विभिन्न प्रकाशकों के लिए 2000 से ज्यादा लेख लिखे हैं. इनकी बनाई — प्रियामनासम — विश्व की तीसरी संस्कृत फिल्म है जिससे 2017 में भारतीय पैनारोमा की शुरुआत की गई थी और जिसे राष्ट्रीय फिल्म सम्मान प्राप्त हुआ है. वह कई राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव और पुरस्कार समिति के निर्णायक मंडल के सदस्य रह चुके हैं.

Dr Vinod Mankara is a filmmaker and writer from Kerala. He has won multiple awards including the National Film Awards, eight Kerala state awards, two Prestigious Kerala Kalamandalam Awards and seven Kerala Film Critics' Awards and many others. He has done six feature films in Malayalam, Sanskrit and Tamil languages. He has over 600 documentaries to his credit, most of them telecast on various channels. He has also written six books and more than 2000 articles in various

publications. His film 'Priyamanasam', the third Sanskrit film of the world, was the opening film in the Indian panorama in 2017 and bagged a National Film Award. He has been a jury member for many national and international film festivals and award committees.

सरन (सदस्य) Saran (Member)

सरन (के. वी. सर्वानन) तमिल फिल्म उद्योग में एक निर्देशक हैं. अपने पहली फिल्म काधल मनन्न (1998) के निर्देशन से पहले वे चर्चित निर्देशक के. बालचंद्र के सहायक रहे हैं. वह अब तक एक दर्जन से ज्यादा फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं, इसमें उनकी दो सबसे सफल फिल्में जेमिनी और वसूल राजा एमबीबीएस है, जिसमें कमल हासन ने मुख्य भूमिका निभाई थी. इस फिल्म का हिंदी रीमेक मुन्नाभाई एमबीबीएस भी अपनी सफलता के झंडे गाड़ चुका है. इनकी अन्य फिल्मों में अमरकालम, पार्थेन रसिदेन, अल्ली अर्जुना, जे जे. अट्टागामस, इधया थिरुदन, वट्टारम, मोधी विलायादु, आसल, आयिराथिल इरुवर, और मार्केट राजा एमबीबीएस शामिल हैं. इनकी फिल्म अपनी तकनीकी खूबी, बेहतरीन शॉट्स और शानदार संवादों के लिए जानी जाती है.

Saran (K.V. Saravanan) is a director in the Tamil film industry. He started by assisted celebrated director K. Balachander, before making his directorial debut with 'Kaadhal Mannan' (1998). He has so far directed over a dozen Tamil films, including two of his most successful films 'Gemini' and 'Vasool Raja MBBS', which was a remake of the Hindi blockbuster 'Munnaabhai MBBS' and starred Kamal Haasan. His other films include 'Amrkalam', 'Parthen Rasithen', 'Alli Arjuna', 'Jay Jay', 'Attagasam', 'Idhaya Thirudan', 'Vattaram', 'Modhi Vilayadu', 'Aasal', 'Aayirathil Irugar' and 'Market Raja MBBS'. His films are appreciated for their technical excellence, innovative shots, and punchy witty dialogues. He is now working on his eleventh film. He has also launched his own production house Gemini Productions.



संदीप पम्पल्ली (सदस्य) Sandeep Pampally (Member)

लेखक, निर्देशक संदीप पम्पल्ली की फिल्म सिंजर (2018) को निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रारंभिक फिल्म और जसरी भाषा की सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय अवार्ड हासिल किए हैं. इनकी लघु फिल्म लॉरी गर्ल और टूबा को यूएनएफएल अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल, जर्मनी में सबसे ज्यादा चर्चित फिल्म के लिए वोट किया गया था. इन्होंने काफी वक्त तक कालीकट रेडियो में बतौर बाल कलाकार काम किया. इनके दो लघु कथा संग्रह गौरामिकल और उम्मुकुलुसुविन्ते अम्मिटुकल और एकल अभिनय संग्रह छप्पा ध बॉर्डर परामु और सिंजर — स्क्रिप्ट बुक प्रकाशित हो चुके हैं. इनके नाम करीब 30 से ज्यादा सम्मान हैं जिसमें कन्नूर फिल्म चौबर् अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल (2011-2012) में सर्वश्रेष्ठ निर्देशन, लघु फिल्म लॉरी गर्ल के लिए 2013 में फिल्म समीक्षक, 2014 में लघु फिल्म लड्डम के लिए केनेडा में अंतर्राष्ट्रीय ग्लोबल वॉइस अवार्ड शामिल है.

Writer and director Sandeep Pampally's film 'Sinjar' (2018) won two National Film Awards – Best Debut Film of a Director and Best Feature Film in Jasari language. His short films, 'Lorry Girl' and 'Tooba', were voted most popular at the Viewster International Film Festival, Germany. He has been a child actor in All India Radio, Calicut for a long time. He also has two art exhibitions to his credit. He has published two short story collections, 'Gowramikal' and 'Ummukuluvinte Ammitukal'; one-act play collection 'Chappa/Border Paramu', and 'Sinjar – Script Book'. He has won about 30 awards/recognitions including Best Director Award at Kannur Film Chamber International Film Festival (2011 & 2012); a Critic Award for his short 'Lorry Girl' (2013); the International Global Voice Award in Canada for his short 'Laadam' (2014).

फीचर फिल्म ज्यूरी | दक्षिण- II पैनल

FEATURE FILMS JURY | SOUTH-II PANEL



सुभाष सहगल (अध्यक्ष) Subhash Sehgal (Chairperson)

सुभाष सहगल फिल्म संपादक हैं, इनके नाम करीब 250 से अधिक फिल्मों में हैं, इनकी कुछ चर्चित फिल्मों में वारिस, इजाजत, लेकिन, तेरी मेहरबानियां, रोमांस, अरमान, सलमा, बादल, और एक चादर मैली सी (जिसके लिए इन्हें सर्वश्रेष्ठ संपादन का फिल्म फेयर अवार्ड मिला) शामिल हैं। इनकी तीन पंजाबी फिल्म – छन्न परदेसी, माधी दा दीवा, और काछेहारी ने क्रम से राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड जीते, इन्हें आठ बार केरला स्टेट अवार्ड से नवाजा जा चुका है, एफटीआईआई से गोल्ड मेडलिस्ट रह चुके सुभाष ने कई चर्चित टीवी सीरियल्स के लिए संपादन का काम किया है, जिसमें रामायण, मिर्जा गालिब, विक्रम बेताल, दादा दादी की कहानियां, श्री कृष्णा शामिल हैं, इन्होंने हिंदी फिल्म प्यार कोई खेल नहीं (1999) और यारा सिली सिली (2016) का निर्देशन किया दूरदर्शन के लिए सीरियल एक कहानी और मिली का निर्माण किया, इनके 15 कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

Subhash Sehgal is a film editor who has worked in as many as 250 films. Some of his well-known films include 'Waaris', 'Ijazat', 'Lekin', 'Teri Meharbanian', 'Romance', 'Armaan', 'Salma', 'Baadal' and 'Ek Chaddar Maili Si', which won him a Filmfare Award for Best Editing. Three of his Punjabi films – 'Chann Pardesi', 'Madhi Da Deewa', and 'Kachehari' – won National Film Award consecutively. He has also won eight Kerala State awards among others. A gold medalist from FTII Pune, he has worked as an editor for popular TV series such as 'Ramayan', 'Mirza Ghalib', 'Vikram Betaal', 'Dada Dadi Ki Kahanian', 'Shri Krishna', etc. He has directed Hindi films 'Pyar Koi Khel Nahin' (1999) and 'Yaara Silly Silly' (2016) and produced a serial 'Ek Kahani Aur Mili'. He has written 15 poetry books.

he has worked as an editor for popular TV series such as 'Ramayan', 'Mirza Ghalib', 'Vikram Betaal', 'Dada Dadi Ki Kahanian', 'Shri Krishna', etc. He has directed Hindi films 'Pyar Koi Khel Nahin' (1999) and 'Yaara Silly Silly' (2016) and produced a serial 'Ek Kahani Aur Mili'. He has written 15 poetry books.

प्रशांत नाइक (सदस्य) Prashant Naik (Member)

प्रशांत नाइक फिल्म संपादक और मुंबई में स्थापित फिल्म प्रशिक्षण संस्थान विसलिंग वुड्स इंटरनेशनल के फिल्म संपादन विभाग के प्रमुख हैं, इन्होंने एफटीआईआई पुणे से 1991 में फिल्म संपादन में विशेषज्ञता के साथ स्नातक किया, इनकी एफटीआईआई डिप्लोमा फिल्म पुनर्वृत्ति को 1992 की सर्वश्रेष्ठ लघु काल्पनिक फिल्म के राष्ट्रीय अवार्ड मिला, इन्हें 2005 एक और गैर-काल्पनिक फिल्म हारवेस्ट ऑफ हंगर के लिए राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड हासिल हुआ, इन्होंने कई कॉरपोरेट, विज्ञापन, प्रचार, वृत्तचित्र और फीचर फिल्म का संपादन किया है, इनकी फिल्मों में आई एम कलाम, दास कैपिटल, ए सिटी ऑफ स्लेव्स, शोरगुल, गुहलक्ष्मी, दि अवेकनिंग (सभी हिंदी भाषा में) और शून्य स्वरूपा (उडिया), सप्तपदी (गुजराती), डैड होल्ड माय हैंड्स (इंग्लिश), और हाल की फिल्म सनावीवी (मराठी) और एक वेब सीरीज बीहड़ का बागी शामिल है।

Prashant Naik is a film editor and Head of the Editing Department at Whistling Woods International, a Mumbai-based film training institute. He graduated from FTII, Pune in 1991 with specialisation in editing. His FTII diploma film 'Punaravritti' won him a National Film Award for Best Short Fiction in 1992. Later, he won another National Award for Best Editing for the non-feature film 'Harvest of Hunger' in 2005. He has edited many corporate films, ad films, promotional films and documentaries and feature films. Some of his feature films include 'I Am Kalam', 'Das Capital: A City of Slaves', 'Shorgul', 'Grihalakshmi: The Awakening' (all in Hindi) and 'Shunya Swarupa' (Odia), 'Saptapadi' (Gujarati), 'Dad Hold My Hands' (English), and most recently 'Sanaviivi' (Marathi, Unreleased) and a web series titled as 'Beehad Ka Baaghi'.



निधि प्रसाद (सदस्य) Nidhi Prasad (Member)

निधि प्रसाद निर्देशक, पटकथा लेखक, एजिक्यूटिव प्रोड्यूसर और कार्टूनिस्ट हैं, इन्होंने अपने जन्मे जमाए काम और पारिवारिक व्यवसाय के बजाये सिनेमा के जुनून को चुना, हैदराबाद के अन्नपूर्णा स्टूडियो में काम करने से पहले इनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म निधि ने इतनी तारीफ बटोरी कि इन्हे निधि प्रसाद के नाम से जाना जाने लगा, इनकी अन्य फिल्मों में होली और प्रभु देवा, राजेन्द्र प्रसाद, अंकिता और किरण राठौड़ जैसे कलाकारों से सजी फिल्म अंदारु डोंगले डोरिकिथय शामिल है, इनकी फिल्म भाग्यलक्ष्मी बंपर ड्रॉ, और माइकल मदाना कामराजू पूरी तरह से लोकप्रिय फिल्म थी, हाल ही में आई इनकी फिल्म वु पे कु हा (वुल्लो पेल्लिकि कुक्काला हादाविदि) राजेन्द्र प्रसाद के साथ इनकी तीसरी फिल्म है, वर्तमान में वह हिंदी सिनेमा के लिए स्क्रिप्ट लिख रहे हैं।

Nidhi Prasad is a director, scriptwriter, executive producer and cartoonist. He gave up a prolific job career and family business to pursue his passion for cinema. He worked with the Annapurna Studios, Hyderabad, before making his directorial debut with 'Nidhi', which earned him accolades and recognised thereon as "Nidhi" Prasad. His other films include 'Holi' and 'Andaru Dongale Dorikithay' starring choreographer Prabhu Deva and Rajendra Prasad, Ankiitha and Kiran Rathod. His other films such as 'Bhagyalakshmi Bumper Draw' starring Rajendra Prasad and 'Michael Madana Kamaraju', starring Prabhu Deva, Srikanth, Sunil and Charmy, were complete mass entertainers. His most recent film 'Vu. Pe. Ku. Ha' (Vullo Pelliki Kukkala Hadavidi) marked his third collaboration with actor Rajendra Prasad. He is currently working on scripts to make his directorial debut in Bollywood.

रथन्जा (सदस्य) Rathnaja (Member)

रथन्जा कृषिविशेषज्ञ, डेयरी फार्मर, उदयान विशेषज्ञ होने के साथ साथ कन्नड़ फिल्म उद्योग में निर्देशक, लेखक और निर्माता भी है, इनकी पहली फिल्म नेनापिराली ने 2005 में पांच कन्नड़ राज्य अवार्ड और दक्षिण फिल्म फेयर अवार्ड जीता था, इनकी चर्चित फिल्मों में होंगांशु (2008), प्रीमिज्म (2010) और प्रीथिवल्ली सहजा (2016) शामिल हैं, वह कर्नाटक राज्य फिल्म अवार्ड और बंगलुरु अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल के निर्णायक मंडल में रह चुके हैं, उन्हें एक विकासशील कृषक और उच्च दुग्ध उत्पादक के तौर पर जिला स्तर पर सम्मान हासिल हो चुका है, इन्होंने अपनी कृषक गतिविधि के लिए प्राकृतिक खेती की अवधारणा को अपनाया है, एक पशु और पर्यावरण प्रेमी होने की वजह से वो कर्नाटक वन विभाग के द्वारा आयोजित की गई हाथी और बाघों की गणना में भी हिस्सा ले चुके हैं।

Rathnaja is an agriculturist, dairy farmer, horticulturist as well as a director, writer, producer in the Kannada film industry. His debut feature film 'Nenapirali' (2005) won five Karnataka State Awards and Filmfare South Awards. He has written and directed critically acclaimed movies such as 'Honganasu' (2008), 'Premism' (2010) and 'Preethiyalli Sahaja' (2016). He has been a jury member for Karnataka State Film Awards and for Bangalore International Film Festival. As an agriculturist, he has been acknowledged as a progressive farmer and the highest milk producer at the district level. He has adapted the natural farming concept for his agricultural activities. As an environment and animal lover, he has participated in the elephant and tiger census organised by the Karnataka Forest Department.



राजेंद्र प्रसाद (सदस्य) Rajendra Prasad (Member)

राजेंद्र प्रसाद, हैदराबाद से ताल्लुक रखने वाले फिल्मकार हैं जो भारतीय फिल्म एवं टेलिविजन संस्थान से स्नातक है, इन्होंने हिंदी, तेलुगू, तमिल, अंग्रेजी, पश्चिम और भोजपुरी समेत दर्जनों फिल्मों में छायांकन किया है, ओस्मानिया यूनिवर्सिटी से विज्ञान और मुंबई की लॉ यूनिवर्सिटी से स्नातक प्रसाद ने 1995 में अपनी प्रोडक्शन कंपनी शुरू की जिसका नाम अमैच्योर आर्टिस्ट्स है, तब से लेकर अब तक वह इस बैनर तले कई फिल्मों का निर्माण और निर्देशन कर चुके हैं जिसमें तीन अंग्रेजी फिल्में दू ऑल लाइट्स, नो स्टार्स (2016), रेसिड्यू- वेयर द टूथ लाइज (2005) और मैन, वुमैन एंड द माउज (2000) और एक तेलुगू फिल्म दू निरंतरम (1995) शामिल हैं, उनके द्वारा बनाई गईं तमाम फिल्मों में लेखन और छायांकन भी उन्होंने खुद किया।

Rajendra Prasad is a filmmaker from Hyderabad and a graduate of the Film and Television Institute of India (FTII), Pune. He has cinematographed over a dozen films in Hindi, Telugu, Tamil, English, Persian and Bhojpuri. A Science graduate from Osmania University and graduate in Law from the University of Mumbai, he founded his own production company, Amateur Artists, in 1995. Since then he has produced and directed films under his own banner, which include three English films – 'All Lights, No Stars' (2016), 'Residue: Where The Truth Lies' (2005), and 'Man, Woman and The Mouse' (2000) – and a Telugu film, 'Nirantar' (1995). He is the writer and cinematographer of all the films he makes.

फीचर फिल्म ज्युरी | पश्चिम पैनल

FEATURE FILMS JURY | WEST PANEL



सी. उमामहेश्वर राव (अध्यक्ष) C. Umamaheswara Rao (Chairperson)

सी. उमामहेश्वर राव एक निर्देशक, पटकथा लेखक, सौंदर्यशास्त्री और निर्माता हैं जो मुख्यतौर पर तेलुगु सिनेमा से जुड़े हैं। इनकी फिल्म – अंकुरम दू मानवाधिकार और नागरिक स्वतंत्रता पर बनाई गई अपने आप में पहली अनोखी फिल्म है जिसे 1992 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और 1993 में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का आंध्रप्रदेश राज्य सम्मान दिया गया। उनकी फिल्म दू श्रीकरम दू बचाव पक्ष के वकीलों द्वारा महिला पीड़ित के साथ असंवेदनशील जवाब-तलब से लैस कोर्ट की कार्रवाई दिखाती है जिसे 1996 में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का आंध्रप्रदेश राज्य सम्मान दिया गया। इनकी अन्य कृति में है दू रथी, भारतीय महिलाओं के शोषण पर वृत्तचित्र, लोकप्रिय टीवी सीरियल – हिमाबिंदू, मिस्टर ब्रह्मानंदम, टेलीफिल्म हंससफर (हिंदी) और मछू बोम्मा समेत कई विज्ञापन और लघु फिल्मों हैं। इन्होंने फिल्म सौंदर्य पर 15 एपिसोड बनाए

C. Umamaheswara Rao is a director, screenwriter, aesthetician, and producer associated primarily with Telugu cinema. His film 'Ankuram' (1993), the first of its kind on human rights and civil liberties, won a National Film Award and Andhra Pradesh State Award for Best Director. His 'Srikaaram' (1996), based on hazardous in-camera trial against a woman rape victim by defence lawyers, won Andhra Pradesh State Award for Best Feature Film in 1996. His other works include 'Sthree',

a documentary on the exploitation faced by Indian woman; popular TV serials such as 'Himabindu', 'Mr. Brahmanandam'; Telefilms like 'Hamsafar' (Hindi) and 'Manchu Bomma', and many shorts and ad films. He did 15 episodes on film aesthetics, which have been shown on many TV channels. He has recently directed another Telugu movie 'Itlu Amma'.

क्रिस्टोफर डाल्टन (सदस्य) Christopher Dalton (Member)

क्रिस्टोफर डाल्टन फिल्म आलोचक और निबंधकार हैं। करीब एक दशक तक वह – रेडिफ.कॉम, द फिल्म स्ट्रीट जर्नल, डियर सिनेमा, अपर स्टॉल, डेक्कन क्रॉनिकल और द एशियन एज – के लिए फिल्म समीक्षा लिखते रहे। पत्रकारिता का अपना सफर उन्होंने दू द हिंदू के साथ शुरू किया, फिर वह दू रागा दू रॉक दू के सहायक संपादक बने और आगे चलकर वह दू द टाइम्स ऑफ इंडिया दू में संगीत पर लिखने लगे। वर्तमान में वह दू सिनेमेटिक इल्युजन्स और जर्नल ऑफ इंडियन सिनेमा – के संपादक हैं। वह सिनेमा सोसायटी ऑफ इंडिया, हाउज ऑफ इल्युजन्स और द फिल्म क्रिटिक्स सर्किल ऑफ इंडिया के संस्थापक हैं। वह महात्मा उत्तराखंड के कौतिक अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के सलाहकार मंडल के सदस्य, असम के चलचित्र राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के कला निदेशक हैं।

Christopher Dalton is a film critic/essayist. For almost a decade, he reviewed films for publications such as 'Rediff.com', 'The Film Street Journal', 'Dear Cinema', 'Upper Stall', 'Deccan Chronicle', and 'The Asian Age'. He began his journalistic odyssey with 'The Hindu', became the associate-editor of 'Raga To Rock', and later wrote on music for 'The Times of India'. He is presently editor of 'Cinematic Illusions' and the 'Journal of Indian Cinema'. He's also the founder of the Cinema Society of India, House of Illusions, and the Film Critics Circle of India. He is on the advisory board of the Kautik International Film Festival (Uttarakhand), and is the artistic director of the Chalachitram National Film Festival (Assam). He has served as a member of several international film juries.



जी.के. देसाई (सदस्य) G.K. Desai (Member)

जी.के. देसाई निर्माता, निर्देशक, लेखक और अदाकार हैं। इनकी हॉलीवुड फिल्म दि ऑड (2008) को बेवर्ली हिल्स फिल्म फेस्टिवल 2010 में प्रदर्शित किया गया। इनके प्रोडक्शन की पहली लघु फिल्म दि ऑपॉर्तुनिस्ट, जापान के कोन-केन फिल्म फेस्टिवल में चुनी जाने वाली अकेली भारतीय फिल्म थी। इनकी दूसरी 14 मिनट लंबी लघु फिल्म गाली को 60 मिलियन व्यू मिले और वहीं लघु फिल्म ए डॉग को 15 मिलियन व्यू मिले। इनकी हाल ही में आए चौथे लघु फिल्म प्रोडक्शन एंड गांधी गोज मिसिंग को विटेल, फ्रांस में सर्वश्रेष्ठ फिल्म के ले मेयर का गोल्ड मेडल हासिल हुआ। इनकी वेब सीरीज गोटे जाम 2016 में भारत में ऑनलाइन रिलीज होने वाली पहली वेबसीरीज थी। बतौर अभिनेता वह मॉस्को अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में शिरकत कर चुके हैं।

G.K. Desai is a film producer, actor, writer and director. His Hollywood film 'The Ode' (2008) was screened at the Beverly Hills Film Festival 2010. His debut short film production 'The Opportunist' was the sole Indian entry at the 5th Con-Can Movie Festival, Tokyo, Japan. His second and third shorts – 'Gaali' (14min) and 'A Dog' – have garnered 60 million and 15 million views online respectively. His 4th short 'And Gandhi Goes Missing...' won the Mayor's Gold Medal for the Best Film in Vittel, France. His 'Gote Jam' was among the 1st web series to release online in India in 2016. An actor, he attended the 31st Moscow International Film Festival 2009 and Festival de Festivals, St. Petersburg 2009 for his film 'Fashion'. He is working on his debut English feature.

द्यानेश मोघे (सदस्य) Dnyanesh Moghe (Member)

द्यानेश मोघे कोंकणी फिल्मों के निर्देशक और सिनेमेटोग्राफर हैं। इन्होंने थियेटर आर्ट्स और फिल्म एवं वीडियो प्रोडक्शन में डिप्लोमा किया है। बतौर निर्देशक इनकी कोंकणी फिल्म कात्याल्लेम फुल 1997 का स्टेट अवार्ड जीत चुकी है। इसके अलावा, इट्स माय लाइफ, जुजारी, दिगंत (2012 की स्टेट अवार्ड विजेता) फिल्मों हैं। वहीं सिनेमेटोग्राफर के तौर पर इनके नाम कई वृत्तचित्र हैं, जिसमें, रनमाले (गोआ के दर्शाने वाली लोक कला पर आधारित), पोएट बोरकर स्पीकिंग (चर्चित मराठी कवि बी.बी.बोरकर के जीवन पर आधारित) और कर्मयोगी (परमाणु वैज्ञानिक डॉ अनिल काकोडकर के जीवन पर आधारित) शामिल है। वह दो कॉरपोरेट वृत्तचित्रों के लिए भी काम कर चुके हैं।

Dnyanesh Moghe is a Konkani film director and cinematographer. He has a Diploma in Theatre Arts and another in Films and Video Production. His Konkani films as a director include 'Kantyatlem Full', winner of the State Award in 1997; 'It's My Life' (2002), 'Zuzari' (2007), 'Digant', winner of State Award in 2012. His filmography as a cinematographer includes films such as 'Zuzari' (2008) and 'Digant' (2012). As a cinematographer, he also has to his credit a number of documentaries, including 'Ranmale' (2015), based on a folk form prevailing in Goa; 'Poet Borkar Speaking' (2010) on the life of noted Marathi poet B.B. Borkar; and 'Karmayogi' (2008) on the life of nuclear scientist Dr. Anil Kakodkar. He has also worked on two corporate documentaries.



संजय पांडुरंग खन्जोडे (सदस्य) Sanjay Pandurang Khanzode (Member)

संजय पांडुरंग खन्जोडे एक स्वतंत्र सिनेमेटोग्राफर हैं। मराठी, हिंदी, मैथिली भाषा में करीब 25 फिल्मों शूट कर चुके हैं। इन्होंने भारतीय और अंतरराष्ट्रीय टेलीविजन के लिए 3000 से ज्यादा धारावाहिक और कई विज्ञापन फिल्म, लघु फिल्म, वृत्तचित्र, कॉरपोरेट फिल्म, म्यूजिक अल्बम शूट किये हैं। इनकी मराठी फीचर फिल्म पार्टु को 2016 में पुणे के अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ सिनेमेटोग्राफी के लिए नामांकित किया गया। इन्होंने सिनेमेटोग्राफी में डिप्लोमा हासिल किया और वेस्टर्न इंडिया सिनेमेटोग्राफर्स असोसिएशन के सदस्य भी हैं। इनके फिल्मी सफर की शुरुआत 1990 में शानदार सिनेमेटोग्राफर स्वर्गीय देबु देओधर के सानिध्य में एक सहायक केमरामेन के तौर पर हुई। आगे चर्चित सिनेमेटोग्राफर ईश्वर बिद्री, रुस्सी बिल्लिमोरिया और पियुष शाह के साथ भी इन्होंने काफी वक्त काम किया।

Sanjay Pandurang Khanzode is an independent cinematographer and has shot more than 25 feature films in Marathi, Hindi and Maithili Languages. He has also cinematographed over 3000 episodes for Indian and international television channels, many Ad films, short films, documentaries, corporate films, music albums, etc. His Marathi feature film 'Partu' got nominated in the 'Best cinematography' category in the Pune International Film Festival in 2016. Currently, he is working on two Hindi, one Marathi and one Hollywood feature film. He has a diploma in cinematography and is a member of the Western India Cinematographers Association. He started out as an assistant to ace cinematographer Late Debu Deodhar in 1990, and spent his formative years with acclaimed cinematographers Ishwar Bidri, Russi Billimoria and Piyush Shah.

फ़िल्म अनुकूल प्रदेश निर्णायक समिति

FILM FRIENDLY STATE JURY COMMITTEE



शाजी नीलांकतन करुण (अध्यक्ष) Shaji Neelakantan Karun (Chairperson)

शाजी नीलांकतन करुण फिल्म निर्देशक और सिनेमेटोग्राफर हैं। इन्होंने अपनी पहली फिल्म पिरावी के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का राष्ट्रीय अवार्ड प्राप्त हुआ था। और साथ ही इस फिल्म ने कान्स फिल्म फेस्टिवल में कैमरा डी'ऑर – मेंशन डी'होनोर भी हासिल किया था। इनके निर्देशन में बनी तीन फिल्में पिरावी, स्वाहम और वानप्रस्थम कान्स फिल्म फेस्टिवल में जगह बना चुकी हैं। स्वाहम और वानप्रस्थम के लिए इन्होंने सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का केरला स्टेट अवार्ड भी मिल चुका है। वह केरल राज्य चलचित्र अकादमी के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। ये भारत में टीवी और फिल्म की पहली अकादमी है। वह इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ केरल के भी कार्यकारी अध्यक्ष (1998–2001) थे। वह केरल राज्य फिल्म विकास निगम के अध्यक्ष हैं। इन्होंने पदम श्री (2011) और फ्रेंच सम्मान भी प्राप्त है।

Shaji Neelakantan Karun is a film director and cinematographer. He won the National Award for Best Director for his debut film 'Piravi' (1988) which also won the Caméra d'Or – Mention d'honneur at the Cannes Film Festival 1989. Three of his directorial films 'Piravi', 'Swaham' (1994) and 'Vanaprastham' (1999) made it to the Cannes film festival. He also won two Kerala State Film Awards for Best Director for 'Swaham' and 'Vanaprastham'. He was the chairman of the Kerala State

Chalachitra Academy, the first academy for film and TV in India, and was also the executive chairman (1998 to 2001) of the International Film Festival of Kerala (IFFK). Currently, he is the Chairman of Kerala State Film Development Corporation. He is a recipient of the Padma Shri (2011) and a French honour.

मंजु बोराह (सदस्य) Manju Borah's (Member)

असम में जन्मी मंजु बोराह की फिल्मों उत्तर पूर्वी क्षेत्र की संस्कृति और व्यक्ति तथा समाज पर उसके असर को दिखाती हैं। 1999 में उनकी पहली फिल्म बाईभाब ने राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड (विशेष उल्लेख) जीता। उनके द्वारा बनाई गई अन्य फिल्मों जो राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुकी हैं, वो हैं दू 2003 की आकाशीतोरार कोठारे (सर्वश्रेष्ठ असमी फीचर फिल्म और सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका), 2008 की आई कोट नाई (राष्ट्रीय अखंडता पर आधारित सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए नरगिस दत्त अवार्ड), 2012 की को याद (सर्वश्रेष्ठ मिशिंग फिल्म और सर्वश्रेष्ठ छायांकन), 2015 की दाउ हुदुनी मेथाई (सर्वश्रेष्ठ बोडो फिल्म)। उनकी फिल्मों दू लाज, जॉयमती, दाउ हुदुनी मेथाई, और इन द लैंड ऑफ पॉयजन विमेन दू को इफकी के भारतीय पैनारोमा के लिए चयनित किया गया। कई सम्मान और फेलोशिप जीत चुकीं मंजु राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों के निर्णायक मंडल में भी रह चुकी हैं। उनकी असम भाषा में लघु कहानियों की तीन किताबें और एक उपन्यास प्रकाशित हो चुका है।

Born in Assam, **Manju Borah's** films explore the North East region's culture and its impact on the person and society as a whole. Her debut feature 'Baibhab' (1999) won a National Film Awards (Special Mention). Her other National Award-winning films include 'Aakashitorar Kothare' (2003, Best Feature Film in Assamese & Best Female Playback Singer); 'Aai Kot Nai' (2008, Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration); 'Ko: yad' (2012, Best Mishing Film and Best Cinematography); 'Dau Huduni Methai' (2015, Best Bodo Film). Her films 'Laaz', 'Joymati', 'Dau Huduni Methai' and 'In the Land of Poison Women' were selected in the Indian Panorama, IFFI. Recipient of many accolades and fellowship, she has been serving as a jury at national and international film festivals. She is also a writer who has published three books of short story collections and a novel in Assamese.



रवि कोट्टारकारा (सदस्य) Ravi Kottarakara (Member)

रवि कोट्टारकारा फिल्म निर्माता और गणेश पिक्चर्स, गणेश प्रोडक्शन्स के कर्ता धर्ता हैं। जयदेवी मूवीज और कोट्टारकारा फिल्म्स पुराने प्रोडक्शन हाउस में से एक हैं जिनका निर्माण इनके पिता स्व. के.पी. कोट्टारकारा ने 1956 में स्थापित किया था। इनके बैनर तले मलयालम, कन्नड़, और तमिल भाषा में 78 से ज्यादा फिल्मों का निर्माण हो चुका है जिसमें से अधिकांश विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में अवार्ड जीत चुकी हैं। वह कन्नड़ में फिल्म का लेखन और निर्देशन कर चुके हैं। वह फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया के महासचिव और पूर्व अध्यक्ष भी रह चुके हैं। भारतीय सिनेमा के 100 साल पूरे होने पर 2013 में चौन्ई में हुए कार्यक्रम में इनका अहम योगदान था।

Ravi Kottarakara is a film producer and owner of film banners such as Ganesh Pictures, Ganesh Productions, Jaidevi Movies, and Kottarakara Films, which is one of the oldest film production houses started by his father late K.P. Kottarakara in 1956. His banners have produced 78 films in Malayalam, Kannada and Tamil languages, many of which have entered various national and international film festivals and won awards. He has written and directed films in Kannada. He is Hony. General Secretary

of the Film Federation of India (FFI), and has been its former president. He was instrumental in organising the '100 years of Indian cinema' celebration in Chennai in 2013. He has been a member of jury and selection committee for many film awards and International Film Festival of India.

फिरदौसुल हसल (सदस्य) Firdausul Hasan (Member)

फिरदौसुल हसल फिल्म निर्माता और कोलकाता के प्रोडक्शन हाउस फ्रेंड्स कम्यूनिकेशन के संस्थापक हैं। इनकी फिल्म मयूराक्षी ने 2018 में बांग्ला भाषा में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय अवार्ड, सर्वश्रेष्ठ एशियन फिल्म अवार्ड और 10वें बंगलूरु इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ इंडियन सिनेमा अवार्ड हासिल किया था। वह फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष भी हैं। वह पहले ग्लोबल सिनेमा फेस्टिवल और भारत-बांग्लादेश फिल्म अवार्ड के संयोजक भी हैं। इन्होंने मदर टेरेसा मिलेनियम अवार्ड, जिया बिजनेस लीडर ऑफ द इयर, दोशोभुजा बंगाली अवार्ड जैसे कई सम्मान हासिल हुए हैं।

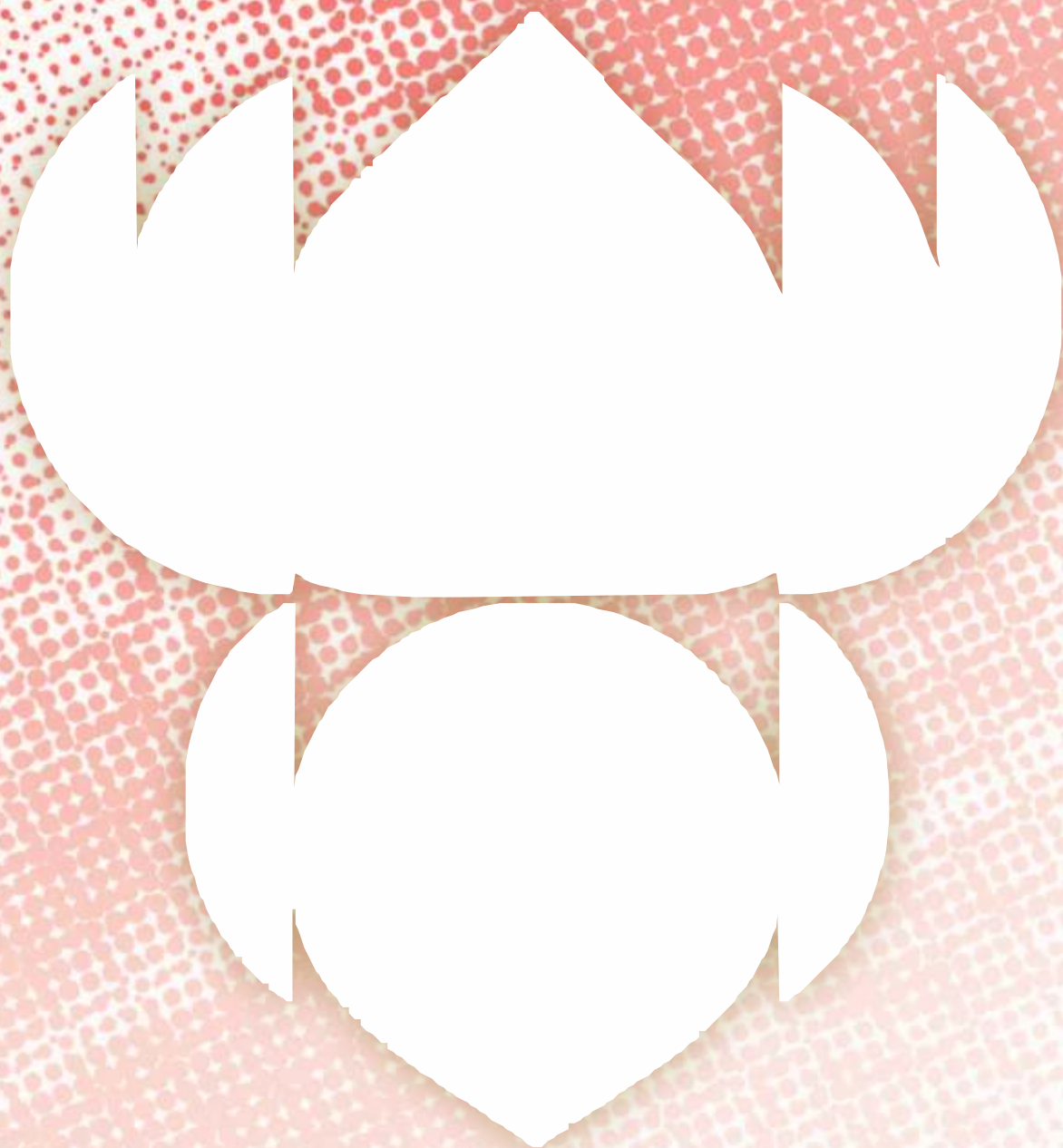
Firdausul Hasan is a film producer and owner of Kolkata-based production house Friends Communication. His film 'Mayurakshi' won the National Award for Best Feature Film in Bengali in 2018, Best Asian Film Awards and also the Best Indian Cinema Award at the 10th Bengaluru International Film Festival. He is also the President of Film Federation of India. He is also the organiser of the first Global Cinema Festival and Bharat-Bangladesh Film Awards. He is the winner of awards such as Mother Teresa Millennium Awards (2019), XIA Business Leader of the Year (2018), Doshobhuj Bangali Award (2020) among others.



अभिषेक शाह (सदस्य) Abhishek Shah (Member)

अभिषेक शाह 19 साल से भी ज्यादा समय से मुख्यधारा के रंगमंच में कलाकार, निर्देशक और लेखक के तौर पर काम कर चुके हैं। इन्होंने 2019 में आई हेल्लारो का सह-निर्माण, निर्देशन और लेखन किया था। ये पहली गुजराती फिल्म है जिसे सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय अवार्ड हासिल हुआ। वह 15 गुजराती फिल्मों के लिए कार्टिंग डायरेक्टर की भूमिका भी निभा चुके हैं जिसमें बे यार, छेल्लो दिवास, रॉग साइड राजू, करसनदास पे एंड यूज और शू थायू शामिल हैं। इसके अलावा वे गुजरात के विभिन्न प्रोडक्शन हाउस के लिए प्रोमो, टीवी कमर्शियल और अभियान के लिए लेखन किया है।

Abhishek Shah has been a writer, director, and actor with mainstream theatre for over 19 years. He wrote, directed, and co-produced 'Hellaro' (2019), the first-ever Gujarati film to win the National Award for 'Best Feature Film'. He has also been a casting director for 15 Gujarati films including 'Bey Yaar' (2014), 'Chhello Divas' (2015), 'Wrong Side Raju' (2016), 'Karsandas Pay & Use' (2017), and 'Shu Thayu' (2018). Besides that, he has been associated with writing of campaigns, TV commercials and promo films for various production houses in Gujarat.



फ़ीचर फ़िल्में
FEATURE FILMS

67^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2019

NATIONAL FILM AWARDS 2019

35 मि.मि. या बड़े गेज या डिजिटल प्रारूप में बनी किन्तु फ़िल्म प्रारूप अथवा वीडियो / डिजिटल प्रारूप में जारी किसी भी भारतीय भाषा में बनी और केन्द्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा फ़ीचर या फ़ीचरेट के रूप में प्रमाणीकृत फ़िल्म फ़ीचर फ़िल्म श्रेणी के लिए पात्र है।

Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on a film format or video/digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a feature film or featurette are eligible for feature film section.

फीचर फिल्में | एक नज़र में



- मरकर अरबीकडलिन्टे सिम्हम (मलयालम)**
 सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म
 सर्वश्रेष्ठ वेशभूषाकार
 सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफेक्ट्स
MARAKKAR-ARABIKKADALINTE-SIMHAM (Malayalam)
 Best Feature Film
 Best Costume Designer
 Best Special Effects
- हेलेन (मलयालम)**
 सर्वश्रेष्ठ मेकअप कलाकार
 निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रथम फिल्म के लिए
 इंधिरा गौधी पुरस्कार
HELEN (Malayalam)
 Indira Gandhi Award for
 Best Debut Film of a Director
 Best Make-up Artist
- महर्षि (तेलुगू)**
 लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन करने वाली
 सर्वश्रेष्ठ फिल्म
 सर्वश्रेष्ठ नृत्यकला
MAHARSHI (Telugu)
 Best Popular Film Providing
 Wholesome Entertainment
 Best Choreography
- कस्तूरी (हिन्दी)**
 सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म
KASTOORI (Hindi)
 Best Children's Film
- बहत्तर हूरें (हिन्दी)**
 सर्वश्रेष्ठ निर्देशन
BAHATTAR HOORAIN (Hindi)
 Best Direction
- ताजमल (मराठी)**
 राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म
 के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

- TAJMAL (Marathi)**
 Nargis Dutt Award for Best Feature Film
 on National Integration
- आनंदी गोपाल (मराठी)**
 सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म
 सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिजाइन
ANANDI GOPAL (Marathi)
 Best Film on Social Issues
 Best Production Design
- वाटर बरियल (मोनपा)**
 पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म
WATER BURIAL (Monpa)
 Best Film on Environment
 Conservation/Preservation
- भोंसले (हिन्दी)**
 सर्वश्रेष्ठ अभिनेता
BHONSLE (Hindi)
 Best Actor
- मणिकर्णिका— द क्वीन ऑफ ज़ांसी (हिन्दी)**
 सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री
**MANIKARNIKA-
THE QUEEN OF JHANSI (Hindi)**
 Best Actress
- पंगा (हिन्दी)**
 सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री
PANGA (Hindi)
 Best Actress
- सुपर डीलक्स (तमिल)**
 सर्वश्रेष्ठ सह—अभिनेता
SUPER DELUXE (Tamil)
 Best Supporting Actor
- द ताशकंद फाइल्स (हिन्दी)**
 सर्वश्रेष्ठ सह—अभिनेत्री
THE TASHKENT FILES (Hindi)
 Best Supporting Actress

- केडी (ए) करुप्पु दुरई (तमिल)**
 सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार
KD(A) KARUPPU DURAI (Tamil)
 Best Child Artist
- केसरी (हिन्दी)**
 सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक
KESARI (Hindi)
 Best Male Playback Singer
- बार्डो (मराठी)**
 सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका
BARDO (Marathi)
 Best Female Playback Singer
- जल्लीकट्टू (मलयालम)**
 सर्वश्रेष्ठ छायांकन
JALLIKETTU (Malayalam)
 Best Cinematography
- ज्येष्ठोपुत्रो (बांग्ला)**
 सर्वश्रेष्ठ पटकथा
 सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन
JYESHTHOPUTRO (Bengali)
 Best Screenplay
 Best Music Direction
- गुमनामी (बांग्ला)**
 सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित)
GUMNAAMI (Bengali)
 Best Screenplay
- द ताशकंद फाइल्स (हिन्दी)**
 सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद लेखक)
THE TASHKENT FILES (Hindi)
 Best Screenplay
- इयूडूह (खासी)**
 सर्वश्रेष्ठ ऑडियोग्राफी
IEWDUH (Khasi)
 Best Audiography
- त्रिज्या (मराठी)**
 सर्वश्रेष्ठ ऑडियोग्राफी

FEATURE FILMS | AT A GLANCE



- TRIJYA (Marathi)**
Best Audiography
- । **ओत्त सेरुपु साइज 7 (तमिल)**
सर्वश्रेष्ठ ऑडियोग्राफी
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
OTHTHA SERUPPU SIZE-7 (Tamil)
Best Audiography
Special Jury Award
- । **जर्सी (तेलुगू)**
सर्वश्रेष्ठ संपादन
JERSEY (Telugu)
Best Editing
- । **विस्वासम (तमिल)**
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन
VISWASAM (Tamil)
Best Music Direction
- । **कोलांबी (मलयालम)**
सर्वश्रेष्ठ गीत
KOLAAMBI (Malayalam)
Best Lyrics
- । **अवने श्रीमन्नारायण (कन्नड़)**
सर्वश्रेष्ठ एक्शन निर्देशन पुरस्कार
(स्टन्ट कोरियोग्राफी)
AVANE SRIMANNARAYANA (Kannada)
Best Action Direction Award (Stunt Choreography)
- । **रोनुवा – हू नेवर सरेंडर**
सर्वश्रेष्ठ असमिया फिल्म
RONUWA - WHO NEVER SURRENDER
Best Assamese Film
- । **गुमनामी**
सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फिल्म
GUMNAAMI
Best Bengali Film
- । **छिछोरे**
सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म
Chhichhore
Best Hindi Film
- । **अक्षि**
सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फिल्म
AKSHI
Best Kannada Film
- । **काजरो**
सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फिल्म
KAAJRO
Best Konkani Film
- । **बारडो**
सर्वश्रेष्ठ मराठी फिल्म
BARDO
Best Marathi Film
- । **कला नोट्टम**
सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्म
KALLA NOTTAM
Best Malayalam Film
- । **इगी कोना**
सर्वश्रेष्ठ मणिपुरी फिल्म
EIGI KONA
Best Manipuri Film
- । **साला बुद्धार बदला**
सर्वश्रेष्ठ ओड़िया फिल्म
SALA BUDHAR BADLA
Best Odia Film
- । **कलीरा अतीता**
सर्वश्रेष्ठ ओड़िया फिल्म
KALIRA ATITA
Best Odia Film
- । **रब दा रेडियो 2**
सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फिल्म
RAB DA RADIO 2
Best Punjabi Film
- । **असुरन**
सर्वश्रेष्ठ तमिल फिल्म
सर्वोत्तम अभिनेता
ASURAN
Best Tamil Film
Best Actor
- । **जर्सी**
सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फिल्म
JERSEY
Best Telugu Film
- । **भूलन द मेज**
सर्वश्रेष्ठ छत्तीसगढ़ी फिल्म
BHULAN THE MAZE
Best Chhattisgarhi Film
- । **छोरियां छोरों से कम नहीं होतीं**
सर्वश्रेष्ठ हरियाणवी फिल्म
CHHORIAN CHHORON SE KAM NAHI HOTI
Best Haryanvi Film
- । **इयूडूह**
सर्वश्रेष्ठ खासी फिल्म
IEWDUH
Best Khasi Film
- । **अनु रुवाद**
सर्वश्रेष्ठ मिशिंग फिल्म
ANU RUWAD
Best Mishing Film
- । **केंजीरा**
सर्वश्रेष्ठ पनिया फिल्म
KENJIRA
Best Paniya Film
- । **पिंगारा**
सर्वश्रेष्ठ तुलु फिल्म
PINGARA
Best Tulu Film



मरक्कर: अराबिकादलिनते सिम्हम
सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म

Marakkar: Arabikadalinte Simham
(Marakkar: Lion of the Arabian Sea)
Best Feature Film

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 2,50,000/-

2020 | Malayalam | 181 mins | Director: Priyadarshan | Producer: Aashirvad Cinemas | DOP: S. Thirunavukarasu
Screenplay: Priyadarshan, Ani I.V. Sasi | Editor: Aiyappan Nair M.S. | Cast: Mohanlal, Arjun Ramaswamy, Prabhu, Suniel Shetye,
Nedumudi Venu, Pranav Mohanlal, Sidique, Manju Warriar, Keerthy Suresh Kumar, Kalyani Priyadarshan, Innocent, Suhasini
Maniratnam, Ashok Selvan

कथासार - 15 वीं और 16 वीं सदी के शुरुआती दौर को दर्शाती फिल्म कुंजली मरक्कर की जिंदगी के इर्द गिर्द घूमती है, जो केरला का कुख्यात डाकू था और बाद में कालीकट के महाराज जेमोरिन की नौसेना का कमांडर बनता है। वह और उसका दल पुर्तगालियों से मसाला लूटा करते थे। जब पुर्तगाली के कैप्टन कमांडर अफोन्सो डे नोरोन्हा ने कालीकट के खिलाफ युद्ध की घोषणा की तो जेमोरिन ने कुंजली से मदद मांगी। इस युद्ध में कुंजली नोरोन्हा को मार डालता है। इस तरह से जेमोरिन और कुंजली के बीच रिश्ता गहरा हो जाता है। फिर फ्रांसिस्को दा गामा पुर्तगाली भारत का वाइसराय और आंद्रे फुरतादो दे मेंडोका नया कमांडर बनते हैं। वो धोखे से कुंजली को पकड़ लेते हैं और बाद में उसे गोआ में मौत के घाट उतार दिया जाता है।

Synopsis - Set in the late 15th and early 16th century, the biopic revolves around Kunjali Marakkar, the infamous pirate from Kerala who later became the naval commander of Zamorin, the King of Calicut. He and his band of pirates looted spices from the Portuguese, who had started trade with Cochin but wished to ultimately conquer Kerala. When Portuguese Captain Commander Afonso De Noronha declares war against Calicut, Zamorin seeks Kunjali's help. During the battle, Kunjali ends up killing Noronha. The relationship between Zamorin and Kunjali grows. But Francisco Da Gama, the then Viceroy of Portuguese India and Andre Furtado De Mendoca the new Captain Commander, manage to influence the Nobles in betraying Kunjali, who is captured, and later executed in Goa.

परिचय

प्रियदर्शन (Priyadarshan)



अपने चार दशक के कार्यकाल में चर्चित निर्देशक, निर्माता और पटकथा लेखक **प्रियदर्शन** ने 90 से ज्यादा मलयालम, तमिल, हिंदी, और तेलुगु भाषा की फिल्मों का निर्माण किया। 2012 में इन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया

गया। 2007 में इनकी तमिल फिल्म कांचीवरम ने सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय अवार्ड जीता था। इसके साथ ही इन्होंने कई केरला सम्मान हासिल किया है। वे 2017 में राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड और 2019 में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया के निर्णायक मंडल के अध्यक्ष रहे। इन्होंने 29 हिंदी फिल्मों का निर्देशन भी किया है। जिसमें विरासत, हेराफेरी, हंगामा, भूल भुलैया जैसे चर्चित फिल्मों शामिल हैं।

Film director, producer and scriptwriter **Priyadarshan** has directed over 90 films in Malayalam, Tamil, Hindi and Telugu and over 160 ad films in the last 40 years. He has directed 29 Hindi films (second highest, after David Dhawan), including 'Viraasat', 'Hera Pheri', 'Hungama', 'Bhool Bhulaya', etc. He has won a National Film Award for his 'Kanchivaram' (Best Feature, 2007) and many Kerala State honours. He headed the Jury for the National Film Awards 2017 and for the International Film Festival of India (IFFI) 2019. He was conferred the 'Padma Shri' in 2012.

PROFILE

आशीर्वाद सिनेमा (Aashirvad Cinemas)



एंथोनी पेरुमबावूर ने 2000 में **आशीर्वाद सिनेमा** की स्थापना की। वे मलयालम फिल्म जगत के एक अभिनेता, निर्माता, वितरक और फिल्म प्रदर्शक हैं। उन्होंने अपने काम की शुरुआत 1987 में मोहनलाल

के शॉफर (ड्राइवर) के तौर पर की थी। वे मल्टीप्लेक्स चौन के मालिक भी हैं और फिल्म वितरक भी हैं।

Aashirvad Cinemas was established in 2000 by Antony Perumbavoor (aka Male Joseph Antony), a film producer, distributor, cinema exhibitor and actor in Malayalam film industry. He began his career as a chauffeur to Mohanlal in 1987 and started appearing in brief roles in Malayalam films in 1990s. He also owns a multiplex chain and co-owns a film distribution company. Aashirvad Cinemas exclusively produces Mohanlal's films.

प्रशस्ति - 16वीं शताब्दी की ऐतिहासिक हस्ती कुंजल मरक्कर के शानदार विवरण और उस दौर के विभिन्न सांस्कृतिक पहलुओं, इंसानी रिश्ते, देशप्रेम और पराक्रम के नाटकीय चित्रण के लिए सम्मान

Citation - (Best Feature Film): A grand portrayal of the life of sixteenth century historic icon Kunjali Marakkar and a dramatic depiction of multicultural phenomena of the times, human relations, patriotism and valour.



हेलन

निर्देशक की पहली फ़िल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

Helen

Indira Gandhi Award for
Best Debut Film of a Director

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,25,000/-

2019 | Malayalam | 117 mins | Director: Mathukutty Xavier | Producer: Big Bang Entertainments (Noble Babu Thomas)
Screenplay: Alfred Kurian Joseph, Noble Babu Thomas, Mathukutty Xavier | DOP: Anend C Chandran | Editor: Shameer
Muhammed | Cast: Lal, Anna Ben, Noble Babu Thomas, Binu Pappu, Rony David Raj, Vineeth Sreenivasan, Aju Varghese, Bonny Mary
Mathew

कथासार - हेलन एक सामान्य बस्ती में रहने वाली लड़की है जिसने प्सू कोचिंग क्लास में दाखिला लिया है, वो एक रेस्टोरेंट में पार्ट-टाइम काम करती है, उसे उम्मीद है कि उसे एक दिन विदेश में जॉब मिल जाएगा। एक रात काम के बाद उसका मैनेजर उसे गलती से रेस्टोरेंट के फ्रीजर रूम में बंद कर देता है। उधर हेलन के घर नहीं पहुंचने पर उसके पिता पॉल की चिंता बढ़ती जाती है। पॉल पुलिस के पास जाते हैं, और वो हेलन के दोस्त अजहर के साथ मिलकर उसकी खोज में जुट जाते हैं। वहीं हेलन -18 डिग्री तापमान में खुद को जिंदा रखने का हर संभव प्रयास करती है। सर्दी के मारे उसकी नाक से खून बहने लगता है, क्या वक्त रहते लोग उसे ढूंढ पाएंगे, क्या तब तक वो खुद को जिंदा रख पाएगी ?

Synopsis - Helen, an ordinary suburban girl, attends IELTS coaching classes, works part-time at a restaurant, and hopes to land a job abroad. One night after work, her manager accidentally locks her in the restaurant's freezer room. Her father Paul starts to worry when Helen doesn't reach home. Paul approaches the police and is joined by Helen's boyfriend Azhar as they all frantically search for her. Meanwhile, Helen struggles to survive the freezing cold of -18 °C and tries everything possible to keep herself alive. She starts to get frostbite and bleed through her nose. Will she be discovered before it's too late? Till then, she must face the ultimate battle: the one for her life.

परिचय

मथुकुट्टी जेवियर (Mathukutty Xavier)



मथुकुट्टी जेवियर एक फिल्म निर्देशक हैं, हेलन इनकी पहली निर्देशित और सह-लेखन फिल्म है।

Mathukutty Xavier is a Kochi-based film director. 'Helen' is his

debut film as a director and co-writer.

PROFILE

बिग बैंग एंटरटेन्मेंट (Big Bang Entertainments)

**BIG BANG
ENTERTAINMENTS**

बिग बैंग एंटरटेन्मेंट 2015 में नोबल बाबू ने स्थापित किया था। वह एक मलयालम निर्माता, पटकथा लेखक, अभिनेता हैं। इन्होंने हे लन, अराविन्दान्ते अथिधकाल, जैकोबिन्ते,

स्वर्गराज्यम जैसी चर्चित फिल्मों में अभिनय किया है।

Big Bang Entertainments was founded in 2015 by Noble Babu Thomas, a Malayalam film producer, screenplay writer and actor. He has worked in popular movies like 'Helen', 'Aravindante Athidhikal', 'Jacobinte Swargarajyam'.

प्रशस्ति - आधी रात में एक लड़की के कोल्ड स्टोरेज में फंसने और फिर उसके पिता और प्रेमी द्वारा उसे ढूंढने की कवायद की दिलचस्प कहानी के लिए सम्मानित

Citation - An engaging way of story-telling of a young girl entrapped in a cold storage in the middle of night and the frantic struggle of her lover and father to locate her.



महर्षि

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली
सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Maharshi | Best Popular Film
Providing Wholesome Entertainment

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 2,00,000/-

2019 | Telugu | 178 mins | Director: Paidipally Vamshidhar Rao | Producer: SVC Production | Screenplay: Vamshi Paidipally, Hari, Ahishor Solomon | DOP: K.U. Mohanan | Editor: Praveen K.L. | Cast: Mahesh Babu, Pooja Hegde, Allari Naresh, Jagapathi Babu, Prakash Raj, Jayasudha, Meenakshi Dixit, and Ananya

कथासार - रिषि कनकला अमरीका की एक मल्टीनेशनल तकनीकी कंपनी में सीईओ है। उसे एक दिन अपनी सफलता के पीछे अपने पुराने दोस्त नरेश के त्याग के बारे में पता चलता है। वो उससे मिलने के लिए भारत लौटता है। नरेश उसे बताता है कि 70 गांव जिसमें उसका खुद का गांव भी शामिल है, उसे स्थानीय सरकार जबरन खाली करवा रही है और गांव वालों को कहीं और बसाया जा रहा है क्योंकि इस जगह पर कोई कॉरपोरेट ग्रुप की बड़ी परियोजना शुरू होनी है। इस कॉरपोरेट से संबंध रखने वाले विवेक ने कुछ भ्रष्ट राजनीतिज्ञों और नौकरशाहों को अपने साथ मिला लिया है, जिससे गांव वालों की आवाज को दबाया जा सके, वो लोग गांव वालों को तो चुप करा देते हैं लेकिन नरेश नहीं मानता है, रिषि भी गांव बचाने की उसकी लड़ाई में शामिल हो जाता है। वो खेती के जरिये एक विकास की इबारत लिखता है और गांव वाले विरोध जताते हैं, आगे चलकर पूरा देश उनकी लड़ाई में शामिल हो जाता है।

Synopsis - Rishi Kanakala is appointed CEO of a US-based multinational technological company. Then, he learns about the sacrifice his long-lost friend Naresh made for his success and comes back to India to meet him. Naresh tells him that 70 villages, including their own, were being forced to evacuate and accept resettlement by the local government, to make way for a big corporate group's ambitious project. The corporate giant Vivek, in connivance with some corrupt politicians and bureaucrats, has managed to silence the voices of the villagers, except Naresh. Moved, Rishi joins the battle to save the villages. He ignites a revolution through agriculture among the villagers and subsequently, the entire nation begins to protest against the project.

परिचय

पैदिपल्ली वाम्शिधर राव (Paidipally Vamshidhar Rao)



पैदिपल्ली वाम्शिधर राव उर्फ वाम्शी पैदापल्ली फिल्म निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। इनकी चर्चित तमिल फिल्मों में बृंदाबनम, येवाडू, ओपिरि और महर्षि

शामिल है। इन्होंने अपने फिल्मी निर्देशन सफर की शुरुआत प्रभास अभिनीत फिल्म मुन्ना से की थी।

Paidipally Vamshidhar Rao, aka as Vamshi Paidipally, is a film director and screenwriter known for his mainstream Tamil films such as 'Brindavanam' (2010), 'Yevadu' (2014), 'Oopiri' (2016), and 'Maharshi' (2019). After starting his career as an assistant director in 'Eeswar' (2002), he made his directorial debut with Prabhas-starrer 'Munna' (2009).

PROFILE

श्री वेंकटेश्वर क्रिएशन (Sri Venkateswara Creations)



श्री वेंकटेश्वर क्रिएशन एक फिल्म निर्माण कंपनी है जिसकी स्थापना दिल राजू ने की, जो इस बैनर के तले कई तेलुगु फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं।

Sri Venkateswara Creations is a film

production company established by Dil Raju, who has produced many Telugu films.

प्रशस्ति - फिल्म बेहद ईमानदारी से मुख्य किरदार के जरिए बताती है कि क्यों दुनिया भर के युवाओं को जमीनी स्तर पर संस्कृति को समझना चाहिए और कृषि क्षेत्र में वैश्वीकरण की नई-नई चुनौतियां का सामना करना चाहिए

Citation - (Award for Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment): The concept of the film that ingeniously addresses through the protagonist the necessity of our present globally spread youth to get into the grass roots of our culture and encounter the freshly brewed challenges of globalization in the prime area of agriculture.



ताजमहल

राष्ट्रीय सदभाव और एकता के लिए
सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म को नर्गिस दत्त पुरस्कार

Tajmal | Nargis Dutt Award for
Best Feature Film on National Integration

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

2020 | Marathi | 99 mins | Director: Niyaz Mujawar | Producer: Tauline Studios (Kulbhushan Yashwantrao Mangale, Dr. Manoj Balkrushana Kadam) | Screenplay: Niyaz Mujawar | DOP: Hari Nair | Editor: Sanket Kulkarni | Cast: Sanjay Khapare, Kiran Khoje, Shashank Shende, Vijay Nikam, Arpita Ghogardare, Vinayak Potdar

कथासार - भीमा कोनाडे एक गरीब किसान है जिसे अपने बेटे बाल की रक्षा के लिए अपने देवता को अपनी बकरी ताजमहल की बलि देनी है. लेकिन बाल ताजमहल को बचाना चाहता है भले ही उसकी जान ही क्यों ना चली जाए. ताजमहल के गले में आधा चांद और सितारे का निशान है. वो अपने गांव की सबसे मंहगी बकरी है. बाल को अपनी प्यारी ताजमहल को ना सिर्फ अपने पिता से बल्कि गांव के दो चोरों और एक कसाई शकुर मुलानी से भी बचाना है. जिनकी नज़र उनकी बकरी पर है क्योंकि बकरीद आने वाली है.

Synopsis - Bhima Konade, a poor farmer must sacrifice his Goat named 'Tajmal' (Taj Mahal) to his family deity to protect Baal, his only son. But Baal wants to protect Tajmal even at the cost of his own life. Tajmal, with a crescent and star mark on its neck, is a most prized goat in the entire village. Baal has to protect his beloved Tajmal not only from his father, but also from two village thieves and butcher Shakur Mulani, who has his eyes set on his goat as Bakrid is approaching.

परिचय

नियाज़ मुजावर (Niyaz Mujawar)



नियाज़ मुजावर बीते एक दशक से पटकथा लेखन, निर्देशन और अभिनय के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं. गणित में स्नातक करने के बाद वे कानून की पढ़ाई के लिए पुणे गए लेकिन तीन साल बाद इस छोड़ कर वे एफटीआईआई में स्क्रीन राइटिंग का कोर्स करने लगे. इन्होंने 2018 में एक लघु फिल्म में अन्नपूर्णा का निर्देशन भी किया.

Niyaz Mujawar has been screenwriting, directing and acting in films and plays for the past 10 years. After completing his graduation in mathematics, he moved to Pune to pursue a law degree. But he left it after three years and joined a screenwriting course at the Film and Television Institute of India (FTII), Pune in 2009. He has also directed a short film 'Annapura' in 2018.

PROFILE

ताउलाइ स्टूडियोज प्रा. लि. (Tauline Studios Pvt. Ltd.)



ताउलाइ स्टूडियोज प्रा. लि. की स्थापना कुलभूषण यशवंतराओ मंगले और डॉ मनोज बालकृष्ण कदम ने की थी. दोनों ही फिल्मों के दीवाने हैं और क्लासिकल

भारतीय फिल्म को बीच में बड़े हुए हैं. ताजमहल इनका पहला प्रोडक्शन है.

Tauline Studios Pvt. Ltd. is a film production house jointly founded and helmed by Kulbhushan Yashwantrao Mangale and Dr. Manoj Balkrushana Kadam. Both are avid film buffs, who have grown on classical Indian films and its diverse narrative. 'Tajmal' (2020) is their first production.

प्रशस्ति - यह फिल्म, ताज महल के जरिए प्रेम की अवधारणा को समझाती है जो किसी भी तरह की हिंसा पर भारी है

Citation - (Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration): The film stresses on the concept of love, symbolised by the Taj Mahal, taking over violence in whatever form it appears.



आनन्दी गोपाल
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म
Anandi Gopal
Best Film on Social Issues

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

2019 | Marathi | Colour | 134 mins | Director: Sameer Vidwans | Producer: Essel Vision Productions Ltd | Story: Karan Shrikant Sharma | Screenplay: Karan Shrikant Sharma | DOP: Akash Agarwal | Editor: Charu Shree Roy | Cast: Bhagyashree Milind, Lalit Prabhakar, Geetanjali Kulkarni, Kshiti Jog, Yogesh Soman, Atharva Phadnis, Ankita Goswami

कथासार - यह फिल्म उन्नीसवीं सदी के भारत की सच्ची कहानी पर आधारित है। नौ साल की यमुना (उर्फ आनंदी) की शादी गोपालराव जोशी से हुई। गोपालराव ने आनन्दी के माता-पिता से यह सुनिश्चित किया कि आनन्दी को शिक्षित किया जाए। एक निजी त्रासदी के बाद आनन्दी डॉक्टर बनने की कसम खाती है और गोपाल उसके फैसले का समर्थन करता है। लेकिन उसे अपने रिश्तेदारों और समाज का विरोध झेलना पड़ता है, जो लड़कियों को पढ़ाने के पक्षधर नहीं हैं। उस पर डॉक्टर बनना तो सारी हदों को पार करने जैसा है। किसी के आगे ना झुकते हुए गोपाल आनन्दी को पढ़ाई के लिए यूएसएस भेजता है। और वो भारत की पहली महिला डॉक्टर बनती हैं।

Synopsis - Based on a true story from the 19th century, the film revolves around Anandibai Gopalrao Joshi, who became the first lady doctor from India. The nine-year-old Yamuna (aka Anandi) was married to Gopalrao Joshi, who had asked her parents to ensure she becomes literate. After a personal tragedy, Anandi vows to become a doctor and Gopal supports her decision. But they are heavily criticised by their kin and society, which does not accept a girl being educated, leave along becoming a doctor. Indomitable Gopal sends Anandi to the USA to study and become the first female doctor of India!

परिचय

समीर विदवन्स (Sameer Vidwans)



समीर विदवन्स पिछले 17 सालों से मराठी रंगमंच में बतौर लेखक, निर्देशक और कलाकार जुड़े हुए हैं। वह एफटीआईआई के पूर्व छात्र हैं। इससे पहले वो पांच

मराठी फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। इनकी हालिया फिल्म धुरला थी जो जनवरी 2020 को थियेटर में रिलीज हुई थी।

Sameer Vidwans has been associated with Marathi theatre for over 17 years as a writer, director and actor. An alumnus of FTII Pune, he previously directed four Marathi films: 'Time Please' (2013), 'Double Seat' (2015), 'YZ' (2016) and 'Mala Kahich Problem Nahi' (2017). 'Anandi Gopal' is his fifth feature film. He has also co-written Marathi films like 'Aghat', 'Jameen', 'Lagna Pahave Karun', 'Classmates' and 'Double Seat'. His latest film 'Dhurla' released in theatre in Jan, 2020.

PROFILE

जी स्टूडियोज (Zee Studios)



जी स्टूडियोज कई सफल और चर्चित फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं। इनमें दुनियादारी, फंड्री, टाइमपास, लाई भारी, डॉ. बाबा आम्टे, किल्ला, सैराट, आनंदीगोपाल

और न्यूड शामिल है। इनकी दो फिल्में दृनटरंग और एलिजाबेथ एकादशी सर्वश्रेष्ठ मराठी फिल्म का सम्मान हासिल कर चुकी हैं।

Zee Studios (erstwhile Essel Vision) has produced commercially successful and critically acclaimed Marathi films like 'Duniyadari' (2013), 'Fandry' (2013), 'Timepass' (2014), 'Lai Bhaari' (2014), 'Dr. Baba Amte' (2014), 'Killa' (2014), 'Sairat' (2016) and 'Nude' (2018). Two of its films – 'Natrang' (2010) and 'Elizabeth Ekadashi' (2014) – have won the National Film Awards for Best Marathi Film. The Studio's other films include 'Ye Re Ye Re Paisa', 'Chi. Va Chi. Sau. Ka.', 'Ti Saddhya Kay Karte', 'Gulabjam', 'Naal' and 'Anandi Gopal'.

प्रशस्ति - 19वीं शताब्दी के आखिर में महिलाओं की स्थिति और उस मुश्किल दौर में नामुमकिन से दिखने वाले सपनों को पूरा करने का संघर्ष दिखाने के लिए

Citation - (Best Film on Social Issues): For depicting the place of women in the late nineteenth century India and the woman's struggle to achieve the almost impossible in those testing times.



वाँटर बरियल
पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म
Water Burial | Best Film on Environment
Conservation / Preservation

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

2019 | Monpa | 76 mins | Director: ShantanuSen | Producer: Faruque Iftikar | Screenplay: ShantanuSen | DOP: Sujit Debbarma
Editor: Amrit Kumar Basumatary | Cast: Tshering Dorjee, Sonam Lhamu, Alex Piringu, Tshering Petton

कथासार - एक मानवविज्ञानी अपने दोस्त का मनपसंदीदा पेय ढूँढने के लिए निकलता है. ये यात्रा उसे अरुणाचल प्रदेश के एक दूरदराज के इलाके जांग में पहुंचा देती है. जहां पर उसका सामना मोनपा जनजाति की एक अजीब सी प्रथा से होता है, जिसमें पानी में दफनाया जाता है. इस प्रथा के हिसाब से जब इंसान मर जाता है, तो उसके शरीर को छोटे टुकड़ों में काट कर नदी में बहा दिया जाता है. जनजाति समुद्र तल से 8000-9000 फीट ऊपर रहने वाली इस जनजाति का मानना है कि शरीर के हिस्सों की बदौलत ही जिंदा रहती हैं.

Synopsis - An anthropologist sets off to find the favourite drink of his friend. The journey takes him to a remote place called Jang in Arunachal Pradesh, where he stumbled onto a dark ritual of water burial performed by the local Monpa tribe. According to the custom, when a person dies, the body is cut into pieces and thrown into the river. The tribe, which lives at a height of 8,000-9,000 feet above the sea level, believes that the fishes in the river survive on these body parts.

परिचय PROFILE

शांतनु सेन (Santanu Sen)



शांतनु सेन की यह वॉटर बरियल पहली फीचर फिल्म है. इन्होंने अपनी फिल्म की कहानी और पटकथा भी लिखी है. ऑटो मोबाइल इंजिनियरिंग में डिप्लोमा करके इन्होंने करीब एक

दशक तक भारी मशीन और निर्माण यंत्र उद्योग में सेल्स विभाग में काम किया है.

Santanu Sen has made his directorial debut with the feature film 'Water Burial'. He has also written its story and screenplay. He has a three-year diploma in Automobile Engineering and over a decade's experience in sales and after sales service in Heavy machineries and construction equipment industries. He plans to become a full-time filmmaker.

ड्यूका सर्विसेज प्राइवेट लि (Deuka Services Pvt. Ltd)

Deuka Services Pvt. Ltd

फारुक इफ्तिकार ने हाल ही में ड्यूका सर्विसेज प्राइवेट लि नाम से एक कंपनी का निर्माण किया है जो फिल्म निर्माण का काम करती है. वॉटर बरियल इस

कंपनी की पहली फिल्म है.

Deuka Services Pvt. Ltd was started recently by Faruque Iftikar to explore film production. He made his debut as a producer with 'Water Burial'. Apart from that, he has business in construction works and export industries.

प्रशस्ति - मोनपा समुदाय का अपनी संस्कृति से जुड़ाव, उनकी परंपराएं और पर्यावरण के प्रति उनके लगाव और प्रतिबद्धता का बेहतरीन सिनेमाई चित्रण

Citation - Excellent cinematic depiction of the cultural adherence of the Monpa community, their rituals and more importantly their faith and commitment towards the environment.



कस्तूरी सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म

Kastoori | Best Children's Film

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,50,000/-

2019 | Hindi | 102 mins | Director: Vinod Uttreshwar Kamble | Producer: Insight Films | Screenplay: Vinod kamble, Shivaji Karde
DOP: Manoj Sanjay Kakade | Editor: Shrikant Chaoudhari | Cast: Samarth Sonawane, Shravan Upalkar, Anil Kambale, Vaishali
Kendale, Jannat Kunal Pawar, Jaybhim Shinde, Shikare Kaka, Ajay Chavan, Lala Shaikh

कथासार - सच्ची घटना पर आधारित ये फिल्म एक 14 साल के बच्चे की कहानी कहती है जो पढाई के लिए सफाईकर्मी और पोस्ट मार्टम का काम करता है. उसके इस काम की वजह से उसके शरीर और कपड़ों से गंध आती है जिसे लेकर उसके साथी उसे चिढ़ाते हैं. इस से मुक्ति पाने के लिए लड़का फैसला करता है कि वो कस्तूरी खरीदेगा. इसके लिए वो सफाई और पोस्टमार्टम के काम में ओवरटाइम करता है जिससे वो कस्तूरी खरीद सके. जब उसे किसी तरह कस्तूरी हासिल होती है तो पता चलता है कि वो नकली है. जल्दी ही उसे एक समाज सेवक मिलता है जो उसे ये समझाने में मदद करता है कि उसे ऐसे लोगों को समझाने के लिए कस्तूरी की जरूरत नहीं है जो किसी पूर्वाग्रह से ग्रस्त है. इस तरह से वो लड़का भौतिक संसार से अंतर्मन की यात्रा करता है और उसे अहसास होता है कि जिस कस्तूरी को वो इधर उधर ढूँढ रहा था वो उसके अंदर ही मौजूद है.

Synopsis - Based on the real events, the film is about a 14-year-old boy who engages in manual scavenging and post-mortem for education. Because of his profession and smell of his body and clothes, he is teased by his classmates. To get rid of the stench, he decides to purchase Kastoori (the musk). He works overtime in manual scavenging and post-mortem and manages to purchase Kastoori. But, it turns out to be a fake one. Soon, a social worker helps him realize that he doesn't need Kastoori or scent to remove others' prejudice towards him. He starts his journey from the material world to the 'self'. Thus, he finds the 'Kastoori', which he was searching outside, within himself.

परिचय

विनोद उत्तरेश्वर कांबले (Vinod Uttreshwar Kamble)



विनोद उत्तरेश्वर कांबले ने सिविल इंजीनियरिंग की पढाई पूरी की है. इसक बाद उन्होंने 2015 में अपनी पहली लघु फिल्म ग्रहण बनाई. इनकी दूसरी लघु फिल्म

पोस्ट मार्टम 2017 के कान्स फिल्म के शॉर्ट फिल्म कॉर्नर के लिए चयनित हुई.

Vinod Uttreshwar Kamble has completed his degree in Civil Engineering. He made his first short film 'Graham' in 2015. His second short film was 'Post Mortem' which was selected in De Cannes Short Film Corner Festival 2017.

PROFILE

इनसाइट फिल्म (Insight Films)



इनसाइट फिल्म एक फिल्म निर्माण कंपनी है जिसे अलग अलग क्षेत्र के आठ महिलाओं और एक पुरुष ने स्थापित किया है. इनमें से किसी के पास पहले से फिल्म निर्माण

का कोई अनुभव नहीं था. बस किसी घटना के चलते इन सभी की राहें एक हुई और ये विनोद कांबले से मिले और कस्तूरी बन गई.

Insight Films is a production company owned by eight ladies and one gentleman from different walks of life, who had no prior experience of filmmaking. Its inception was accidental as they all came together to help debutant director Vinod Kamble make 'Kastoori'.

प्रशस्ति – उद्धरण – एक बेहद शानदार अवधारणा जो दिखाती है कि किस तरह एक बच्चे की गरिमा उसके बाहरी रंग-रूप से ज्यादा जरूरी है।

Citation - (Best Children's Film): The wonderful concept which depicts the dignity of an individual child is more important than the exterior appearance.



रोनुवा - हू नेवर सरेंडर
सर्वश्रेष्ठ असमिया फ़िल्म

Ronuwa - Who Never Surrender
Best Assamese Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Assamese | 86 mins | Director: Chandra Mudoi | Producer: Bornali Creative Vision Entertainment | Screenplay: Chandra Mudoi | DOP: Naba Kumar Das | Editor: Rajib Saikia | Cast: Rajib Kro, Pranami Bora, Barnali Dutta, Rodali Bora, Nayan Das

कथासार - जादव रिक्शा चला कर इतना पैसा कमा लेता है कि उसके परिवार का गुजारा चल जाए, उसकी पत्नी भी एक छोटी सी पान की दुकान चलाती है। अपने काम के अलावा अपने बच्चों को बेहतर जिंदगी देने के लिए वो कोई कोर कसर नहीं छोड़ते हैं। लेकिन एक दिन भारी बारिश के चलते बाढ़ उनके बेटे की जिंदगी ले लेती है। इस त्रासदी के साथ उनके बच्चों को लिए सपने धरे के धरे रह जाते हैं। हालांकि ये जोड़ा उम्मीद नहीं हारता है और इस घटना से टूटने के बजाये अपने सारे दर्द को भुला कर आगे बढ़ता है।

Synopsis - Jadav makes just enough money to support his family by pulling Rikshaw, while his wife Makon runs a small 'paan' shop along the footpath. Besides their jobs, they also fulfill responsibility for their household, and aspire to give better life to their children. But one day, the flood caused by a spell of heavy downpour claims the life their son. The tragedy shatters their dreams for their children. However, the couple still hopes that the incident inspires them to overcome all the hardships in life and bear all the pains.

परिचय

चंद्रा मुदोई (Chandra Mudoi)



चंद्रा मुदोई फिल्म निर्देशक और सेवानिवृत्त इलेक्ट्रिकल इंजीनियर हैं। इन्होंने 14 असमी फिल्म और एक हिंदी फिल्म पूरब की आवाज़ का निर्देशन किया है।

इनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म थी, अग्निगढ़। फिल्म निर्माण से पहले वे असम स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड में कार्यरत थे।

Chandra Mudoi is a film director and retired electrical engineer from Assam. He has directed 14 Assamese feature films and one Hindi film titled 'Purob Ki Awaz'. His first film as a director was 'Agnigarh'. He has done Bachelor of Engineering from Assam Engineering College in 1983. He retired from the Assam State Electricity Board in 2016.

PROFILE

बोरनाली क्रियेटिव विजन एन्टरटेन्मेंट (Bornali Creative

Vision Entertainment)

Bornali Creative Vision Entertainment

बोरनाली क्रियेटिव विजन एन्टरटेन्मेंट की स्थापना सुनील और बोरनाली दत्ता ने की है। कुछ लघु फिल्मों दो बड़े सीरियल जीवानोर रंग, और बोरुअर संसार जो

सामाजिक मुद्दों से जुड़े हैं का निर्माण कर चुके हैं। रोनूवा दृ हो नेवर सरेंडर इनकी पहली फीचर फिल्म है।

Helmed by Sunil and Bornali Dutta, **Bornali Creative Vision Entertainment** has produced a few short films and two mega serials on social issues, titled 'Jeevanor Rang' and 'Boruar Sansar'. 'Ronuwa: Who Never Surrender' is its first feature film production.

प्रशस्ति - फिल्म में दृश्यों और घटनाक्रमों की कसावट के जरिये नायक ये बताता है कि तमाम तरह की त्रासदियों के बावजूद जिंदगी चलने का नाम है।

Citation - (Best Assamese Film): For creating completely new and eye-pleasing dance steps while taking the story forward.



गुमनामी
सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फिल्म
Gumnaami | Best Bengali Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Bengali | 141 mins | Director: Srijit Mukherji | Producer: SVF Entertainment Pvt. Ltd. | DOP: Soumik Halder | Screenplay: Srijit Mukherji | Editor: Pronoy Dasgupta | Cast: Prosenjit Chatterjee, Anirban Bhattacharya, Tanusree Chakraborty

कथासार - गुमनामी फिल्म भारत के इतिहास के सबसे कुख्यात षडयंत्र के सिद्धांत दृ भारतीय स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की कथित मौत के बारे में बात करती है। फिल्म मुखर्जी कमीशन की सुनवाई को आधार बनाकर रची गई है, जो 1999 से 2005 के बीच चली थी। इस सुनवाई में नेताजी की मौत को लेकर तीन थ्योरी पर चर्चा और विवाद हुआ था। फिल्म उसी सुनवाई का नाट्य रूपांतरण है जहां एक खोजी पत्रकार गुमनामी बाबी की थ्योरी का समर्थन करता है, वहीं वकील का मानना है कि प्लेन क्रेश वाली बात ज्यादा सही है। इसी टकराव में रूस में हुई मौत वाली थ्योरी भी सामने आती है।

Synopsis - 'Gumnaami' features the most famous conspiracy theory in Indian history - the alleged death of the Indian freedom fighter Netaji Subhash Chandra Bose. It is based on the Mukherjee Commission Hearings, which took place between 1999 and 2005, where three theories about Netaji's death were discussed and debated. The film is a dramatisation of the hearings where an investigative journalist supporting the 'Gumnaami Baba theory' locks horns with the official lawyer who supports the 'plane-crash theory'. In their clash, the 'Death in Russia theory' also comes up.

परिचय

श्रीजित मुखर्जी (Srijit Mukherji)



श्रीजित मुखर्जी एक फिल्मकार, पटकथा लेखक, और गीतकार हैं। उनकी चर्चित फिल्मों में 'ऑटोग्राफ' (2010), 'बाइशे स्राबोन' (2011), 'जातीश्वर' (2014) 'छोटुसकोने' (2014) 'राजकहिनी' (2010) 'येति ओभिजान' (2017) शामिल हैं। इनकी फिल्म 'जातीश्वर' ने 2014 में चार राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड जीते थे। वहीं 'छोटुसकोने' ने 2015 में दो राष्ट्रीय अवार्ड हासिल किए थे। और 'एक जे छिलो राजा' ने 2019 का सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फीचर फिल्म का राष्ट्रीय सम्मान हासिल किया था। इनकी फिल्म राजकहिनी का हिंदी में बेगम जान नाम से रीमेक भी हो चुका है।

Srijit Mukherji is a filmmaker, screenwriter and lyricist, known for acclaimed films like 'Autograph' (2010), 'Baishe SraBon' (2011), 'Jaatishwar' (2014), 'Chotuskone' (2014), 'Rajkahini' (2015), 'Yeti Obhijaan' (2017), etc. His 'Jaatishwar' won four National Film Awards in 2014, 'Chotuskone' won two in 2015, and 'Ek Je Chhilo Raja' won the National Award for Best Bengali Feature Film in 2019. His 'Rajkahini' (remade in Hindi as 'Begum Jaan') and 'Uma' were selected for multiple film festivals including IFFI 2015.

PROFILE

एसवीएफ एंटरटेन्मेंट प्राइवेट लि. (SVF Entertainment Pvt. Ltd.)



एसवीएफ एंटरटेन्मेंट प्राइवेट लि. की स्थापना 1996 में हुई। ये पूर्वी भारत की सबसे बड़ी एंटरटेन्मेंट कंपनी है जो अब तक 135 से ज्यादा फिल्मों का निर्माण

कर चुकी है जिसमें राष्ट्रीय अवार्ड विजेता, चोखेर बाली, रेनकोट, मेमोरीज इन मार्च, चित्रांगदा और छोटोदेर चोभी सहित बहुचर्चित मेघे ढाका तारा, सिनेमावाला, धनोन्जोय, आमी आशबो फिरे जैसी ना जाने कितनी फिल्में शामिल हैं।

SVF Entertainment Pvt. Ltd. (Estd. 1996) is Eastern India's largest entertainment company, having successfully produced over 135 films including National Award-winning 'Chokher Bali', 'Raincoat', 'Memories in March', 'Chitrangada' and 'Chotoder Chobi'; and critically acclaimed 'Meghe Dhaka Tara', 'Cinemawala', 'Dhananjay', 'Aami Ashbo Phirey', 'Uma' to name a few. Its newest venture 'Hoichoi' is an OTT platform and App with over 500 movies and web series.

प्रशस्ति - (सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फिल्म) नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मौत की गुत्थी सुलझाती जांच की विस्तारपूर्वक बुनी गई पटकथा।

Citation - (Best Bengali Film): Intricately woven screenplay of the investigation of mystery behind the death of Netaji Subhash Chandra Bose.



छिछोरे सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म

Chhichhore | Best Hindi Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Hindi | 145 mins | Director: Nitesh Tiwari | Producer: Nadiawala Grandsons Entertainment Pvt. Ltd. & Fox Star Studios | DOP: Amalendu Chaudhary | Screenplay: Nitesh Tiwari, Piyush Gupta, Nikhil Mehrotra | Editor: Charu Shree Roy | Cast: Sushant Singh Rajput, Shraddha Kapoor, Varun Sharma, Prateik Babbar, Tahir Raj Bhasin, Naveen Polishetty, Tushar Pandey, Saharsh Kumar Shukla

कथासार - छिछोरे की कहानी एक पिता के अपने बेटे को लगातार प्रेरित करते रहने की और उसे ये बताने की कि असफलता किसी के लिए जिंदगी खत्म करने की वजह नहीं होनी चाहिए. इस प्रक्रिया में पिता भी अपने अतीत और वर्तमान का आकलन करता है. अपने पुराने दोस्तों और पत्नी के साथ अपने रिश्तों को फिर से समझने की कोशिश करता है. भावनात्मक उतार चढ़ाव से होते हुए आखिर में फिल्म सवाल करती है कि जीवन किस बात से परिभाषित होता है, आपके प्रयासों से या नतीजों से ?

Synopsis - 'Chhichhore' is a story of a father who relentlessly puts in all his efforts to instill hope in his son and motivates him to not let setbacks bring him down. He tells him to never lose his reason to live. In the process, through seamless transitions between the past and present, the film rekindles relationships with his forgotten college mates and his wife. Through these tickling tales and emotional anecdotes, they not only relive the past but also reassess their lives in the present. Ultimately, this film raises a profound question: what defines your life – your results or your efforts?

परिचय PROFILE

नितेश तिवारी (Nitesh Tiwari)



नितेश तिवारी - आईआईटी बांबे के छात्र रह चुके नितेश तिवारी ने चिल्लर पार्टी और भूतनाथ रिटर्न्स का लेखन और निर्देशन किया. वे पूरी तरह से लेखन निर्देशन से 2014 में दंगल फिल्म से जुड़े. इन्होंने कई चर्चित फिल्मों लिखी हैं.

An IIT-Bombay alumnus, **Nitesh Tiwari** wrote and directed the critically -acclaimed films 'Chillar Party' and 'Bhoothnath Returns' while still working in the advertising industry. He became a full-time writer-director in 2014 with 'Dangal' (2016). He has also written other popular films such as 'Nil Battey Sannata', 'Bareilly Ki Barfi' and 'Panga'.

नाडियाडवाला ग्रांडसन एंटरटेन्मेंट प्रा. लि.
(Nadiadwala Grandson Entertainment Pvt. Ltd.)



नाडियाडवाला ग्रांडसन एंटरटेन्मेंट प्रा. लि. हिंदी फिल्म उद्योग का जाना माना प्रोडक्शन हाउस है, जो फिल्म निर्माता साजिद नाडियाडवाला का है. इस

प्रोडक्शन हाउस को चलाने वाले वो तीसरी पीढ़ी है, इस प्रोडक्शन हाउस की नींव को रखे हुए हिंदी फिल्म जगत में छह दशक बीत गए हैं.

Nadiadwala Grandson Entertainment Pvt. Ltd. is one of the leading production houses in India helmed by one of Hindi film industry's filmmakers, Sajid Nadiadwala. Known as a house of franchises, it is a third-generation film production house, which traces its foundation to a family celebrating six decades in the industry.

प्रशस्ति - फिल्म बहुत की खूबसूरती के साथ ये दर्शाती है कि जिंदगी का मतलब केवल हारना या जीतना नहीं है, बल्कि अपने उद्देश्य को हासिल करने के लिए ईमानदार प्रयास अहमियत रखता है.

Citation - The film brilliantly showcases that just winning or losing is not the crux of life but earnest and sincere efforts to reach the goal.



काजरो सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फिल्म

Kaajro (Bitter Tree) | Best Konkani Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Konkani | 114 mins | Director: Nitin Bhaskar | Producer: de Goan Studio | Screenplay: Bhushan Patil | DOP: S. Sameer
Editor: Atmaram Sawant | Cast: Vitthal Kale, Jyoti Bagkar

कथासार - तिलग्या एक अछूत है, जो अपनी बीमार पत्नी के इलाज ढूँढने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ता है। उसकी सांस चलती रहे यही उसकी जिंदगी को सबसे अहम मकसद है। उधर गांव वाले गांव के सबसे अहम दशहरे के सालाना जलसे की तैयारी में लगे हुए हैं। तिलग्या की पत्नी मर रही होती है और गांव उत्सव मना रहा होता है। उसे अपनी पारंपरिक भूमिका ढोलुक (एक स्थानीय ढोलक) की भूमिका निभाने से इंकार कर दिया जाता है और अपनी पत्नी के शव के साथ गांव छोड़ने पर मजबूर किया जाता है। तिलग्या अपनी पत्नी के शव के साथ एक असमान्य सफर पर निकल पड़ता है जिससे वो काजरो, गांव के बाहर लगे ऐसे पेड़ जो हमेशा रहते हैं, के नीचे अपनी पत्नी को दफन कर सके।

Synopsis - Tilgya, an untouchable, has left no stone unturned to find a proper treatment for his ailing wife. Breathing life into her is one of the most important tasks he faces daily. Meanwhile, the villagers are all set to celebrate the much-awaited annual festival of Dasshera, the celebration to mark the triumph of Lord Rama over Ravana, i.e. good over bad. Tilgya's wife dies while the celebration is on. He is not allowed to perform his traditional role of playing a 'dholuk' (a local drum) during the rituals and procession and is forced to leave the village with the dead body of his wife. Tilgya starts an unusual journey by carrying the dead body to bury under Kaajro, a tree that has lifeless existence on the outskirts of the village.

परिचय

नितिन भास्कर (Nitin Bhaskar)



फिल्मकार नितिन भास्कर, श्याम बेनेगल, दयाल निहलानी, राम गोबाले जैसे निर्देशकों के सहायक रहे हैं। इनकी निर्देशन में मिलाला मौउका, मारला चौउका, रंग

आबोली, मोनेल माया शामिल हैं। ये कोंकणी फिल्म महाप्रयाण के तकनीकी निर्देशक रहे हैं जिसने गोवा के पांच स्टेट अवार्ड जीते हैं।

Filmmaker **Nitin Bhaskar** has worked as an assistant director with Shyam Benegal, Dayal Nihalani and Ram Gabale. His directorial ventures include 'Milala Mouka Marla Chouka', 'Rang Aboli', 'Monel Maya' (Marathi), etc. He was a technical director for the Konkani film 'Mahaprayan' which received 5 state awards in Goa. He has also worked with the All India Radio.

PROFILE

डे गोअन स्टूडियो (de Goan Studio)

de Goan Studio

डे गोअन स्टूडियो राजेश आर पेडनेकर और गायत्री पेडनेकर ने 2016 में बनाया था। ये दोनों ही विगत 30 सालों से रंगमंच के कलाकार हैं। वह फिल्म के

सेरा सेरे के मुख्य अभिनेता रहे हैं। इनके बैनर तले बनी पहली फिल्म ने भी राष्ट्रीय अवार्ड हासिल किया था, काजरो इनकी दूसरी फिल्म है।

de Goan Studio was founded in 2016 by Rajesh R. Pednekar and Gayatri Pednekar. Rajesh has been a theatre actor for the last 30 years. He was the lead actor in the film 'K Sera Sera', the first film produced under the banner, which won the National Award for Konkani film. 'Kaajro' is their second venture.

प्रशस्ति – अपने गांव से निर्वासित एक वंचित वर्ग के आदमी की हृदयस्पर्शी कहानी।

Citation - (Best Konkani Film): A touching story telling of an underprivileged man who is banished from his village.



आकशी
सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फ़िल्म
Akshi | Best Kannada Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2020 | Kannada | 142 mins | Director: Manoj Kumar | Producer: Kalaadegula Studio | Screenplay: Manoj Kumar, Devendra Naidu | DOP: Mukul Gowda | Editor: Mukul Gowda, Manoj Kumar | Cast: Ilaa Vittla, Govinde Gowda, Master Mithun M.Y., Baby Sowmya Prabhu, Kalaadegula Srinivas, Nagaraj Rao, Nagaraj Gowda, Kasturi Mulimani, Shashi Kiran, Chikkegowda, Devendra Naidu, Pradeep, Kalyani Pradeep, Roopa Sri.

कथासार - रामू एक छोटे से गांव में अपनी 6 साल की बहन लक्ष्मी के साथ रहता है जो जन्म से ही नेत्रहीन है। वो उसे बहुत चाहता है। एक दिन उसे पता चलता है कि लक्ष्मी की आंखों की रोशनी लौट सकती है, बस उसे किसी नेत्रदाता की ज़रूरत है। काफी इंतजार के बाद उसे लक्ष्मी को एक दाता मिल जाता है। लेकिन इससे पहले की उसकी आंखें ठीक हों वो एक दुर्घटना में उसकी मौत हो जाती है। उसकी मौत के बाद रामू को समझ आता है कि उसकी बहन जैसे कई लोग हैं जिन्हें आंखों की ज़रूरत है। इस बात का अहसास होते ही, वो लोगों को नेत्रदान की अहमियत समझाने को अपना लक्ष्य बना लेता है।

Synopsis - Ramu lives in a small village with his family including his six-year-old sister Lakshmi who is blind by-birth. He adores her and takes good care of her. One day, he comes to know that Lakshmi can get her eyesight back for which they need a donor. After a long wait, he gets a donor for Lakshmi's eye transplant. However, before she could get her eye operation done, she dies in an accident. After her death, Ramu comes to know that there are many people like his sister who needs eye transplantation. Due to this realisation, he makes it his mission to educate people about the importance of eye donation, as much as he can.

परिचय

मनोज कुमार (Manoj Kumar)



मनोज कुमार निर्देशक बनने के लिए एक छोटे से गांव चिकमंगलुरु से बंगलुरु पहुंचे। उन्होंने प्रसिद्ध कन्नड़ फिल्म निर्देशक ओम प्रकाश राव के साथ 6 साल बतौर सहायक निर्देशक काम

किया, आक्षी उनका पहला निर्देशन है।

Manoj Kumar moved from a village near Chikkamagaluru to Bengaluru to become a film director. He worked as an assistant director for well-known Kannada film director Om Prakash Rao for about six years, before starting to work independently. 'Akshi' is his directorial debut.

PROFILE

श्रीनिवास वी., रमेश एन., रवि एच.एस. (Srinivas V.,

Ramesha N., Ravi H.S.)



श्रीनिवास वी., रमेश एन., रवि एच.एस., ने मिलकर कलादेगुला स्टुडियो की स्थापना की। श्रीनिवास वी. कन्नड़ के ख्यातिप्राप्त न्यूज रीडर, अभिनेता, वॉइस

ओवर और डबिंग कलाकार हैं। रमेश एन. वनिला मीडिया प्रा. लिं के सलाहकार और मुख्य कार्यपालन अधिकारी हैं, फिल्मों के अलावा वह इवेंट, सामाजिक गतिविधि और मीडिया के लिए भी काम करते हैं। रवि. एच. एस एक किसान हैं जो कर्नाटक के दूरदराज के गांव में रहते हैं। किन्ही वजहों से वह अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सके लेकिन उनका फिल्में और कला के प्रति शुरु से झुकाव रहा।

Srinivas V., Ramesha N., Ravi H.S. came together and founded Kalaadegula Studio. Srinivas V., a.k.a. Kalaadegula Srinivas, is one of the top most anchors in Kannada, news reader, actor, voice over and dubbing artist. **Ramesha N.** is the co-founder, Chief Executive Officer and mentor of Vanilla Media Pvt. Ltd. Besides film production, he also works in others segments likes events, social activities and media. **Ravi H.S.** (Holalu) is a farmer, living in a remote village in Karnataka's Mandya district. Being a farmer, he was unable to continue his studies after middle school but always had a great passion towards arts and cinema.

प्रशस्ति – एक ग्रामीण लड़के का नेत्र दान को बढ़ावा देने के संघर्ष का झकझोर देने वाला प्रदर्शन

Citation - A heart wrenching presentation of the struggle of a rural boy to promote eye donation.



बारदो
सर्वश्रेष्ठ मराठी फिल्म
Bardo | Best Marathi Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2020 | Marathi | 125 Mins | Director: Bhimrao Mude | Producer: Ritu Films Cut Llp, Film Panchjanya Productions | DOP: Vinayak Jadhav Screenplay: Bhimrao Mude & Shweta Pendse | Editor: Prathamesh Patkar & Sanil Kokate | Cast: Makarand Deshpande, Anjali Patil, Ashok Samartha, Girish Pardeshi, Gautam Joglekar, Sandesh Jadhav, Jagannath Nivangune, Varsha Dhandle, Pornima Ahire-kende, Shweta Pendse, Ramesh Wani, Atul Mahajan, Pranav Rao Rane

कथासार - बार्डो इजिप्ट भाषा में बौद्ध धर्म के लिए इस्तेमाल किया जाता है. जो मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच की क्षणिक चरण को समझाता है. माना जाता है कि जो सपना हम देखते हैं वो कहीं ना कहीं संबंध रखता है और ये हमेशा बार्डो की स्थिति में होता है. यही इस फिल्म का सार है. फिल्म की कहानी एक बहुत ही दूर दराज के गांव धनोर की है, कि किस तरह गांव के लोगों को सच्चाई का अहसास होता है जब उनकी जिंदगी में एक शिक्षक आता है.

Synopsis - 'Bardo' is the term used in Egyptian Buddhism that describes the transitory stage between death and incarnation. The belief that 'the dreams we see, are interrelated and they are always in a state of 'Bardo' is the very essence of this movie. The film 'Bardo' is a story of an extremely remote and small village Dhanor and how the dreams of different villagers come into reality as school teacher steps into their lives.

परिचय

भीमराव मुडे (Bhimrao Mude)



भीमराव मुडे के पास फिल्म जगत का 18 साल का अनुभव है, वे तीन मराठी फीचर फिल्म लिख और निर्देशित कर चुके हैं. इसके अलावा, हिंदी और मराठी शो, लघु फिल्म, लाइव इवेंट, डॉक्यूमेंट्री, प्रोमो, कॉरपोरेट

फिल्म सहित कई कमर्शियल प्ले का निर्देशन भी उनके खाते में है.

Bhimrao Mude has been a part of the film industry for 18 years. His works include three Marathi feature films as writer and director. He has also been the director for Hindi and Marathi shows, short films, live events, documentaries, promos, corporate films, and commercial plays.

PROFILE

रितु फिल्मस कट एलएलपी, पांचजन्य प्रोडक्शन प्राइवेट लि.



(Ritu Films Cut LLP and Paanchjanya Productions Pvt. Ltd.)

रितु फिल्मस कट एलएलपी की संस्थापक रुतुजा गायकवाड़ का विश्वसिनेमा और रंगमंच से गहरा लगाव है, इनके निर्माण की तीन लघु

फिल्मों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महोत्सवों में वाहवाही बटोरी है. इनकी लघु फिल्म वार्छ्या माज्या वार्ची ने 5 अवार्ड जीते. बार्डो इनकी पहली फीचर फिल्म है.

पांचजन्य प्रोडक्शन प्राइवेट लि. एक प्रोडक्शन हाउस है जिसे एंब्रियोलॉजिस्ट निशाद चिमोटो और संगीतकार रोहन-रोहन ने स्थापित किया है. बार्डो इनकी पहली फिल्म है.

Ritu Films Cut LLP's Rutuja Gaikwad is passionate about theatre and is a world cinema buff. Rutuja produced three short films which received appreciation at national and international film festivals. Her short film 'Varchya Majlya Varchi Tee' won 5 awards. 'Bardo' is her first feature film.

Paanchjanya Productions Pvt. Ltd. is a production house started by Embryologist Nishad Chimote and music directors Rohan-Rohan (Rohan Gokhale and Rohan Pradhan). 'Bardo' is their first feature film as co-producers.

प्रशस्ति – एक ऐसी बांधे रखने वाली कहानी जिसके जरिए ये संदेश जाता है कि जो एक के लिए अच्छा है वो सभी के लिए अच्छा है.

Citation - An engaging story of a moralistic play which unravels the message that what is good for one is good for all.



कल्ला नोट्टम सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्म

Kalla Nottam (The False Eye)
Best Malayalam Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2020 | Malayalam | 72 mins | Director: Rahul Riji Nair | Producer: First Print Studios | Screenplay: Rahul Riji Nair | DOP: Tobin Thomas | Editor: Appu Bhattachiri | Cast: Vasudev Sajeesh Marar, Suryadev Sajeesh Marar, Ansu Maria Thomas, Vinitha Koshy

कथासार - दस साल का विन्सेंट अपने पास की किराने की दुकान से निगरानी रखने वाला गो प्रो कैमरा फिल्म बनाने के लिए चुरा लेता है. वो अपनी दोस्त रोजी और किशोर के साथ शूटिंग करना शुरू करता है, लेकिन रोजी के साथ उसकी कहासुनी हो जाती है जिसके बाद रोजी फिल्म आधे में छोड़ देती है, विन्सेंट की फिल्म अधूरी रह जाती है. आगे चल कर विन्सेंट को पछतावा होता है और वो कैमरे को वापस देने या छोड़ देने का मन बनाता है. लेकिन जब वो ऐसा करने जाता है तो पड़ोस का एक आदमी उसे पकड़ लेता है. कैमरा एक हाथ से दूसरे हाथ में जाता है और निजता में हस्तक्षेप करने लगता है जिससे हिंसा भड़क जाती है. लड़का इसमें गलत तरफ फंस जाता है और अंत एक अपूर्ण क्षति के साथ होता है. पूरी फिल्म गो प्रो पर शूट की गई है और कैमरे की नजर से कहानी कहती है.

Synopsis - Ten-year-old Vincent steals a GoPro surveillance Camera from a local provision store, hoping to make a film. He begins shooting, along with friends Rosy and Kishore. But after an altercation, Rosy leaves the shoot midway leaving Vincent's film incomplete. A sense of guilt takes over Vincent who then decides to return or abandon the camera. Their attempts to abandon the Camera fail and they end up getting caught by some men in the neighbourhood. As the camera changes hands, it becomes an instrument for privacy intrusion and begins to instigate violence. The boys get caught on the wrong side of these actions and ends up with an irrecoverable loss. This film is entirely shot on a GoPro and the story is narrated entirely from the perspective of the Camera..

परिचय

राहुल रिजी नायर (Rahul Riji Nair)



राहुल रिजी नायर केरला के राज्य सम्मान प्राप्त निर्माता, फिल्मकार, पटकथा लेखक हैं. इनकी पहली फिल्म ओट्टामुरी वेलीचम (कमरे में रोशनी) ने 2017 में

4 केरला स्टेट फिल्म अवार्ड हासिल किये थे. इसने स्टटगार्ट के भारतीय फिल्म महोत्सव के प्रतिष्ठित जर्मन स्टार ऑफ इंडिया अवार्ड में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का सम्मान भी हासिल किया था.

Rahul Riji Nair is a state award-winning filmmaker, script writer and producer from Kerala. His debut feature film 'Ottamuri Velicham' (Light in the Room) had won four Kerala State Film Awards in 2017, including Best Feature Film. It also won the prestigious German Star of India Award for Best Feature film at the Indian Film Festival of Stuttgart. He also has ventured into documentaries, short films and music videos, etc.

PROFILE

फर्स्ट प्रिंट स्टूडियो (First Print Studios)



फर्स्ट प्रिंट स्टूडियो फिल्मकार राहुल रिजी नायर की प्रोडक्शन कंपनी है जिसकी स्थापना 2011 में हुई थी. ए मनोरंजन उद्योग का एक स्वतंत्र उपक्रम है

जो डॉक्यूमेंट्री, म्यूजिक वीडियो, लघु फिल्म का निर्माण करता है. ओट्टामुरी वेलीचम इनकी पहली फीचर फिल्म है.

First Print Studios is a production company founded in 2011 by filmmaker Rahul Riji Nair. He ventured into the entertainment industry through independent film production with documentaries, music videos and short films. 'Ottamuri Velicham' (Light in the Room) is the first feature film produced by the banner.

प्रशस्ति - जिंदगी की हकीकत को बयान करता एक प्रायोगिक वर्णन जहां महिलाओं के शोषण और ब्लैकमेल को महज एक लेंस के जरिए कैद किया गया है।

Citation - (Best Malayalam Film): Experimental portrayal of the realities of life where the exploitation of woman and black mail is captured in a single lens.



ईगी कोना सर्वश्रेष्ठ मणिपुरी फ़िल्म

Eigi Kona | Best Manipuri Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Manipuri | 90 mins | Director: Bobby Wahengbam and Maipaksana Haorongbam | Producer: Dr. K. Sushila | DOP: Irom Maipak
Screenplay: Maipaksana Haorongbam | Editor: Rajkumar Lalmani | Cast: Shaolin, Prafullochandra, Shanti, tonthoi,
Romesh, Chajing deben, Phiroj, Berlin, Jasmin, Surajlata

कथासार - मणिपुर को पोलो का मक्का कहा जाता है जहां दुनिया भर के खिलाड़ी खेलने का सपना देखते हैं। लेकिन पोलो की इस जन्मस्थली और टट्टू की देखरेख करने वालों की हालत बदतर हैं और वह गरीबी में जीने को मजबूर हैं। फिल्म एक नौजवान खिलाड़ी के अपने टट्टू स्टैलन, परिवार और समाज के साथ रिश्ते में आने वाली बाधाओं को दिखाती है। साथ ही खिलाड़ी का खेल के प्रति भावुक लगाव भविष्य के खिलाड़ियों में एक उम्मीद जगाता है।

Synopsis - Manipur is considered as the Mecca of Polo where many players and lovers of the sport from all over the world dream of playing. On the contrary, the pedestals of the game and their ponies in this birth place of polo lead a miserable life due to poverty and loss of livelihood. The film shows the predicament faced by a young polo player in relation to his pony (Stallone), family and society at large. It also shows how the emotional attachment of the players to the game restores hope for the future players and the survival of the ponies.

परिचय

बॉबी वाहेंगम, वहीं मइपाकेसना हाओरंगबम



(Bobby Wahengbam, Maipaksana Haorongbam)

बॉबी वाहेंगम एक समीक्षक, फिल्मकार, और लेखक हैं, जिन्हें सिनेमा पर अपनी किताब के लिए स्वर्ण कमल मिल चुका है।

वहीं मइपाकेसना हाओरंगबम राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मकार और लेखक हैं जो पिछले 10 सालों से सक्रिय हैं।

Bobby Wahengbam is a critic, filmmaker, and author who won a Swarna Kamal for his book on cinema. He has also won many state awards for his writings on cinema and for films he has made. He also lectures on film history, theories and indie cinema.

Maipaksana Haorongbam is a filmmaker and playwright who has also been writing scripts for traditional theatre, Shumang Leela. His award-winning films include 'Wonnam' (Scent of a Flower) and 'Eibusu Yaohanbiyu' (Let Me Join You), which won the National Film Awards for Best Manipuri Film in 2015.

PROFILE

के. सुशीला (K. Sushila)



के. सुशीला पीएच डी, लेखक, सांस्कृति कार्यकर्ता और फिल्म निर्माता हैं। वे मणिपुर के कला एवं संस्कृति विभाग के निदेशक से सेवानिवृत्त हुई हैं। इन्होंने कोम्बिरेएइ, ईगी कोना और

माइकल (पोस्ट प्रोडक्शन) फिल्म का निर्माण किया है।

K. Sushila, PhD, is a writer, cultural activist and film producer. She retired as the Director, Art and Culture Department, Government of Manipur. She has produced three Manipuri feature films: 'Kombirei', 'Eigi Kona', and 'Michael' (post-production).

प्रशस्ति - एक रोमांचक फिल्म जो पोलो खिलाड़ियों और टट्टूओं की उत्पत्ति स्थल की वर्तमान दशा और हालात को बयान करता है।

Citation - A thrilling film revealing the present plight and conditions of the polo players and ponies in its place of origin.



साला बुढार बदला (साझा)
सर्वश्रेष्ठ उडिया फिल्म

Sala Budhar Badla (The Revenge of the Oldman)
Best Odia Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Odia | 108 mins | **Director:** Dr Sabyasachi Mohapatra | **Producer:** New Generation Films | **Screenplay:** Sabyasachi Mohapatra
DOP: Kumar C. Dev Mohapatra | **Editor:** Kumar C. Dev Mohapatra | **Cast:** Atal Bihari Panda, Pradyumna Sahu, Purusottam Mishra,
P.Mantu Mohapatra, Bindu Mallik, Tapaswini Guru, Lochni Bag, Jitendriya Hota, Chandana Singh

कथासार - साला बुद्धार बदला ओड़िशा के दो गांवों की कहानी है जो कभी दोस्त और अच्छे पड़ोसी थे, लेकिन अब एक दूसरे के जानी दुश्मन हैं। इसकी वजह एक बारात के दौरान हुई लड़ाई है। जब लड़को की तरफ से आने वालों का उद्दण्ड बर्ताव लड़की वालों के लिए सहनशक्ति से बाहर हो जाता है तो वे पूरी बारात को पीट देते हैं। गांव के मुखिया की वजह से किसी तरह से शादी तो हो जाती है लेकिन दोनों ही गांव वालों के रास्ते अलग हो जाते हैं, फिल्म बताती है कि किस तरह से लड़के के गांव वाले अपना बदला लेते हैं। पूरी कहानी गांव के एक बुजुर्ग आदमी के दिमागी खेल को दिखाती है।

Synopsis - 'Sala Budhar Badla' is about two villages in Odisha who were once friendly neighbours have now become bitter enemies due to an unfortunate fight during a wedding procession. Unable to tolerate the unruly behavior of villagers from Groom's side, the bride's side beats them up. The village heads somehow save the wedding, but the two villages vowed never to cross paths ever. The film then shows how the Groom's village takes its revenge. It is loaded with mastermind strokes of an old village man's wisdom, who has evolved much more in thoughts and strategies than anyone from city life.

परिचय

डॉ सव्यसाची मोहपात्रा (Dr. Sabyasachi Mohapatra)

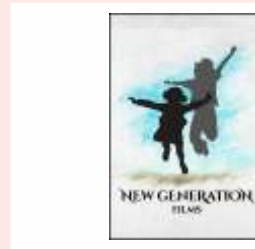


डॉ सव्यसाची मोहपात्रा को अलग अलग श्रेणी के 40 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड मिल चुके हैं। वे ओड़िशा के जाने माने फिल्मकार हैं, जिन्हें पहले भी लगातार दो साल तक अपनी फिल्म आदिम विचार, और पहाड़ा रा लुहा के लिए 2014-15 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। इनकी फिल्म ओड़िशा के आदिवासियों की संस्कृति और विरासत को बहुत अच्छे से उकेरती है।

Dr. Sabyasachi Mohapatra, awarded with more than 40 different international and national awards, is a renowned filmmaker of Odisha. Previously, he has won the National Film Awards for two consecutive years for his films 'Aadim Vichar' (The Ancient Justice) and 'Pahada Ra Luha' (Tears of the Mountain) in 2014 and 2015. His films capture the beautiful and rich culture of tribal societies in Odisha and its cultural heritage.

PROFILE

न्यू जनरेशन फिल्म (New Generation Films)



न्यू जनरेशन फिल्म की स्थापना फिल्म जगत के जाने माने तकनीशियन कुमार सी. देव मोहपात्रा ने की है। ये अभी तक 100 से ज्यादा फीचर फिल्म, टीवी

कमर्शियल और दूसरे माध्यमों के लिए काम कर चुके हैं। साला बुद्धार बदला इनकी पहली फीचर फिल्म है।

New Generation Films is a venture started by Kumar C. Dev Mohapatra, a leading film technician who has worked in over 100 feature films and many TV commercials across all formats and many languages. 'Sala Budhar Badla' is his first venture as an independent producer, which he has cinematographed and edited as well. His earlier film an executive producer 'Delhi in a Day' was widely acclaimed.

प्रशस्ति - दो परस्पर विरोधी आदिवासी गांव के बदला लेने की संगीतात्मक और मनोरंजक कहानी।

Citation - (Best Odia Film): Entertaining and musical tale of sweet revenge of the two warring tribal villages.



कलिरा अतिता (साझा)
सर्वश्रेष्ठ उडिया फिल्म
Kalira Atita | Best Odia Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Odia | 83 mins | Director: Nila Madhab Panda | Producer: Eleeanora Images Pvt Ltd | DOP: Nagaraj Diwakar |
Screenplay: Nitin Dixit and Nila madhab Panda | Editor: Arjun Guarasaria, Sangram Kishore Lenka & Paramita Ghosh | Cast:
Pitobash

कथासार - तूफान आने के पांच दिन पहले गुनु अपने गांव सतावया जाता है. जहां वह अपने त्रासदी भरे अतीत का सामना करता है और उन पलों का फिर से गवाह बनता है जिसकी भविष्यवाणी एक पुजारी ने उसके सामने की थी. यह फिल्म एक तबाह हो चुके किनारे पर गुनु और उसके अस्तित्व के टिके रहने की कहानी है. यह फिल्म प्राकृतिक आपदा में गुनु के सफर में आने वाली भावनात्मक उठापटक और मानवीय जाति का काव्यात्मक चित्रण है. क्या गुनु इस तूफान से बचकर फिर से अपने परिवार से मिल पाएगा ?

Synopsis - Disillusioned Gunu, a young man from Satavaya village, travels relentlessly from death to death, from the memories of a past cyclone into the eye of an upcoming one hoping to reunite with his lost family. Five days before the cyclone, Gunu travels back to his now engulfed village confronting his tragic past, reliving moments as prophesized by a priest who keeps frequenting him. Gunu's challenging survival on the abandoned coast, his very existence and struggle to survive the fury of nature makes his journey a poetic portrayal of emotional trauma and human triumph. Will Gunu survive this turmoil and be reunited with his family?

परिचय

नील माधाब पांडा (Nila Madhab Panda)



नील माधाब पांडा को अपनी पहली फिल्म आइ एम कलाम के लिए राष्ट्रीय अवार्ड सहित 34 अवार्ड हासिल किये थे. इनकी फिल्म कडवी हवा भी राष्ट्रीय

पुरस्कार जीत चुकी है. वहीं हल्का 32 अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में प्रदर्शित की जा चुकी है. इनकी चर्चित फिल्मों में जलपरी, बबलू हेप्पी है, कौन कितने पानी में शामिल है.

Nila Madhab Panda is an award-winning director and producer who has made films primarily in Odia and Hindi languages. His debut feature 'I am Kalam' (2010) won 34 international awards including a National Film Award. His film 'Kadvi Hawa' (2017) also received a National Film Award, while 'Halkaa' (Pichku's Dream) traveled to 32 international film festivals and won four International awards. He was conferred 'Padma Shri' in 2016. His other popular films include 'Jalpari', 'Bablu Happy Hai', 'Kaun Kitney Paani Mein' and a score of other films, documentaries and TV-series.

PROFILE

एलियोनारा इमेजेस (Eleanor Images)



एलियोनारा इमेजेस एक फिल्म निर्माण कंपनी डॉ नील माधाब पांडा ने स्थापित की है. इसके कार्यालय दिल्ली, भुवनेश्वर और मुंबई में है.

Eleanor Images is a film production company founded by Dr. Nila Madhab Panda and has its offices in Delhi, Bhubaneswar and Mumbai.

प्रशस्ति - एक सीजोफ्रेनिक गरीब आदमी के अपनी पिछली त्रासदियों के साथ संघर्ष को दर्शाती यथार्थवादी फिल्मांकन

Citation - Realistically shot touching tale of a schizophrenic poor man fighting with his past tragedies.



ਰਬ ਦਾ ਰੇਡਿਯੋ 2 ਸਰਵਸ਼੍ਰੇਸ਼ਟ ਪੰਜਾਬੀ ਫਿਲਮ

Rabb Da Radio 2 | Best Punjabi Film

ਰਜਤ ਕਮਲ | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Punjabi | 129 mins | Director: Sharandeep Singh (Sharan Art) | Producer: Vehli Janta Films | Screenplay: Jass Grewal | DOP: Jaype Singh Alias Jaspreet Singh | Editor: Tarun Chauhan | Cast: Tarsem Jassar, Simi Chahal, B.N. Sharma, Nirmal Rishi, Shavinder Mahal, Tania, Ragheveer Boli, Avtar Gill

कथासार - मजिंदर सिंह शहर में पला बढ़ा हुआ है, शादी के बाद वो अपनी नई नवेली ब्याहता गुड्डी को पंजाब में अपने गांव (ननिहाल) ले जाने का मन बनाता है. वो पिछले 15 सालों में कभी ननिहाल नहीं गया. वो अपने गांव जाने को लेकर काफी रोमांचित रहता है, उसमें मन में बचपन की कई यादें हैं, रिश्तेदारों के घर हैं जहां पर वो जाया करता था. मजिंदर को घर पहुंच कर तब धक्का लगता है जब वो देखता है कि उसके चारों मामा जो कभी साथ रहा करते थे उनके घरों में दीवार खड़ी हो गई है. इस दीवार ने उनके घरों को नहीं उनके दिलों को भी बांट कर रख दिया है. मजिंदर और गुड्डी सभी को फिर से जोड़ने का फैसला करते हैं.

Synopsis - Manjinder Singh, who has grown up in a town, decides to take his newly-wedded wife Guddi to his maternal home in a village in Punjab. He hasn't been to the place in the last decade and a half. He is quite excited as he has fond memories of the place and his relatives when he last visited as a child. On his arrival, Manjinder is heartbroken to see that once a close-knit family of his four maternal uncles, now has a wall in-between, which divides not only the house but their hearts as well. Manjinder and Guddi decide to reunite the estranged family members.

परिचय

शरनदीप सिंह (Sharandeep Singh)



शरनदीप सिंह पंजाबी फिल्म निर्देशक हैं. इन्होंने अपने निर्देशन की शुरुआत रब दा रेडियो से की जो एक बहुत बड़ी हिट रही है. फिल्म को पहली सफल संपूर्ण

पंजाबी सीक्वल बताया जा रहा है. ये फिल्म 2017 में आई रब दा रेडियो की कहानी को आगे लेकर जाती है.

Sharandeep Singh alias Sharan Art is a Punjabi film director. He made his directorial debut with 'Rabb Da Radio 2' (2019), which was a commercial success. The film is believed to be the first successful complete sequel of a Punjabi film, 'Rabb Da Radio' (2017), as it sequentially takes the story forward.

PROFILE

वेहली जनता फिल्मस (Vehli Janta Films)



वेहली जनता फिल्मस के स्थापना 2016 में हुई. जिसके सह-संस्थापक मनप्रीत जोहल ने इससे पहले वेहली जनता रिकॉर्ड शुरू किया था. इनकी

फिल्मों में रब दा रेडियो, सरदार मोहम्मद, अफसर, रब दा रेडियो 2 और गलवाकडी शामिल है.

Vehli Janta Films is a production house co-founded in 2016 by Manpreet Johal, who had earlier started Vehli Janta Records. Its films include 'Rabb Da Radio' (2017), 'Sardar Mohammad' (2017), 'Afsar' (2018), 'Rabb Da Radio 2' (2019) and 'Galwakdi' (2021).

प्रशस्ति - फिल्म एक बेहद सशक्त कथन प्रस्तुत करती है कि दिलों में प्यार और लगाव बनाए रख कर ही संयुक्त परिवार के बीच खड़ी दीवार को तोड़ा जा सकता है।

Citation - (Best Punjabi Film): The film makes a strong statement that the wall of partition in a joint family should be broken to keep the hearts blooming with love and affection.



असुरन
सर्वश्रेष्ठ तमिल फिल्म
Asuran | Best Tamil Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Tamil | 140 mins | Director: Vetri Maaran | Producer: Kalaiipuli S. Thanu | DOP: R. Velraj | Screenplay: Manimaran, Vetri Maaran Editor - R. Ramar | Cast: Dhanush, Manju Warrier, Prakashraj, Pasupathy, Ken, Teejay

कथासार - सिवासामी, तमिलनाडु के एक गांव का किसान है, जो अपने छोटे बेटे चिदंबरम के साथ जंगल में भागने को मजबूर हो जाता है। चिदंबरम ने उसके बड़े भाई की हत्या करने वाले एक ऊंची जाति के जमींदार की हत्या कर दी थी। चिदंबरम को अपने पिता से नफरत है क्योंकि उसे लगता है कि जब उसका भाई की मारा गया तो वो वहां से भाग गए। चिदंबरम अपना रास्ता खुद बनाता है। लेकिन जब जमींदार के आदमी उसे घेर लेते हैं। तब सिवासामी ही एक हिंसक टकराव में अपने बेटे को बचाता है। तब चिदंबरम अपने पिता एक अलग रूप देखता है।

Synopsis - Sivasami, a farmer from a small village in Tamil Nadu, is forced to flee into the forest with his younger son, Chidambaram. Why? Because, his son had murdered an upper-caste landlord to avenge the killing of his elder brother. Chidambaram dislikes his father for running away when his brother was murdered. While Sivasami tries to keep him out of harm's way, Chidambaram sets out on his own. But when he is tracked down by the landlord's men, Sivasami rescues him in a violent clash against the captors. Chidambaram sees a new side to his normally docile father.

परिचय

वेट्री मारन (Vetri Maaran)



वेट्री मारन. तमिल फिल्म निर्देशक, लेखक और निर्माता हैं। जो मुख्यतौर पर तमिल भाषा में ही काम करते हैं। इन्होंने अपना फिल्मी सफर की शुरुआत सिनेमेटोग्राफर निर्देशक

बालू महेन्द्र के सहायक के तौर पर की थी। इनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म थी पोल्लाधवन। इनकी अगली दो फिल्म आदुकलम और विसारनाई ने छह और तीन राष्ट्रीय अवार्ड जीते थे। इनकी चौथी फिल्म वेदाचेन्नई को भी काफी सराहना मिली। असुरन इनकी पांचवी फिल्म है।

Vetri Maaran is a film director, writer and producer working primarily on Tamil language films. An English literature post graduate, he started his film career assisting cinematographer director Balu Mahendra. He made his directorial debut with 'Polladhavan' (2007). His next two films 'Aadukalam' (2011) and 'Visaaranai' (2016) won six and three National Film Awards respectively. His fourth film 'Vadachennai' (2018) too was critically acclaimed. 'Asuran' is his fifth feature, based on a Tamil novel, 'Vekkai' (Heat).

PROFILE

वी क्रिएशंस (V Creations)

V Creations

वी क्रिएशंस फिल्म निर्माता और वितरक एस. थानु की एक प्रोडक्शन कंपनी है। उन्हें तमिल सिनेमा में निर्मित उनकी फिल्मों के लिए जाना जाता है। एस. थानु ने अपनी वी क्रिएशंस के माध्यम से कई फिल्मों का निर्माण किया है और दो राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं।

V Creations is a production company owned by film producer and distributor S. Thanu. He is known for his films produced in Tamil cinema. S Thanu has produced several films through his V Creations and has won two National Awards.

प्रशस्ति - एक बेहद पिछड़े गांव की कहानी की शानदार प्रस्तुति, जो दुश्मनी, सामाजिक प्रतिष्ठा को दिखलाती है और अंत में यह संदेश देती है कि केवल शिक्षा के जरिये ही बेईमानी और सामाजिक दुर्भाव का सामना किया जा सकता है।

Citation - Beautiful narration of a remote village life, their rivalries, consequences and finally conveying the message that only education can encounter the treachery and social malice.



जर्सी
सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म

Jersey | Best Telugu Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Telugu | 160 mins | Director: Gowtam Tinnanuri | Producer: Sithara Entertainments | DOP: Sanu John Varughese
Screenplay: Gowtam Tinnanuri | Editor: Navin Nooli | Cast: Nani, Shraddha Srinath, Sathyaraj, Harish Kalyan, Ronit Kamra, Shishir
Sharma, Brahmaji, Sampath Raj

कथासार - अर्जुन, जो कभी क्रिकेटर बनना चाहता है, अब वो सरकारी नौकरी से निलंबित होने के बाद एक नीरस जिंदगी गुजार रहा है. अपने संघर्षों को खत्म करने में लगे हुए अर्जुन से उसका बेटा अपने जन्मदिन पर क्रिकेट जर्सी तोहफे में मांगता है. जर्सी के लिए कुछ पैसा कमाने के चक्कर में अर्जुन अपने पूर्व कोच मूर्ति से मदद लेता है. और वो फिर से एक बार क्रिकेट के मैदान में उतरता है. उस दौरान उसे अहसास होता है कि क्रिकेट उसके अंदर किस कदर बसा हुआ है, क्रिकेट में मैदान में जाते ही वो अपनी सारी तकलीफें भूल जाता है. वो फैसला करता है कि एक बार वो फिर से अपने सपने के लिए काम करेगा, क्या वो अपने बेटे के लिए जर्सी खरीद पाएगा, क्या वो टीम इंडिया के लिए खेलने का अपना सपना पूरा कर पाएगा ?

Synopsis - Arjun, who once aspired to become a cricketer, is living a dejected life after being suspended from the government job he had settled for. Struggling to make his ends meet, his life is put to a test when his son asks for a cricket jersey as his birthday present. To earn some money, he seeks his former coach Murty's help. While playing cricket to earn money for his son's jersey, Arjun realizes how much he missed playing cricket. On the cricket field, he feels so alive as if nothing else matters to him. He decides to reclaim the life he once dreamt of. Will he manage to buy jersey for his son and achieve his long-cherished dream of playing for Team India?

परिचय

गौतम तिन्नानुरी (Gowtam Tinnanuri)



गौतम तिन्नानुरी ऐसी कहानियों पर काम करना पसंद करते हैं जिससे आम आदमी खुद को जोड़ सके. इनकी पहली फिल्म माल्ली रावा ने सभी का दिल जीता था. इसी उत्साह को आगे

बढ़ाते हुए इन्होंने इंसानी जिंदगी के ताने बाना से जुड़ा हुआ अपने खाब जर्सी, बड़े पर्दे पर रचा.

Gowtam Tinnanuri likes to work on stories which most people can relate to. His first film 'Malli Raava' impressed everyone, following which he got an opportunity to realize his dream of bringing a human drama like 'Jersey' to life on the big screen.

PROFILE

सिथारा एंटरटेन्मेंट (Sithara Entertainment)



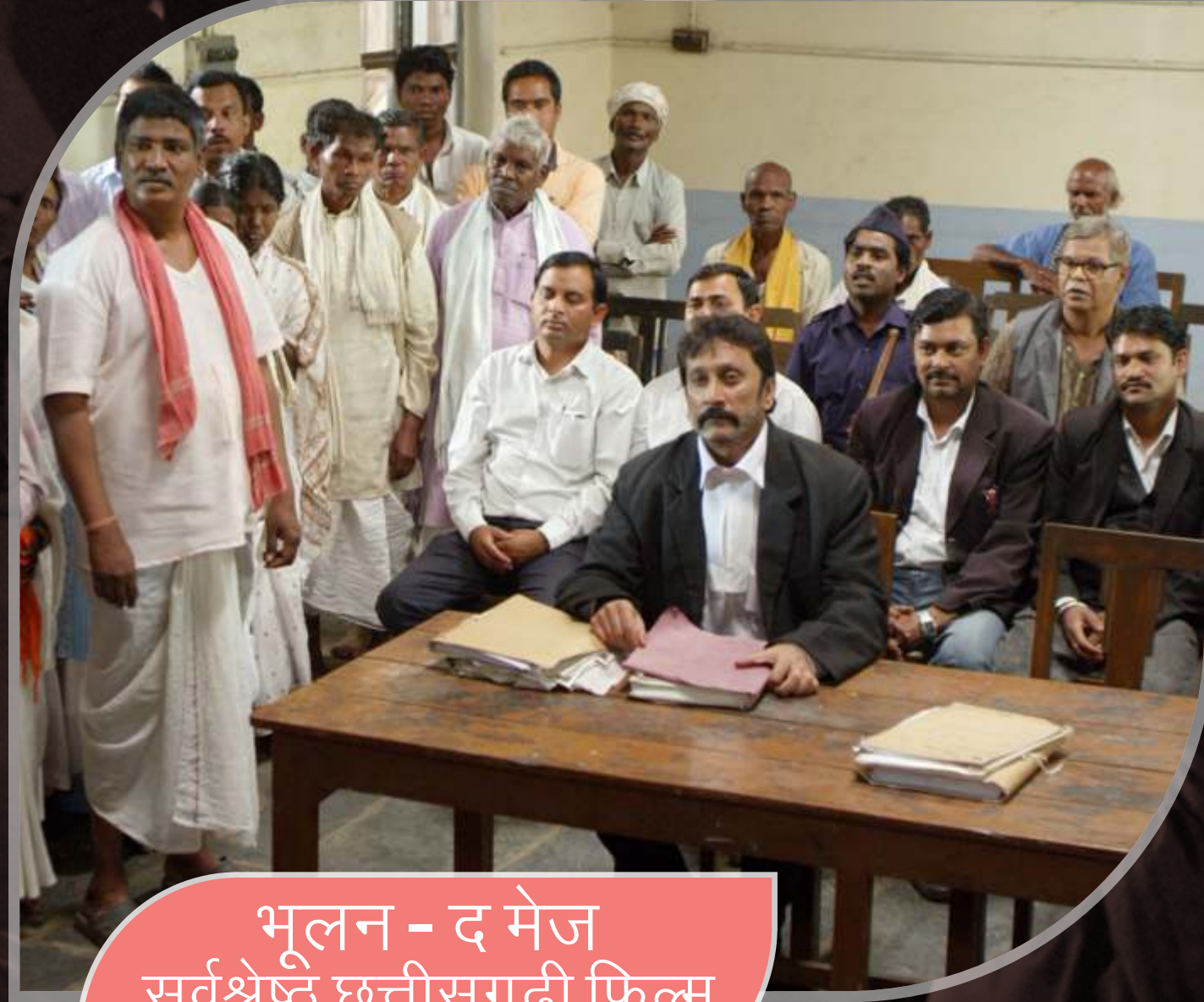
सिथारा एंटरटेन्मेंट एक तेलुगु प्रोडक्शन हाउस है जिसकी स्थापना सूर्यदेवारा नागा वामसी ने युवा टैलेंट को आगे बढ़ाने के लिए किया था. पिछले 6 साल इन्होंने सफलतापूर्वक कई

टैलेंट को सामने लाया है.

Sithara Entertainment is a Telugu production house founded and headed by Suryadevara Naga Vamsi to promote young talent. Over the last six years, it has been successful in bringing to life, vision of some exceptionally talented individuals.

प्रशस्ति - एक क्रिकेटर का अपने अधूरे खाब को पूरा करने के लिए जिंदगी के साथ संघर्ष की दास्तान

Citation - A strong portrayal of the life and struggle of a cricketer to fulfill his unfinished dream.



भूलन - द मेज सर्वश्रेष्ठ छत्तीसगढ़ी फ़िल्म

Bhulan: The Maze
Best Chhattisgarhi Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2020 | Chhattisgarhi | 131 mins | Director: Manoj Verma | Producer: Swapnil Film Productions | Screenplay: Manoj Verma | DOP: Sandip Sen | Editor: Manoj Verma, Tulendra Patel | Cast: Omkar Das Manikpuri, Anima Pagare, Rajendra Gupta, Mukesh Tiwari, Ashok Mishra, Sanjay Mahanand, Ashish Sendre, Pushpendra Singh, Anuradha Dubey.

कथासार - छत्तीसगढ़ में एक पौधा पाया जाता है भूलन कांदा, माना जाता है कि इसको लांघने वाले को तब तक कुछ याद नहीं आता है जब तक उसे कोई छुए नहीं. इस पौधे को रूपक बना कर फिल्म की कहानी लिखी गई है, जिसमें महुभाटा नाम के गांव में भाकला और बिरजू नाम के दो लड़कों में जमीन के कब्जे को लेकर लड़ाई हो जाती है. जिसमें दुर्घटनावश बिरजू की मौत हो जाती है. गांव वालों को इस बात पर भरोसा नहीं होता है, वो उसे निर्दोष मानते हैं, और गांजा नाम के लड़के को पुलिस को सौंप देते हैं, जिसे आजीवन कारावास हो जाता है, लेकिन उसके अच्छे बर्ताव को देखते हुए जेलर को लगता है कि वो निर्दोष है, और वो उसके लिए हाइकोर्ट में अपील करता है. दोबारा जांच में सच सामने आता है और पूरे गांव को जेल भेज दिया जाता है. और भाकला को सजाए मौत की सजा सुनाई जाती है, फिर कुछ घटनाएं होती हैं और वो बरी हो जाता है. एक ही मामले में दो सजा— क्या न्यायिक व्यवस्था ने भूलन कांदा पर पैर रख दिया है.

Synopsis - Bhulan Kaanda is a tuber found in Chhattisgarh. If one steps on it, he will forget his way and will not come to his senses until someone touches him. In Mahubhata village, Bhakla and Birju fight over a piece of land, during which Birju dies accidentally. The villagers believe Bhakla to be innocent. So, when police arrive, they protect him and hand over Ganjha instead, who is sentenced to life imprisonment. Ganjha's good behaviour in the prison forces the jailor to appeal in the high court to reopen the case. After reinvestigation, Bhakla is sentenced to death but after some unprecedented developments, he gets acquitted. Two different verdicts in the same case raise the question – has our judicial system kept its feet on the 'Bhulan Kanda'?

परिचय

मनोज वर्मा (Manoj Verma)



मनोज वर्मा छत्तीसगढ़ी फिल्म जगत के सफलतम निर्देशकों में से एक हैं. इनकी फिल्मों में बैर, माहुन दीवानी, ताहुन दीवानी, मि. तेतकुरम, दु-लाफाडु, माहुन

कुंवारा, ताहुन कुंवारी, भूलन दृद मेज शामिल है. निर्देशन के लिए छत्तीसगढ़ स्टेट का किशोर साहु सम्मान हासिल करने वाले ये पहले शख्स हैं.

Manoj Verma is a well-known film director and producer in Chhattisgarh. He has been directing documentaries and commercial spots for the state government since 2008. He is the first recipient of Chhattisgarh's 'Kishore Sahu Samman' for direction in 2018. His films as a director include 'Bair' (2007), 'Mahun Deewana Tahun Deewani' (2009), 'Mr. Tetkuram' (2011), 'Du-Lafadu' (2012), 'Mahun Kunwara Tahun Kunwari' (2019), etc.

PROFILE

स्वप्निल फिल्म प्रोडक्शन्स (Swapnil Film Productions)



स्वप्निल फिल्म प्रोडक्शन्स की स्थापना 2007 में आरती वर्मा और मनोज वर्मा ने की थी. इनकी पहली फिल्म थी बैर, उसके बाद 2009 में माहुन दीवानी ताहुन दीवानी,

2019 में माहुन कुंवारा, ताहुन कुंवारी, और 2019 में ही भूलन दि मेज का निर्माण किया.

Swapnil Film Productions was established in 2007 by Aarti Verma and Manoj Verma. Firm It has produced films such as 'Bair' (2007), 'Mahun Deewana Tahun Deewani' (2009), 'Mahun Kunwara Tahun Kunwari' (2019) and 'Bhulan: The Maze' (2019).

प्रशस्ति - एक पौधे 'भूलन कांदा' की कहानी जिसे रूपक के माध्यम के तौर पर चुनकर वर्तमान भ्रष्ट न्यायिक व्यवस्था को प्रदर्शित किया गया है

Citation - (Best Chhattisgarhi Film): The story of the plant Bhulan Kaanda is told in a metaphorical way which addresses the present corrupt judicial system.



छोरियां छोरों से कम नहीं होती
सर्वश्रेष्ठ हरियाणवी फिल्म

Chhoriyan Chhoron Se Kam Nahi Hoti
Best Haryanvi Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Haryanvi | 113 mins | Director: Rajesh Amarlal Babbar | Producer: Essel Vision Productions | Screenplay: Amit Raj Verma, Avantika Saxena | DOP: Arjun Rao | Editor: Sanjay Verma | Cast: Aniruddh Dave, Rashmi Somavanshi, Janvhi Sagwan, Satish Kaushik

कथासार - बनिती चौधरी उर्फ बिन्नु चौधरी जयदेव सिंह की सबसे छोटी बेटी है, उन्हें बेटा नहीं होने का दुख है। जैसे बिन्नु बड़ी होती है, वो आईपीएस अधिकारी बनना चाहती है लेकिन उसे अपने पिता और समाज का विरोध झेलना पड़ता है। सिर्फ उसका बचपन का दोस्त विकास ही उसका साथ देता है। जब वो आईपीएस रोशनी जामवाल से मिलती है तो वो उसे अपना आदर्श मान लेती है, लेकिन बिन्नु की चुनौतियां कम नहीं होती हैं, एमएलए के बेटी पूनम सारस्वत भी उसके रास्ते का रोड़ा बनती है। फिल्म दिखाती है कि किस तरह बिन्नु अपने पिता और समाज के लाख विरोध का सामना करके आईपीएस अधिकारी बनती है और आखिरकार उसके पिता को मानना पड़ता है कि बेटियां किसी से कम नहीं होती हैं।

Synopsis - Binita Choudhry alias Binnu is the younger daughter of Chaudhary Jaydev Singh, who regrets having only daughters and no son. As Binnu grows up, she wants to become an IPS Officer but faces opposition from her father and society. Her only support is a childhood friend, Vikas. When she has a chance encounter with IPS Rohini Jamwal, she becomes her idol. But Binnu faces another challenge – Poonam Saharawat, daughter of an MLA and a trustee of the college where she wants admission. The film shows how Binnu overcomes various hurdles thrown at her by her family and the society to become an IPS officer; subsequently, forcing her father to accept that a daughter is as good as a son.

परिचय

राजेश अमरलाल बब्बर (Rajesh Amarlal Babbar)



राजेश अमरलाल बब्बर फिल्मकार हैं जिन्होंने कई सफल डेली सोप और सुपरहिट फिल्में निर्देशित की हैं। इनके निर्देशित टीवी शो में कुसुम, कही तो मिलेंगे,

यह शादी नहीं हो सकती, कहीं तो होगा, जी सिनेस्टार्स की खोज जैसे कई शो शामिल हैं। इन्होंने भारतीय रंगमंच में अपना स्नातोकोत्तर चंडीगढ़ के पंजाब विश्वविद्यालय से पूरा किया है।

Rajesh Amarlal Babbar is a filmmaker who has directed various long-running, successful daily soaps and superhit films. He is well-known for directing popular TV shows like 'Kusum', 'Kahi Toh Milenge', 'Yeh Shadi Nahi Ho Sakti', 'Kahin To Hoga', 'Zee Cinestars Ki Khoj' and many others. He has also given successful TV show 'Sapne Suhane Ladakpan Ke', 'Suhani Si Ek Ladki', 'Ye Teri Galiyaan'. He has completed this Master in Indian Theatre from Punjab University, Chandigarh.

PROFILE

जी स्टूडियोज (Zee Studios)



जी स्टूडियोज, फिल्म निर्माण करने के लिए जी एन्टरटेन्मेंट एंटरप्राइजेज लिमिटेड का ही एक हिस्सा है। जो सशक्त और जरूरत मुद्दों पर केंद्रित फिल्मों का निर्माण करता है। बीते कुछ सालों में ही इसने कई भाषाओं की फिल्म निर्माण में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज की है।

Zee Studios, the integrated movies vertical of Zee Entertainment Enterprises Limited, been focused on films aimed at pairing content with powerful performances and developing concept-driven films. It has also established a strong presence in the Hindi, Marathi, Punjabi, Kannada, Telugu and other regional markets with a string of successful movies over the last few years.

प्रशस्ति - फिल्म मनोरंजक तरीके से बेटियों की समानता और शिक्षा की अहमियत की बात रखती है।

Citation - (Best Haryanvi Film): The film entertainingly stresses the importance of the education and equality of a girl child.



इयुदूह
सर्वश्रेष्ठ खासी फ़िल्म

İewduh | Best Khasi Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Khasi | 95 mins | Director: Pradip Kurbah | Producer: Shankar Lall Goenka | Screenplay: Paulami Duttagupta, Lionel Fernandes, Pradip Kurbah | DOP: Pradip Daimary | Editor: Lionel Fernandes | Cast: Albert Mawrie, Denver Pariat, Richard Kharpuri, Anvil Laloo, Lapynhun Sun, Enshon Lamare

कथासार - इयुदह उत्तर पूर्व भारत से सबसे जीवंत बाजारों में से एक है। इयुदह फिल्म इस बाजार में रोजाना आने वाले लोगों की रोजमर्रा की कहानी दिखाती है। यहां अलग-अलग समुदाय और धर्म के लोग साथ काम करते हैं और रहते हैं। वह न सिर्फ खुद की जिंदगी को बेहतर और खुशहाल बनाने की कोशिश करते हैं बल्कि उनके बारे में भी सोचते हैं, जिनको वो प्यार करते हैं, जिनकी परवाह करते हैं। आज कई सदियां गुजर जाने के बाद भी, इयुदह बढ़ता जा रहा है और एक बड़े इतिहास का गवाह बन चुका है। इसकी हर गली में एक नई कहानी है, इयुदह में स्वार्थ नहीं रिश्ते पनपते हैं।

Synopsis - 'Iewduh' is about one of the liveliest markets by the same name in North East India. Here, people from different communities and religions work and co-exist. In every lane of Iewduh is an untold story. The story of struggle, of hope to give life not just to themselves, but also to those that they love, those that they care for. Today centuries later, Iewduh stands tall and is witness to a lot of history. In its every lane, there are new stories. With scars and colors, freshness and stench, 'Iewduh' is about everyday people and their everyday stories; people not dignified as heroes, but people who make the lives of each other better. In Iewduh, when reason ends, relationships begin.

परिचय

प्रदीप कुरबाह (Pradip Kurbah)



प्रदीप कुरबाह खुद के दम पर बने फिल्मकार हैं, जो पिछले 20 सालों से भी अधिक वक्त से निर्देशन कर रहे हैं। इन्हें पहले भी दो बार 2014 और 2016 में राष्ट्रीय

फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। इयुदह इनकी तीसरी खासी फीचर फिल्म है।

Pradip Kurbah is a self-taught filmmaker with over 20 years of experience in direction. He has won the National Film Award twice in 2014 and 2016. 'Iewduh' (2019) is his third Khasi feature films after 'Onaatah: Of the Earth' (2016) and 'RI: Homeland of Uncertainty' (2013). His endeavour is to showcase the talent available in India's north east.

PROFILE

शंकर लाल गोयनका (Shankar Lall Goenka)



शंकर लाल गोयनका एक फिल्म निर्माता, वितरक और प्रदर्शक हैं। इससे पहले इनकी निर्मित दो फिल्मों राष्ट्रीय अवार्ड हासिल कर चुकी हैं – अजीयो (2014

सर्वश्रेष्ठ असमियी फीचर फिल्म) और दाऊ हुदुनी मेथाई (2015, सर्वश्रेष्ठ बोदो फिल्म)।

Shankar Lall Goenka is a film producer, distributor and exhibitor. He had earlier produced two National Film Award winning films – 'Ajeyo' (Best Feature Film in Assamese, 2014), directed by Jahnu Barua, and 'Dau Huduni Methai' (Best Bodo Film, 2015), directed by Manju Borah). Starting his film production house Shiven Arts in 2013, he has won accolades for his contribution to cinema in North East India.

प्रशस्ति – फिल्म मानवीय मूल्यों के साथ एक साथ रहने की बात पर चरित्रों के समुच्चय के बेहतरीन चित्रण के जरिए जोर देती है।

Citation - (Best Khasi Film): Wonderful portrayal of collage of characters in Iewduh stresses a community living with human values.



अनु रुवाडी
सर्वश्रेष्ठ मिशिंग फ़िल्म

Anu Ruwad | Best Mishing Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Mishing | 93 mins | Director: Dilip Kumar Doley | Producer: Obonori Pictures | DOP: SUMON DOWERAH
Screenplay: DILIP KUMAR DOLEY | Editor: GHANASHYAM KALITA | Cast: Rajib Dloey, Pushpa Mishong, Nilim Dutta & Anuradha Gam

कथासार - फिल्म की कहानी एक दूरदराज के गांव माजुली की जनजाति मिशिंग के इर्दगिर्द बुनी हुई है। इनके अपनी परंपराएँ, धर्म, विश्वास और रीति रिवाज हैं। सातुला इस इलाके में होने वाली सभी धार्मिक गतिविधियों का संचालन करता है। दिक्कत तब खड़ी होती है जब डॉ नाजिम हुसैन, एमबीबीएस की पोस्टिंग यहां के सरकारी अस्पताल में हो जाती है। वो हर मरीज को घर जाकर बहुत शिद्दत से इलाज करता है। सातुला को ये बाद नागवार गुजरती है उसे लगता है कि एक दूसरे धर्म का इंसान उन लोगों के घरों में घुस रहा है ये पाप है। सातुला डॉक्टर का ट्रांसफर कराने और उसे नीचा दिखाने की कई कोशिशें करता है लेकिन नाकाम रहता है।

Synopsis - The film revolves around the people of a remote village Majuli, inhabited by Mishing tribe. They have their own traditional social customs, religious faith and practices. Satula, head of all religious practices in the area, dictates terms in matter of religious activity. Trouble starts when Dr. Nazim Hussain, MBBS, is posted at Siyajuli Hospital by the government. He visits the houses of patients and treats them sincerity and dedication, which irks Satula who believes a man of different faith entering their houses was a sin. Satula plots a conspiracy to transfer the doctor from the village and many untoward events follow, but he fails.

परिचय PROFILE

दिलीप कुमार दोलेय (Dilip Kumar Doley)



दिलीप कुमार दोलेय एक मिशिंग गायक, कंपोजर और फिल्मकार हैं। उनका पैतृक घर आसाम के माजुली द्वीप पर है। वे पहले केंद्र सरकार के नुमाइंदा थे। इनकी पहली फीचर फिल्म सन्स ऑफ अबोटानी है, द मिशिंग ने दो राष्ट्रीय अवार्ड हासिल किये हैं। (सर्वश्रेष्ठ नॉन फीचर फिल्म और सर्वश्रेष्ठ ऑडियोग्राफी), इनकी दूसरी फिल्म पानोई जोनकी को भी काफी सराहना मिली है।

Dilip Kumar Doley is a Mishing folk singer, composer and filmmaker. A native of the Majuli river island of Assam, he started his career as a central government employee. His first non-feature film 'Sons of Abotani, The Mishing' (1991) won two National Awards (Best Non-Feature Film and Best Audiography). His second 'Panoi-Jonki' also received critical acclaim.

प्रशस्ति - मिशिंग लोगों के बीच में दुर्भाग्यवश होने वाली बच्चों की मौत और डायन के शिकार के खाके का यथार्थपरक चित्रण
Citation - A realistic narration of schematic witch hunting and unfortunate child deaths among Mishing people.



केन्जिरा
सर्वश्रेष्ठ पनिया फ़िल्म

Kenjira | Best Paniya Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Paniya | 100 mins | Director: Manoj Kana | Producer: Neru Films | Screenplay: Manoj Kana | DOP: Pratap P Nair | Editor: Manoj Kannothe | Cast: Vinusha Ravi, K.V. Chandran, Mohini, Joy Mathew

कथासार - ये फिल्म पनियन जनजाति की दयनीय हालत को दिखाती है, भूख, गरीबी लाचारी से जूझती जनजाति की एक लड़की लगातार शोषण का शिकार होती है. और शारीरिक शोषण के बाद वो किशोरावस्था में मां बन कर समाज के मजाक का साधन बन जाती है. उसका समुदाय उसे सुरक्षित करने की कोशिश करता है लेकिन कानूनी दांव पेंच नहीं जानने की वजह से असफल रहता है. बाद में वो उन्हें बिरादरी से बाहर कर दिया जाता है. वे सभी बीच नदी में फंस जाते हैं, सभी बिखर जाते हैं लेकिन केन्जिरा अपने बच्चे को गले लगाती और नदी में बहती हुई किनारे पर पहुंच जाती है.

Synopsis - The film portrays the pitiable condition of the Paniyan tribe. In her fight against dampening hunger, Kenjira, a girl student from the tribe, goes through continuous humiliation. After a sexual assault, she becomes a teen-aged mother and a matter of fun for the society. Her community tries to protect her, but fails due to lack of legal know-how. Later, they are ostracised and pushed out from their tribal colony. They get struck emotionally and literally amidst the rivers. All of them disperse. But Kenjira, hugging her child, wanders in the river and strives to get back to a bank.

परिचय

मनोज काना (Manoj Kana)



मनोज काना एक वरिष्ठ मलयालम रंगमंच कलाकार और फिल्म निर्देशक हैं. 20 सालों के अपने सफर में इन्होंने 15 नाटक और 3 फिल्मों निर्देशित की हैं. इनके

ज्यादातर काम को राज्य सम्मान हासिल हो गया. इनके प्रसिद्ध रंगमंच कार्य में पिरान्हा, उराट्टि, ओन्म प्राथी, करंसी शामिल है. इसके पहले इन्होंने चौयलियम और अमीबा का निर्देशन किया है.

Manoj Kana is a veteran Malayalam theatre artist and film director. He has directed 15 stage plays in over 20 years and three films many of which have won state awards. His famous theatre works include 'Piranha', 'Uratti' (Tribal God), 'Onnam Prathi' (First Accused), 'Currency', etc. His earlier two films were 'Chayilyam' (2012) and 'Amoeba' (2015).

PROFILE

नीरु फिल्मस सोसाइटी (Neru Films Society)



नीरु फिल्मस सोसाइटी, नीरु कल्चरल सोसाइटी की एक इकाई है जिसकी स्थापना 2010 में हुई थी. मनोज काना इसके सचिव हैं. इन्होंने दो फिल्म चौयलियम और अमीबा का निर्देशन किया है.

Neru Films Society is a unit of Neru Cultural Society formed in 2010 at Calicut, Kerala. Manoj Kana is its Secretary. It has produced two films namely 'Chayilyam' (2012) and 'Amoeba' (2015), which have won accolades, from Kerala Chalachithra Academy.

प्रशस्ति - पनिया आदिवासियों के संघर्ष, अपमान और लाचारगी का स्पष्टवादी चित्रण

Citation - (Best Paniya Film): A straight forward narration of Paniya Tribe, its struggles, humiliations and helplessness.



पिंगारा सर्वश्रेष्ठ तुलु फ़िल्म

Pingara | Best Tulu Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Tulu | 107 mins | Director: R. Preetham Shetty | Producer: DMR Productions | Screenplay: R. Preetham Shetty | DOP: V. Pavan Kumar | Editor: Ganesh Nirchal, Sheshachala Kulkarni | Cast: Sharan Shetty, Sinchana Chandramohan, Neema Ray, Usha Bhandary, Guru Hegde, Ranjith Suvarna, Sunil Nelligudde, Prashanth C.K.

कथासार - कथासार— कर्नाटक के तटीय क्षेत्र तुलु नाडु में दलित समुदाय के कुछ लोगों के लिए कहा जाता है कि वह अपनी इच्छा से किसी की भी आत्मा को अपने अंदर आने देते हैं और कुछ वक्त के लिए ही सही, इन्हें देवीय शक्ति माना जाता है। इसी तह जब एक आत्मा तानिया के शरीर के जरिए गांव की समस्याओं को लेकर सच बोलती है तब ऊंची जाति के तीन सदस्यों की पोल खुलती है। फिल्म बताती है कि किस तरह इस खुलासे से इन तीनों का जीवन प्रभावित होता है, किस तरह जातिवाद की वजह से अन्याय फलता—फूलता है और किस तरह प्रकृति शरीर को माध्यम बनाकर न्याय करती है

Synopsis - In Tulu Naadu, a region in the coastal Karnataka, the members of the Dalits community there are believed to have the ability to summon spirits onto their bodies at will, and hence are considered Divine beings, albeit momentarily. So, when a spirit speaks the truth through the bodily medium of Taniya about their village's problems, three individuals from an upper caste community get guilt-ridden. The film then shows how each of them gets affected by the revelation; how class discrimination practices result in injustice; and how nature subsequently uses the same bodily medium to deliver justice.

परिचय

आर. प्रीथम शेटी (R. Preetham Shetty)



आर. प्रीथम शेटी टेलीविजन उद्योग के निर्देशक हैं और इन्होंने कई चर्चित धारावाहिकों का निर्देशन किया है। पिंगारा इनके निर्देशन में बनी पहली फीचर फिल्म है। वे पांच साल से ज्यादा वक्त से हिंदी टेलीविजन उद्योग में सहायक निर्देशक के तौर पर काम कर चुके हैं।

R. Preetham Shetty is a director from the television industry and is directing a popular serial for a TV channel. 'Pingara' (2019) is his feature film directorial debut. Previously, he has worked as an assistant director in the Hindi television industry for more than five years.

PROFILE

ओम स्टूडियो और डीएमआर प्रोडक्शन (OM Studio and DMR Productions)



ओम स्टूडियो और डीएमआर प्रोडक्शन के अविनाश यू शेटी कन्नड़ और तुलु फिल्म जगत के एक निर्माता हैं। इनकी पहली फिल्म हरिवू ने सर्वश्रेष्ठ

कन्नड़ फिल्म और राष्ट्रीय और कर्नाटक स्टेट अवार्ड जीता है। आ काराला रात्रि को भी सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए कर्नाटक स्टेट अवार्ड हासिल किया है।

Avinash U. Shetty of **OM Studio** and **DMR Productions** is a producer in the Kannada and Tulu film industry. His debut film 'Harivu' (2014) won the National Film Award for the Best Kannada Film and the Karnataka State Film Award for the Best Film. He also won the Karnataka State Award for Best Film for 'Aa Karaala Ratri' (2018).

प्रशस्ति – किस तरह मासूम लोग अमीरों और ताकतवरों के द्वारा जान बूझकर फँसाए गए अंधविश्वास का शिकार बनते हैं, यह फिल्म इस मुद्दे को काव्यात्मक और संवेदनात्मक तरीके से प्रदर्शित करती है।

Citation - (Best Tulu Film): The film poetically and sensitively reveals how innocent people fall prey to the blind faiths circulated intentionally by the rich and powerful.



बहत्तर हूरें सर्वश्रेष्ठ निर्देशन

Bahattar Hoorain | Best Best Direction

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 2,50,000/-

Hindi | 80 Mins | Director: Sanjay Puran Singh Chauhan | **Producer:** Saarthie Entertainment, Aliens Pictures | **DOP:** Chirantan Das
Screenplay: Anil Pandey | **Editor:** Sanjay Puran Singh Chauhan | **Cast:** Samarth Sonawane, Shravan Upalkar, Anil Kambale, Vaishali Kendale, Jannat Kunal Pawar, Jaybhim Shinde, Shikare Kaka, Ajay Chavan, Lala Shaikh



संजय पूरन सिंह चौहान (Sanjay Puran Singh Chauhan)

संजय पूरन सिंह चौहान ने निर्देशन की शुरुआत लाहौर (2010) से की, जिसने दुनियाभर में काफी तारीफें बटोरें थीं. इस फिल्म ने दो राष्ट्रीय अवार्ड जीते थे. जिनमें एक सर्वश्रेष्ठ निर्देशन का और दूसरा सर्वश्रेष्ठ सह कलाकार (फारूख शेख).72 हूरें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (2019) के इंडियन पैनोरमा के लिए भी चुनी गई थी.

Sanjay Puran Singh Chauhan made his directorial debut with critically-acclaimed 'Lahore' (2010), which earned applauses across the globe and was picked up by Warner Brothers. It won two National Awards – for the Best Director and for Best Supporting Actor (Farooque Sheikh). It was also selected for Indian Panorama, International Film Festival of India, Goa 2019.

प्रशस्ति – एक कसी हुई डार्क कॉमेडी जो सिनेमाई श्रेष्ठता के जरिए फिल्म जन्नत की 72 हूरों के मिथक पर सवाल खड़ा करती है

Citation - The film questions with cinematic excellence the myth behind 72 Angels in the heaven through an engaging dark comedy.

Synopsis of the film on page no. 132



भोंसले सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (साझा)

Bhonsle | Best Actor (Shared)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Hindi | 123 mins | Director: Devashish Makhija | Producer: Shabana Raza Bajpayee, Piyush Singh, Abhayanand Singh, Saurabh Gupta, Sandiip Kapur | Screenplay: Mirat Trivedi, Devashish Makhija, Sharanya Rajgopal | DOP: Jigmet Wangchuk | Editor: Shweta Venkat Mathew | Cast: Manoj Bajpayee, Santosh Juvekar, Ipshita Chakraborty Singh, Virat Vaibhav



मनोज बाजपेयी (Manoj Bajpayee)

मनोज बाजपेयी हिंदी सिनेमा के एक जाने माने अभिनेता हैं. इन्होंने अपनी फिल्मी सफर की शुरुआत 1994 में बैंडिक क्वीन से की थी, हालांकि इससे पहले वे द्रोहकाल में छोटी भूमिका निभा चुके हैं. वे अब तक 60 से ज्यादा फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं.

Manoj Bajpayee is a well-known film actor who predominantly works in Hindi cinema but has also worked in films in other languages. He made his film debut with 'Bandit Queen' in 1994, and has since then worked in over 60 films, including 'Dastak', 'Tamanna', 'Satya' 1998, 'Shool', 'Kaun', 'Aks', 'Pinjar', '1971-Prisoners of War', 'Rajneeti', 'Gangs of Wasseypur'. He has won National Film Awards for the Best Supporting Actor and Best Actor category for 'Satya' and 'Pinjar' in 1999 and 2003 respectively. He won three Filmfare awards for his performance in films 'Satya', 'Shool' and 'Aligarh' and 1 Filmfare for his performance in season 1 of Amazon web series 'The Family Man'. He has been honored with the prestigious civilian honour 'Padma Shri' in 2019.

प्रशस्ति – बुराई के खिलाफ महिला की गरिमा को बनाए रखने के लिए एक ब्रेन कैंसर मरीज का अपनी जान गंवा देने का प्रभावशाली चित्रण करने के लिए

Citation - For a powerful portrayal of a brain cancer patient and sacrificing his life to uphold a woman's dignity against the evil.

Synopsis of the film on page no. 132



असुरन सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (साझा) Asuran | Best Actor (Shared)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Tamil | 126 mins | **Director:** Vetri Maaran | **Producer:** Kalaipuli S. Thanu | **DOP:** R. Velraj | **Screenplay:** Manimaran, Vetri Maaran | **Editor:** R. Ramar | **Cast:** Dhanush, Manju Warrier, Prakashraj, Pasupathy, Ken, Teejay



धनुष (Dhanush)

धनुष राष्ट्रीय अवार्ड प्राप्त कर चुके अभिनेता, निर्माता, निर्देशक, लेखक, गीतकार और गायक हैं। थुल्लुवाधो ल्लामई से इनका फिल्मी सफर शुरू हुआ और सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए दो बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, दक्षिण के फिल्म फेयर अवार्ड सहित कई सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। इनकी चर्चित फिल्मों की सूची काफी लंबी है।

Dhanush is a National Award-winning actor, producer, director, writer, lyricist, and playback singer. His first film was 'Thulluvadho Ilamai', a 2002 coming-of-age film directed by his father Kasthuri Raja. He has won two National Film Awards for Best Actor – 'Aadukalam' (2010) and now 'Asuran' (2019). He has won several other awards including Filmfare Awards South. Some of his successful films including 'Polladhavan' (2007), 'Yaaradi Nee Mohini' (2008) '3' (2012), 'Maryan' (2013), 'Anegan' (2015), 'Kodi' (2016), and 'Vadachennai' (2018).

प्रशस्ति – एक युवा विद्रोही और बाद में एक शांत मिजाज पिता बनने की भूमिका को सहजता से निभाने के लिए

Citation - For the versatility in carrying out the role of a young rebel and later as sobered father figure in the film.

Synopsis of the film on page no. 132



मणिकर्णिका – द क्वीन ऑफ झांसी सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री

Manikarnika: The Queen of Jhansi
Best Actress

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Hindi | 148 mins | Director: Kangana Ranaut & Krish | Producer: Zee studios | DOP: Kiran Deohans, Gnana Shekar V. S. Screenplay: K. V. Vijayendra Prasad | Editor: Rameshwar Bhagat, Suraj Jagtap | Cast: Kangana Ranaut, Atul Kulkarni, Jisshu Sengupta, Vaibhav Tatwawadi, Mohammed Zeeshan Ayyub, Ankita Lokhande, Tahir Shabbir



कंगना रनाउत (Kangana Ranaut)

कंगना रनाउत एक अभिनेत्री और फिल्मकार हैं, जिन्हें उनकी सहज अदाकारी के लिए जाना जाता है। इन्हें कई सम्मान हासिल हुए हैं जिसमें चार राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड, तीन सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए, क्वीन, तनु वेड्स मनु रिटर्न्स, और मणिकर्णिका और सर्वश्रेष्ठ सह-कलाकार के तौर पर फैशन के लिए मिला। 2020 में इन्हें पद्मश्री से नवाजा गया।

Kangana Ranaut is an actress and filmmaker widely known as an actress par excellence with natural acting ability. She is the recipient of several awards, including four National Film Awards – three as Best Actress for 'Queen' (2014), 'Tanu Weds Manu Returns' (2015) and 'Manikarnika: The Queen of Jhansi' (2019) and 'Panga' (2020) – and one as Best Supporting Actress for 'Fashion' (2009). In 2020, she was conferred the 'Padma Shri', one of the highest Indian civilian awards. Born in Himachal Pradesh, she is also known as a true patriot and for her philanthropic work for many causes.

प्रशस्ति – मणिकर्णिका में ऐतिहासिक शख्सियत झांसी की रानी का किरदार बेहतरीन तरीके से निभाने के लिए और पंगा में खेल की दुनिया में वापसी करने वाली एक मध्य आयु की मां की भूमिका निभाने के लिए

Citation - For the outstanding performance as the legendary Jhansi ki Rani in the film 'Manikarnika' and depiction of a middle-aged mother coming back to sports facing all odds in the film 'Panga'.



पंगा
 सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री
 Panga
 Best Actress

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2020 | Hindi | 129 mins | Director: Ashwiny Iyer Tiwari | Producer: Fox Star Studio | Screenplay: Nitesh Tiwari | DOP: Jay Patel, Archit Patel | Editor: Ballu Saluja | Cast: Kangana Ranaut, Jassi Gill, Richa Chaddha, Neena Gupta



कंगना रनाउत (Kangana Ranaut)

कंगना रनाउत एक अभिनेत्री और फिल्मकार हैं, जिन्हें उनकी सहज अदाकारी के लिए जाना जाता है। इन्हें कई सम्मान हासिल हुए हैं जिसमें चार राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड, तीन सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए, क्वीन, तनु वेड्स मनु रिटर्न्स, और मणिकर्णिका और सर्वश्रेष्ठ सह-कलाकार के तौर पर फैशन के लिए मिला। 2020 में इन्हें पद्मश्री से नवाजा गया

Kangana Ranaut is an actress and filmmaker widely known as an actress par excellence with natural acting ability. She is the recipient of several awards, including four National Film Awards – three as Best Actress for ‘Queen’ (2014), ‘Tanu Weds Manu Returns’ (2015) and ‘Manikarnika: The Queen of Jhansi’ (2019) and ‘Panga’ (2020) – and one as Best Supporting Actress for ‘Fashion’ (2009). In 2020, she was conferred the ‘Padma Shri’, one of the highest Indian civilian awards. Born in Himachal Pradesh, she is also known as a true patriot and for her philanthropic work for many causes.

प्रशस्ति – मणिकर्णिका में ऐतिहासिक शख्सियत झांसी की रानी का किरदार बेहतरीन तरीके से निभाने के लिए और पंगा में खेल की दुनिया में वापसी करने वाली एक मध्य आयु की मां की भूमिका निभाने के लिए

Citation - For the outstanding performance as the legendary Jhansi ki Rani in the film ‘Manikarnika’ and depiction of a middle-aged mother coming back to sports facing all odds in the film ‘Panga’

Synopsis of the film on page no. 132



सुपर डीलक्स सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता

Super Deluxe | Best Supporting Actor

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Tamil | 177 mins | Director: Thiagarajan Kumararaja | Producer: Piyush Singh | DOP: P.S. Vinod & Nirav Shah
Screenplay: Mirat Trivedi, Devashish Makhija, Sharanya Rajgopal | Editor: Shweta Venkat Mathew | Cast: Vijay Sethupathi, Fahadh Fasil, Samantha Akkineni, Mysskin, Ramya Krishnan



विजय सेतुपति (Vijay Sethupathi)

विजय सेतुपति अकाउंटेंट से अभिनेता, निर्माता, गीतकार, और संवाद लेखक बने. इनकी यादगार फिल्मों में बाले पंडिया, सुंदरा, पिज्जा और नादुवुला कोंजम पक्कत्था कान्म हैं. वे अपने किरदार में खो जाने के लिए जाने जाते हैं, भले ही भूमिका कितनी छोटी ही क्यों ना हो.

Vijay Sethupathi is an accountant-turned-actor, producer, lyricist and dialogue writer. His breakthrough roles were in the films 'Bale Pandiya' (2010), 'Sundara' (2012), 'Pizza' (2012), and 'Naduvula Konjam Pakkatha Kaanom' (2012) which shot him to instant stardom. He is known for his acting prowess, even in his most minor of roles.

प्रशस्ति – ट्रांसजेंडर की चुनौतीपूर्ण भूमिका को सहजता से निभाने के लिए

Citation - For his challenging and convincing performance as a transgender



द ताशकंत फाइल्स सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री

The Tashkent Files | Best Supporting Actress

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Hindi | 147 mins | Director: Vivek Ranjan Agnihotri | Producer: Pallavi Joshi | DOP: Udaysingh Mohite | Screenplay: Vivek Ranjan Agnihotri | Editor: Sattyajit Gazmer | Cast: Mithun Chakraborty, Naseeruddin Shah, Shweta Basu Prasad, Pankaj Tripathi, Mandira Bedi, Pallavi Joshi, Rajesh Sharma



पल्लवी जोशी ने बतौर बाल कलाकार 1970 के शुरुआत में काम की शुरुआत की. इन्होंने करीब 50 फिल्मों और 94 सीरियल में अपनी अदाकारी का जौहर दिखाया. 1995 में इन्हें 'वो छोकरी' फिल्म के लिए राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड (निर्णायक मंडल) से नवाजा गया. इन्होंने 1985 में प्रसिद्ध टीवी सीरियल 'एक कहानी' से टीवी में काम शुरू किया, उसके बाद इन्होंने कई चर्चित धारावाहिकों, मृगनयनी, डिस्कवरी ऑफ इंडिया, तलाश, बुनियाद, हम हिंदुस्तानी, अंताक्षरी, आदी में काम किया. इनकी चर्चित फिल्मों में तहलका, पनाह, मुजरिम दाता, अंधा युद्ध, सूरज का सातवां घोड़ा, मेकिंग ऑफ द महात्मा, बुद्धा इन ए ट्रेफिक जैम.

Pallavi Joshi started her career as a child artiste in the early seventies, and has acted in over 50 films, and over 94 serials. Her Television career started in 1985 with Manju Singh's famous Serial 'Ek Kahani' She has, to her credit popular serials like 'Mrignayani, Discovery of India, Talash, Buniyad, Katha Sagar, Hum Hindustani, Kab Tak Pukaroon, Alpaviraam, Justajoo' Kehna Hai Kuchh Mujhko and has been the longest running co- host for the popular game show 'Antakshari'. Having acted in popular films like 'Tehelka, Panaah, Mujrim Daata, Andha Yudh, Suraj ka Satwaan Ghoda' the Indo-South African, English film 'Making Of The Mahatma', Buddha In A Traffic Jam, Rita etc. she went on to win the Jury Special National Award for her performance in 'Woh Chhokri' in 1995.

प्रशस्ति – विवादित न्यायिक प्रक्रिया में एक विकलांग इतिहासकार का जोरदार रोल निभाने के लिए

Citation - For her subtle but stubborn performance as a disabled historian in a controversial jury process.

Synopsis of the film on page no. 133



केडी (ए) करुप्पु दुराई सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार

KD (A) Karuppu Durai | Best Child Artist

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Tamil | 119 mins | Director: Madhumita Sundararaman | Producer: Vikram Mehra, Siddharth Anand Kumar
Screenplay: Madhumita Sundararaman | DOP: Meyyendiran Kempuraj | Editor: Vijay Venkataraman | Cast: MU Ramaswamy,
Naga Vishal, Yog Japee



नागा विशाल मदुरै (Naga Vishal)

नागा विशाल मदुरै के रहने वाले हैं. केडी (ए) करुप्पु दुराई से पहले विशाल ने कभी अभिनय नहीं किया था. बस फिल्मों के प्रति उनका जुनून उन्हें ऑडिशन से कुटी के किरदार तक ले गया. ऑडिशन के दौरान उनका व्यवहार ठीक वैसा ही था जैसा निर्देशक अपनी फिल्म के किरदार में चाहते थे.

Naga Vishal Madurai is a spunky kid from Madurai. Before 'KD (A) Karrupu Durai', Vishal had no acting experience. It was this passion for films that eventually led him to an audition for the role of Kutty. In the audition, he was exactly how spirited the director

had imagined the character to be and hence landed the role.

प्रशस्ति – फिल्म में एक बेघर बुजुर्ग को बचाने वाले अनाथ बच्चे की दमदार भूमिका निभाने के लि

Citation - For his outstanding performance as a realistic orphan street boy becoming a guide and saviour to an almost abandoned old man in the film.



केसरी सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक

Kesari | Best Male Playback Singer

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Hindi | 150 mins | Director: Anurag Singh | Producer: Hiroo Yash Johar, Aruna Bhatia, Karan Johar, Apoorva Mehta, Sunir Khetarpal | DOP: Anshul Chobey (W.I.C.A) | Screenplay: Girish Kohli Anurag Singh | Editor: Manish More | Cast: Akshay Kumar, Parineeti Chopra



प्रतीक बचन (Pratik Bachan)

प्रतीक बचन जिन्हें मंच पर सभी बी प्राक के नाम से जानते हैं. एक गायक, संगीतकार हैं जो पंजाबी और हिंदी संगीत जगत से जुड़े हुए हैं. इन्होंने अपने काम की शुरुआत बतौर संगीत निर्माता की थी. इनका बनाया हुआ पहला हिट गीत था, मन बंजारा. बाद में इन्होंने केसरी और गुड न्यूज के लिए गाना भी गाया.

Pratik Bachan, best known by his stage name B Praak, is a singer and music composer associated with the Punjabi and Hindi music industry. He started his career as a music producer, and made his singing debut with the hit song 'Mann Bharrya' (2018). He later sang two songs in the films 'Kesari' and 'Good Newwz', and was a guest composer in 'Bala'.

प्रशस्ति – देशभक्ति गीत का भावपूर्ण तरीके से निभाने के लिए

Citation - For soulful recitation of a patriotic song.



बारदो

सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका

Bardo | Best Female Playback Singer

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Marathi | 125 mins | Director: Bhimrao Mude | **Producer:** Ritu Films Cut LLP, Film Panchjanya Productions | **DOP:** Vinayak Jadhav
Screenplay: Bhimrao Mude & Shweta Pendse | **Editor:** Prathamesh Patkar & Sanil Kokate | **Cast:** Makarand Deshpande, Anjali Patil, Ashok Samartha, Girish Pardeshi, Gautam Joglekar, Sandesh Jadhav, Jagannath Nivangune, Varsha DHANDLE, Pornima Ahire-kende, Shweta Pendse, Ramesh Wani, Atul Mahajan, Pranav Rao Rane



सावनी रविन्द्र (Savaniee Ravindra)

सावनी रविन्द्र गायकी की दुनिया का एक जाना माना नाम हैं, भारत की कई भाषाओं में इन्होंने गायन किया है. इन्हें बारदो फिल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका के राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया है. पंडित हृदयनाथ मंगेशकर सहित देश के जाने माने कलाकारों के साथ ये दुनियाभर में मंच साझा कर चुकी हैं

Savaniee Ravindra is a renowned Playback Singer and has many songs on her credit in various Indian regional languages like Marathi, Hindi, Tamil, Telugu, Bengali, Gujarati, Konkani, Malyalam. She is an Indian playback Singer who has recently been awarded with the Prestigious 67th National Film Award for Best female playback singer for the Film Bardo.

She's been performing with renowned artists like Pt. Hridaynath Mangeshkar, Hariharan, Shaan Suresh Wadkar, Ravindra Jain, Ajay-Atul and many others have given Over 500 performances across the globe.

प्रशस्ति – एक ऐसी बांधे रखने वाली कहानी जिसके जरिए ये संदेश जाता है कि जो एक के लिए अच्छा है वो सभी के लिए अच्छा है.

Citation - An engaging story of a moralistic play which unravels the message that what is good for one is good for all.



जल्लीकट्टू सर्वश्रेष्ठ छायांकन

Jallikettu | Best Cinematography

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2020 | Malayalam | 95 mins | Director: Lijo Jose Pellissery | Producer: Thomas Panicker | DOP/Cinematographer: Gireesh Gangadharan | Screenplay: Harish. S and R. Jayakumar | Editor: Deepu Joseph | Cast: Antony Varghese, Santhy Balachandran



गिरीश गंगाधरन (Girish Gangadharan)

गिरीश गंगाधरन ने 2013 में काम शुरू किया और आज वो मलयालम र तमिल सिनेमा जगत के एक जाने माने सिनेमेटोग्राफर हैं. इनकी फिल्मों में जल्लीकट्टू, अंगमली डायरीज, और गप्पी शामिल है. इन्हें सर्वश्रेष्ठ सिनेमेटोग्राफर का केरला स्टेट फिल्म स्पेशल ज्यूसी अवार्ड भी मिल चुका है.

Hailing from Kollam, Kerala, **Girish Gangadharan** made his debut in 2013, and has since established himself as a leading cinematographer in the Malayalam and Tamil film industries. His filmography includes popular and critically acclaimed films such as

Jallikattu (2019), Angamaly Diaries (2017), and Guppy (2016), for which he won the Kerala State Film Special Jury Award for Best Cinematographer. An alumnus of the Government Film and Television Institute, Girish has come to be known for his high octane single shots and visceral use of light and dark.

प्रशस्ति – रात और जंगल की सुंदरता के साथ समझौता किए बगैर एक जंगली बैल और उसका पीछा करते गुस्साए लोगों से जुड़े दृश्यों की कड़ी के शानदार चित्रण के लिए

Citation - For the brilliant picturization of long night sequences where the frantic locals chase a wild bull in a forest without compromising the beauty of the night and forest.

Synopsis of the film on page no. 134



ज्येष्ठपुत्रो सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौलिक)

Jyeshthoputro
Best Screenplay Writer (Original)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Bengali | 126 mins | Director: Kaushik Ganguly | Producer: Surinder Films Pvt. Ltd. | DOP: Sirsha Ray | Screenplay: Kaushik Ganguly Editor: Subhajit Singha | Cast: Prosenjit Chatterjee, Ritwick Chakraborty, Gargi Roy Chowdhury, Sudipta Chakraborty, Daminee Benny Basu, Shreya Bhattacharya, Pradeep Bhattacharya.



कौशिक गांगुली (Kaushik Ganguly)

कौशिक गांगुली बंगाली सिनेमा के एक अवार्ड विजेता निर्देशक, पटकथालेखक, और कलाकार हैं। इन्हें लैंगिकता, समलैंगिक संबंध, और ट्रांसजेंडर पहचान जैसे मुद्दों पर किए गए काम के लिए जाना जाता है।

A multiple award-winning screenplay writer and director, **Kaushik Ganguly** is noted for his work in Indian Bengali cinema. Kaushik made his directorial debut with *Waarish* (2004). After his debut, over the years, he has directed more than 15 films and along the way has won several awards. Few of his most notable films include *Laptop*, which won the National Award for Best Background Music in 2011, *Shabdo* (2012), which won the National Award for Best Bengali Film and *Chotoder Chobi* (2015). His 2017 directorial venture includes *Chaya O Chobi*, a Bengali drama starring Abir Chatterjee, Koel Mallick and Ritwick Chakraborty, *Nagarkirtan*, a LGBTQ movie starring Riddhi Sen and Ritwick Chakraborty.

प्रशस्ति – एक टूटते परिवार में इंसानी रिश्तों की पेचीदगी दिखाती कहानी जिसमें जलन, असुरक्षा जैसे भावों की परतें धीरे-धीरे खुलती हैं। एक ऐसा इत्मिनान से किया गया लेखन जो दर्शक को बांधकर रखता है।

Citation - For capturing the complexities of human relations in a broken family, slowly unraveling the jealousies, insecurities within the family in an unhurried pace but keeping the audience intrigued.



गुमनामी
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित)
Gumnaami
Best Screenplay (Adapted)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Bengali | 141 mins | Director: Srijit Mukherji | Producer: SVF Entertainment Pvt. Ltd. | Screenplay: Srijit Mukherji (Adapted) | DOP: Soumik Halder | Editor: Pronoy Dasgupta | Cast: Prosenjit Chatterjee, Anirban Bhattacharya, Tanusree Chakraborty



श्रीजित मुखर्जी (Srijit Mukherji)

श्रीजित मुखर्जी एक फिल्मकार, पटकथा लेखक, और गीतकार हैं। उनकी चर्चित फिल्मों में 'ऑटोग्राफ' (2010), 'बाइशे स्राबोन' (2011), 'जातीश्वर' (2014), 'छोटुसकोने' (2014), 'राजकहिनी' (2010), 'येति ओभिजान' (2017) शामिल हैं। इनकी फिल्म 'जातीश्वर' ने 2014 में चार राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड जीते थे। वहीं 'छोटुसकोने' ने 2015 में दो राष्ट्रीय अवार्ड हासिल किए थे। और 'एक जे छिलो राजा' ने 2019 का सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फीचर फिल्म का राष्ट्रीय सम्मान हासिल किया था। इनकी फिल्म राजकहिनी का हिंदी में बेगम जान नाम से रीमेक भी हो चुका है।

Srijit Mukherji is a filmmaker, screenwriter and lyricist, known for acclaimed films like 'Autograph' (2010), 'Baishe Srabon' (2011), 'Jaatishwar' (2014), 'Chotuskone' (2014), 'Rajkahini' (2015), 'Yeti Obhijaan' (2017), etc. His 'Jaatishwar' won four National Film Awards in 2014, 'Chotuskone' won two in 2015, and 'Ek Je Chhilo Raja' won the National Award for Best Bengali Feature Film in 2019. His 'Rajkahini' (remade in Hindi as 'Begum Jaan') and 'Uma' were selected for multiple film festivals including IFFI 2015.

प्रशस्ति – (सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फिल्म) नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मौत की गुल्थी सुलझाती जांच की विस्तारपूर्वक बुनी गई पटकथा

Citation - Intricately woven screenplay of the investigation of mystery behind the death of Netaji Subhash Chandra Bose.

Synopsis of the film on page no. 134



द ताशकंत फाइल्स सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद) The Tashkent Files Best Screenplay (Dialogue)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Hindi | 147 mins | **Director:** Vivek Ranjan Agnihotri | **Producer:** Pallavi Joshi | **DOP:** Udaysingh Mohite | **Screenplay:** Vivek Ranjan Agnihotri | **Editor:** Sattyajit Gazmer | **Cast:** Mithun Chakraborty, Naseeruddin Shah, Shweta Basu Prasad, Pankaj Tripathi, Mandira Bedi, Pallavi Joshi, Rajesh Sharma



विवेक रंजन अग्निहोत्री (Vivek Ranjan Agnihotri)

विवेक रंजन अग्निहोत्री एक अवार्ड विजेता फिल्मकार, लेखक, और बुद्धिजीवी हैं। विवेक सामाजिक – राजनीतिक मुद्दों पर खुलकर अपनी राय रखते हैं, और कई वैश्विक संस्थानों में इन्हें लेक्चर के लिए आमंत्रित किया जाता है। इनकी कल्ट फिल्म बुद्धा इन ए ट्रेफिक जैम, अर्बन नक्सलिज्म पर कटाक्ष करती है। इनकी हालिया फिल्म द ताशकंत फाइल्स भी भारत के श्रेष्ठ प्रबंधन संस्थानों जैसे आईआईएम अहमदाबाद की केस स्टडी के आधार पर बनाई गई है।

Vivek Ranjan Agnihotri is an award-winning filmmaker, bestselling author and a public intellectual. An ex-advertising man, Vivek is a popular public speaker on socio-political issues and lectures on 'Creative Thinking' and 'Innovation' in top global institutes. His prophetic cult film, 'Buddha In A Traffic Jam' dealt with the theme of Urban Naxalism and exposed the sinister nexus between the Naxals, Media, NGOs and the academia. When the film faced extreme resistance from the radical Left and was stuck for five years, Vivek travelled all across India to show his film, encountering a violent attempt to curb his freedom of speech.

प्रशस्ति – फिल्म में श्री लाल बहादुर शास्त्री की मौत के पीछे की गुल्थी सुलझाने के लिए गठित समिति के सदस्यों द्वारा दी गई जोरदार दलील के लिए लिखे गए संवाद के लिए

Citation - For writing the apt dialogues for the convincing arguments of the members of the committee that formed to find out the facts of the mystery behind the death of Shri Lal Bahadur Shastri.

Synopsis of the film on page no. 135



इयुदह

सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (लोकेशन साउंड)

Iewduh | Best Audiography (Location Sound)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Khasi | 95 mins | Director: Pradip Kurbah | **Producer:** Shankar Lall Goenka | **Screenplay:** Paulami Duttgupta, Lionel Fernandes, Pradip Kurbah | **DOP:** Pradip Daimary | **Editor:** Lionel Fernandes | **Cast:** Albert Mawrie, Denver Pariat, Richard Kharpuri, Anvil Laloo, Lapyhnhun Sun, Enshon Lamare



देबाजित गायन (Debajit Gayan)

देबाजित गायन गुवाहाटी के एक सिंक रिकॉर्डिस्ट और साउंड डिजाइनर हैं। वह डॉ भूपेन हजारिक रीजनल गवर्नमेंट फिल्म एंड टेलिविजन इन्स्टिट्यूट (डीबीएचआरजीएफटीआई), गुवाहाटी के पूर्व छात्र हैं। वह कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड विजेता फिल्मों के लिए काम कर चुके हैं। इन्हें सर्वश्रेष्ठ साउंड डिजाइन का असाम स्टेट अवार्ड दो बार मिल चुका है।

Debajit Gayan is a Sync Sound Recordist and Sound Designer based in Guwahati. He is an alumnus of Dr. Bhupen Hazarika Regional Govt. Film & Television Institute (DBHRGFTI), Guwahati. He has worked in several National and International award winning films. He won Assam State Award for Best Sound Design twice.

प्रशस्ति – एक भीड़भाड़ वाले बाजार के वातावरण और वहां के किरदारों की प्राकृतिक ध्वनि को कैद करने के शानदार काम के लिए

Citation - For the brilliant work of capturing natural sound of characters and atmosphere in a dingy crowded marketplace.

Synopsis of the film on page no. 135



त्रिज्या

सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (साउंड डिज़ाइन)

Triya | Best Audiography (Sound Design)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Marathi | 100 mins | **Director:** Akshay Indikar | **Producer:** Arvind Pakhle, Arfi Lamba, Katharina Suckale | **Screenplay:** Akshay Indikar, Kshama Padalkar | **DOP:** Swapnil Shete, Akshay Indikar | **Editor:** Akshay Indikar | **Cast:** Abhay Mahajan



मंदार कमालपुरकर (Mandar Kamalapurkar)

मंदार कमालपुरकर ने अपनी इंजीनियरिंग डिग्री पूरी करने के बाद एफटीआईआई, पुणे से ऑडियोग्राफी में डिप्लोमा किया. वे बतौर साउंड डिजाइनर और सिंक साउंड रिकॉर्डिस्ट मुंबई में कार्यरत हैं. वे कई हिंदी, मराठी, और अन्य भाषाओं की फीचर फिल्म, लघु फिल्म, वेब सीरिज सहित रंगमंच और डॉक्यूमेंट्री के लिए काम कर चुके हैं.

Mandar Kamalapurkar has done a Diploma in Audiography from FTII, Pune after completing his engineering degree. He has been working as a Sound Designer and Sync Sound Recordist in Mumbai. He has worked on many Hindi, Marathi and other language feature films, short films, web series, theater plays and documentaries

प्रशस्ति – फिल्म में जरूरी ध्वनि की डिजाइन को तैयार करने और उसके क्रियान्वयन के लिए

Citation - For designing all required sound in a film and ensuring proper execution of the same.



ओत्था सेरुप्पु साइज 7 सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन

Oththa Seruppu Size 7
Best Audiography

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Tamil | 105 mins | Director: Radhakrishnan Parthiban | Producer: Radhakrishnan Parthiban | DOP: Ramji
Screenplay: Radhakrishnan Parthiban | Editor: R Sudharsan | Cast: R. Parthiepan



रसूल पुकुट्टि | बिबिन देवास्सि (Resul Pookutty | Bibin Devassy)

रसूल पुकुट्टि एक साउंड डिजाइनर, प्रोडक्शन साउंड मिक्सर, साउंड इफेक्ट और फोले एडिटर एवं पोस्ट-प्रोडक्शन रि-रिकॉर्डिंग मिक्सर हैं। इन्हें फिल्म स्लम डॉग मिलेनियर के लिए एकेडमी अवार्ड मिल चुका है। इन्हें 2010 में भारत सरकार ने पद्म श्री से सम्मानित किया था। ओत्था सेरुप्पु साइज 7 में रसूल ने एक बेहतरीन और अनूठी ध्वनियों का मेल किया है जिसके जरिये दर्शक स्क्रीन पर एक ही कलाकार को देखते हुए भी दूसरे कलाकारों की मौजूदगी का अहसास कर पाते हैं।

बिबिन देवास्सि एक रि-रिकॉर्डिंग मिक्सर हैं जो भारत की लगभग 200 से ज्यादा फिल्मों में काम कर चुके हैं जिसमें '2.0', 'कमांडो 2', 'जजमेंटल' और 'ममंगम' शामिल हैं। वे हॉलीवुड की भी कई फिल्मों के रूपांतरण जैसे 'अवतार', 'लाइफ ऑफ पाई', 'नार्निया' में काम कर चुके हैं।

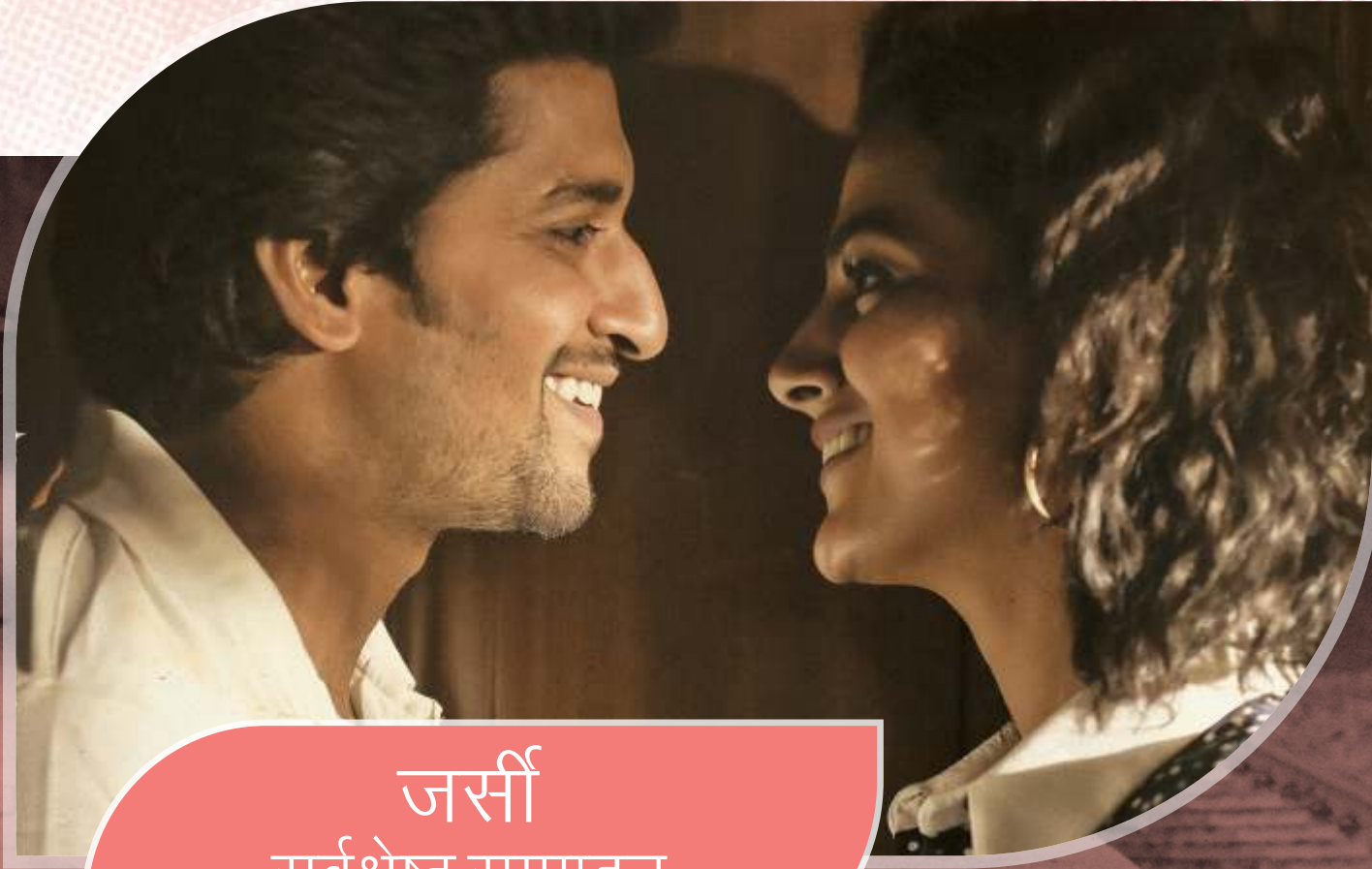
Resul Pookutty is a sound designer, production sound mixer, sound effects and foley editor and post-production re-recording mixer in Indian and International films. He won the Academy Award for his work in 'Slumdog Millionaire'. He was awarded the 'Padma Shri' by the Government of India in 2010. In 'Oththa Seruppu Size 7', Resul has created a unique audible narrative around the solo performer's monologue therefore transposing the audience to different spaces even though they are watching one actor in one space.

Bibin Devassy is a re-recording mixer who has worked in over 200 movies in all major Indian languages including '2.0', 'Commando 2', 'Judge Mental', and 'Mamangam'. He has worked for 'versioning' of Hollywood movies like 'Avatar', 'Life of Pi', 'Narnia', etc.

प्रशस्ति – फिल्म के मूड के हिसाब से विभिन्न साउंड ट्रैक के बीच बारीकी से संतुलन बनाए रखने के लिए

Citation - For meticulously balancing the various soundtracks to elevate the mood of the film.

Synopsis of the film on page no. 135



जर्सी सर्वश्रेष्ठ सम्पादन

Jersey | Best Editing

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Telugu | 160 mins | Director: Gowtam Tinnanuri | Producer: Sithara Entertainments | DOP: Sanu John Varughese | Screenplay: Gowtam Tinnanuri | Editor: Navin Nooli | Cast: Nani, Shraddha Srinath, Sathyaraj, Harish Kalyan, Ronit Kamra, Shishir Sharma, Brahmaji, Sampath Raj



नवीन नूली (Navin Nooli)

नवीन नूली फिल्म संपादक है जिन्होंने ज्यादातर काम तेलुगु सिनेमा में किया है. 2012 में अपनी पहली फिल्म लॉगइन के बाद इन्हें काफी सराहना मिली, इसके बाद फिल्में जैसे लेडीज एंड जेंटलमेन (2015), नानकू प्रिमेथो (2016), और जर्सी (2019) से भी उन्हें काफी तारीफ मिली.

Navin Nooli has a penchant for storytelling with visual drama. His name is synonymous with excellent films and sheer brilliance in Telugu cinema. He brought to life the vision of many exceptionally talented writers and directors. His work for Jersey is a testimony to his phenomenal talent and distinctive mind!

प्रशस्ति – दृश्य और क्रिकेट मैच के बीच अबाध्य प्रवाह बनाए रखने के लिए

Citation - For maintaining a seamless flow of the scenes and the cricket match.



आनन्दी गोपाल सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिज़ाइन

Anandi Gopal | Best Production Design

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Marathi | Colour | 134 mins | Director: Sameer Vidwans | Producer: Essel Vision Productions Ltd | Story: Karan Shrikant Sharma | Screenplay: Karan Shrikant Sharma | DOP: Akash Agarwal | Editor: Charu Shree Roy | Cast: Bhagyashree Milind, Lalit Prabhakar, Geetanjali Kulkarni, Kshiti Jog, Yogesh Soman, Atharva Phadnis, Ankita Goswami



निलेश वाघ | सुनील निगवेकर (Nilesh Wagh | Sunil Nigwekar)

निलेश वाघ एक आर्ट डायरेक्टर और प्रोडक्शन डिजाइनर हैं, जिन्हें सेक्शन 375, कोर्ट, रोगन जोश, डिशूम, बॉस, एक था टाइगर, नौटंकी साला, मैं तेरा हीरो, धरम संकट में, साइड हीरो, लव आजकल और धुरला के लिए जाना जाता है. इनकी आने वाली फिल्मों में अगर तुम ना होते, चंद्रमुखी और वाल्वी है.

सर जे जे स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई के स्नातक, **सुनील निगवेकर** ने 8 साल विज्ञापन जगत में काम किया है. 25 सालों के प्रोडक्शन डिजाइन के करियर में आज इनके खाते में 50 से ज्यादा फिल्में हैं.

Nilesh Wagh is an Art Director and Production Designer known for films such as 'Section 375', 'Court', 'Rogan Josh', 'Dishoom', 'Boss', 'Ek Tha Tiger', 'Nautanki Saala', 'Main Tera Hero', 'Dharam Sankat Mein', 'Side Hero', 'Love Aaj Kal' (2009), and 'Dhurala'. His upcoming films include 'Agar Tum Na Hote', 'Chandramukhi', and 'Walvi'.

A graduate from Sir JJ School of Art, Mumbai, **Sunil Nigwekar** spent almost 8 years in advertising industry, before joining Art Director Sameer Chanda as an intern. He liked it and decided to pursue a career in Art Direction. After 25 years, he now has over 50 films to his credit.

प्रशस्ति – उद्धरण– जगह और सामान के उचित चयन के जरिए 19वीं शताब्दी के आखिर के महाराष्ट्र और उस वक्त के ब्रिटिश रहन सहन को दिखाकर उस दौर की झलक दिखाने के लिए

Citation - For re-creating the late 19th century Maharashtra and its British lifestyle through its location choices, properties and enabling us to dive into its period reality.

Synopsis of the film on page no. 136



मरक्कर: अराबिकादलित्ते सिम्हम सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा डिज़ाइनर

Marakkar: Arabikadalinte Simham
Best Costume Designer

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2020 | Malayalam | 181 mins | Director: Priyadarshan | Producer: Aashirvad Cinemas | DOP: S. Thirunavukarasu
Screenplay: Priyadarshan, Ani I.V. Sasi | Editor: Aiyappan Nair M.S. | Cast: Mohanlal, Arjun Ramaswamy, Prabhu, Suniel Shetye, Nedumudi Venu, Pranav Mohanlal, Sidique, Manju Warriar, Keerthy Suresh Kumar, Kalyani Priyadarshan, Innocent, Suhasini Maniratnam, Ashok Selvan



सुजिथ सुधाकरन एक दक्षिण भारत के विख्यात कॉस्ट्यूम डिजाइनर हैं। इन्होंने दक्षिण भारत की लगभग सभी भाषाओं की फिल्मों के लिए काम किया है जैसे 'थानी ओरुवन' 'इरावी' 'ओप्पम' 'लुसीफाइर' 'मरक्कर-अराबिकादलित्ते सिम्हम'। वह कपड़ों के एक ब्रांड 'कोन्लांग' के संस्थापक हैं, इसे 2016 में चेन्नई में स्थापित किया गया था। | वी. साईबाबू बतौर कॉस्ट्यूम डिजाइनर 525 से ज्यादा भिन्न भिन्न भाषाओं की फिल्मों में काम कर चुके हैं। जिसमें मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, हिंदी शामिल हैं। राष्ट्रीय अवार्ड सहित इन्हें कई राजकीय पुरस्कार हासिल हो चुके हैं। फिल्म उद्योग के लगभग सभी नामचीन कलाकारों के साथ काम कर चुके हैं।

Sujith Sudhakaran is a well-known Costume Designer in South India. He has worked for many movies in every south Indian language such as 'Thani Oruvan', 'Iraivi', 'Oppam', 'Lucifer', 'Marakkar - Arabikadalinte Simham', etc. He is the founder of a clothing brand called 'Conlang' which was established in 2016 in Chennai, with the aim of manufacturing quality dyed fabrics and block prints. | **V. Saibabu** has worked as a Costume Designer in more than 525 films in various languages including Malayalam, Tamil, Telugu, Kannada, Hindi, etc. Besides this National Film Award, he has won many state awards for his work. He has worked for several big film stars such as Rajanikanth, Kamal Haasan, Vikram, Sooriya, Ajith, Sarathkumar, Lawrence, Vijay, Mohanlal, Dileep, Suhasini, Kushbu, Meena, Roja, Sangavi, Kousalya, Vijayashanthi, Maalvika Soundarya, Trisha, Jothika, Sridevi, Nagma, Priyamani, Meera, Jasmine, etc.

प्रशस्ति – अलग दौर के किरदारों की उनकी संस्कृति के अनुरूप वेशभूषा तैयार करने के लिए

Citation - For the creating and designing costumes of diverse cultures of the characters and period in the film.



हेलन सर्वश्रेष्ठ रूपसज्जा कलाकार

Helen | Best Make-up Artist

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Malayalam | 117 mins | Director: Mathukutty Xavier | Producer: Big Bang Entertainments (Noble Babu Thomas)
Screenplay: Alfred Kurian Joseph, Noble Babu Thomas, Mathukutty Xavier | DOP: Anend C Chandran | Editor: Shameer Muhammed
Cast: Lal, Anna Ben, Noble Babu Thomas, Binu Pappu, Rony David Raj, Vineeth Sreenivasan, Aju Varghese, Bonny Mary Mathew



रंजिथ अम्बाडी (Ranjith Ambady)

रंजिथ अम्बाडी सर्वश्रेष्ठ मेकअप आर्टिस्ट का केरला स्टेट फिल्म अवार्ड पांच बार जीत चुके हैं. इन्होंने 1995 में मलयालम फिल्म जगत में बतौर मेकअप कलाकार प्रवेश किया और 2004 में इन्हें पहला सम्मान हासिल हुआ.

Ranjith Ambady is a make-up artist who has won the Kerala State Film Award for Best Makeup Artist five times. He entered into the Malayalam film industry in 1995 as a make-up artist and won his first award in 2004 for the movie 'Makalkku'.

प्रशस्ति – विकट और मुश्किल हालात में भी मुख्य किरदार के चेहरे और शरीर में होने वाले धीमे बदलाव को दिखाने के लिए

Citation - For creating gradual changes in the face and body of the lead character even in the adverse and unfavorable conditions.

Synopsis of the film on page no. 136



विश्वासम सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (गीत)

Viswasam | Best Music Direction (Songs)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Tamil | 152 mins | Director: J. Sivakumar 'Siva' | Producer: Satya Jyoti Films | Screenplay: J. Sivakumar 'Siva' | DOP: Vetri Editor: Ruben | Cast: Ajith Kumar, Nayanthara, Jagapathi Babu, Vivek, Thambi Ramaiah, Yogi Babu, Roboshankar, Kovai Sarala



डी. इम्मान (D. Imman)

डी. इम्मान तमिल फिल्म जगत क म्यूजिक कंपोजर और गायक हैं. वे एक प्रशिक्षित पश्चिमी शास्त्रीय प्यानो प्लेयर और भारतीय कन्नड़ संगीतज्ञ हैं. बतौर संगीतकार इनकी पहली फिल्म थी थामिजान. इसके बाद वे 100 से ज्यादा फिल्मों में संगीत दे चुके हैं. उन्हें कई सम्मान भी हासिल हो चुके हैं.

D. Imman is a music composer and singer in the Tamil film industry. A trained Western Classical Pianist and an Indian Carnatic Musician, he made his debut as a music director with 'Thamizhan' (2002). Since then, he has composed music for over 100 films, mostly in Tamil. He has won 'Kalaimamani' award, the Tamil Nadu State Film Award, and several other international honours.

प्रशस्ति – फिल्म में खुशनुमा माहौल के लिए वाद्य यंत्र के जरिए ध्वनि का प्रस्तुतिकरण करने के लिए

Citation - For compiling the rendition of the voice with musical instruments to create a pleasing atmosphere in the film.

Synopsis of the film on page no. 136



ज्येष्ठपुत्रो
 सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (पार्श्व संगीत)
 Jyeshthoputro
 Best Music Direction (Background Music)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Bengali | 126 Mins | Director: Kaushik Ganguly | **Producer:** Surinder Films Pvt. Ltd. | **Screenplay:** Kaushik Ganguly
DOP: Shirsha Roy | **Editor:** Subhajit Singha | **Cast:** Prosenjit Chatterjee, Ritwick Chakraborty, Gargi Roychowdhury, Sudipta Chakraborty



प्रबुद्ध बनर्जी (Prabuddha Banerjee)

प्रबुद्ध बनर्जी का नाम कई चर्चित फिल्मों से जुड़ा है. इन्हें विशेषतौर पर नागकीर्तन, ज्येष्ठपुत्रो और एक्ती तरार खोंजे- बियांड द स्टार्स के लिए जाना जाता है.

Prabuddha Banerjee is a musician associated with many renowned feature films. He is particularly known for his work in films such as 'Nagarkirtan' (2017), 'Jyeshthoputro' (2019) and 'Ekti Tarar Khonje: Beyond the Stars' (2010).

प्रशस्ति – कहानी और प्रस्तुति को एक स्तर ऊपर उठाने के लिए बेहद सूक्ष्म पार्श्व संगीत तैयार करने के लिए सम्मान

Citation - For the subtle scoring of background music which elevates the performances and the story-telling.

Synopsis of the film on page no. 137



कोलांबी सर्वश्रेष्ठ गीत

Kolaambi | Best Lyrics

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Malayalam | 126 mins | Director: T.K. Rajeevkumar | Producer: Roopesh Omana | Screenplay: T.K. Rajeevkumar, K.M. Venugopal | DOP: Ravi Varman | Editor: Ajay Kulliyoor | Cast: Siddique, Nithya Menon



प्रभा वर्मा (Prabha Varma)

प्रभा वर्मा एक जाने माने लेखक और गीतकार हैं, उन्हें सर्वश्रेष्ठ फिल्म गीत का केरला राज्य सरकार सम्मान तीन बार मिल चुका है. इसके अलावा 2009 और 2017 में प्रोफेशनल ड्रामा में सर्वश्रेष्ठ गीत के लिए का राज्य सम्मान मिल चुका है. इन्हें पांच दर्जन से ज्यादा सम्मान मिल चुके हैं जिसमें केरल साहित्य सम्मान भी शामिल हैं. इनका गाना ओरु चम्पनीर की यूट्यूब और फेसबुक पर दस मिलियन व्यूअरशिप का रिकॉर्ड कायम किया है.

Prabha Varma is a noted lyricist and author who has bagged, 'the best film lyricist award' of the Kerala State Government, three times. He also won the State awards for the best lyrics for professional dramas in 2009 and 2017. He is the recipient of over five dozen awards, including Kerala Sahitya Akademy Award and the prestigious Vayalar Award. His song 'Oru Chempaneer' crossed a record viewership of over 10 million in YouTube and Facebook. Presently, he is a member of the National Executive Board of Sahitya Akademy and a member of the jury of Jnanpith.

प्रशस्ति – जरूरी प्रभाव छोड़ने के लिए कविता और भावनाओं का सटीक मेल

Citation - For the perfect blend of poetry and emotions to create the required effect.



ओथ्था सेरुप्पु साइज 7
सर्वश्रेष्ठ निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
Oththa Seruppu Size 7
Special Jury Award

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Tamil | 105 mins | Director: Radhakrishnan Parthiban | Producer: Radhakrishnan Parthiban | DOP: Ramji | Screenplay: Radhakrishnan Parthiban | Editor: R Sudharsan | Cast: Radhakrishnan Parthiban



राधाकृष्णन पर्थिबन (Radhakrishnan Parthiban)

राधाकृष्णन पर्थिबन एक कलाकार, लेखक, निर्देशक और निर्माता है. इन्होंने 60 से भी ज्यादा फिल्मों में काम किया है. इन्होंने 14 फिल्मों का निर्देशन और 12 फिल्मों का निर्माण किया है. इनकी फिल्म पुधिया पाधार्ई और हाउसफुल ने 1989 और 1999 में सर्वश्रेष्ठ क्षेत्रीय फिल्म का राष्ट्रीय अवार्ड हासिल किया था. इनकी फिल्म संस्कृति से जुड़ी हुई होती है और उसके संवादों पर तमिल भाषा के प्रति झुकाव साफ झलकता है

Radhakrishnan Parthiban is an actor, writer, director and producer who has acted in over 60 films, directed 14 and produced 12. His films 'Pudhiya Paadhai' (1989) and 'Housefull' (1999) won the National Film Awards for Best Regional Film in 1989 and 1999 respectively. One of his recent works include 'Kathai Thirai Kathai Vasanam Iyakkam' (2014). His films have culturally-rooted themes and his flair for Tamil language is evident in his dialogue conception.

प्रशस्ति – एक गरीब आदमी द्वारा अपने गुनाह कबूलने की कहानी का अनोखा विवरण. अभिनय, ध्वनि के जरिए कहानी को दिया गया ऐसा विस्तार जो पहले नहीं देखा गया

Citation - For telling the story innovatively about the confessions of a poor man's crime. It elaborates through his enactment and a well designed sound and voices which we do not see on the screen.

Synopsis of the film on page no. 137



मरक्कर: अराबिकादलित्ते सिम्हम सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफेक्ट

Marakkar: Arabikadalinte Simham
Best Special Effect

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2020 | Malayalam | 181 mins | Director: Priyadarshan | Producer: Aashirvad Cinemas | DOP: S. Thirunavukarasu
Screenplay: Priyadarshan, Ani I.V. Sasi | Editor: Aiyappan Nair M.S. | Cast: Mohanlal, Arjun Ramaswamy, Prabhu, Suniel Shety, Nedumudi Venu, Pranav Mohanlal, Sidique, Manju Warriar, Keerthy Suresh Kumar, Kalyani Priyadarshan, Innocent, Suhasini Maniratnam, Ashok Selvan.



सिद्धार्थ प्रियदर्शन (Sidharth Priyadarshan)

सिद्धार्थ प्रियदर्शन एक स्पेशल इफेक्ट कलाकार और सुपरवाइजर हैं। इन्होंने सेन फ्रांसिस्को की एकेडमी ऑफ आर्ट यूनिवर्सिटी से एनिमेशन और विजुअल इफेक्ट में बीएफए किया है। सिद्धार्थ इससे पहले सेन फ्रांसिस्को में ही कार्यरत थे, फिर उन्हें, उनके पिता ने मरक्कर अराबिकादलित्ते सिम्हम के स्पेशल इफेक्ट के लिए भारत बुलाया

Sidharth Priyadarshan is a Special Effects artist and supervisor with a BFA in Animation and Visual Effects from the Academy of Art University in San Francisco.

Sidharth was working as a digital artist at a commercial post house in San Francisco before he was called in by his father to supervise the special effects for the magnum opus 'Marakkar: Arabikadalinte Simham'.

प्रशस्ति – फिल्म के परिदृश्य को विभिन्न इफेक्ट्स के जरिये एक असली माहौल प्रदान करने के लिए

Citation - For the realistic exposition of various effects to create a natural feel for the backdrop of the movie.



महर्षि सर्वश्रेष्ठ नृत्य संयोजन

Maharshi | Best Choreography

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Telugu | 178 mins | Director: Paidipally Vamshidhar Rao | Producer: SVC Production | Screenplay: Vamshi Paidipally, Hari, Ahishor Solomon | DOP: K.U. Mohanan | Editor: Praveen K.L. | Cast: Mahesh Babu, Pooja Hegde, Allari Naresh, Jagapathi Babu, Prakash Raj, Jayasudha, Meenakshi Dixit, and Ananya



बसुवा राजू सुंदरम (Basuva Raju Sundaram)

राजू सुंदरम नृत्य निर्देशक, अभिनेता, और निर्देशक है जिन्होंने तमिल, कन्नड़, और तेलुगु और हिंदी फिल्मों के लिए काम किया है. नृत्य निर्देशक बनने से पहले इन्होंने अपने पिता मुगुर सुंदर के सहायक के तौर पर काम किया है. इन्होंने तमिल निर्देशक मणिरत्नम, शंकर के अलावा अमिताभ बच्चन के अल्बम एबी बेबी के लिए भी नृत्य निर्देशन किया है. ये कई फिल्म में मेहमान भूमिका भी निभा चुके हैं. इनकी नृत्य निर्देशन में थिरुदा थिरुदा, कांधालन, घिल्ली, बृंदाबन, पैया, एंथीरन, जनता गैराज और चौन्नई एक्सप्रेस फिल्म शामिल है.

Basuva Raju Sundaram is a dance choreographer, actor and director associated with Tamil, Kannada and Telugu films. He assisted his choreographer father Mugur Sundar, before becoming the lead choreographer. He went on to become a choreographer of Tamil directors Mani Ratnam and Shankar, and also worked with Amitabh Bachchan's album, 'Aby Baby' (1996). He has also done featuring his brother Prabhu Deva in Shankar's early films. He has also acted and cameo appearances in songs in many films including 'Gentleman' (1993), 'Kadhalan' (1994), 'Jeans' (1998), '123' (2002), 'I Love You Da' (2002) and 'Quick Gun Murugun' (2009) and directed one film 'Aegan' (2008).

प्रशस्ति – पूरी तरह से नवीन और आंखों को हर्षाने वाले नृत्य भंगिमाओं को रचने के लिए जो कहानी को आगे ले जाती है
Citation - For creating completely new and eye-pleasing dance steps while taking the story forward.

Synopsis of the film on page no. 138



अवाने श्रीमन्नारायणा सर्वश्रेष्ठ एक्शन निर्देशन

Avane Srimannarayana
Best Action Direction

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Kannada | 178 mins | Director: Sachin BR | Producer: Pushkar Films | Screenplay : Rakshit Shetty & The Seven Odds
DOP: Karm Chawla | Editor: Sachin | Cast: Rakshit Shetty, Shanvi Srivastava, Balaji Manohar, Achyutha Kumar, Pramod Shetty, Madhusudhan Rao



विक्रम मोर (Vikram Mor)

विक्रम मोर जिन्हें फिल्म जगत विक्रम मास्टर के नाम से जानती है, इन्होंने फिल्मों के अपने जुनून को अपनाने से पहले कम से कम 30 अलग अलग तरह के छोटे बड़े काम किये. 2014 में जब ये स्टंट मैन बने उसके बाद इन्होंने अब तक करीब 108 फिल्मों में स्टंट कोरियोग्राफ कर चुके हैं. 2019 में इन्हें केएफजी-चौप्टर 1 की एक्शन कोरियोग्राफी के लिए राष्ट्रीय अवार्ड से नवाजा गया था.

Vikram Mor, or Vikram Master as he is fondly called, had tried over 30 different vocations and jobs before he found his true calling in designing stunts in films. Since 2014, he has been a stunt man and also choreographed stunts for almost 108 films. In 2019, he won the National Award for Best Action Choreography for the film 'KFG: Chapter 1'. His action choreography is meticulous with a keen eye to detailing.

प्रशस्ति – बेहतरीन डिजाइन और बिल्कुल असली तरीके से फाईट के फिल्मांकन के लिए

Citation - For the brilliant design and execution of fights in the most realistic way.



बिरियानी विशेष उल्लेख

Biriyaani | Special Mention

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

2020 | Malayalam | 96 mins | Director: Sajin Babu | Screenplay: Sajin Babu | DOP: Karthik Muthukumar | Editor: Appu N Bhattathiri
Cast: Kani Kusruthi, J. Shailaja, Jayachandran, Surjith Gopinath



सजिन बाबू (Sajin Babu)

सजिन बाबू केरल के फिल्मकार हैं। इनकी पहली फिल्म अनटू द डस्क को विभिन्न फिल्म फेस्टिवल में काफी सराहना मिली थी, साथ ही बंगलुरु अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का सम्मान मिल चुका है। इनकी दूसरी फिल्म मैन विथ ए कॉफिन की प्रदर्शन भी देश के कई फिल्म महोत्सवों में हुआ।

Sajin Babu is a filmmaker from Kerala. His debut feature film 'Unto the Dusk' (2014) won him numerous accolades at various film festivals including the best feature film at the Bangalore International Film Festival. His second feature 'Man with a Coffin' (2017) was also screened at various film festivals across the country. He began by making campus films followed by docu-fiction, documentary, and short films.

प्रशस्ति – एक जीवंत मुस्लिम महिला के समाज के द्वारा प्रताड़ित किये जाने और उसके अनूठे बदले को दिखाती एक सशक्त फिल्म
Citation - A powerful portrayal of a vibrant Muslim woman victimised by her society and her unique revenge.

Synopsis of the film on page no. 138



जोनाकी पोरुआ विशेष उल्लेख

Jonaki Porua | Special Mention

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

2019 | Assamese | 93 mins | Director: Prakash Deka | Producer: Vortex Film | DOP: Chow Partha Borgohain | Screenplay: Prakash Deka | Editor: Ratan Sil Sarma | Cast: Benjamin Daimary, Bitopi Dutta, Nibedita Hazarika, Likumoni Choudhury, Manash Ranjan, Palash Mech



बेंजामिन डायमेरी (Benjamin Daimary)

बेंजामिन डायमेरी एक अभिनेता और मेक-अप आर्टिस्ट हैं. फिल्मों में काम करने से पहले वो कई नाटकों में काम कर चुके हैं. फायरफ्लाईज-जोनाकी पोरुआ इनकी पहली फिल्म है. ये पहले समलैंगिक कलाकर हैं जिन्हें राष्ट्रीय फिल्म सम्मान मिला है.

Benjamin Daimary is an actor and make-up artist from Assam. Before his debut film, he has acted in several plays. 'Fireflies-Jonaki Porua' is his debut film. He has become the first openly gay actor to receive a National Film Award.

प्रशस्ति – एक युवा के अपने लैंगिक पहचान को तलाशने के संघर्ष का संवेदनशील चित्रण

Citation - A sensitive portrayal of a young man struggling to find his sexual identity.



लता भगवान खरे विशेष उल्लेख

Lata Bhagwan Kare | Special Mention

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

2020 | Marathi | 127.35 mins | Director: Naveen Deshaboina | Producer: A Krishna | Screenplay: Naveen Deshaboina | DOP: Aditya Sangare, Kamallesh Sangare | Editor: Boddu Shiva | Cast: Lata Bhagwan Kare, Bhagwan Kare, Sunil Kare, Radha Chouhan, Ajay Shinde, Rekha Gaikwad, Sakshi



लता भगवान खरे (Lata Bhagwan Kare)

लता भगवान खरे, महाराष्ट्र, पुणे के बारामती में रहती हैं। वो एक दिहाड़ी मजदूर हैं। ये उनकी पहली फिल्म है।

Lata Bhagwan Kare, 65, lives in Baramati, Pune in Maharashtra. She earned her livelihood as daily labourer. This is her debut film.

प्रशस्ति – 67 साल की लता खरे की सच्ची और प्रभावशाली कहानी, जिसमें एक तरफ वह जिंदगी का संघर्ष कर रही हैं वहीं दूसरी तरफ वह बारामती मैराथन दौड़ को जीतने की हिम्मत दिखाती हैं।

Citation - A powerful portrayal of the real story of Lata Kare, struggling for survival on the one side and at the same time venturing into running and winning the Baramati marathon at the age of sixty five.

Synopsis of the film on page no. 139



पिकासो विशेष उल्लेख

Picasso | Special Mention

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

2020 | Marathi | 76 mins | Director: Abhijeet Mohan Warang | Producer: Shiladitya Bora | Screenplay: Abhijeet Mohan Warang
DOP: Stanley Mudda | Editor: Ashay Gatade | Cast: Prasad Oak, Samay Sanjeev Tambe, Ashwini Mukadam, Vitthal Gaonkar, Nilkanth Sawant



अभिजीत मोहन वारंग (Abhijeet Mohan Warang)

अभिजीत मोहन वारंग फिल्म निर्देशक, अभिनेता, पटकथा लेखक और रंगमंच के कलाकार हैं। अपने 12 सालों के फिल्म प्रोडक्शन के अनुभव में इन्होंने कई फिल्मों की हैं, जिसमें मराठी फिल्म जोशी की कांबले, और निर्मल्या और ब्रिटिश फीचर फिल्म द वारियर क्वीन ऑफ ज़ांसी शामिल हैं। पिकासो इनके निर्देशन की पहली फिल्म है।

Abhijeet Mohan Warang is a film director, actor, screenwriter and a seasoned theatre writer-director. He has over 12 years of experience in film production, including Marathi titles 'Joshi Ki Kamble' (2008) and 'Nirmalya' (2010) and the 2019 British Feature 'The Warrior Queen of Jhansi'. He has also helmed several top-of-the-line, pan India TVCs as Line Producer. 'Picasso' is his directorial debut

प्रशस्ति – निर्देशक रोचक तरीके से एक लोक कलाकार और उसके बेटे जो एक विख्यात पेंटिंग स्कूल में दाखिला लेना चाहता है जिसका परिदृश्य चर्चित लोकमंच (दसावतार) है उनकी जिंदगी के संघर्ष का वर्णन करते हैं।

Citation - The director interestingly portrays the life of a struggling folk artist and his son aspiring to enter a world renowned painting school in the backdrop of popular folk theatre (Dasaavatar).

कथासार | Synopsis

त्रिज्या (Trijya)

खुद की खोज में अक्सर अकेलेपन, असमंजस, भय और शंका का अहसास हो सकता है। अवधुत काले, एक ग्रामीण पृष्ठभूमि का कलाकार फितरत का लड़का है जो पुणे के महानगरीय माहौल में अपने लिए जगह तलाश रहा है। एक स्थानीय अखबार में रिपोर्टर के तौर पर काम करते हुए, वो अपने साथियों की मदद करने, राशिफल लिखने या अपने संपादक की मांग पूरी करने (जो चाहता है कि खबर सच तो हो लेकिन सनसनीखेज हो) की कोशिशों में फंसा हुआ है। जब अवधुत वापस अपने घर लौटता है तो उसके सामने शादी (अरेंज मेरिज) का सामना करना होता है, अपने काम और सामाजिक दबाव को झेलते अवधुत धीरे धीरे खुद को खुद से दूर महसूस करने लगता है। और दोस्तों और परिवार जनों से बातचीत में उसका जिंदगी के प्रति नैराश्य साफ झलकने लगता है।

A path to self-discovery can often lead to feelings of loneliness, confusion, fear and doubt. Avdhut Kale, an artistically-inclined villager, struggles to find his place in the metropolis of Pune. Working as a reporter for the local newspaper, he is stuck with helping his colleague write the horoscope section or trying to meet the demands of his editor who wants to publish factual but sensational news. When Avdhut travels back home, he is faced with the prospect of an arranged marriage. His work and the mounting societal pressures of what is expected of him is a disconnect from his true self. His passivity towards life is made apparent through his discourses with friends and family.

बहत्तर हूरें (Bahattar Hoorain)

एक चरमपंथी प्रशिक्षण केंद्र में बिलाल और हाकिम को सिखाया जाता है कि अगर वो अपनी जिंदगी अल्लाह के नाम पर कुर्बान कर देते हैं तो उन्हें जन्नत में बहत्तर हूरें (72 खूबसूरत कुंवारियां) मिलेगी। मुंबई में आतंकी हमला करने के बाद हाकिम और बिलाल हैरान रह जाते हैं जब वो खूबसूरत कुंवारियों की बांहों में होने के बजाए अस्पताल में पड़े होते हैं, जहां उनका भूत उनके शरीर की चीर फाड़ होते देख रहा होता है। बहत्तर हूरें एक डार्क कॉमेडी है जो हिंसक चरमपंथ की हकीकत की पड़ताल करती है। और इस बात पर जोर देती है कि हर इंसानी जिंदगी को आदर और सम्मान मिलना चाहिए

At an extremists training facility, Bilal and Hakim are told that if they give up their lives in the name of Allah, they will be rewarded with bahattar hoorain (72 beautiful virgins) in heaven. As instructed, they unleash terror attack on Mumbai. Afterwards, Hakim and Bilal are surprised to have not ended up in the arms of a beautiful virgin, but in a hospital, where their ghosts watch an autopsy being performed on their bodies. 'Bahattar Hoorain' is a dark comedy that examines the real consequences of violent extremism and urges that every human life should be treated with dignity and respect.

भोंसले (Bhonsle)

भोंसले एक बुजुर्ग मराठी सब-इन्स्पेक्टर जो अपने फैंसले नियमों के बजाए हालात के आधार पर तय करता है। इन्हें इच्छा के विपरीत सेवानिवृत्त कर दिया गया है जबकि वो अपनी सेवाओं में विस्तार चाहता था। उसे ब्रेन कैंसर है। वो अकेले रहता है। अपनी चॉल में आई नई बिहारी युवा लड़की सीता और लालू के साथ उसका अन्जाने में एक रिश्ता पनपने लगता है। जबकि वो हमेशा अकेला रहना पसंद करता है, जिस चॉल में वो रहता है वहां ज्यादातर मराठी लोग रहते हैं। यहां पर रहने वाला एक छुटभैया नेता बाहरी (जो मराठी नहीं है) के खिलाफ बुरा बर्ताव रखता है। इसी के चलते फिल्म का अंत आते आते भोंसले अपनी जिंदगी की आखरी लड़ाई लड़ता है।

Bhonsle is an ageing Marathi sub-inspector, who has had more regard for the human condition than the rulebook. He wanted an extension of his service, but has been retired against his will. He has brain cancer. Having lived a solitary life, he forges an unlikely companionship with young Sita and little Lulu, his new Bihari migrant neighbours in a chawl with mostly Marathi residents. Harassed for being 'outsiders' by the boorish a local political goon, the Saita and Lulu turn to Bhonsle. Heartbroken at his condition, Bhonsle finds one last battle worth fighting for.

असुरन (Asuran)

सिवासामी, तमिलनाडु के एक गांव का किसान है, जो अपने छोटे बेटे चिदंबरम के साथ जंगल में भागने को मजबूर हो जाता है। चिदंबरम ने उसके बड़े भाई की हत्या करने वाले एक ऊंची जाति के जमींदार की हत्या कर दी थी। चिदंबरम को अपने पिता से नफरत है क्योंकि उसे लगता है कि जब उसका भाई की मारा गया तो वो वहां से भाग गए। चिदंबरम अपना रास्ता खुद बनाता है। लेकिन जब जमींदार के आदमी उसे घेर लेते हैं। तब सिवासामी ही एक हिंसक टकराव में अपने बेटे को बचाता है। तब चिदंबरम अपने पिता एक अलग रूप देखता है।

Sivasami, a farmer from a small village in Tamil Nadu, is forced to flee into the forest with his younger son, Chidambaram. Why? Because, his son had murdered an upper-caste landlord to avenge the killing of his elder brother. Chidambaram dislikes his father for running away when his brother was murdered. While Sivasami tries to keep him out of harm's way, Chidambaram sets out on his own. But when he is tracked down by the landlord's men, Sivasami rescues him in a violent clash against the captors. Chidambaram sees a new side to his normally docile father.

मणिकर्णिका : द क्वीन ऑफ ज़ांसी (Manikarnika: The Queen of Jhansi)

मणिकर्णिका ज़ांसी की रानी की असल जिंदगी पर आधारित है। ईस्ट इंडिया कंपनी जो रानी का राज्य हड़पना चाहती थी, मणिकर्णिका ने उसके सामने झुकने से इंकार कर दिया था। फिल्म की कहानी बिदूर से शुरू होती है जहां वो पत्नी बड़ी थी, वहां से वो ज़ांसी गई और वहां की रानी बनी और अपने साम्राज्य को बचाने के लिए ब्रितानी

कथासार | Synopsis

हुकूमत से लड़ी. इस तरह झांसी की रानी लक्ष्मीबाई भारतीय इतिहास की पहली महिला हुई जिन्होंने ब्रितानी सरकार से लोहा लिया. जिसे भारत की स्वतंत्रता की पहली बड़ी लड़ाई माना जाता है. हालांकि इस लड़ाई में उन्होंने अपनी जान गंवाई थी लेकिन उनकी बहादुरी आज तक प्रेरणा का स्रोत है.

'Manikarnika' is based on the real life story of the warrior queen of Jhansi, Manikarnika, who refused to bow down when the East India Company tries to annex her kingdom. It chronicles her life from Bithoor, where she grew up, to Jhansi, where she become the queen and eventually fought against the British soldiers to save her kingdom. Also known as Queen Lakshmi Bai, her rebellion soon turns into a fiery revolution against the British Raj. She thus became the first woman in history to fight against the British and started the first major war for Independence in India. Though she lost her life in her fierce battle against the British, she became a symbol of bravery, valor and strength.

पंगा (Panga)

जया एक पूर्व कबड्डी चैंपियन है जो अब रेलवे रिजर्वेशन काउंटर पर क्लर्क के तौर पर काम करती है. अपने पति और 7 साल के बेटे आदि के साथ भोपाल में रहती है. आदि के जन्म के बाद कबड्डी छोड़ने का उसे हमेशा पछतावा रहता है. जब आदि को अपनी मां की उपलब्धियों के बारे में पता चलता है तो वो अपनी मां को वापस खेल में जाने के लिए प्रेरित करता है. लेकिन ये काम इतना आसान नहीं है. उसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है. नए खिलाड़ियों के सामने उसकी फिटनेस को लेकर भी सवाल है. उसकी दोस्त और कबड्डी कोच मीनु उसकी मदद करती है. क्या वो कबड्डी में वापस कर पाएगी या उसे निराशा हाथ लगेगी, इसी जद्दोजहद की कहानी है पंगा.

Jaya, a former Kabaddi world champion, now works as a railway reservation counter clerk and lives with her husband Prashant and 7-year-old son Adi in Bhopal. She regrets having quit Kabaddi after Adi's birth. When Adi learns about her achievements from his father, he pushes his mother to return to the sport. But it's not going to be an easy task Jaya who now faces many challenges – her fitness level and newer and better players. Her former teammate and friend, Meenu, who has become a Kabaddi coach, decides to help and train Jaya. Will she be able to push herself into making a comeback into the sport she loves?

सुपर डीलक्स (Super Deluxe)

सुपर डीलक्स एक डार्क कॉमेडी है. फिल्म में चार कहानियां समांतर चलती हैं. जिसमें एक कहानी बेवफा नई नवेली पत्नी की वेंबु की है जिसकी शादी मुघिल से हुई है लेकिन वो अभी भी अपने पूर्व प्रेमी के प्यार में है, कहानी एक ट्रांसजेंडर शिल्पा की है जो अपनी पत्नी और बेटे से मिलने की कोशिश कर रहा है, और एक गुस्सेल किशोर की है जिसे पता चल जाता है कि उसकी मां लीला एक पोर्न स्टार हैं, और लीला का पति पुजारी हो चुका है. फिल्म बहुत ही सहजता से सेक्स, लांछन, आध्यात्म, नैतिकता और लिंगभेद को अपने केंद्रीय चरित्रों के ज़रिए दिखाती है.

'Super Deluxe' is a dark comedy-drama with elements of fantasy in it. It features four parallel stories about – an unfaithful newly-wed wife Vaambu who is married to Mughil but loves her ex-boyfriend; a man who becomes a transgender 'Shilpa' and is trying to meet his wife and son; an angry teenage son who discovers his mother Leela is a porn actor; and Leela's husband who becomes a priest. The stories seamlessly merge to explore sex, stigma, spirituality, morality, and gender discrimination through the lives of these eccentric characters who take life head on.

द ताशकत फाइल्स (The Tashkent Files)

सही घटनाओं पर आधारित फिल्म भारत के दूसरे प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की रहस्यमयी हत्या की गुल्थी बताती है. एक नौसिखिया पत्रकार रागिनी फुले शास्त्री जी की मौत की खबर ब्रेक करती है जिससे देश में हलचल मच जाती है. इसके लिए एक जांच समीति बैठाई जाती है. फिल्म में आगे चलकर रागिनी के सामने वो सच आते हैं जो जनता से छिपाए गए थे और साथ ही वो समीति के सदस्यों के निजी एजेंडा और गंदी राजनीति का भी सामना करती है. तमाम तरह की चुनौतियों. झंझावातों से गुजरते हुए रागिनी न सिर्फ शास्त्री जी की रहस्यमयी मौत के पीछे का सच सामने लाती है बल्कि राजनीति के खेल को भी खोल कर रख देती है.

Based on true events, the film is about the mysterious death of India's second prime minister Shri Lal Bahadur Shastri. A rookie Journalist Raagini Phule, breaks the story of Shastriji's death which leads to unrest in the country. An inquiry commission is set-up to look in to his death. As the story unfolds, Raagini learns not only about the facts that were conveniently hidden from the public but also the dirty politics and personal agendas of the committee members. Through a series of challenging, whirlwind encounters, Raagini uncovers not only the truth behind Shastriji's the mysterious death but also the game of politics and narratives.

केडी (ए) करुप्पु दुराई (KD (A) Karuppu Durai)

करुप्पु दुराई 80 साल के बुजुर्ग हैं जो तीन महीने से कोमा में हैं. एक दिन वो अचानक जाग जाता है जब उसे अपने परिवार के लोगों की आवाज सुनाई देती है, वो एक प्राचीन यूथेनसिया परंपरा से उसे मारने की योजना बना रहे होते हैं. डरा हुआ, टूटे दिल के साथ वो अपने घर से भाग जाता है. निरुद्देश्य भटकते हुए उसकी मुलाकात 10 साल के अनाथ बच्चे कुट्टी से होती है. कुट्टी करुप्पु के बिल्कुल उलट, बिंदास, जिंदगी जीने वाला बच्चा है. निडर आजाद कुट्टी केडी को जिंदगी जीने के लिए एक सूची बनाने के लिए प्रेरित करता है. इस तरह से एक अजीब जोड़े की सड़क यात्रा शुरू होती है— जिसमें एक घर से भागा हुआ है और दूसरे का कभी घर ही नहीं था.

कथासार | Synopsis

Karuppu Durai, an 80-year-old man, has been in coma for three months. One fine day, he suddenly wakes up to overhear his family planning to kill him by performing an ancient euthanasia ritual. Hurt, heartbroken and afraid, he runs away from the only home he has ever known. On an aimless path with nowhere to go, he accidentally meets a 10-year-old orphan Kutty. Kutty is everything Karuppu Durai isn't – smart, spunky and full of life. The fiercely independent Kutty encourages KD to chalk out a bucket list and start living for himself. Thus, begins an eventful road trip of this unlikely pair – an old man running away from his family and a young boy who never had one!

केसरी (Kesari)

1897 के करीब की बात होगी, लगभग पूरे भारत पर ब्रितानी साम्राज्य की हुकूमत थी. और वे उत्तर पश्चिमी सीमांचलो पर कब्जा जमाने की कोशिश में लगे हुए थे. सारागढ़ी किला इस सीमांचल में मौजूद दोनों बड़े मिलेट्री गढ़ों के बीच बातचीत का जरिया है. ईशर सिंह एक शानदार सिक्ख योद्धा है जिसके ब्रिटिश अधिकारियों से अक्सर विरोध बना रहता है. इसी के चलते उसकी पोस्टिंग सारागढ़ी में कर दी जाती है. जहां 20 नियमों को धता बताने वाले सिक्ख सैनिक उसका इंतजार कर रहे होते हैं. ईशर सिंह इन बदमाश सैनिकों के साथ मिलकर 12 सितंबर 1897 को 10 हजार अफगानों से लोहा लेता है जो सारागढ़ी किले पर हमला बोल देते हैं. केसरी अब तक की सबसे बहादुर जंग की कहानी है जिसे इतिहास में सारागढ़ी के युद्ध के नाम से जाना जाता है.

Circa 1897. The British empire, having conquered most of India, is now trying to gain control of the North Western Frontier Province (NWFP). Fort Saragarhi, in the NWFP, is a communication post used to relay messages between two major military forts – Gullistan and Lockhardt. Ishar Singh, a proud Sikh warrior, is often in direct conflict with his British officers. As a punishment, Ishar is sent to Saragarhi where 20 unruly Sikh soldiers await him. Ishar leads this bunch of lovable rouges into the battle when on 12th September 1897 an army of 10,000 Afghans attacks Saragarhi Fort. 'Kesari is the true story of one of the bravest battles ever fought also known as 'The Battle of Saragarhi'.

बारदो (Bardo)

बार्डो इजिप्ट भाषा में बौद्ध धर्म के लिए इस्तेमाल किया जाता है. जो मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच की क्षणिक चरण को समझाता है. माना जाता है कि जो सपना हम देखते हैं वो कहीं ना कहीं संबंध रखता है और ये हमेशा बार्डो की स्थिति में होता है. यही इस फिल्म का सार है. फिल्म की कहानी एक बहुत ही दूर दराज के गांव धनोर की है, कि किस तरह गांव के लोगों को सच्चाई का अहसास होता है जब उनकी जिंदगी में एक शिक्षक आता है.

"Bardo" is the term used in Egyptian Buddhism that describes the transitory stage between death and incarnation. The belief that 'the dreams we see, are interrelated and they are always in state of 'Bardo' is the very essence of this movie. It is a story of an extremely remote and small village Dhanor and how the dreams of different villagers come into the reality as a school teacher enters their lives.

जल्लीकट्टू (Jallikettu)

केरल के दूरदराज गांव के परिदृश्य में बनी फिल्म जल्लीकट्टू एक दिन और रात की कहानी है. फिल्म की कहानी –शुरु होती है जब एक कसाई का भैंसा भाग निकलता है. और आपा खो बैठता है. पूरा गांव इस पगलाए भैंसे को –दूढ़ने निकल पड़ता है और इस बीच तमाम काली परतें खुलने लगती हैं, लोगों की क्रूरता, लालच, वासना, अविश्वास और बदले की प्रवृत्ति बाहर निकलती है. एक –झटके में अंदर दबा हुआ, भयानक हिंसा का चरम फूट पड़ता है. एक ईसान और राक्षस के बीच का अंतर खत्म हो जाता है. ये फिल्म जिंदगी के सामाजिक और नैतिक पहलू की कमजोरी को भी दिखाती है.

Set in a remote Kerala village, 'Jallikattu' unfolds during the course of a day and night. The events are set off when a butcher Kalan Varkey's buffalo breaks free and creates havoc across the village. The villagers get into hunting down the beast, lead by two adversaries Kuttachan and Anthony, who have old scores to settle. As the entire village gets sucked into catching the errant animal, all the dark layers of collective unconscious – ferocity, greed, lust, distrust and vengeance – lurking below the surface erupt into a horrendous crescendo of violence, where the boundaries between man and beast disappear. The film is also about the fragility of the moral and social fabric of life.

ज्येष्ठपुत्रो (Jyeshthoputro)

बंगाली सुपरस्टार इंद्रजीत को अपने पिता की मौत की खबर मिलती है और वह तुरंत अपने गांव बल्लभपुर पहुंचता है. वह दस साल के बाद अपने पैतृक गांव में आया है, जिसकी वजह से वह वहां रहने वाले लोगों और जगहों को पहचान ही नहीं पाता है. फिर भी वह पुरानी यादों में खो जाता है. और देख सकता है कि किस तरह बीते 10 सालों में हालात कितने बदल गए हैं. न सिर्फ उसके चारों तरफ बल्कि खुद उसमें भी कितना बदलाव आ गया है. यह फिल्म इंद्रजीत, जो घर का बड़ा बेटा (ज्येष्ठपुत्र) है, उसकी खुद की तलाश के सफर की कहानी है.

Bengali superstar Indrajit receives the news of his father's death and rushes to his native place, Ballabhpur. Arriving at his native village after 10 long years, he is unable to relate to the people and places as he used to. Still, being the eldest son, he gets nostalgic and can almost see how these 10 years have brought out a change not only in his surroundings, but also in himself. The story unveils with Indrajit's journey to find his own self.

कथासार | Synopsis

गुमनामी (Gumnaami)

गुमनामी फिल्म भारत के इतिहास के सबसे कुख्यात षड़यंत्र के सिद्धांत दृ भारतीय स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की कथित मौत के बारे में बात करती है। फिल्म मुखर्जी कमीशन की सुनवाई को आधार बनाकर रची गई है, जो 1999 से 2005 के बीच चली थी। इस सुनवाई में नेताजी की मौत को लेकर तीन थ्योरी पर चर्चा और विवाद हुआ था। फिल्म उसी सुनवाई का नाट्य रूपांतरण है जहां एक खोजी पत्रकार गुमनामी बाबी की थ्योरी का समर्थन करता है, वहीं वकील का मानना है कि प्लेन क्रेश वाली बात ज्यादा सही है। इसी टकराव में रूस में हुई मौत वाली थ्योरी भी सामने आती है।

'Gumnaami' features the most famous conspiracy theory in Indian history - the alleged death of the Indian freedom fighter Netaji Subhash Chandra Bose. It is based on the Mukherjee Commission Hearings, which took place between 1999 and 2005, where three theories about Netaji's death were discussed and debated. The film is a dramatisation of the hearings where an investigative journalist supporting the 'Gumnaami Baba theory' locks horns with the official lawyer who supports the 'plane-crash theory'. In their clash, the 'Death in Russia theory' also comes up.

द ताशकंत फाइल्स (The Tashkent Files)

सही घटनाओं पर आधारित फिल्म भारत के दूसरे प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की रहस्यमयी हत्या की गुल्थी बताती है। एक नौसिखिया पत्रकार रागिनी फुले शास्त्री जी की मौत की खबर ब्रेक करती है जिससे देश में हलचल मच जाती है। इसके लिए एक जांच समीति बैठाई जाती है। फिल्म में आगे चलकर रागिनी के सामने वो सच आते हैं जो जनता से छिपाए गए थे और साथ ही वो समीति के सदस्यों के निजी एजेंडा और गंदी राजनीति का भी सामना करती है। तमाम तरह की चुनौतियों, झंझावातों से गुजरते हुए रागिनी न सिर्फ शास्त्री जी की रहस्यमयी मौत के पीछे का सच सामने लाती है बल्कि राजनीति के खेल को भी खोल कर रख देती है।

Based on true events, the film is about the mysterious death of India's second prime minister Shri Lal Bahadur Shastri. A rookie Journalist Raagini Phule, breaks the story of Shastriji's death which leads to unrest in the country. An inquiry commission is set-up to look in to his death. As the story unfolds, Raagini learns not only about the facts that were conveniently hidden from the public but also the dirty politics and personal agendas of the committee members. Through a series of challenging, whirlwind encounters, Raagini uncovers not only the truth behind Shastriji's the mysterious death but also the game of politics and narratives.

इयुदह (Īewduh)

इयुदह उत्तर पूर्व भारत से सबसे जीवंत बाजारों में से एक है। इयुदह फिल्म इस बाजार में रोजाना आने वाले लोगों की रोजमर्रा की कहानी दिखाती है। यहां अलग-अलग समुदाय और धर्म के लोग साथ काम करते हैं और रहते हैं। वह न सिर्फ खुद की जिंदगी को बेहतर और खुशहाल बनाने की कोशिश करते हैं बल्कि उनके बारे में भी सोचते हैं, जिनको वो प्यार करते हैं, जिनकी परवाह करते हैं। आज कई सदियों गुजर जाने के बाद भी, इयुदह बढ़ता जा रहा है और एक बड़े इतिहास का गवान बन चुका है। इसकी हर गली में एक नई कहानी है, इयुदह में स्वार्थ नहीं रिश्ते पनपते हैं।

'Īewduh' is about one of the liveliest markets by the same name in the North East India. Here, people from different communities and religion work and co-exist. In every lane of Īewduh is an untold story. The story of struggle, of hope to give life not just to themselves, but also to those that they love, those that they care for. Today centuries later, Īewduh stands tall and witness to a lot of history. In its every lane, there are new stories. With scars and colors, freshness and stench, 'Īewduh' is about everyday people and their everyday stories; people not dignified as heroes, but nevertheless people who make the lives of each other better. In Īewduh, when reason ends, relationships begin.

ओथ्था सेरुप्पु साइज 7 (Oththa Seruppu Size 7)

मसिलामणि, एक अंधेड़ उम्र का सिक्योरिटी गार्ड हैं जो चेन्नई के एक चर्चित खेल क्लब में काम करता है। उससे एक हत्या के संदिग्ध के तौर पर सवाल जवाब किए जा रहे हैं और उस दौरान गंभीर रूप से बीमार उसका बेटा इन्वेस्टिगेशन रूम के बाहर उसका इंतजार कर रहा होता है। मसिलामणि की हैरान कर देने वाली कहानी जिसमें अजीबो गरीब हालात हैं, जिससे हास्य पैदा होता है और अचानक हाजिरजवाबी नजर आती है। फिल्म देखने के दौरान एक सवाल लगातार चलता रहता है कि आखिर ये शख्स है कौन, इसने क्या किया है और क्या वह सच में उस सजा का हकदार है? फिल्म की खास बात ये है कि स्क्रीन पर सिर्फ एक ही कलाकार नजर आता है जबकि बाकि के किरदार जो उससे बात कर रहे हैं उनकी सिर्फ आवाज आती रहती है।

Masilamani, a middle-aged security guard at a popular sports and recreation club in Chennai, is being questioned as a murder suspect while his terminally-ill young son waits outside the investigation room. Masilamani's strange tale, with moments of unexpected comedy and sudden displays of wit, leaves us questioning who really is he, what has he done and if he deserves the punishment that is staring him in the face? The film has only one actor performing on screen, while other characters interact with him as mere voices.

जर्सी (Jersey)

अर्जुन, जो कभी क्रिकेटर बनना चाहता है, अब वो सरकारी नौकरी से निलंबित होने के बाद एक नीरस जिंदगी गुजार रहा है। अपने संघर्षों को खत्म करने में लगे हुए अर्जुन से उसका बेटा अपने जन्मदिन पर क्रिकेट जर्सी तोहफे में मांगता है। जर्सी के लिए कुछ पैसा कमाने के चक्कर में अर्जुन अपने पूर्व कोच मूर्ति से मदद लेता है। और वो फिर से एक बार क्रिकेट के मैदान में उतरता है। उस दौरान उसे अहसास होता है कि क्रिकेट उसके अंदर किस कदर बसा हुआ है, क्रिकेट में मैदान में जाते ही वो अपनी

कथासार | Synopsis

सारी तकलीफें भूल जाता हैं. वो फैंसला करता है कि एक बार वो फिर से अपने सपने के लिए काम करेगा, क्या वो अपने बेटे के लिए जर्सी खरीद पाएगा, क्या वो टीम इंडिया के लिए खेलने का अपना सपना पूरा कर पाएगा?

Arjun, who once aspired to become a cricketer, is living a dejected life after being suspended from the government job he had settled for. Struggling to make his ends meet, his life is put to a test when his son asks for a cricket jersey as his birthday present. To earn some money, he seeks his former coach Murty's help. While playing cricket to earn money for his son's jersey, Arjun realizes how much he missed playing cricket. On the cricket field, he feels so alive as if nothing else matters to him. He decides to reclaim the life he once dreamt of. Will he manage to buy jersey for his son and achieve his long-cherished dream of playing for Team India?

आनन्दी गोपाल (Anandi Gopal)

यह फिल्म उन्नीसवीं सदी के भारत की सच्ची कहानी पर आधारित है. नौ साल की यमुना (उर्फ आनंदी) की शादी गोपालराव जोशी से हुई. गोपालराव ने आनन्दी के माता-पिता से यह सुनिश्चित किया कि आनन्दी को शिक्षित किया जाए. एक निजी त्रासदी के बाद आनन्दी डॉक्टर बनने की कसम खाती है और गोपाल उसके फैसले का समर्थन करता है. लेकिन उसे अपने रिश्तेदारों और समाज का विरोध झेलना पड़ता है, जो लड़कियों को पढ़ाने के पक्षधर नहीं हैं. उस पर डॉक्टर बनना तो सारी हदों को पार करने जैसा है. किसी के आगे ना झुकते हुए गोपाल आनन्दी को पढ़ाई के लिए यूएसएस भेजता है. और वो भारत की पहली महिला डॉक्टर बनती हैं.

The film, based on a true story from the 19th century India, revolves around Anandibai Gopalrao Joshi, who became the first lady doctor from India. The nine-year-old Yamuna (aka Anandi) was married to Gopalrao Joshi, who had asked her parents to ensure she becomes literate. After a personal tragedy, Anandi vows to become a doctor and Gopal supports her decision. But they are heavily criticised by their kin and society, which does not accept a girl being educated and more so become a doctor. Indomitable Gopal sends Anandi to USA to study and become the first female doctor of India!

मरक्कर: अराबिकादलिनते सिम्हम (Marakkar: Arabikadalinte Simham)

15 वीं और 16 वीं सदी के शुरुआती दौर को दर्शाती फिल्म कुंजली मरक्कर की जिंदगी के इर्द गिर्द घूमती है, जो केरला का कुख्यात डाकू था और बाद में कालीकट के महाराज जेमोरिन की नौसेना का कमांडर बनता है. वह और उसका दल पुर्तगालियों से मसाला लूटा करते थे. जब पुर्तगाली के कैप्टन कमांडर अफोन्सो डे नोरोन्हा ने कालीकट के खिलाफ युद्ध की घोषणा की तो जेमोरिन ने कुंजली से मदद मांगी. इस युद्ध में कुंजली नोरान्हा को मार डालता है. इस तरह से जेमोरिन और कुंजली के बीच रिश्ता गहरा हो जाता है. फिर फ्रांसिस्को दा गामा पुर्तगाली भारत का वाइसराय और आंद्रे फुरतादो दे मेंडोका नया कमांडर बनते हैं. वो धोखे से कुंजली को पकड़ लेते हैं और बाद में उसे गोआ में मौत के घाट उतार दिया जाता है.

Set in the late 15th and early 16th century, the biopic revolves around Kunjali Marakkar, the infamous pirate from Kerala who later became the naval commander of Zamorin, the King of Calicut. He and his band of pirates looted spices from the Portuguese, who had started trade with Cochin but wished to ultimately conquer Kerala. When Portuguese Captain Commander Afonso De Noronha declares war against Calicut, Zamorin seeks Kunjali's help. During the battle, Kunjali ends up killing Noronha. The relationship between Zamorin and Kunjali grows. But Francisco Da Gama, the then Viceroy of Portuguese India and Andre Furtado De Mendoca the new Captain Commander, manage to influence the Nobles in betraying Kunjali, who is captured, and later executed in Goa.

हेलन (Helen)

हेलन एक सामान्य बस्ती में रहने वाली लड़की है जिसने प्रिन्स कोचिंग क्लास में दाखिला लिया है, वो एक रेस्टोरेंट में पार्ट-टाइम काम करती है, उसे उम्मीद है कि उसे एक दिन विदेश में जाँव मिल जाएगा. एक रात काम के बाद उसका मैनेजर उसे गलती से रेस्टोरेंट के फ्रीजर रूम में बंद कर देता है. उधर हेलन के घर नहीं पहुंचने पर उसके पिता पॉल की चिंता बढ़ती जाती है. पॉल पुलिस के पास जाते हैं, और वो हेलन के दोस्त अजहर के साथ मिलकर उसकी खोज में जुट जाते हैं. वहीं हेलन -18 डिग्री तापमान में खुद को जिंदा रखने का हर संभव प्रयास करती है. सर्दी के मारे उसकी नाक से खून बहने लगता है, क्या वक्त रहते लोग उसे ढूँढ पाएंगे, क्या तब तक वो खुद को जिंदा रख पाएगी ?

Helen, an ordinary suburban girl, attends IELTS coaching classes, works part-time at a restaurant, and hopes to land a job abroad. One night after work, her manager accidentally locks her in the restaurant's freezer room. Her father Paul starts to worry when Helen doesn't reach home. Paul approaches the police and is joined by Helen's boyfriend Azhar as they all frantically search for her. Meanwhile, Helen struggles to survive the freezing cold of -18 °C and tries everything possible to keep herself alive. She starts to get frostbite and bleed through her nose. Will she be discovered before it's too late? Till then, she must face the ultimate battle: the one for her life.

विश्वासम (Viswasam)

विश्वासम एक एक्शन और भावनाओं से भरी फिल्म है. जिसकी कहानी थुकूदुराई गांव का मुखिया और उसकी बेटी श्वेता थुकूदुराई के इर्द गिर्द घूमती है, जो हमेशा अपने गांव वालों की मदद करते रहते हैं. उसकी पत्नी किसी झगड़े के दौरान उसकी बेटी के श्वेता के घायल हो जाने के बाद अपने पति को छोड़ कर चली जाती है. शुभचिंतकों के समझाने पर वो अपनी पत्नी और बेटी से मिलने मुंबई जाता है जो वहां पर खतरे में है. अब उसे अपनी बेटी को बचाने के लिए बड़ा खतरा मोल लेना है. साथ ही उसे अपनी पत्नी के साथ बिखरे हुए रिश्तों को भी ठीक करना है.

कथासार | Synopsis

'Viswasam' is an action and emotional drama film, centered around Thookudurai, a village head, and his daughter Swetha. Thookudurai helps others in his village all the time. His wife Niranjana has left him with their daughter, following a serious altercation during which Swetha gets injured. After a prodding by his well-wishers, he decided to go to Mumbai to meet his wife and daughter, who seems to be in danger. Now, he must take on a big shot to save his daughter even as he tries to sort out the rough patch in his marriage.

ज्येष्ठपुत्रो (Jyeshthoputro)

बंगाली सुपरस्टार इंद्रजीत को अपने पिता की मौत की खबर मिलती है और वह तुरंत अपने गांव बल्लभपुर पहुंचता है। वह दस साल के बाद अपने पैतृक गांव में आया है, जिसकी वजह से वह वहां रहने वाले लोगों और जगहों को पहचान ही नहीं पाता है। फिर भी वह पुरानी यादों में खो जाता है। और देख सकता है कि किस तरह बीते 10 सालों में हालात कितने बदल गए हैं। न सिर्फ उसके चारों तरफ बल्कि खुद उसमें भी कितना बदलाव आ गया है। यह फिल्म इंद्रजीत, जो घर का बड़ा बेटा (ज्येष्ठपुत्र) है, उसकी खुद की तलाश के सफर की कहानी है।

Bengali superstar Indrajit receives the news of his father's death and rushes to his native place, Ballabhpur. Arriving at his native village after 10 long years, he is unable to relate to the people and places as he used to. Still, being the eldest son, he gets nostalgic and can almost see how these 10 years have brought out a change not only in his surroundings, but also in himself. The story unveils with Indrajit's journey to find his own self.

कोलांबी (Kolaambi)

एक बुजुर्ग जोड़ा कोलांबी (लाउडस्पीकर) पर एल.पी रिकॉर्ड बजाता है। अपने रोजाना के ग्राहकों को कॉफी परोसता है। जुलाई 2005 में उनका लाउडस्पीकर हमेशा के लिए शांत हो गया। जब सरकार ने इसके इस्तेमाल पर पाबंदी लगा दी। सिर्फ यही एक काम था जो वह जानते थे और अब उनके पास कुछ नहीं बचा है। एक युवा कलाकार अपने काम की खोज में कोच्चि आती है और संयोग से इस जोड़े से मिलती है। उसे कोलांबी के हालात में तुरंत समझ आ जाता है। इसे इस्तेमाल करते हुए वो कोच्चि में दो साल में एक बार होने वाले विशाल कला प्रदर्शनी के लिए कुछ तैयार करती है। उसका किया गया काम शांत हो चुके कोलांबी को उसकी आवाज दिला देता है।

An old couple played LP records on Kolambis (loudspeakers) and served coffee to the routine costumers. In July 2005, his loudspeakers were silenced forever when the government banned their use. The only job they knew, loved, invested in and built up from nothing was no more. A young artiste, who comes to Kochi to scout around for a subject for her Art Installation, meets the couple by accident. She is instantly drawn to the tragic nature of the Kolambi's fate and uses it to create a work of art at the Kochi Biennale. Her art work gives back the silenced Kolambis their voice.

ओथ्था सेरुप्पु साइज 7 (Oththa Seruppu Size 7)

मसिलामणि, एक अर्धे उम्र का सिक्योरिटी गार्ड हैं जो चेन्नई के एक चर्चित खेल क्लब में काम करता है। उससे एक हत्या के संदिग्ध के तौर पर सवाल जवाब किए जा रहे हैं और उस दौरान गंभीर रूप से बीमार उसका बेटा इन्वेस्टिगेशन रूम के बाहर उसका इंतजार कर रहा होता है। मसिलामणि की हैरान कर देने वाली कहानी जिसमें अजीबो गरीब हालात हैं, जिससे हास्य पैदा होता है और अचानक हाजिरजवाबी नजर आती है। फिल्म देखने के दौरान एक सवाल लगातार चलता रहता है कि आखिर ये शख्स है कौन, इसने क्या किया है और क्या वह सच में उस सजा का हकदार है? फिल्म की खास बात ये है कि स्क्रीन पर सिर्फ एक ही कलाकार नजर आता है जबकि बाकि के किरदार जो उससे बात कर रहे हैं उनकी सिर्फ आवाज आती रहती है।

Masilamani, a middle-aged security guard at a popular sports and recreation club in Chennai, is being questioned as a murder suspect while his terminally-ill young son waits outside the investigation room. Masilamani's strange tale, with moments of unexpected comedy and sudden displays of wit, leaves us questioning who really is he, what has he done and if he deserves the punishment that is staring him in the face? The film has only one actor performing on screen, while other characters interact with him as mere voices.

मरक्कर: अराबिकादलिनते सिम्हम (Marakkar: Arabikadalinte Simham)

15 वीं और 16 वीं सदी के शुरुआती दौर को दर्शाती फिल्म कुंजली मरक्कर की जिंदगी के इर्द गिर्द घूमती है, जो केरला का कुख्यात डाकू था और बाद में कालीकट के महाराज जेमोरिन की नौसेना का कमांडर बनता है। वह और उसका दल पुर्तगालियों से मसाला लूटा करते थे। जब पुर्तगाली के कैप्टन कमांडर अफोन्सो डे नोरोन्हा ने कालीकट के खिलाफ युद्ध की घोषणा की तो जेमोरिन ने कुंजली से मदद मांगी। इस युद्ध में कुंजली नोरोन्हा को मार डालता है। इस तरह से जेमोरिन और कुंजली के बीच रिश्ता गहरा हो जाता है। फिर फ्रांसिस्को दा गामा पुर्तगाली भारत का वाइसराय और आंद्रे फुर्तादो दे मेंडोका नया कमांडर बनते हैं। वो धोखे से कुंजली को पकड़ लेते हैं और बाद में उसे गोआ में मौत के घाट उतार दिया जाता है।

Set in the late 15th and early 16th century, the biopic revolves around Kunjali Marakkar, the infamous pirate from Kerala who later became the naval commander of Zamorin, the King of Calicut. He and his band of pirates looted spices from the Portuguese, who had started trade with Cochin but wished to ultimately conquer Kerala. When Portuguese Captain Commander Afonso De Noronha declares war against Calicut, Zamorin seeks Kunjali's help. During the battle, Kunjali ends up killing Noronha. The relationship between Zamorin and Kunjali grows. But Francisco Da Gama, the then Viceroy of Portuguese India and Andre Furtado De Mendoca the new Captain Commander, manage to influence the Nobles in betraying Kunjali, who is captured, and later executed in Goa.

कथासार | Synopsis

महर्षि (Maharshi)

रिषि कनकला अमरीका की एक मल्टीनेशनल तकनीकी कंपनी में सीईओ है। उसे एक दिन अपनी सफलता के पीछे अपने पुराने दोस्त नरेश के त्याग के बारे में पता चलता है। वो उससे मिलने के लिए भारत लौटता है। नरेश उसे बताता है कि 70 गांव जिसमें उसका खुद का गांव भी शामिल है, उसे स्थानीय सरकार जबरन खाली करवा रही है और गांव वालों को कहीं और बसाया जा रहा है क्योंकि इस जगह पर कोई कॉरपोरेट ग्रुप की बड़ी परियोजना शुरू होनी है। इस कॉरपोरेट से संबंध रखने वाले विवेक ने कुछ भ्रष्ट राजनीतिज्ञों और नौकरशाहों को अपने साथ मिला लिया है, जिससे गांव वालों की आवाज को दबाया जा सके, वो लोग गांव वालों को तो चुप करा देते हैं लेकिन नरेश नहीं मानता है, रिषि भी गांव बचाने की उसकी लड़ाई में शामिल हो जाता है। वो खेती के जरिये एक विकास की इबारत लिखता है और गांव वाले विरोध जताते हैं, आगे चलकर पूरा देश उनकी लड़ाई में शामिल हो जाता है।

Rishi Kanakala is appointed CEO of a US-based multinational technological company. Then, he learns about the sacrifice his long-lost friend Naresh made for his success and comes back to India to meet him. Naresh tells him that 70 villages, including their own, were being forced to evacuate and accept resettlement by the local government, to make way for a big corporate group's ambitious project. The corporate giant Vivek, in connivance with some corrupt politicians and bureaucrats, has managed to silence the voices of the villagers, except Naresh. Moved, Rishi joins the battle to save the villages. He ignites a revolution through agriculture among the villagers and subsequently, the entire nation begins to protest against the project.

अवाने श्रीमन्नारायणा (Avane Srimannarayana)

नारायण एक मजेदार पुलिसवाला है, उसकी पोस्टिंग अमरावती शहर में होती है। यहां पर उसे लंबे समय से अटका एक केस सुलझाने को मिलता है, जिसमें संगीतकारों और कलाकारों के एक समूह ने 15 साल पहले एक खजाने की लूट की थी। नारायण की खोज उसे डकैतों के एक कबीले अभिरस तक पहुंचाती है जिसका एक खौफनाक सरदार है जयराम। जो खुद भी पिछले कई सालों से इस खोज में लगा हुआ है, अभिरस के लिए खजाना की कीमत कहीं ज्यादा है। ये सभी घटनाएं मिलकर फिल्म में एक शानदार एंडवेंचर, हास्य, रोमांच और ड्रामा पैदा करती हैं।

Narayana is a quirky new cop in the town of Amaravati. He is in pursuit of solving a long-held mystery about a treasure which was looted by a group of musicians and actors 15 years ago. In the process, he has to take on a dreaded clan of dacoits called Abhiras, lead by its fierce leader Jairam, who have been pursuing the same for years. To Abhiras, the treasure means more to them than its monetary value. What follows is an adventure, comedy, thriller and drama all rolled in one film.

बिरियानी (Biriyaani)

फिल्म की कहानी खदीजा नाम की एक शादीशुदा मुस्लिम महिला के इर्द गिर्द घूमती है, जिसकी जिंदगी घर की चारदिवारी में कैद हो कर रह गई है। उसे धर्म और समाज के नाम पर पर्दा करने पर मजबूर किया जाता है। जब नियति उसे ऐसी जिंदगी से मुक्ति दिलाती है तो वो अपनी आर्थिक और दैहिक स्वतंत्रता के लिए अलग रास्ता चुनती है और सेक्स वर्कर बन जाती है। जल्दी ही उसे अहसास होता है कि वो इससे भी खुश नहीं है। फिर उसे जिंदगी का नया लक्ष्य मिलता है और जिस किसी ने भी उसे अनाथ की तरह जिंदगी जीने को मजबूर किया और अपमानित किया वो उनसे एक अनोखा बदला लेती है। फिल्म की पृष्ठभूमि, वो इलाके जहां इसे शूट किया गया है, इस कहानी को और सशक्त बनाती है।

Khadeeja, a married Muslim woman, is confined within the four walls of her household and is forced to suppress her desires in the name of religious and societal norms. When fate brings her to an abandoned life, she chooses a unique way to secure herself financially and liberating herself sexually – by being a sex worker. However, she soon realises that her soul is still dissatisfied. Finding a new way of hope, she decides to give it back to the 'forces' that pushed her to live a life of humiliation and misery. The film captures the essence of her life and struggle in a conservative, religious and rural background.

जोनाकी पोरुआ (Jonaki Porua)

जाहु एक किशोर है जो असम में ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसे एक गांव में रहता है। गांव वाले उसके लड़कियों जैसे बर्ताव का मजाक उड़ाते हैं। लेकिन जाहु को कोई फर्क नहीं पड़ता है। उसका सपना है कि वो ऑपरेशन करवा के लड़की बन जाए। वहीं उसकी बहन जो खुद भी क्वीर महिला (भिन्न लैंगिक पहचान वाले) है, उसे चिंता है कि कहीं उसका भाई भी उसकी तरह अधूरी जिंदगी ना जाए। जाहु की जिंदगी में तब बदलाव आता है जब गांव वालों को उसके और पलाश के रिश्ते का पता चलता है। लेकिन पलाश इस रिश्ते के वजूद को नकार देता है। अब जाहु को फैसला लेना है कि अपने अस्तित्व को स्वीकारे या जिंदगी भर झूठ के साथ जाए।

Jahnu is a teenager who lives in a remote village on the banks of Brahmaputra river in Assam. The villagers mock him for the femininity that he proudly wears on his sleeves. He dreams of getting an operation done to become a woman. But his sister Jumu has decided to never come out as a queer woman to protect her parent's reputation. She worries that Jahnu may also end up living an unfulfilled life like her's. Jahnu's life takes a drastic turn when his romantic relationship with Palash becomes known to the villagers. When Palash refuses to acknowledge their relationship, Jahnu has to decide whether to continue living a life hiding himself or come out with his 'truth'.

कथासार | Synopsis

लता भगवान खरे (Lata Bhagwan Kare)

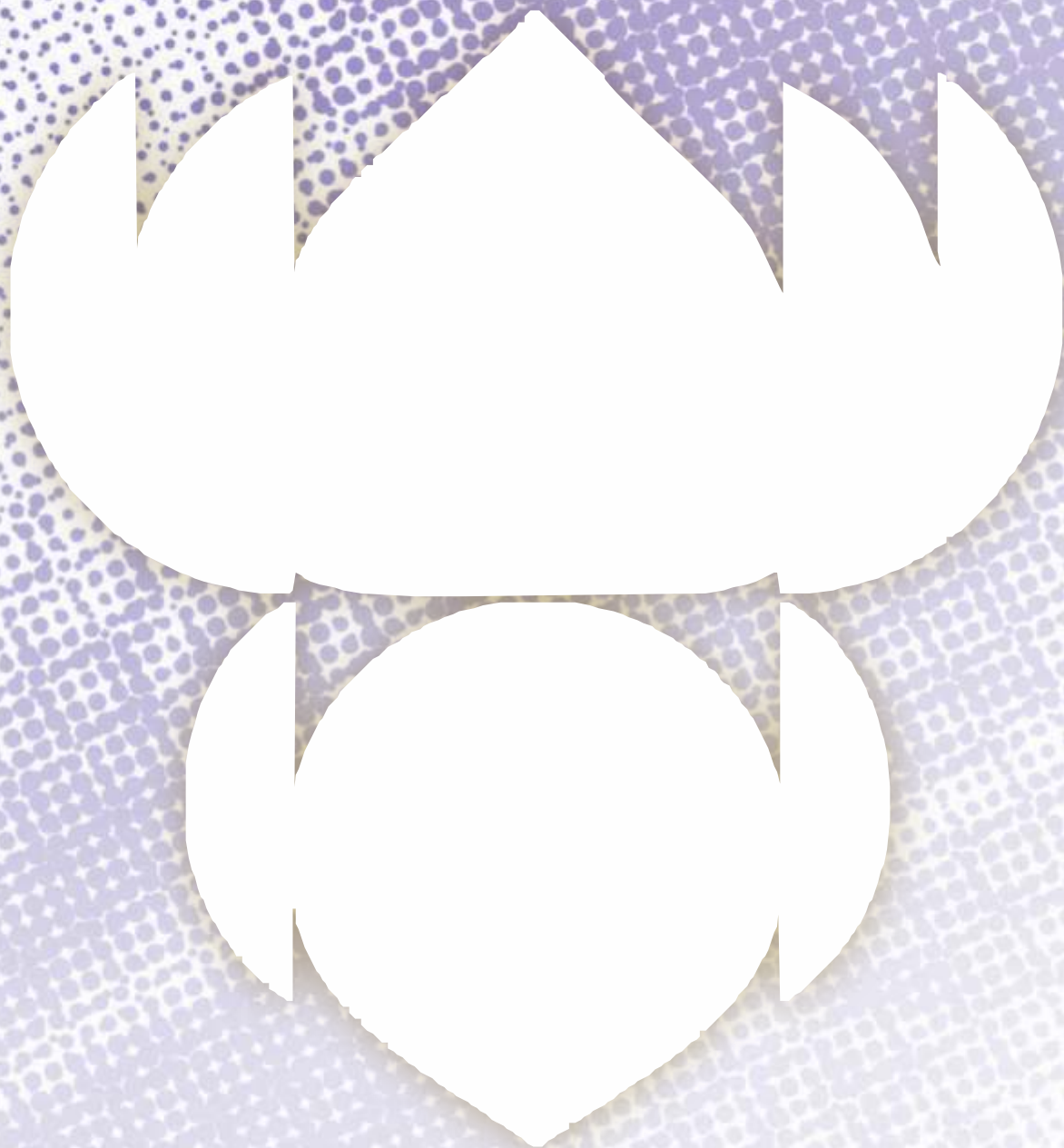
ये फिल्म लता भगवान खरे की जिंदगी पर आधारित है, जिन्होंने 67 साल की उम्र में मैराथन में हिस्सा लिया। इनकी जिंदगी में तब अचानक उथलपुथल मच गई जब उनके पति की तबियत बहुत खराब हो गई। उनके इलाज के लिए लता को 50,000 रूपए की जरूरत थी लेकिन वो इकट्ठा नहीं कर पाई थी। एक दिन उन्हें बारामती में होने वाली मैराथन के बारे में पता चला। उन्होंने इसमें हिस्सा लेने का फैसला लिया, लेकिन कुछ लोगों ने उनके फैसले का मजाक उड़ाया, लता ने उन लोगों की बातों पर ध्यान दिए बगैर अपनी साथी गौरी के साथ प्रशिक्षण जारी रखा, इस तरह मैराथन जीतकर उन्होंने अपने पति की जिंदगी को बचाया था।

The film is based on the life of Lata Bhagwan Kare, who participated in a marathon at the age of sixty five. An unexpected situation arose in her life when her husband's health condition became critical. She needed rupees 50,000 for his treatment but fails to gather the amount. One day, she got to know about a marathon competition in Baramati. She decided to participate in it, but some people laugh at her decision. Lata overlooks the criticism and with the support and training given by co-worker Gauri, she won the marathon and added life to her life partner.

पिकासो (Picasso)

गंधर्व सांतवी कक्षा में पढ़ता है और महाराष्ट्री के दूरदराज के एक कोंकणी गांव में रहता है। उसका चयन एक राष्ट्रीय चित्रकारी प्रतियोगिता में होता है। जिसके विजेता को स्पेन यानी पिकासो की जन्मस्थली जाने का मौका मिलेगा जिससे वो अपने कौशल को और निखार सके। लेकिन प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए फीस की दरकार है, लेकिन बीमार मां और कर्ज में डूबे शराबी पिता के चलते उसका प्रतियोगिता में हिस्सा लेना मुश्किल है। गंधर्व का पिता पांडुरंग कभी बहुत अच्छा मंच अभिनेता हुआ करता था लेकिन उसकी लत तमाम परेशानियों की वजह बन जाती है। क्या पांडुरंग अपने बेटे की मदद के लिए अपनी लत से लड़ाई कर पाएगा

Gandharva, a seventh grade student from a remote Konkan village in Maharashtra, is selected for a national painting competition. The winner gets to travel to Spain - Picasso's birthplace - to hone his skills. But entering the competition requires a fee that his parents cannot afford. With an ailing mother and a father struggling with debt and alcoholism, the chances of him being able to participate look slim. Gandharva's father Pandurang was once an accomplished stage actor, but his addiction now stands in the way of him performing and providing for his family. Will Pandurang be able to fight his demons and help his son?



गैर फ़ीचर फ़िल्में
NON-FEATURE FILMS

67^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2019
NATIONAL FILM AWARDS 2019

35 मि.मि. या बड़े गेज या डिजिटल प्रारूप में बनी किन्तु फ़िल्म प्रारूप अथवा वीडियो/डिजिटल प्रारूप में जारी किसी भी भारतीय भाषा में बनी और केन्द्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा वृत्त-चित्र/न्यूजरील/ गैर-कथाचित्र/लघु कल्पित के रूप में प्रमाणीकृत फ़िल्म गैर फ़ीचर फ़िल्म वर्ग के लिए पात्र है।

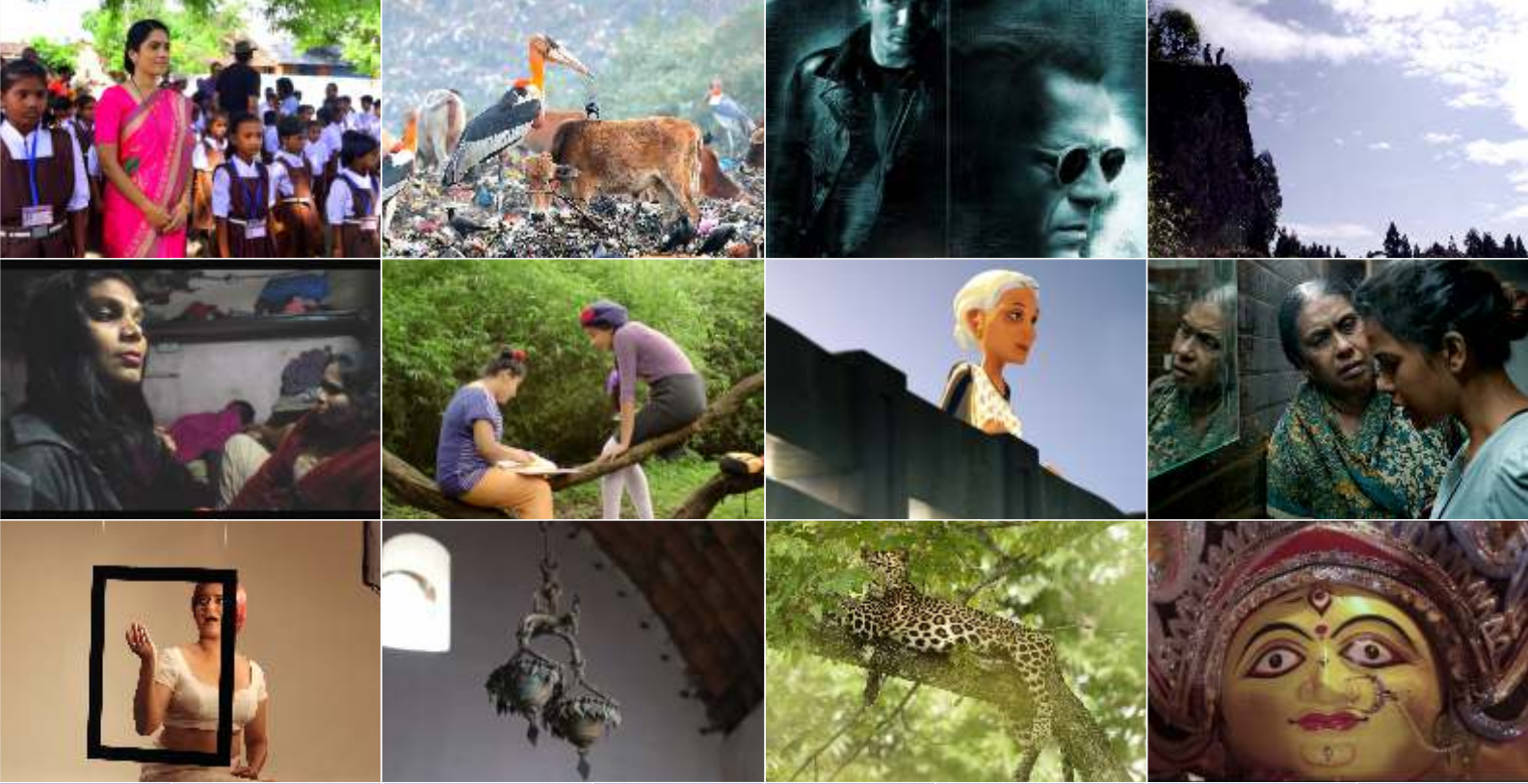
Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on either film format or Video/Digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a Documentary/Newsreel/Non-Fiction/Short Fiction are eligible for non-feature film section.

गैर फीचर फ़िल्में | एक नज़र में



- | एन इंजीनियर्ड ड्रीम (हिन्दी)**
 सर्वोत्तम गैर-फीचर फ़िल्म
AN ENGINEERED DREAM (Hindi)
 Best Non-Feature Film
- | नॉक नॉक नॉक (अंग्रेज़ी / बांग्ला)**
 सर्वोत्तम निर्देशन
KNOCK KNOCK KNOCK
(English/Bengali)
 Best Direction
- | ख़ीसा (मराठी)**
 निर्देशक की सर्वोत्तम पहली गैर फीचर फ़िल्म
KHISA (Marathi)
 Best Debut Non-Feature Film Of A
 Director
- | चरन-अत्व द एसेन्स ऑफ बीइंग ए
 नोमेड (गुजराती)**
 सर्वोत्तम मानवजातीय फ़िल्म
**CHARAN-ATVA THE ESSENCE OF
 BEING A NOMAD (Gujarati)**
 Best Ethnographic Film
- | ऐलीफैंट्स डू रिमेंबर (अंग्रेज़ी)**
 सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म
ELEPHANTS DO REMEMBER
(English)
 Best Biographical Film
- | श्रीक्षेत्र-रू-सहिजता (ओडिया)**
 सर्वोत्तम कला एवं सांस्कृतिक फ़िल्म
SHRIKSHETRA-RU-SAHIJATA (Odia)
 Best Arts And Culture Film
- | द शावर (हिन्दी)**
 सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म
THE SHOWER (Hindi)
 Best Promotional Film
- | द स्टॉक सेवियर्स (हिन्दी)**
 सर्वोत्तम पर्यावरण फ़िल्म
THE STORK SAVIOURS (Hindi)
 Best Environment Film
- | होली राइट्स (हिन्दी)**
 सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म
HOLY RIGHTS (Hindi)
 Best Film On Social Issues
- | लाडली (हिन्दी)**
 सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म
LADLI (Hindi)
 Best Film On Social Issues
- | एप्पल्स एंड ऑरेंजेस (अंग्रेज़ी)**
 सर्वोत्तम शैक्षिक फ़िल्म
APPLES AND ORANGES (English)
 Best Educational Film
- | वाइल्ड कर्नाटक (अंग्रेज़ी)**
 सर्वोत्तम अन्वेषण फ़िल्म

NON-FEATURE FILMS | AT A GLANCE



सर्वोत्तम प्रकथन

WILD KARNATAKA (English)

Best Exploration Film

Best Narration/ Voice Over

| **जक्कल (मराठी)**

सर्वोत्तम खोजी फिल्म

JAKKAL (Marathi)

Best Investigative Film

| **राधा (संगीतमय)**

सर्वोत्तम एनिमेशन फिल्म

सर्वोत्तम ऑडियोग्राफी

RADHA (Musical)

Best Animation Film

Best Audiography

| **स्मॉल स्केल सोसाइटीज (अंग्रेजी)**

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

SMALL SCALE SOCIETIES (English)

Special Jury Award

| **कस्टडी (हिन्दी/अंग्रेजी)**

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म

CUSTODY (Hindi/English)

Best Short Fiction Film

| **ओरु पाथिरा स्वप्नम पोल (मलयालम)**

पारिवारिक मूल्यों पर सर्वोत्तम फिल्म

ORU PAATHIRAA SWAPNAM POLE

(Malayalam)

Best Film On Family Values

| **सोंसी (हिन्दी)**

सर्वोत्तम छायांकन

SONSI (Hindi)

Best Cinematography

| **रहस (हिन्दी)**

सर्वोत्तम ऑन-लोकेशन साउंड रिकॉर्डिस्ट

RAHAS (Hindi)

Best On-Location Sound Recordist

| **शट अप सोना (हिन्दी / अंग्रेजी)**

सर्वोत्तम संपादन

SHUT UP SONA (Hindi/English)

Best Editing

| **क्रांति दर्शी गुरुजी: अहेड ऑफ टाइम्स (हिन्दी)**

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

KRANTI DARSHI GURUJI-AHEAD OF TIMES (Hindi)

Best Music Direction



एन इंजीनियर्ड ड्रीम
सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म

An Engineered Dream
Best Non-Feature Film

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,50,000/-

Hindi | 72 mins | Director and Producer: Hemant Gaba | DOP: Nitesh Kapur, Vedant Sharma, Shakti Pratap Singh, Shilpi Batra
Editor: Saba Rehman

कथासार - भारत में प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग / मेडिकल कॉलेज में दाखिला पाना बेहद ही कठिन काम है, जहां दाखिले की दर 1 फीसद से भी कम है. प्रतियोगिता की तैयारी के लिए पालक अपने किशोर बच्चों को राजस्थान के कोटा के स्कूलों में ठूसते रहते हैं, करीब 2 लाख किशोर यहां के दड़बेनुमा कमरों में रहकर 15-15 घंटे पढ़ाई करने को मजबूर हैं ताकि वे भारत के अब्बल कॉलेज की परीक्षा के लिए तैयार हो सकें. वे ये तैयारी लगातार दो साल और कभी-कभी तीन साल तक करते हैं. जहां 99 फीसद बच्चे असफल हो जाते हैं तो वहां दबाव और भी बढ़ जाता है. कई तो अपनी जिंदगी को खत्म भी कर लेते हैं. ये बच्चे किसी और क्षेत्र में बहुत कमाल कर सकते हैं लेकिन वो अपने उस ख्वाब को एक इंजीनियर्ड ड्रीम के आगे तिलांजलि दे देते हैं. ये फिल्म ऐसे ही चार किशोरों की कोटा की जिंदगी को बताती है.

Synopsis - In India, admission to prestigious engineering/medical colleges is highly competitive with an acceptance rate as low as 1%. Parents send out their teenage children to the hub of cram schools, Kota, in Rajasthan, India. About 200,000 teenagers are forced to live in cubicle-size rooms and study 15 hours a day to prepare for the entrance exam to top colleges. They do this for two consecutive years and sometimes three. When 99% students are destined to fail, the pressure is intense. Many end their lives prematurely. These kids may have excelled in some other field in life but they are sacrificed at the altar of 'An Engineered Dream'. The film follows the life of four such teenagers in Kota.

परिचय : PROFILE

हेमंत गाबा (Hemant Gaba)



फिल्मकार **हेमंत गाबा** पर डॉक्यूमेंट्री और फिक्शन (काल्पनिक) दोनों की तरीको का अच्छा असर है. इनकी डॉक्यूमेंट्री में 'क्रॉसिंग बॉर्डर' (2017), इंटर डॉक क्रियेटिव डॉक्यूमेंट्री मास्टरक्लास, 'सरबिया' (2019) शामिल है. इनकी पहली फिल्म 'शटलकॉक बॉयज' ने खासी सराहना बटोरी थी, इसके बाद इन्होंने लघु फिल्म 'सुपर गर्ल' (2014) बनाई जिसे टिफ किड्स सहित दुनियाभर के कई फिल्म महोत्सवों में प्रदर्शित किया गया था.

Filmmaker **Hemant Gaba** dabbles both in documentaries and fiction. An alumnus of Documentary Campus – Crossing Borders (2017), Inter Doc Creative Documentary Masterclass, Serbia (2019), he made his debut with the much acclaimed 'Shuttlecock Boys' (2011), followed by short film 'SuperGirl' (2014) was screened at TIFF Kids and many other film festivals worldwide.

प्रशस्ति - मध्यमवर्गीय अपेक्षाओं, पेचीदा शिक्षा प्रणाली और अभिभावकों की उम्मीदों पर खरा उतरने का दबाव झेल रहे किशोर-किशोरियों की मनोदशा के बेहद संजीदा चित्रण के लिए सम्मानित

Citation - For an intensely compelling portrayal of middle-class aspirations, a convoluted education methodology and the emotional and psychological pressure on teenage children to fulfill their parent's expectations.



खिसा

निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Khisa
Best Debut Film of a Director

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 75,000/-

2019 | Marathi | 15.31 Mins. | Director: Raj Pritam More | Producer: P P Cine Production, Laal Tappa | DOP: Samarjit Singh
Editor: Santosh Maithani | Cast: Kailash Waghmare, Shruti Madhudeep, Dr. Sheshpal Ganvir, Meenaksi Rathod

कथासार - महाराष्ट्र के छोटे से गांव में एक लड़का अपनी स्कूल की शर्ट में बड़ी सी पॉकेट सिलवाता है. उसमें वो सिक्के, पत्थर, कंचे जैसी अपनी अनमोल चीजें रखता है. उसे अपनी पॉकेट पर गर्व है जो उसे बाकियों से अलग करती है जिनके पास सामान्य सी जेब ही है. यह छोटा बच्चा प्रतीकवाद की राजनीति नहीं समझता जिसे बड़े बखूबी समझते हैं और जल्द ही बच्चे की जेब गांव के बड़ों के बीच एक बहस का मुद्दा बन जाता है. यह फिल्म मासूमियत के खोने और एक छोटे बच्चे के बड़े होने की कहानी है और मौजूदा दौर की विडंबना को भी दिखाती है.

Synopsis - A young boy in a remote village in Maharashtra decides to get a large pocket stitched on his school shirt. He keeps all his precious belongings – petals, coins, marble balls – in it. He is proud of his pocket, but it sets him apart from his peers, whose pockets are not only comparatively smaller but also ordinary. The little boy does not understand the politics of symbolism that adults engage in, and his pocket soon becomes a point of contention amongst elders in the village. The film is a story of the loss of innocence and coming-of-age of the young boy, and ironically symbolic of the times we live in.

परिचय PROFILE

राज प्रीतम मोर (Raj Pritam More)



राज प्रीतम मोरे, भारतीय ललित कला से जुड़े कलाकार हैं. मुंबई के जेजे स्कूल ऑफ आर्ट्स से पढ़े मोरे ने अपने काम के लिए कई सम्मान जीते हैं जिसमें ललित कला अकादमी का 54वें राष्ट्रीय अकादमी सम्मान शामिल है. खीसा का लेखन और निर्देशन दोनों इन्होंने किया है. यह मुंबई में रहते हैं.

Raj Pritam More is an Indian contemporary artist of visual fine art. An alumnus of Sir JJ School of Arts, Mumbai, he has won many honours for his work including the 54th National Academy Award at Lalit Kala Academy. He has produced, written and directed

'Khisā'. He is based in Mumbai.

प्रशस्ति - दिल को छू लेने वाली कहानी के लिए सम्मानित, जो मौजूदा दौर में एक बच्चे की मासूमियत खोने का खाका खींचती है

Citation - Awarded for narrating a heart-wrenching story that depicts the loss of innocence of a child is ironically symbolic of present times.



चरण - अत्व - द एसेंस ऑफ बीइंग ए नोमाड
सर्वश्रेष्ठ नृवंशविज्ञान फ़िल्म
CHARAN-ATVA the Essence of Being a Nomad
Best Ethnographic Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Gujarat | 70 mins | Director: Dinaz Kalwachwala | Producer: Films Division | DOP: Ravji Sondarva | Editor: Dinaz Kalwachwala

कथासार - यह फिल्म भारत की चारागाही जनजाति चारण के सफर को दिखाती है। यह 70 मिनट का वृत्तचित्र, गुजरात में फैले चारणों के हाल को बयां करता है – गिर के जंगल से लेकर अपनी जगह से विस्थापित हो चुके चारण जो बाहर छोटे-छोटे टोले में रह रहे हैं और वो भी जो अहमदाबाद, जूनागढ़, कच्छ, विसावादर, राजकोट, जामनगर, पंचमहल के गांवों और शहरों में रह रहे हैं। यह फिल्म इस जनजाति की मान्यताओं, मिथक, जन-जीवन, कविता, संगीत, इच्छाएं और चिंता को दिखाती है। आज चारण अपने पुरखों के मूल्यों और आधुनिक दुनिया के बीच खड़े हैं।

Synopsis - The film depicts the journey of Charans, a nomadic pastoral tribe found in India. This 70-minute documentary captures the wide spectrum of Charans from all over the state of Gujarat -- from those in the jungles of Gir to the displaced Charans living in hamlets outside their original habitats, to the ones living in villages and towns of Kutch, Junagadh, Visavadar, Rajkot, Jamnagar, Panchmahal, Ahmedabad. The documentary captures the past and present, myths and beliefs, livelihood, poetry, music, aspirations and concerns of the tribe. The Charan of today stands at crossroads between values of their ancestral roots and the modern world.

परिचय

PROFILE

डिनाज कलवचवाला (Dinaz Kalwachwala)



41 साल के सफर में डिनाज कलवचवाला ने सरकारी विभागों के सामाजिक और विकास संचार में बहुत काम किया है और सीरियल, वृत्तचित्र, काल्पनिक

कहानियों के जरिए वंचित वर्ग के लिए काम किया है। 1978 में डिनाज ने अहमदाबाद स्थित एनआईडी से फिल्म निर्माण में स्नातक किया।

In a career span of 41 years, **Dinaz Kalwachwala** has worked extensively in social and development communications with Government agencies/ departments and also with marginalized communities in the form of numerous documentaries, serials, fiction formats. Dinaz graduated from NID, Ahmedabad in 1978, with a specialization in filmmaking.

फिल्म प्रभाग (Films Division)

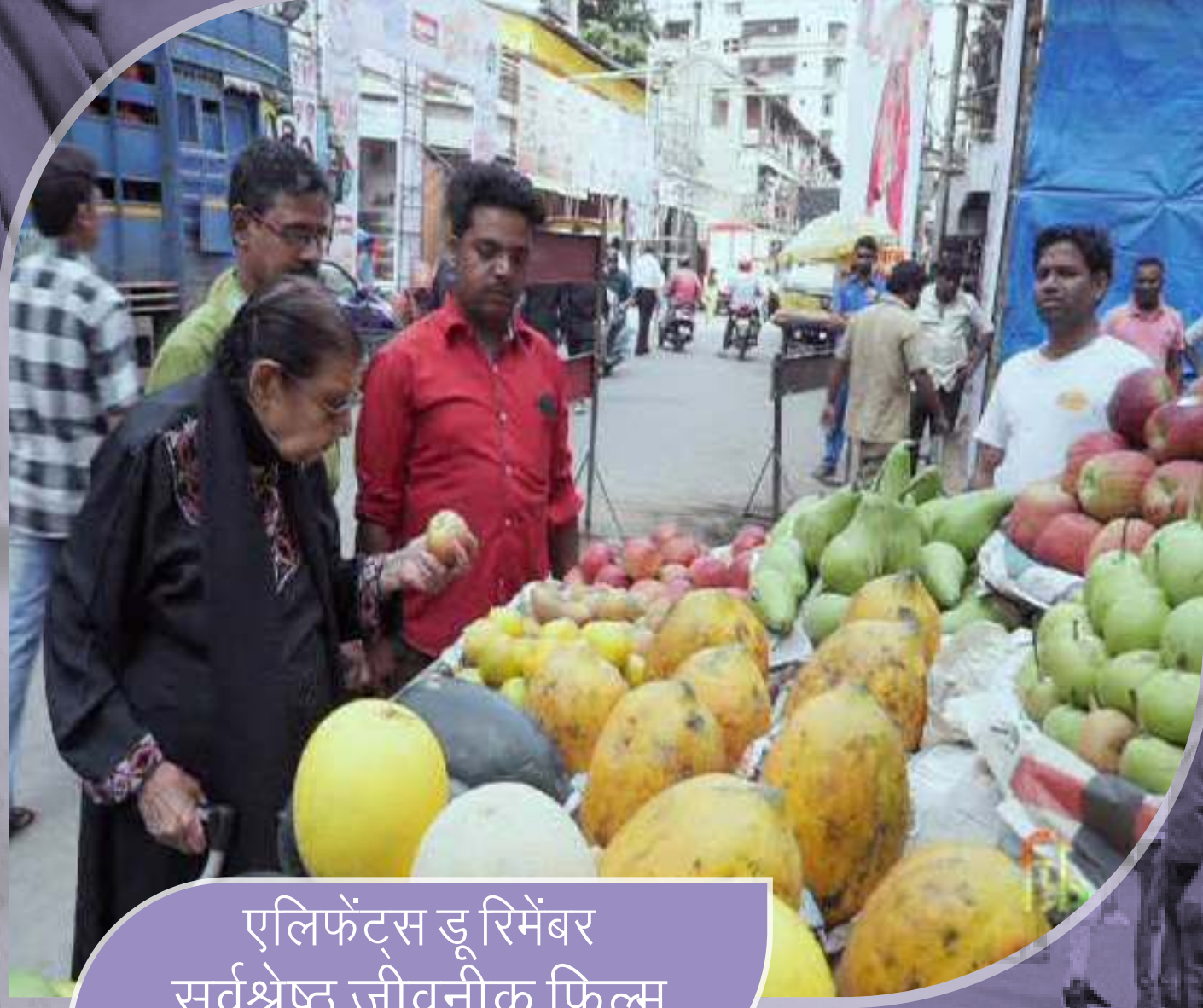


फिल्म प्रभाग की स्थापना 1948 में हुई और यह भारत सरकार की पहली फिल्म निर्माण एवं वितरण इकाई है। तब से लेकर अब तक यह 9000 फिल्मों का निर्माण कर चुकी है।

Films Division was the first state film production and distribution unit established in 1948. Since then, it has recorded India's post-independence history by producing more than 9000 film titles.

प्रशस्ति - एक खानाबदहोश जनजाति की मान्यताएं, रहन-सहन, संगीत, भाषा और उनकी महत्वाकांक्षाओं से जुड़ी शोधपूर्ण और जानकारी से भरपूर रूप-रेखा तैयार करने के लिए सम्मान

Citation - For narrating a heart-wrenching story that depicts the loss of innocence of a child and is ironically symbolic of present times.



एलिफेंट्स डू रिमेंबर
सर्वश्रेष्ठ जीवनीक फ़िल्म
Elephants Do Remember
Best Biographical Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | 38 mins | Director: Swati Pandey, Viplove Rai Bhatia & Manohar Singh Bisht (Shared) | Producer: Films Division | DOP: P Rajendran | Editor: Biswaranjan Pradhan

कथासार - कथासार – यह फिल्म एक रमा खांडवाला की जीवनी है जो कि भारत के सबसे पुराने टूरिस्ट गाइड हैं और राष्ट्रपति सम्मान हासिल कर चुकी हैं. फिलहाल यह मुंबई में अकेले रह रही हैं. यह इंडियन नेशनल आर्मी में अपने क्रांतिकारी दिनों, और नेताजी सुभाष चंद्र बोस और स्वतंत्रता आंदोलन से अपने जुड़ाव को भी याद करती हैं. वह अतीत और वर्तमान को जोड़कर एक विस्मय कर देने वाली तस्वीर पेश करती हैं.

Synopsis - 'Elephants Do Remember' is a biographical montage presenting the enthralling journey of Rama Khandwala's life. Rama is the oldest tourist guide of India and a recipient of the Presidential Award. She presently lives the life of a recluse in Mumbai. She reminisces about her revolutionary youth in the Indian National Army, her connection with 'Netaji' Subhash Chandra Bose and India's Freedom Movement. She paints an intriguing collage of the present with the past.

परिचय PROFILE

स्वाति पांडे, मनोहर सिंह बिष्ट, विप्लव राय भाटिया (Swati Pandey, Manohar Singh Bisht, Manohar Singh Bisht)



स्वाति पांडे फिल्मकार, फिल्म क्यूरेटर और मुंबई अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव की पूर्व निदेशक हैं. एलिफेंट्स डू रिमेंबर – इनकी पहली निर्देशित फिल्म है.

मनोहर सिंह बिष्ट इंजीनियर से निर्देशक बने. इनकी फिल्म – इ सर्च ऑफ फेडिंग कैनवास – ने 2016 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता. इन्होंने दादा साहेब पालके सम्मा विजेता स्वर्गीय वी के मूर्ति और के बालाचंद्र पर जीवनी आधारित फिल्म बनाई.

विप्लव राय भाटिया, 1992 से फिल्म डिविजन के साथ काम कर रही हैं. इन्होंने 30 वृत्तचित्र

और लघु फिल्में बनाई हैं जिसमें द होली गंगा ने 2002 में राष्ट्रीय पुरस्कार जीता.

Swati Pandey is a film curator, filmmaker and former co-festival director of Mumbai International Film Festival. 'Elephants Do Remember' is her directorial debut.

Manohar Singh Bisht is an engineer-turned-director. His film 'In Search of Fading Canvas' won a National Film Award in 2016. He has made biographical films on the Dadasaheb Phalke-Awardees Late VK Murthy and K. Balachander.

Viplove Rai Bhatia has been working with the Films Division since 1992. She has about 30 documentaries and short films to her credit, including 'The Holy Ganga' which won a National Award in 2002.

फिल्म प्रभाग (Films Division)

फिल्म प्रभाग की स्थापना 1948 में हुई और यह भारत सरकार की पहली फिल्म निर्माण एवं वितरण इकाई है. तब से लेकर अब तक यह 9000 फिल्मों का निर्माण कर चुकी है. |

Films Division was the first state film production and distribution unit established in 1948. Since then, it has recorded India's post-independence history by producing more than 9000 film titles.



प्रशस्ति – भारतीय सेना के एक पूर्व सैनिक के देश प्रेम की ताकत का चित्रण करने के लिए सम्मानित

Citation - For portraying the power of a patriotic spirit of an ex-soldier of the Indian national Army.



श्री क्षेत्र रु सहिजता
सर्वश्रेष्ठ कला | सांस्कृतिक फिल्म

SHRIKSHETRA RU SAHIJATA
Best Arts/Cultural Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Odia | 20 mins | Director and Producer: Ashutosh Pattnaik | DOP: Soumya Mohanty | Editor: Biswajit Paital

कथासार - सदियों पुरानी परंपरा को जीवित रखते हुए ओडिशा के श्रीक्षेत्र में सही जाता का त्यौहार मनाया जाता है जो आध्यात्म और कला प्रदर्शन का मेल है। यहां कलाकार रामायण के अलग अलग अध्यायों को अपने तरीके से दिखाते हैं। 12वीं सदी का यह त्यौहार लोक नाट्य की तरह ही है, बस इसमें जरा धार्मिकता का तड़का लगा है। इसे पुरी की सात अलग अलग गलियों से आने वाले जग घरा के कलाकारों द्वारा निभाया जाता है। सांस्कृतिक वृत्तचित्र – श्रीक्षेत्र रू सहीजाता – श्रीक्षेत्र से उसके सांस्कृतिक मेले – सही जाता – तक का सफर दिखाता है।

Synopsis - Keeping a centuries-old tradition alive, Shrikshetra in Odisha hosts the festival of Sahi Jata that blends spirituality and performing arts. Here, artists depict different episodes of the Ramayan. This 12th century festival is similar to folk theatre, but with a religious touch. It is enacted by Jaga Ghara (Gymnasium) artists belonging to seven different bylanes (Sahis) of Puri. Cultural documentary 'Shrikshetra Ru Sahijata' captures this journey from the place of 'Shrikshetra' to its culture fair 'Sahi Jata'.

परिचय PROFILE



आशुतोष पाठक (Ashutosh Pattnaik)

आशुतोष पाठक एक स्वतंत्र फिल्मकार और प्रशिक्षित छायाकार हैं जो ओडिशा के बिजु पटनायक फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से आते हैं। इनके लोकप्रिय काम में संबलपुरी बुनकर वृत्तचित्र, मीरा, तारा कैन, आय हैव ड्रीम और संजोग है जिसे पनामा, इटली, अमेरिका और तुर्की जैसे देशों में दिखाया और सम्मानित किया गया। बतौर निर्देशक, निर्माता और सूत्रधार – श्रीक्षेत्र रू सहीजाता – इनकी पहली फिल्म है। इनके वृत्तचित्र ओडिया संस्कृति और सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित रहती है।

Ashutosh Pattnaik is an independent filmmaker and a trained cinematographer from the Biju Pattanaik Film and Television Institute of Odisha (BPFTIO). His popular works include the Sambalpur Weavers documentary, 'Meera', 'Tara Can', 'I have Dream', and 'Sanjog' which have been screened and awarded in different countries like Panama, Italy, the USA, and Turkey. 'Shrikshetra Ru Sahijata' is his debut work as director, producer, and narrator. His shorts and documentaries focus on social issues and Odia culture.

प्रशस्ति – पारंपरिक लोक नाट्य के आध्यात्म के साथ समागम का रंग-बिरंगा चित्रण जो दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दे

Citation - For infusing the traditional folk theatre with a blend of spirituality in a colorful portrayal that leaves the viewers spellbound.



द शॉवर
सर्वश्रेष्ठ प्रचार फिल्म

The Shower
Best Promotional Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Hindi | 02 mins | Director: Bauddhayan Mukherji | Producer: Little Lamb Films Pvt. Ltd. | DOP: Sejal Shah | Editor: Arghyakamal Mitra

कथासार - 'जल बचाओ' इस मुद्दे पर बनी ये फिल्म, भारत में पानी को लेकर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में बंटवारे की असमानता भी सामने लाती है। एक दिन कुछ गांव वालों को राजस्थान की एक बंजर जमीन पर शावर लगा कमरा नजर आता है। जैसे ही गांव में ये बात फैलती है, गांव के सभी लोग पीने और पानी ले जाने के लिए इस कमरे के सामने इकट्ठे हो जाते हैं। फिल्म पानी को देखकर गांव के लोगों की खुशी दिखाते हुए चतुराई से एक पार्श्व आवाज सुनाती है, 'जहां एक और पूरे गांव की इससे प्यास बुझ जाती है, वहीं एक शहरी आदमी के नहाने भर के लिए ये काफी नहीं है।' ये फिल्म – शहरी जीवन में हम रोजाना शावर के दौरान कितना पानी बर्बाद करते हैं – जैसे अहम सवाल खड़े करती है।

Synopsis - 'Save water' is the theme of this film which also highlights the rural-urban divide and water inequality in India. One day some villagers discover a shower cubicle on a deserted barren land of Rajasthan. The word spreads rapidly and villagers gather in front of the cubicle to drink and store water. The film throughout captures the mere joy among the villagers, ably backed by the voiceover saying, "While the entire village fulfilled its thirst, an urban man's shower is still not over". The film makes us question the amount of water we waste in our urban life on a daily basis while we go in for a "quick" shower.

परिचय

बुद्धायन मुखर्जी (Buddhayan Mukherji)



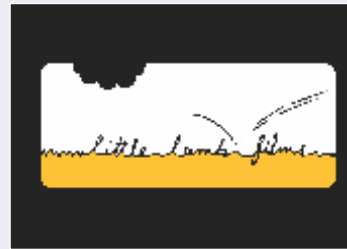
बुद्धायन मुखर्जी प्रतिष्ठित विज्ञापन फिल्मकार हैं। बुद्धायन का लिटिल लैम्ब फिल्मस प्रोडक्शन हाउस है। जो 2007 में शुरू हुआ था। कैन्स लाइन्स के कई बार के विजेता बुद्धायन ने 600 से ज्यादा कमर्शियल का निर्माण

और निर्देशन किया है। लिटिल लैम्ब फिल्मस बैनर के तले 'तीनकाहों' और 'द वायलन प्लेयर' का निर्माण किया है। इन फिल्मों का फिल्म महोत्सवों में 85 बार से ज्यादा बार प्रदर्शन किया जा चुका है।

A multiple Cannes Lion award-winner, **Buddhayan 'Buddy' Mukherji** is a leading adman and filmmaker. He has directed and produced two acclaimed feature films – 'Teenakahon' (2014, Bengali) and 'The Violin Player' (2016, Hindi) – and over 600 commercials for renowned brands. He co-founded Little Lamb Films with wife Monalisa in 2007. He is currently producing his third feature and working on his next two directorial ventures.

PROFILE

लिटिल लैम्ब फिल्म (Little Lamb Films)



बुद्धायन और मोनालिसा मुखर्जी ने मिलकर 2007 में लिटिल लैम्ब फिल्म की स्थापना की थी। पिछले 13 सालों में इन्होंने फीचर फिल्म, डॉक्यूमेंट्री, लंबी अवधि की डिजिटल फिल्म और करीब 500 से ज्यादा

टीवी कमर्शियल तैयार किए हैं।

Founded by the husband-wife duo of Buddhayan and Monalisa Mukherji, **Little Lamb Films** came to life in 2007. Over the last 13 years it has produced feature films, documentaries, long format digital films and over 500 TVCs and PSAs. It ventured into feature films in 2013.

प्रशस्ति – उपदेश देने के लहजे से अलग ग्रामीण और शहरी आबादी के बीच पानी के असंतुलित इस्तेमाल के मुद्दे पर एक नायाब चित्रण

Citation - For innovatively underscoring imbalance and usage of water between urban and rural populous without sermonising.



द स्टॉक सेवियर्स
सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फ़िल्म

The Stork Saviours
Best Environment Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | 26 mins | Director: Ajay Bedi & Vijay Bedi | Producer: Rajiv Mehrotra, PSBT | DOP: Vijay Bedi and Ajay Bedi | Editor: Vijay Bedi and Ajay Bedi

कथासार - अब सिर्फ 1200 के करीब ग्रेटर गरुण सारस बचे हुए हैं. ये संख्या रॉयल बंगाल टाइगर से भी कम है. फिल्म संरक्षक जीवविज्ञानी पूर्णिमा देवी बर्मन के इस पक्षी को जिसे असम में स्थानीय भाषा में हरगिला कहते हैं, उसे बचाने के प्रयासों को चित्रित करती है. फिल्म बताती है कि किस तरह उन्होंने एक समुदाय को शामिल करके दस हजार औरतों की एक हरगिला सेना तैयार की है, जिससे इस विलुप्त होते पक्षी को बचाया जा सके.

Synopsis - There are only around 1200 Greater Adjutant Stork left in the wild; that's even less than the iconic Royal Bengal tiger! The film documents the efforts of conservation biologist Purnima Devi Burman to save the bird, locally known as Hargila in Assam, India. It shows how she involved community, forming the Hargila Army of more than 10,000 women, to save these endangered birds from extinction.

परिचय

अजय बेदी, विजय बेदी (Ajay Bedi & Vijay Bedi)



अजय बेदी, विजय बेदी वन्यजीव फिल्मकार और परिवार की तीसरी पीढ़ी हैं. और ये ग्रीन ऑस्कर जीतने वाले सबसे युवा एशियन हैं. इससे पहले उन्हें फिल्म सीक्रेट लाइफ ऑफ फ्रॉग्स के

लिए राष्ट्रीय पुरस्कार सहित कई सम्मान हासिल हो चुके हैं. |

Ajay Bedi and Vijay Bedi are the third-generation wildlife filmmakers and photographers and the youngest Asians to win the Wildscreen Awards (Green Oscar) for their films 'The Policing Langur' and 'Cherub of the Mist'. They have also won a nomination at the Emmy® Academy of Television Arts & Sciences. They have earlier won two National Awards for their film 'The Secret Life of Frogs'.

PROFILE

राजीव मल्होत्रा (Rajiv Mehrotra)



राजीव मल्होत्रा एक स्वतंत्र वृत्तचित्र निर्देशक और निर्माता हैं. अपने 31 सालों के सफर में इन्हें 32 बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है. इन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अनेक

सम्मान हासिल हो चुके हैं.

Rajiv Mehrotra is an independent documentary film director and producer. He has won 32 National Film Awards in 31 years. His films have won numerous honours and awards at hundreds of film festival screenings around the world. He has twice addressed plenary sessions at the World Economic Forum at Davos and was nominated by them as a Global Leader for Tomorrow.

प्रशस्ति - चौंकाने वाले दृश्य के साथ फिल्म एक धर्मयुद्ध जिसमें समुदाय की महिलाएं भी शामिल हैं उसके जरिये लुप्त होते जा रहे एक पक्षी के संरक्षण की को बढ़ावा देती है.

Citation - With stunning visuals the film promotes conservation of the critically endangered birds through an ongoing crusade involving community women.



दारुल उलूम निस्वान
औरतों के क़ज़ात का इदारा
भारतीय मुस्लिम महिला आन्दोलन
384 अप्रैल 2017



होली राइट्स
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Holy Rights
Best Film on Social Issues

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Hindi | 53 mins | Director: Farha Khatun | Producer: Priyanka Pradeep More | DOP: Debalina & Priyanka Biswas | Editor: Sankhajit Biswas

कथासार - साफिया, एक अत्यंत धार्मिक महिला, एक कार्यक्रम में शामिल होती है जिसमें महिलाओं को काजी (मुस्लिम पुरोहित जो पर्सनल लॉ को प्रभाव में लाने और उसकी व्याख्या करते हैं) बनने का प्रशिक्षण दिया जाता है. जो पारंपरिक तौर पर पुरुषों के लिए संरक्षित है. फिल्म एक महिला के संघर्षों को बयान करती है जब वो उस क्षेत्र में दखल देती है जिससे वो पूरी तरह अपरिचित है, और जब महिला पहले से चले आ रही बातों में बदलाव लाने की कोशिश करती है तो किस प्रकार तनाव पैदा होता है. फिल्म तीन तलाक आंदोलन, मुस्लिम महिलाओं के समुदाय के भीतर और बाहर उनकी आवाज को उनका भला चाहने की आड़ में दबाया जाता है ,उसे भी दर्शाती है.

Synopsis - Safia, a deeply religious Muslim woman, joins a program that trains women as Qazis, (Muslim clerics who interpret and administer the personal law), which is traditionally a male preserve. The film documents her journey as she struggles and negotiates through hitherto uncharted territory, exploring the tensions that arise when women try to change the status quo. The film also documents the movement against triple talaq, Muslim women's struggles to break free of patronising voices within and outside the community.

परिचय

फरहा खातून (Farha Khatun)



फरहा खातून कई डॉक्यूमेंट्री फिल्म, लघु फिल्म, और फीचर फिल्म का संपादन कर चुकी हैं. इनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म 'आई एम बोनी' (2016) एक ट्रांसजेंडर फुटबाल खिलाड़ी की जिंदगी पर बनी डॉक्यूमेंट्री है, जो सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय अवार्ड जीत चुकी है. वे कई फिल्म निर्माण वर्कशॉप में सलाहकार भी रह चुकी हैं.

Farha Khatun has edited several documentary films, short fiction and also worked on feature films. Her directorial debut film 'I am Bonnie' (2016), a documentary on life of a transgender footballer, won a National Award (Best Film on Social Issues). She has also been a mentor in several filmmaking workshops.

PROFILE

प्रियंका मोरे (Priyanka More)



प्रियंका मोरे मोजेइक की सह-संस्थापक हैं और होली राइट्स की निर्माता हैं. वर्तमान में वह दो फीचर फिल्म 'मारा' (पोस्ट प्रोडक्शन में) का निर्माण कर रही हैं. और एक बड़ी डॉक्यूमेंट्री 'आई एम नॉट होम' (प्रोडक्शन में) का निर्माण कर रही हैं. वह पिछले 8 सालों से फिल्म उद्योग से जुड़ी हुई हैं और कई लघु फिल्मों को निर्माण कर चुकी हैं.

Priyanka More is a co-founder of Mosaic in Films and producer of documentary 'Holy Rights'. She is currently producing two feature films 'MARA' (post production stage) and 'Untitled' (production stage) and a feature-length documentary 'I am not Home' (production stage). She has been working in the film industry for over eight years and has produced several short fictions.

प्रशस्ति - समाज में महिलाओं के दमन के विभिन्न पहलुओं और हमारी अंतरात्मा पर उसके प्रभाव की कहानी

Citation - For a narrative that encompasses multiple aspects of women's subjugation in a section of our society and those appeals to our conscience.



लाडली
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म
Ladli
Best Film on Social Issues

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Hindi | 40 mins | Director and Producer: Sudipta Kundu | DOP: Sudipta Kundu | Editor: Rajdip Mukherjee

कथासार - लाड़ली सामान्य जिंदगी के लिए तरसती लड़की की कहानी है, जिसकी चाहत एक ऐसे साथी की है जो उसके शरीर के साथ उसकी आत्मा को भी स्वीकार करे. डॉक्यूमेंट्री लाड़ली के दर्द को बयान करती है जो अपनी शारीरिक विषमताओं से जूझ रही है साथ ही समाज के उस रवैये का सामना भी कर रही है जो उसके नारीत्व पर सवाल खड़ा करता रहता है. उसकी जिंदगी सामाजिक स्वीकृति और दुनिया के मायने तलाशती एक भूख बन कर रह गई.लेकिन उसकी प्रयास अपशब्दों और निष्ठुरता का सामना करते हैं. किसी भी मदद के बगैर, समाज का रूखा और निष्ठुर रवैया उसकी लड़ाई के लिए उसे और सख्त बना देता है.

Synopsis - Ladli yearns for a normal life and a companion who can accept her soul along with her body. The documentary captures the pain of Ladli who is fighting against biological odds of her body as well as the attitude of society which questions her 'womanhood'. Her life has become a quest for a semblance of meaning in the world, and for social acceptance. But her efforts are met with harshness and unkind words. In the absence of any support, the harshness that comes from society becomes even harder for her to fight.

परिचय : PROFILE



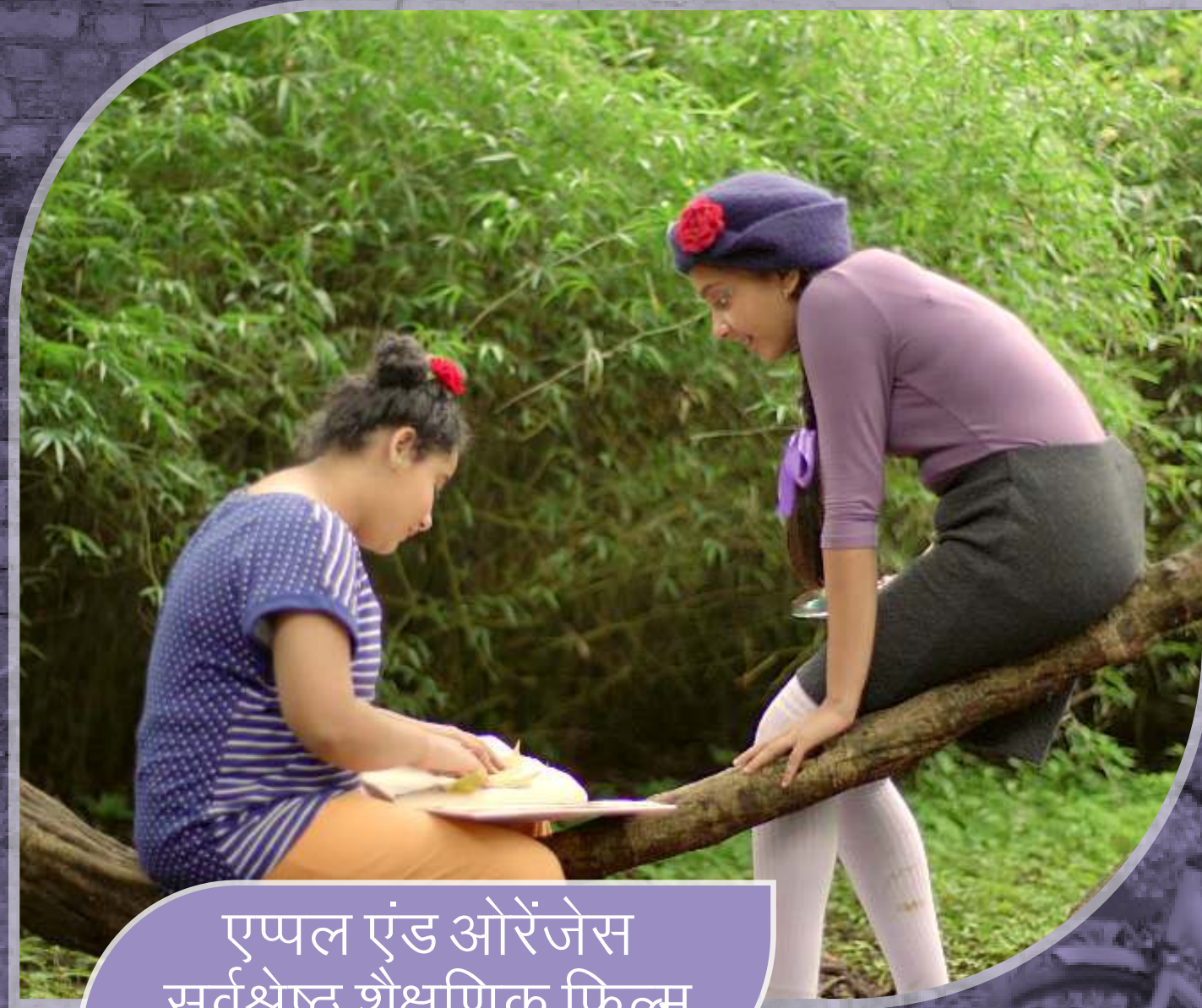
सुदीप्ता कुंडु (Sudipta Kundu)

सुदीप्ता कुंडु एक स्वतंत्र फिल्मकार हैं. लाड़ली बतौर निर्माता निर्देशक उनका पहला प्रोजेक्ट है. उनकी अन्य लघु फिल्मों में 'रिटर्न ऑफ मिलियन्स स्माइल्स'(सह-निर्देशक और सिनेमेटोग्राफर), 'टेक्सी टू द मून' (सिनेमेटोग्राफर), 'वर्शिप ऑफ बाउल' (आने वाली फिल्म) और 'द लास्ट वाइल्ड फ्लॉवर ऑन द अर्थ' (लघु एनिमेशन) शामिल हैं.

Sudipta Kundu is an independent filmmaker. 'Ladli' is his first solo project as a producer and director. His other shorts include 'Return of Millions Smiles' (co-director and cinematographer), 'Taxi To The Moon' (cinematographer), 'Worship of Baul' (upcoming), and 'The Last Wild Flower on The Earth' (short animation fiction).

प्रशस्ति - एक फिल्म जो बेहद संवेदनशील तरीके से शारीरिक चुनौतियां झेल रही एक युवती के संघर्ष और दर्द को और उसकी लैंगिकता के प्रति समाज के रवैये को दिखाती है

Citation - The film sensitively portrays the struggle and pain of a young woman who is fighting against biological odds and the attitude of society which questions her sexuality and gender.



एप्पल एंड ओरेंजेस
सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फ़िल्म

Apples and Oranges
Best Educational Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | English | 23 mins | Director: Rukshana Tabassum | Producer: LXL Ideas Private Limited | DOP: Shreya Gupta | Editor: Paramita Ghosh | Cast: Adria Cardoza, Vrinda. N. Duvani

कथासार - फिल्म एक काल्पनिक देश फ्रूटिस्तान की कहानी है, जहाँ के लोग मतभेदों के चलते बंटे हुए हैं। यहाँ पर जो लोग सेब खाते हैं उन्हें सेबी, और जो संतरे खाते हैं वो संतरी हैं, दोनों तरफ के लोग कभी भी एक साथ नहीं आते हैं। ट्यूलिप और डैजी दोनों इस मतभेद से अंजान एक दूसरे के दोस्त बन जाते हैं। कालांतर में जब उन्हें पता चलता है कि उनमें से एक सेबी और दूसरा संतरी है तो वो एक दूसरे से बात बंद कर देते हैं। बाद में उन्हें अहसास होता है कि तमाम अंतर होने के बावजूद वो एक दूसरे को दोस्त हो सकते हैं।

Synopsis - The film depicts a fantastical country of Fruitistan, where the people are divided over their differences. There are people who eat apples (the 'Applers') and those who eat oranges (the 'Orangees'), and both sides don't get along. In this very land, Tulip and Daisy, ignorant of their differences, become friends. However, they stop being friends with each other when they come to know that one of them is an 'Appler' and the other an 'Orangee'. Later, they come to realise that they are quite different from each other and can be friends despite their 'differences'.

परिचय

रुखसाना तबस्सुम (Rukshana Tabassum)



रुखसाना तबस्सुम एक फिल्मकार, चित्रकार और प्रशिक्षित शास्त्रीय नृतक हैं, वे पूर्व एफटीआईआई छात्र हैं। इनकी लघु फिल्म 'द केक स्टोरी' 2018 में राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड (विशेष उल्लेख) जीत चुकी है। लघु फिल्म 'अधारोत्तर' और 'मिशन संडे' कई फिल्म महोत्सवों की यात्रा कर चुकी है। वे कई ब्रांड के लिए डिजिटल विज्ञापन भी बना चुकी हैं।

Rukshana Tabassum is a filmmaker, painter and trained classical dancer. A FTII Pune alumnus, her short film 'The Cake Story' won a National Film Awards (Special Mention) in 2018. Her short films 'Adharottar and 'Mission Sunday' have travelled to many film festivals in India and abroad. She also has shot digital ads for many prestigious brands.

PROFILE

एलएक्सएल आईडियाज (LXL Ideas)



एलएक्सएल आईडियाज, पूर्व में एड्यूमीडिया की कई फिल्मों ने सम्मान हासिल किए हैं, ये बड़े स्तर पर असर डालने वाले कार्यक्रम आयोजित करते हैं। प्रामाणिक लेखन का प्रकाशन और शोध एवं

प्रशिक्षण का काम करते हैं।

स्कूल सिनेमा – फिल्मों पर आधारित मोड्यूल है जो खेल खेल में जिंदगी के सबक सिखाने का काम करते हैं। ये अभी तक 130 से ज्यादा फिल्मों बना चुके हैं, जिनमें 6 राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड हासिल कर चुकी हैं।

LXL Ideas, formerly EduMedia, make award-winning films, organise large-impact events, publish authoritative writing and deliver holistic research & training.

School Cinema is a film-based module that makes learning lessons of life an entertaining experience. It has made over 130 films, and won 6 National Film Awards.

प्रशस्ति – उद्धरण – हास्य के पुट के साथ दो किशोरियों के बीच के टकराव और दोस्ती को रूपकों के जरिए दिखाया गया है

Citation - The metaphorical narrative of conflict and friendship between two teenage girls is brought out with a touch of humour.



वाइल्ड कर्नाटक
सर्वश्रेष्ठ अन्वेषण फ़िल्म

Wild Karnataka
Best Exploration Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | English | 53 mins | Director: Amoghavarsha JS, Kalyan Varma, Sarath Champati & Vijaya Mohan Raj | Producer: Amoghavarsha JS | DOP: Amoghavarsha JS and Kalyan Varma

कथासार - सर डेविड एटनबोरो की करिश्माई आवाज और ग्रेमी अवार्ड विजेता रिकी केज का मौलिक संगीत दोनों मिलकर जब भारत के जंगलों और वन्य जीवन की शानदार विविधता का प्रदर्शन करते हैं तो बनती है 'वाइल्ड कर्नाटक'. 4 के विजुअल के जरिए फिल्म कर्नाटक के विभिन्न भू भागों की यात्रा करती है और रेगिस्तान से पहाड़ों तक, जंगलों से समुद्र में होती हुई वन्य जीवों की जिंदगी और मौसम के साथ उनमें बदलावों में झांकती है. फिल्म में ऊदबिलाव का पीछा करता बाघ, शिकार करता भारतीय तेंदुआ और नाचते हुए मेंढक, हाथियों और बाघों के ड्रोन फुटेज— ये सभी मिलकर देश के प्राकृतिक इतिहास का एक बेहतरीन नमूना पेश करते हैं.

Synopsis - Paired with Sir David Attenborough's iconic narration and Grammy Award-winner Ricky Kej's original music, 'Wild Karnataka' is a showcase of the tremendous diversity of India's forests and wildlife. A treat to the senses with its 4K visuals, it travels through diverse terrains in Karnataka – from mountains to deserts, jungles to oceans following the lives of wild animals as their fortunes change across the seasons. From otters chasing tigers to an Indian leopard hunt and dancing frogs to drone footage of elephants and tigers – the film provides an exceptional insight into the country's natural history.

परिचय PROFILE

विजय मोहन राज, सरथ चंपाती, कल्याण वर्मा, अमोघवर्षा (Vijay Mohan Raj, Sarath Champati, Kalyan Varma, Amoghavarsha)



विजय मोहन राज, भारतीय वन सेवा अधिकारी हैं जिन्हें कर्नाटक के जंगलों और वन्यजीवन का सघन ज्ञान है.

सरथ चंपाती प्रकृतिवादी हैं जिन्हें भारत सहित दुनिया के सातों महाद्वीपों में वन्यजीवन की यात्रा का अच्छा खासा अनुभव है

कल्याण वर्मा एमा अवार्ड के लिए नामित फिल्मकार और छायाकार हैं. अपने 15 वर्षों के अनुभव में वे 20 से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय वन्यजीवन

फिल्मों के लिए काम कर चुके हैं.

अमोघवर्षा जे एस, अवार्ड विजेता फिल्मकार और वन्यजीवन छायाकार हैं. इनका मौसम परिवर्तन पर किया गया काम यूनाइटेड नेशन क्लाइमेट चेंज कॉन्फ्रेंस और यूएन जनरल असेंबली में प्रदर्शित किया जा चुका है.

Vijay Mohan Raj, an Indian Forest Service officer, has extensive knowledge about Karnataka's forests and wildlife. He understands the nuances of working with teams documenting nature.

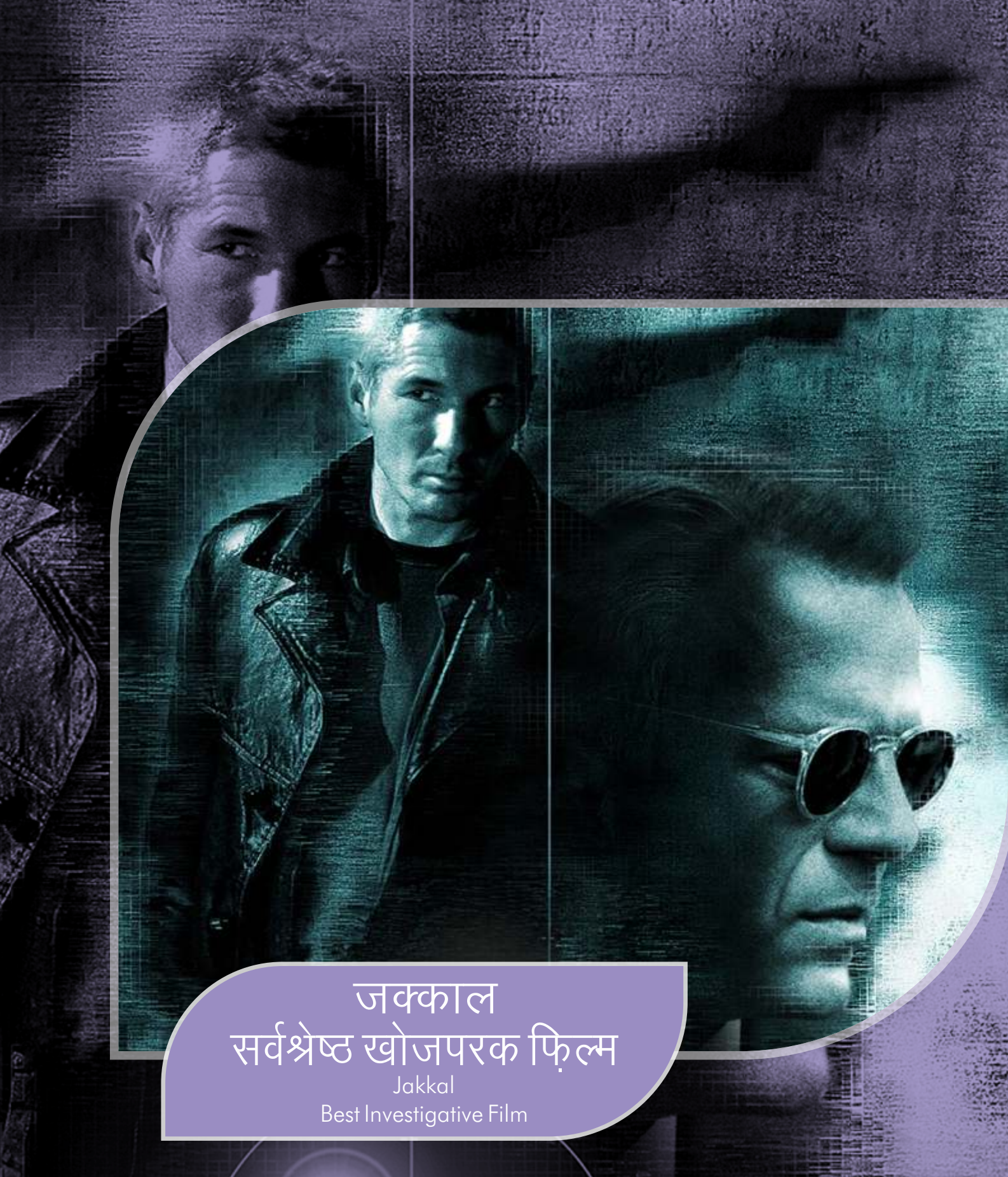
Sarath Champati is a Naturalist with rich experience of travelling to wildlife habitats across India and all the seven continents of the world.

Kalyan Varma is an Emmy-nominated wildlife filmmaker and photographer. In a career spanning 15 years, he has worked in over 20 international wildlife films.

Amoghavarsha JS is an award-winning filmmaker and wildlife photographer. His work on climate change has been showcased in the United Nations Climate Change Conference and also at the UN General Assembly (New York).

प्रशस्ति – दृश्य और सिनेमाई अंदाज में दिखाने के लिए सम्मानित वन्य-जीवन और पशुओं के व्यवहार को बेहद शानदार

Citation - Awarded for breath-taking visuals and other cinematic elements that takes viewers on a stunning and insightful journey of wildlife and animal behaviour.



जककाल
सर्वश्रेष्ठ खोजपरक फ़िल्म
Jakkal
Best Investigative Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | Marathi | 71 mins | Director: Vivek Wagh | Producer: Neon Reel Creation | DOP: Atharva Wagh | Editor: Mayur Hardas

कथासार - 40 साल बीत जाने के बाद भी पुणे के लोगों के जहन में 1976-77 का जोशी-अभ्यंकर श्रंखला हत्याएं एक भयानक यादों की तरह बसे हुए हैं. इस मामले में शहर के 10 मासूम लोगों की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी, जिसके लिए स्थानीय कॉलेज के चार लड़कों – राजेन्द्र जक्काल, दिलीप सुतार, शांताराम जगताप और मुनव्वर हारुन शाह को गिरफ्तार किया गया था. इन्हें इस इस वीभत्स अपराध के लिए 1983 में फांसी की सजा दी गई थी. इनका नेता जक्काल एक बेहतरीन फोटोग्राफर था. फिर आखिर वो हत्यारा क्यों बना ? ये डॉक्यूमेंट्री इस पूरे आपराधिक मामले की पड़ताल करती है— और जांच से लेकर मौत की सजा तक हर पहलू का आकलन करती है. और जक्काल के कलाकार से हत्यारा बनने की पूरी कहानी की जांच, कानून और मनोविज्ञान को उकेरती है.

Synopsis - The horrific memories of the Joshi-Abhyankar serial murders in 1976-77 haunt the people of Pune even after 40 years. The brutal killings of 10 innocent people in the city were committed for by four boys - Rajendra Jakkal, Dilip Sutar, Shantaram Jagtap and Munawar Harun Shah - from a local college of arts. They were hanged for their crime in 1983. Their leader Jakkal reportedly was a brilliant photographer. Why did he turn into a murderer? This documentary analyses the entire criminal case – from investigation to death sentence; its investigation, the law and the psychic of Jakkal - from an artist to murderer.

परिचय

विवेक वाघ (Vivek Wagh)



विवेक वाघ पिछले 10 सालों से मराठी फिल्म उद्योग में बतौर निर्माता निर्देशक काम कर रहे हैं. मराठी रंगमंच में बतौर निर्माता-निर्देशक और व्यवसायी से इन्होंने 2007 में फिल्मों की ओर रुख किया, इस दौरान बतौर एक्जिक्यूटिव प्रोड्यूसर कई मराठी फिल्म जिसमें 'फंड्री' 'चेकमेट' 'रिंगा रिंगा' 'शाला' शामिल हैं. 2014 में 'सिद्धांत' के साथ इन्होंने निर्देशन में कदम रखा.

Vivek Wagh is a producer-director in Marathi film industry for past 10 years. After venturing into business and Marathi theatre as director-producer, he started his film journey in 2007 as an Executive Producer for many Marathi films including 'Fandry', 'Checkmate', 'Ringa Ringa', and 'Shala'. In 2014, he made his directorial debut with 'Siddhant'.

PROFILE

नियो रील क्रियेशन (Neon Reel Creation)



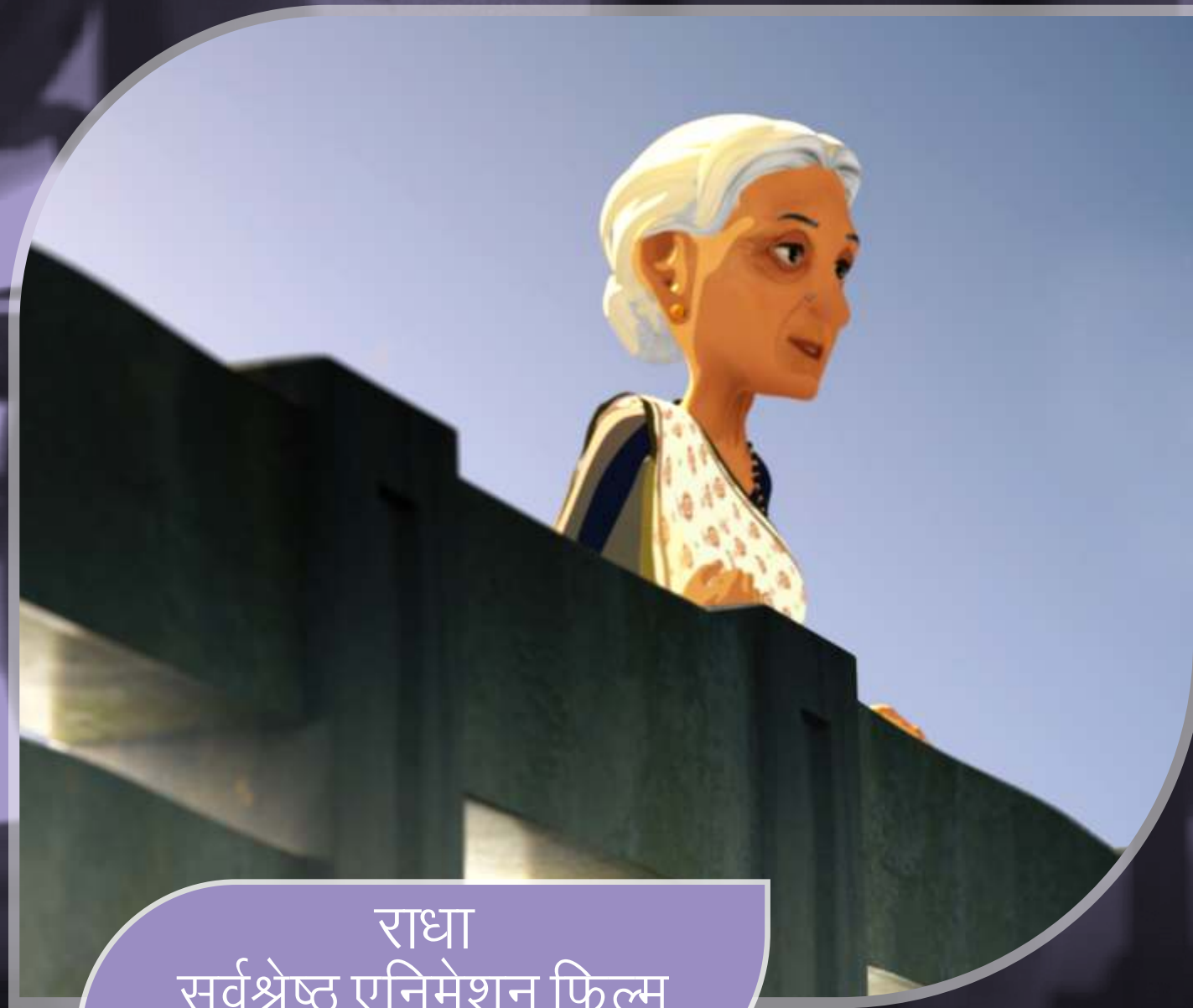
नियो रील क्रियेशन पुणे की प्रोडक्शन कंपनी है। इसकी शुरुआत 2017 में हुई। इनका उद्देश्य ऐसी फिल्मों का निर्माण रहा है जो असल घटनाओं से प्रेरित होए और उस घटना के पीछे की असल कहानी को

बाहर लाने की कोशिश रही है

Neon Reel Creation is a Pune-based production company. Since its beginning in 2017, it has focused on producing films based on real incidents, and putting out the real story of true events.

प्रशस्ति - मासूम लोगों की हत्या पर एक वृत्तचित्र जो एक थ्रिलर की तरह दिखाया गया है. जिसमें दृश्यों और साक्षात्कारों के जरिए हत्या की गुत्थी की जांच को दिखाया गया है.

Citation - For presenting a documentary like a thriller – a replay of an investigation of a murder mystery through interviews and interplay of visuals associated with killing of innocent people.



राधा
सर्वश्रेष्ठ एनिमेशन फ़िल्म
Radha
Best Animation Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2020 | Musical | 20 mins | Director and Editor: Bimal Poddar | Producer: Fairy Cows | Animator: Nitin Kharkar

कथासार - कोलकाता में राधा नाम की अर्धेड़ उम्र की महिला रहती थी। वह एक किशोर लड़के की गुरु, दोस्त और आदर्श थी और उससे बेहद प्यार करती थी। वहीं लड़का हमेशा उसके चेहरे पर हंसी ले आता था। अपनी मासूमियत से वह हमेशा राधा को हंसाता। राधा, इस लड़के की प्रेरणा बन चुकी था जो उसे अपने सपने हासिल करने और चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करती। लेकिन वक्त के साथ ये दोनों बिछड़ गए और अब राधा, वृंदावन में लड़के की बात जोह रही है। फिल्म उनको समर्पित है जो हमारे लौटने का इंतजार कर रहे हैं। यह फिल्म बताती है कि राधा और वह लड़का अलग नहीं, बल्कि एक ही हैं क्योंकि जो एक दूसरे से प्यार करते हैं, वह एक दूसरे की आत्मा में रहते हैं।

Synopsis - Radha is an elderly lady in Kolkata. She is a mentor, friend and idol to a young boy she loves and nurtured. The young boy, on the other hand, brings a smile to her face and makes her laugh. With his innocence and playful nature, he amuses the woman. She is his inspiration to strive for his dreams and face the challenges in life. But destiny separates them over time, and now Radha waits for him, after he left her in Vrindavan. The film is an ode to the ones who wait for us back at home. It conveys that Radha and the boy are not different but one, because people who love each other unconditionally exist in each other's spirit.

परिचय

बिमल पोद्दार (Bimal Poddar)



बिमल पोद्दार स्वतंत्र फिल्मकार, विजुअलाइजर हैं और इनका अपना एनिमेशन स्टूडियो है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन से स्नातक पोद्दार की पहली एनिमेटेड लघु फिल्म – होम डिलेवरी – थी। राधा –

इनकी दूसरी लघु फिल्म है जिसके निर्देशन के साथ ही इन्होंने इसका निर्माण, संपादन और फिल्मांकन भी किया है।

Bimal Poddar is an independent filmmaker, visualiser and owner of an animation studio. A graduate of National Institute of Design (NID), his first animated short film was 'Home Delivery'. He has directed, produced, edited and shot his second short film 'Radha'.

PROFILE

संगीता चौधरी पोद्दार (Sangeeta Coudhury Poddar)



संगीता चौधरी पोद्दार, 2011 से फेयरी काउज एनिमेशन स्टूडियो की निर्माता हैं। राधा इनकी दूसरी स्वतंत्र फिल्म है। इन्होंने हॉन्डा, कैडबरी जैसे ब्रांड के लिए विज्ञापन बनाए हैं।

Sangeeta Coudhury Poddar has been a producer with Fairy Cows Animation Studio from 2011. 'Radha' is her 2nd independent venture. She has also made commercials for brands like Honda, Cadbury, etc.

प्रशस्ति – एक दूसरे के अवचेतन में बसे एक लड़के और बूढ़ी महिला के बीच के काव्यमय रिश्ते की अनूठी अवधारणा का एनिमेशन के जरिए नायाब चित्रण

Citation - Superbly crafted animation film for its interesting concept and execution in terms of poetic relationship between an old woman and a boy who exist in each other sub-conscious.



कस्टडी
सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फ़िल्म

Custody
Best Short Fiction Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Hindi/English | 23 mins | Director and Producer: Ambiecka Pandit | Cast: Geetika Vidya, Swaroopa Ghosh, Sanghmitra Hitaishi, Trimala Adhikari, Tanaji Dasgupta, Kashyap Shangari, Karan Pandit | Editor: Atanu Mukherjee | DOP: Satya Rai Nagpaul

कथासार - 'कस्टडी' यह फिल्म मुंबई में नए साल की पूर्व संध्या पर रची गई कहानी है जिसमें 32 साल के अकरम अपनी पत्नी इरा के साथ बिगड़ते रिश्तों का सामना कर रहे थे. अकरम एक हत्या के मामले का चश्मदीद गवाह है. तीन साल के बेटे की सुरक्षा के डर से इरा, अकरम से कहती है कि वह मुकर जाए. लेकिन अकरम को लगता है कि इरा वीर की कस्टडी हासिल करने के लिए ऐसा कर रही है. एक शाम अकरम और उसका दोस्त मुखो गप्पे लड़ा रहे थे जब घर में आग लग जाती है और मुखो के छोटे बेटे चिराग के लिए सांस लेना दूभर हो जाता है. सवाल उठने लगता है कि ये किसकी वजह से हुआ. अकरम ऐसे सवाल से घिर जाता है जो हमेशा के लिए उसके जीवन को बदल देता है.

Synopsis - 'Custody' unravels over the course of a New Year's Eve in Mumbai, India. Akram, 32, is going through a bitter separation from his wife, Ira. Akram is a key witness in a murder case. Fearing for their three-year-old son's safety, Ira persuades him to turn hostile. But Akram thinks Ira is making this up to win Veer's custody. One evening, Akram and his friend Mukho were having a fun time when a fire at home leaves Mukho's toddler son Chirag gasping for breath. The evening quickly spirals into a nerve wracking whodunit. Akram is left grappling with a question that will alter the course of his life forever.

परिचय PROFILE



अंबिका पंडित (Ambiecka Pandit)

अंबिका पंडित वकील से फिल्मकार बनी जो असीम आहलुवालिया, शिमित अमीन, सुरेश त्रिवेनी, विवेक कक्कड़, प्रसून पांडे, भावना तलवार और अयप्पा जैसे निर्देशकों की सहायक रही. कस्टडी इनकी पहली फिल्म है.

Ambiecka Pandit is a lawyer-turned-filmmaker, who has assisted filmmakers like Ashim Ahluwalia, Suresh Triveni, Shimit Amin, Vivek Kakkad, Prasoon Pandey, Bhavna Talwar and Ayappa amongst others. 'Custody' is her debut film.

प्रशस्ति - ऊपरी स्तर पर न दिखने वाले लेकिन अंदर से बहुत कुछ कहने वाले रिश्ते और टकराव की संवेदनशील कहानी

Citation - Film sensitively presents relationships and conflicts not often visible on the surface yet it smells of a smoke.



ओरु पाथिरा स्वपनम पोले
पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Oru Paathiraa Swapnam Pole
Best Film on Family Values

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Malayalam | 37 mins | Director: Sharan Venugopal | Producer: Satyajit Ray Film & Television Institute (SRFTI)
Screenplay : Sharan Venugopal | DOP: Koustabh Mukherjee | Editor: Jyoti Swaroop Panda

कथासार - सुधा एक व्यवसायी है, उसकी एक लड़की है जो कॉलेज में पढ़ती है. उसका जीवन में तब उथल पुथल मच जाती है जो डॉक्टर को लगता है कि उसके कैंसर हो सकता है. उसकी चिंताएं तब और बढ़ जाती है जब वो दुर्घटनावश अपनी बेटी के लैपटॉप में उसके नग्न वीडियो देख लेती है. क्या इससे उसके रिश्तों में हमेशा के लिए बदलाव आ जाएगा ?

Synopsis - Sudha, an entrepreneur and a mother of a college girl, finds her world turned upside down when a doctor suspects that she might have cancer. Her worries are aggravated further when one day, while going through her daughter's laptop, she accidentally finds a nude video of her daughter in it. Can this change the dynamic of their relationship forever?

परिचय

शरन वेणुगोपाल (Sharan Venugopal)



शरन वेणुगोपाल केरल के फिल्मकार हैं. वे कोलकाता के सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एसआरएफटीआई) के पूर्व छात्र हैं. इनकी लघु फिल्म जिसमें 'सोपानम' 'फॉर क्लाइंट' और 'ओरु पातिहारा स्वप्नम पोले' इनकी एसआरएफटीआई की डिप्लोमा फिल्म हैं जिन्हें 51वे इफ्फी गोवा में प्रदर्शित किया गया था.

Sharan Venugopal is a filmmaker based in Kerala, India. He is an alumnus of Satyajit Ray Film and Television Institute (SRFTI), Kolkata. His short films include 'Sopanam' and 'For Clint'. 'Oru Paathiraa Swapnam Pole' is his diploma film at SRFTI which premiered at 51st IFFI, Goa.

PROFILE

सत्यजीत रे (Satyajit Ray)



सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एसआरएफटीआई) भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की स्वायत्त संस्था है. ये 21वीं सदी के बेहतरीन संस्थान में से हैं

जो आधुनिक माध्यमों से सुसज्जित है.

Satyajit Ray Film & Television Institute (SRFTI) is an autonomous institute under the Ministry of Information and Broadcasting, Government of India. Located in Kolkata, it has emerged as a 21st century institution, fully equipped for the future of the medium.

प्रशस्ति - (पारिवारिक संस्कारों की सर्वश्रेष्ठ फिल्म)- मां-बेटी के रिश्ते की पेचीदगी को सुंदरता से दिखाती फिल्म

Citation - For beautifully crafting the underlying complexities of a mother-daughter relationship.



स्मॉल स्केल सोसायटीज पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Small Scale Societies
Special Jury Award

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

2019 | English | 31 mins | Director and Producer: Vipin Vijay | Cast: Irena Mihalkovich, Ian Mozdzen | Editor: Deb Kamal Ganguly | DOP: Rahul Balachandran



विपिन विजय (Vipin Vijay)

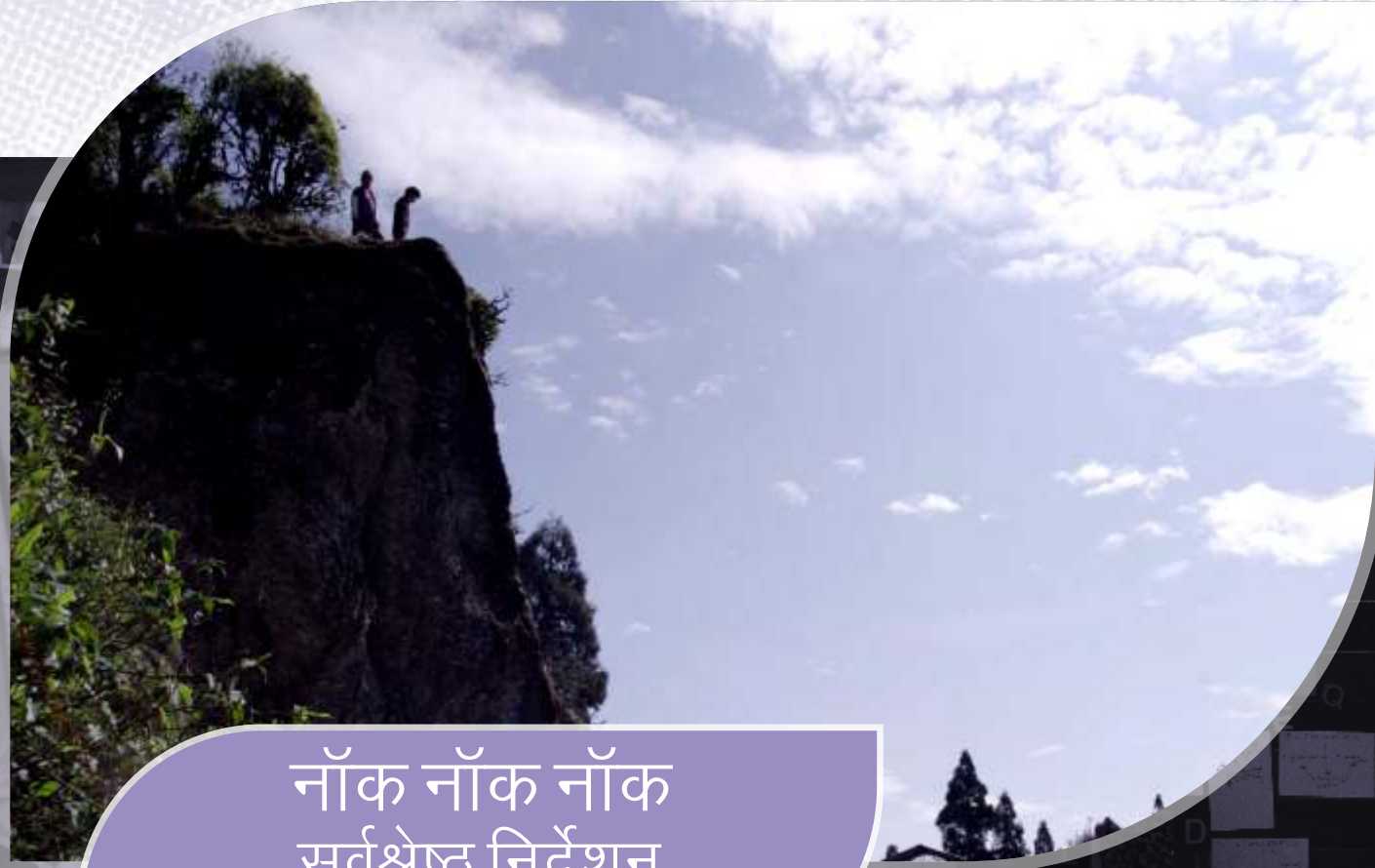
विपिन विजय, कई पुरस्कार जीत चुके स्क्रीन राइटर, वीडियो कलाकार, शिक्षक, निर्माता और फिल्मकार हैं। इनका काम किसी एक श्रेणी में न बंधकर फिल्म, वृत्तचित्र, निबंध और काल्पनिकता में फैला हुआ है। फिलहाल यह कोट्टायम के के आर नारायणन नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ विजुअल साइंस एंड आर्ट्स में फिल्म निर्देशन और स्क्रीन लेखन विभाग के प्रमुख हैं। 2003 में इन्हें ब्रिटिश फिल्म संस्थान, लंदन की ओर से शोध के लिए चार्ल्स वॉलेस आर्ट सम्मान दिया गया।

Vipin Vijay is a multiple award-winning screenwriter, video artist, academic, producer and filmmaker. His works defy any categorisation merging film, documentary, essay, and fiction all into one. He currently heads the film direction and screenwriting department at the K R Narayanan National Institute of Visual Science and Arts, Kottayam. In 2003, he received the Charles Wallace Arts Award for research at the British Film Institute (BFI), London.

प्रशस्ति – पुरातात्विक लेखों के जरिए जीवन चक्र, स्वप्न और वास्तविकता की दिखाते शानदार दृश्य रचने के लिए जो दर्शक को एक काल्पनिक दुनिया में ले जाते हैं।

Citation - For creating mesmerizing visuals representing the cycle of life, dream and reality through archeological articles that transport the viewers to a fantasy world.

Synopsis of the film on page no. 182



नाँक नाँक नाँक सर्वश्रेष्ठ निर्देशन

Knock Knock Knock
Best Direction

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,50,000/-

2020 | English/Bengali | 39 mins | Director and Producer: Sudhanshu Saria | Editor: Sudhanshu Saria | DOP: Achyutanand Dwivedi



सुधांशु सरिया (Sudhanshu Saria)

सुधांशु सरिया – फिल्म निर्माता, निर्देशक और लेखक हैं। इन्होंने फिल्म, फोटोग्राफी और विजुअल आर्ट में इथाका कॉलेज से बीएफए किया है। इन्होंने 2015 में LOEV के साथ फीचर फिल्म में लेखन और निर्देशन में कदम रखा है और फिलहाल यह अमेजन प्राइम और नेटफिलक्स के लिए सीरिज पर काम कर रहे हैं।

Sudhanshu Saria is a film producer, director and writer. He is a graduate from Ithaca College with a BFA in Film, Photography and Visual Arts. He made his feature film writing and directorial debut with 'LOEV' (2015), and is currently working on a series

each for Amazon Prime and Netflix.

प्रशस्ति – यह फिल्म एक बुजुर्ग व्यक्ति की जहनी रुकावट को बखूबी दिखाती है कि किस तरह एक शख्स खुद को शतरंज के खेल की तरह बेहद गूढ़ अंदाज में बचाता है।

Citation - The film brings out psychological barriers of an old man who protects himself like castling on a chess board in the most intricate manner.

Synopsis of the film on page no. 182



सोनसी सर्वश्रेष्ठ छायांकन

Sonsi
Best Cinematography

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Hindi | 26 mins | Director and Cameraman: Savita Singh | Producer: Sharib Khan, Vikas Kumar, Savita Singh | Editor: Hemanti Sarkar | DOP: Savita Singh



सविता सिंह (Savita Singh)

सविता सिंह को एफटीआईआई की अपनी डिप्लोमा फिल्म — क्रमशरू (2007) के लिए 2009 में सर्वश्रेष्ठ छायांकन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला. इन्होंने फूंक, 404 – एरर नॉट फाउंड, धूसर, हवाईजादा, वेंटिलेटर द सेवथ वॉक जैसी फिल्मों को फिल्माया है. सोनसी बतौर निर्देशक इनकी पहली फिल्म है. वह भारतीय महिला छायाकार संगठन की संस्थापक सदस्यों में से एक हैं.

Savita Singh won a National Film Award for Best Cinematography in 2009 for her FTII diploma film 'Kramasha' (2007). She has shot diverse feature films such as 'Phoonk', '404: Error Not Found', 'Dhoosar', 'Hawaizaada', 'Ventilator', 'The Seventh Walk', etc. 'Sonsi' is her directorial debut. She is one of the founding members of Indian Women Cinematographers Collective (IWCC).

प्रशस्ति – फिल्म के हर गीत कहानी में निखार ले आता है और कथानक को एक नई दिशा देता है।

Citation - For creating surrealistic images, mood and tanner of the time and space in an abstract manner.

Synopsis of the film on page no. 182



रहास सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन

Rahas
Best On-Location Sound

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2020 | Hindi | 37 mins | Director: Sunil Shukla | Producer: Rishi Kumar Vashist | On Location Sound Recordist: Saptarshi Sarkar
Editor: Rahul Vasant | DOP: Sanjeeb Das



सप्तर्षि सरकार (Saptarshi Sarkar)

सप्तर्षि सरकार मुंबई के एक सिंक रिकॉर्डिस्ट ध्साउंड एडिटर हैं। इन्होंने रबिन्द्र भारती विश्वविद्यालय से वोकल संगीत में स्नातोकोत्तर और कोलकाता के रूपकला केन्द्रों से साउंड डिजाइन में स्नातोकोत्तर डिप्लोमा हासिल किया है। वह अपनी पढ़ाई के वक्त से ही कई फिल्मों और वृत्तचित्रों के लिए साउंड विभाग में काम कर रहे हैं।

Saptarshi Sarkar is a Sync Sound Recordist/Sound Editor based in Mumbai. He is a post-graduate in vocal music from Rabindra Bharati University, and PG diploma holder in Sound Design from Roopkala Kendro, Kolkata. He has worked on several films and documentaries in the sound department since then.

प्रशस्ति – रास कलाकार और संगीतकारों की प्रस्तुति के दौरान ही उस जगह की तमाम ध्वनियों को ऐसे कलात्मक ढंग से कैद करना कि दर्शक मंत्रमुग्ध हो जाएं।

Citation - For creatively capturing the on-location sound of the performance by Raas actors, musicians and ambience that draws the audience into the spectacle.

Synopsis of the film on page no. 182



राधा
सर्वश्रेष्ठ संगीत आलेखन
Radha
Best Audiography

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2020 | Musical | 20 mins | Director and Editor: Bimal Poddar | Producer: Fairy Cows | Animator: Nitin Kharkar



एल्विन रेगो और संजय मौर्या (Alwin Rego and Sanjay Maurya)

मुंबई की साउंड डिजाइनर जोड़ी एल्विन रेगो और संजय मौर्या ने – देव डी, ब्लैक फ्रायडे, नो वन किल्ल जेसिका जैसी फिल्मों के लिए काम किया है और कहानी, मुंबई मेरी जान और मराठी फिल्म – वेंटिलेटर – के लिए पुरस्कार जीते हैं.

Mumbai-based sound designer duo **Alwin Rego** and **Sanjay Maurya** have worked in films like 'Dev D', 'Black Friday', 'No One Killed Jessica', and won awards for 'Kahani', 'Mumbai Meri Jaan' and the Marathi film 'Ventilator'.

प्रशस्ति – एनिमेटेड किरदारों में जान फूंककर फिल्म और परिस्थिति के मूड में इजाफा करने के लिए
Citation - For superbly enhancing the mood of the film and situations, giving life to animated characters.

Synopsis of the film on page no. 182



शट एप सोना सर्वश्रेष्ठ संपादन

Shut Up Sona
Best Editor

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi/English | 86 mins | Director and DOP: Deepti Gupta | Producer: Sona Mohapatra, Deepti Gupta, Ram Sampath | Editor: Arjun Gourisaria



अर्जुन गौरीसरिया (Arjun Gourisaria)

अर्जुन गौरीसरिया यह संपादक, निर्माता, फिल्मकार और एफटीआईआई पुणे से शिक्षा प्राप्त हैं. इन्हें गुलाबी गैंग के संपादन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला और अपने पहले निर्देशन – स्थानीय संवाद के लिए न्यूयॉर्क भारतीय फिल्म फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार मिला.

Arjun Gourisaria is an editor, producer and filmmaker and alumnus of FTII, Pune. He won the National Award for Editing for 'Gulabi Gang' and the Best Film Award at the New York Indian Film Festival for his maiden directorial venture, 'Sthaniya Sambaad'.

प्रशस्ति – आधुनिक भारत में बराबरी का दर्जा हासिल करने की एक भारतीय महिला के संघर्ष की कहानी जिसे सही रफ्तार और रोचक संपादन के जरिए बेहद साहसिक और बारीकी से दिखाया गया

Citation - Awarded for keeping the right pace and editing punches that elucidate the bold yet nuanced profile of an Indian woman and her struggles for seeking equal space in modern India.



क्रांति दर्शि गुरुजी – अहेड ऑफ टाइम्स
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन
Kranti Darshi Guruji-ahead of Times
Best Music Direction

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | Hindi | 40 mins | Director: Sudipto Sen | Producer: Hemant Sharma | Music Director: Bishakhjyoti | Editor: Himadri Bhattacharya | DOP: Prasantanu Mohapatra



बिशाख ज्योति (Bishakh Jyoti)

बिशाख ज्योति मुंबई के एक संगीत निर्देशक और गायक हैं. बतौर संगीतकार इनकी फिल्मों में 'बबलू हैप्पी हैं' 'मिसेज स्कूटर' 'कौन कितने पानी में' 'गोन केश' और 'लखनऊ टाइम्स' शामिल हैं. भारत और विदेश में अब तक ये करीब 500 से ज्यादा लाइव कंसर्ट कर चुके हैं. इनके संगीत निर्देशन और गायिकी में तैयार एल्बम 'नारी' को भी अच्छी पहचान मिली है.

Bishakh Jyoti is a Mumbai-based music director and singer. His films as a music director include 'Babloo Happy Hain', 'Mrs. Scooter', 'Kaun Kitne Pani Mein', 'Gone Kesh' and 'Lucknow Times'. He has done over 500 Live concerts in India and abroad and about 15 Digital Concerts during the COVID-19 pandemic in 2020. His music direction and playback singing in the album 'Naari' also deserves special mention.

प्रशस्ति – सामूहिक संगीत के रचनात्मक इस्तेमाल के जरिए दर्शक के अनुभव और दृश्य आलेख में इजाफा करने के लिए
Citation - For enhancing the visual graph and viewer's experience by creatively using ensemble music.

Synopsis of the film on page no. 183



वाइल्ड कर्नाटक
सर्वश्रेष्ठ प्रकथन / वॉइस ओवर
Wild Karnataka
Best Narration/Voice Over

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

2019 | English | 53 mins | Director: Amoghavarsha JS, Kalyan Varma, Sarath Champati & Vijaya Mohan Raj | Producer: Amoghavarsha JS | DOP: Amoghavarsha JS and Kalyan Varma | Voice Over: Sir David Attenborough



सर डेविड फ्रेडरिक एटेनबोरो (Sir David Frederick Attenborough)

सर डेविड एटेनबोरो बीबीसी के पूर्व प्रसारक और प्राकृतिक इतिहासविद हैं। इन्हें 2018–19 में भी बेहतरीन सूत्रधार के लिए प्राइमटाइम एममी अवार्ड प्राप्त हो चुका है। ये एकमात्र शख्स हैं जिन्हें श्वेत-श्याम, रंगीन, एचडी, 3डी और 4के कार्यक्रम के लिए बाफ्टा अवार्ड मिल चुका है। वे निर्माता, निर्देशक और कलाकार रिचर्ड एटेनबोरो के छोटे भाई हैं।

Sir David Frederick Attenborough is former broadcaster of BBC and natural historian. He won Primetime Emmy Awards for Outstanding Narrator in 2018 and 2019. He wrote and presented, in conjunction with the BBC Natural History Unit, the nine natural history documentary series which together constitute a comprehensive survey of animal and plant life on Earth. He is the only person to have won BAFTAs for programmes in each of black and white, colour, HD, 3D and 4K. He is the younger brother of the late director, producer and actor Richard Attenborough.

प्रशस्ति – अपने दिलचस्प वर्णन के जरिए जंगल के आवासों में जान फूंकने और कहानी में दर्शकों को साथ लेकर चलने के लिए सम्मान

Citation - For taking the viewers along with the visual narrative, bringing to life the habitats of wild forests with its absorbing narration.

Synopsis of the film on page no. 183

कथासार | Synopsis

स्मॉल स्केल सोसायटीज (Small Scale Societies)

यह फिल्म 'पुरातात्विक कल्पना' की अवधारणा पर आधारित है जो ऐतिहासिक समय रेखा के भाव को लेते हुए संग्रहालय के संगठित और चिन्हित स्थान के जरिये, कई यादों को ताजा करती है, और भारत के उन प्रागैतिहासिक स्थानों पर ले जाती है जहां कम ही लोग जाते हैं. फिल्म में टोबा ज्वालामुखी की राख में दबी हमारे पूर्वजों की तबाही और उससे निकलने की कहानी बयान होती है, तो साथ ही चट्टानों पर उकेरी तस्वीरों, महापाषाण साइट, उत्खनन साइट, निओलिथिक को दफन किये जाने वाली जमीन के जरिए, जिंदगी, मौत, खाब, हकीकत के पन्ने खुलते हैं. इस तरह से संग्रहालय के स्थान में दो निकायों को जीवित करने की कोशिश की गई है. जिससे पुरातात्विक कलाकृति, टेराकोटा के बर्तनों के पुरावशेष जो यहां वहां बिखरे पड़े हैं और जिस इतिहास और परंपराओं को हम भूलते जा रहे हैं, इन पुरावशेषों के जरिये उन्हें फिर से हम समझ जा सकें.

The film is based on the concept of 'archaeological imagination' from the organised and tagged space of museum with the sense of linear historical time, to various evocative, yet less visited pre-historic sites in India – from the site of survival of human ancestors confronting the catastrophe of Toba volcanic ash, the Paleolithic past, painted rock shelters, megalithic sites, excavation sites and neolithic burial grounds, creating an interplay of life, death, dream, reality. So, two living bodies have been installed and improvised within a museum space, scattered with archaeological artifacts, terracotta pots and shreds, where acts of sacrifice and resurrection are being performed like a re-enactment of a lost and forgotten ritual.

नॉक नॉक नॉक (Knock Knock Knock)

22 साल की दिनचर्या के बाद दादा दार्जिलिंग के कैफे में क्रॉसवर्ड सुलझा रहे थे. वहां उनकी मुलाकात एक नेपाली लड़के से होती है जो कि टैटू डिजाइनर है और दादा से दोस्ती करना चाहता है. स्वभाव से थोड़े से सनकी दोनों ही एक दूसरे की आदत, रहन सहन में सुकून तलाशते हैं. लेकिन जैसे ही दादा अपनी हिचक हटाते, तभी लड़के की कोई बात उन्हें तंग करने लगती है. कौन है ये लड़का – उनका दोस्त या दुश्मन. दादा को तय करना है कि उन्हें उस लड़के को जिंदगी में शामिल करना है या नहीं.

After 22 years of this routine, Dada is working on his perfect crossword in a café in Darjeeling. Dada meets his match in a young Nepali man, a tattoo designer from Kolkata who tries to befriend him. Obsessive-compulsive by nature, they bond over discovering each other's rituals and patterns, finding solace in each other. However, just as Dada is about to drop his guard, something about the boy starts to bother him. Who is this boy – a friend or foe? Dada has to decide if he should allow him in or not.

सोनसी (Sonsi)

हर सुबह अपनी ही धुन में रहने वाली नदी, अपने सपनों में टंकी सोनसी – यानी छाया पंछी के पीछे भागती है. इन्हीं सब के बीच है एक वक्त का हिसाब रखने वाला अनोखा शख्स जो छाया पंछी पर नजर रखता है. ऐसा लगता है मानो उनके अंदर ही घड़ी लगी है. उसके आने पर ही यह सोया हुआ गांव जागता है. लेकिन एक दिन न यह वक्त का रखवाला आता है और न ही छाया पंछी. नदी उसकी तलाश में घने जंगलों में निकल पड़ती है.

Somewhere between conscious and unconscious, fables and myths, Nadi, like every morning, is wandering through the trappings of her mind to meet her dream etched Shadow Bird. In this existence outside of her present environment, the mysterious time-keeper would emerge after the Shadow Bird without fail. He was time personified with a clock fit inside his heart. Everyday upon his arrival, the sleepy village would wake up. One day the time-keeper did not come, neither did her Shadow Bird. Nadi ventures out alone into the deep mysterious woods in search of her Shadow Bird.

रहास (Rahas)

रहास यानी रास लीला. ये फिल्म छत्तीसगढ़ के एक गांव में रहास के मंचीय अनुभव को साझा करती है. फिल्म कृष्ण और राधा के बीच अलौकिक प्यार की लौ को फिर से जगा देती है और हमें कृष्ण की लीलाओं के लोक में ले जाती है. रास लीला भारतीय मनोविज्ञान को स्पर्श करती हैं. देश भर में होने वाली रास लीला छत्तीसगढ़ में भी उसी कला और तरीके के साथ प्रस्तुत की जाती है. ये वहां के जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है और इस पर स्थानीय असर नजर आता है. रास आज से 100 साल पहले रहास में तब्दील हो गई जब यहां के मंत्री रतनपुर बाबू रेवारा ने हस्तलिखित – गुटखा – दिया जो रहास का आधार बना.

Rahas means Raas Leela. The film captures the experience of staging Rahas in a village in Chhattisgarh. It about a rekindling of pristine love between Krishna and Radha, and remembering the leelas of young Krishna. Raas Leela touched the Indian psyche and there on, they were performed all over the country. Chhattisgarh imported Raas Leela in the same fashion and adopted this art. It became a part of life with local influences. Raas turned to Rahas when about 100 years ago the minister of the state of Ratanpur Babu Rewaram gave it a form of handwritten text known as Gutka which became the basis of the Rahas.

राधा (Radha)

कोलकाता में राधा नाम की अंधेड़ उम्र की महिला रहती थी. वह एक किशोर लड़के की गुरु, दोस्त और आदर्श थी और उससे बेहद प्यार करती थी. वहीं लड़का हमेशा उसके चेहरे पर हंसी ले आता था. अपनी मासूमियत से वह हमेशा राधा को हंसाता. राधा, इस लड़के की प्रेरणा बन चुकी था जो उसे अपने सपने हासिल करने और चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करती. लेकिन वक्त के साथ ये दोनों बिछड़ गए और अब राधा, वृंदावन में लड़के की बात जोह रही है. फिल्म उनको समर्पित है जो हमारे लौटने का इंतजार कर रहे हैं. यह फिल्म बताती है कि राधा और वह लड़का अलग नहीं, बल्कि एक ही हैं क्योंकि जो एक दूसरे से प्यार करते हैं, वह एक दूसरे की आत्मा में रहते हैं.

कथासार | Synopsis

Radha is an elderly lady in Kolkata. She is a mentor, friend and idol to a young boy she loves and nurtured. The young boy, on the other hand, brings a smile to her face and makes her laugh. With his innocence and playful nature, he amuses the woman. She is his inspiration to strive for his dreams and face the challenges in life. But destiny separates them over time, and now Radha waits for him, after he left her in Vrindavan. The film is an ode to the ones who wait for us back at home. It conveys that Radha and the boy are not different but one, because people who love each other unconditionally exist in each other's spirit.

शट अप सोना (Shut Up Sona)

शट अप सोना – कहानी है गायक, कलाकार और मुसीबतों को गले लगाने वाली सोना मोहापात्रा की। यह फिल्म हर दिन सवालों का सामना करने वाली सोना के सफर के जरिए आधुनिक भारतीय महिलाओं की मुश्किलों को दिखाती है। वहीं यह भी कि किस तरह सोना, भारत में व्याप्त लिंग भेद और स्त्री द्वेष का समर्थन करने वाली सोच का सामना करती है। व्यंग्य, हास्य, थोड़े उन्माद को समेटे यह फिल्म संगीत, कला, सामाजिक बदलाव और नए और पुराने के बीच के टकराव को दिखाती है।

'Shut up Sona' is an intimate journey with Sona Mohapatra, a singer, performer, and 'troublemaker by choice'! The film captures today's India at odds with the modern Indian woman, by featuring the singer who is used to being questioned every single day. She dissents, only to do what she loves – to sing her songs and speak her mind. In her own way, Sona challenges the mindsets and practices which still support misogyny and gender bias in the country. Laced with sarcasm, wit, and a bite of craziness, the film is about music, art, social change, and the conflict between the ancient and the modern.

क्रांति दर्शि गुरुजी – अहेड ऑफ टाइम्स (Kranti Darshi Guruji-ahead of Times)

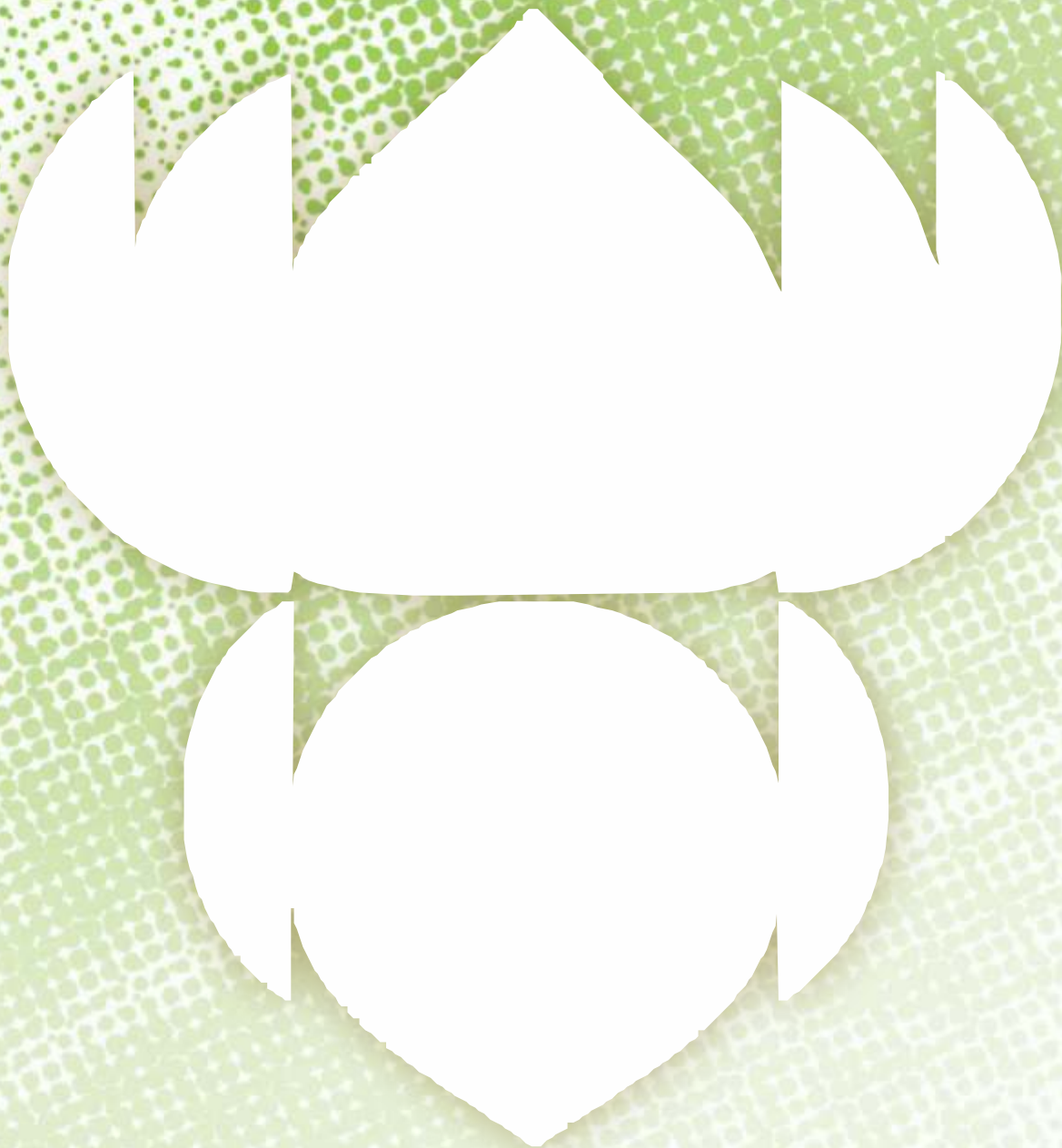
ये फिल्म एक ऐसे गुमनाम कलाकार, दार्शनिक, समाजशास्त्री और भविष्यवादी रविन्द्र शर्मा की कहानी है उनको मानने वाले उन्हें गुरुजी बुलाते हैं। वह तेलंगाना के एक अंजान गांव आदिलाबाद से आते हैं जिसकी कुल आबादी करीब 2 लाख है। इस जगह को ढूँढने का श्रेय भी रविन्द्र शर्मा को जाता है। उन्हें एक अनोखे विचारक, बेहतरीन कलाकार और जमीन से जुड़े इंसान के तौर पर जाना जाता है। उन्हें हैदराबाद और आंध्रप्रदेश के बाहर बहुत कम लोग जानते थे लेकिन जो भी जानते हैं वो उन्हें एक बेहतर इंसान के तौर पर ही जानते हैं। ऐसे सच्चे प्रतिभावान भारतीय जिसकी जड़े हमारी परंपराओं और मिट्टी से जुड़ी हुई हैं। ये अनोखी संगीतमय फिल्म दर्शकों के मन में एक नए भारतवर्ष को पूरी तरह से स्थापित करती है।

This film features a lesser known Indian artist, philosopher, sociologist and futuristic man Ravindra Sharma, fondly call 'Guruji' by his followers in an obscure town in Telangana. Adilabad, which has a population of 2,00,000, found a place on the global map thanks to Ravindra Sharma. He is known to the people as to an extraordinary thinker, a brilliant artist, an unusual son of the soil. Very few people knew him outside of Hyderabad and Andhra Pradesh, but whoever knows him is arguably the propitious ones. Such is the fate of true Indian genius, rooted in our soil and traditions. This unique musical film will inculcate completely a new Bharatvarsh in the mindscape of the viewers.

वाइल्ड कर्नाटक (Wild Karnataka)

सर डैविड एटनबोरो की करिश्माई आवाज और ग्रेमी अवार्ड विजेता रिकी केज का मौलिक संगीत दोनों मिलकर जब भारत के जंगलों और वन्य जीवन की शानदार विविधता का प्रदर्शन करते हैं तो बनती है 'वाइल्ड कर्नाटक'। 4 के विजुअल के जरिए फिल्म कर्नाटक के विभिन्न भू भागों की यात्रा करती है और रेगिस्तान से पहाड़ों तक, जंगलों से समुद्र में होती हुई वन्य जीवों की जिंदगी और मौसम के साथ उनमें बदलावों में झांकती है। फिल्म में ऊदबिलाव का पीछा करता बाघ, शिकार करता भारतीय तेंदुआ और नाचते हुए मेंढक, हाथियों और बाघों के ड्रोन फुटेज— ये सभी मिलकर देश के प्राकृतिक इतिहास का एक बेहतरीन नमूना पेश करते हैं।

Paired with Sir David Attenborough's iconic narration and Grammy Award-winner Ricky Kej's original music, 'Wild Karnataka' is a showcase of the tremendous diversity of India's forests and wildlife. A treat to the senses with its 4K visuals, it travels through diverse terrains in Karnataka – from mountains to deserts, jungles to oceans following the lives of wild animals as their fortunes change across the seasons. From otters chasing tigers to an Indian leopard hunt and dancing frogs to drone footage of elephants and tigers – the film provides an exceptional insight into the country's natural history.



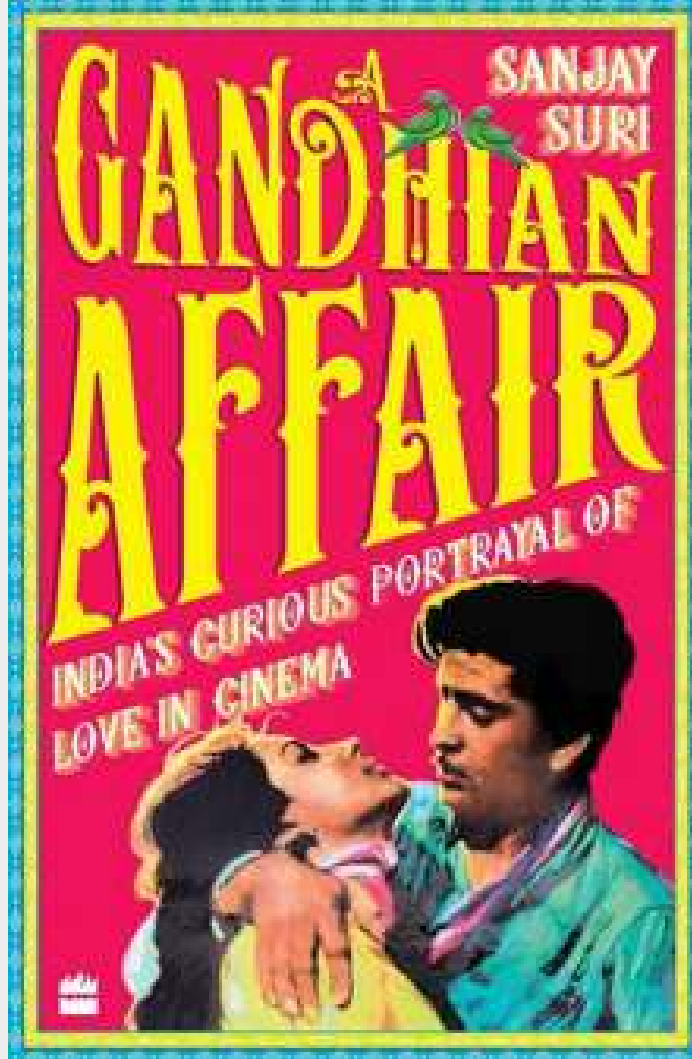
सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन
BEST WRITING ON CINEMA



राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2019
NATIONAL FILM AWARDS 2019

पुस्तकों, लेखों एवं समीक्षा के माध्यम से सिनेमा का एक कला के रूप में मूल्यांकन करने के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

The awards aim at encouraging study and appreciation of cinema as an art form and dissemination of information and critical appreciation of this art form through publication of books, articles, reviews, etc.



‘ए गांधियन अफेयर :
इंडियाज क्यूरियस पोर्ट्रेयल ऑफ लव इन सिनेमा’
सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक

‘A Gandhian Affair:
India's Curious Portrayal of Love in Cinema’
Best Book On Cinema

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 75,000/-

पुस्तक परिचय - आजादी के बाद से, हिंदी सिनेमा लगभग पूरी तरह से सेक्स और पैसे के मुद्दों के इर्द-गिर्द ही विकसित हुआ। उस वक्त की रूढ़िवादी सोच के हिसाब से देखा जाए तो ये अजीब लग सकता है। इस पुस्तक में, लेखक का तर्क है कि हिंदी सिनेमा कहीं ना कहीं राष्ट्रपिता की सोच से उभरी एक संतान की तरह है। जिसे हम गांधी के ब्रह्मचर्य और तपस्या के उत्पाद की तरह समझ सकते हैं। गांधी जी ने भौतिकवाद से जिस तरह दूरी बनाई थी उसके बारे में फिल्म में ना सिर्फ लिखा गया बल्कि उसे शॉट दर शॉट फिल्माया भी गया। पुस्तक कई उदाहरणों पर आधारित है – ‘मदर इंडिया’ से लेकर ‘दो बीघा जमीन’ तकय ‘श्री 420’ से ‘प्यासा’य ‘साहिब, बीबी और गुलाम’ से ‘गाइड’य और ‘दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे’ से ‘लगे रहो मुन्नाभाई’ तक किस तरह सिनेमा नैतिकता के बाड़े के अंदर बनाया गया, जिसमें बाड़े की सीमाएं उन बातों से तैयार की गई थी जो समझाती है कि धन और कामुकता में क्या सही है और क्या गलत है, ए गांधियन अफेयर सिनेमा के जरिये भारत के इतिहास की झलक देता है।

About the Book - Since Independence, Hindi cinema has revolved almost entirely around issues of sex and money. This may seem odd given the conservative taste of the times. In the book, the author argues that Hindi cinema was an unlikely offspring of the Father of the Nation – the product of Gandhi’s celibacy and austerity. His heroic retreat from wealth and sexuality was written into the cinema and then elaborately filmed shot-by-shot. The book draws on numerous examples - from ‘Mother India’ to ‘Do Bigha Zameen’; ‘Shree 420’ to ‘Pyasa’; ‘Sahib, Bibi aur Ghulam’ to ‘Guide’; and ‘Dilwale Dulhania Le Jayenge’ to ‘Lage Raho Munnabhai’ – to show how cinema was made within well-defined moral fences that were built with dos and don’ts about sex and money. ‘A Gandhian Affair’ is a history of India through the preoccupations of its cinema.

लेखक परिचय

मंसोरे (Sanjay Suri)



संजय सूरी 1990 से लंदन में रह रहे एक पत्रकार हैं। इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अध्ययन किया। इनकी पुस्तकों में ब्राइडलेस इन वेम्बले (2006), नेकेड रेन एंड अदर पोयम्स (2013), और 1984– द एंटी सिख वायलेंस एंड आफ्टर (2015) शामिल हैं।

Sanjay Suri has been a London-based journalist since 1990. He studied at Delhi University and London School of Economics. His other books include ‘Brideless in Wembley’ (2006), ‘Naked Rain and Other Poems’ (2013) and ‘1984: The Anti-Sikh Violence and After’ (2015).

About the Author

हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया (Harper Collins Publishers)



हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया, हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स की एक सहायक संस्था है। इन्होंने भारत ही नहीं दुनिया के कुछ बेहतरीन लेखकों को प्रकाशित किया है। ये हर साल करीब 200 से

ज्यादा नई किताबें प्रकाशित करते हैं। इनके लेखक सभी बड़े साहित्यिक सम्मान में जीत हासिल कर चुके हैं। ये खुद तीन बार पब्लिशर ऑफ द इयर का सम्मान हासिल कर चुके हैं।

Harper Collins Publishers India, a subsidiary of HarperCollins Publishers, publishes some of the finest writers from the Indian Subcontinent and around the world. It publishes about 200 new books every year, with a print and digital catalogue of more than 2,000 titles across 10 imprints. Its authors have won almost every major literary award. It has been awarded the Publisher of the Year Award three times: in 2015, 2016 and 2018.

प्रशस्ति – अप्रत्याशित, मौलिक और तीखी नजर से हिंदी सिनेमा के रोमांस को देखती कृति

Citation - For the sharp, unpredictable and original lens through which it looks at romance in Hindi cinema.



अशोक राणे विशेष उल्लेख

Ashok Rane
Special Mention

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE



अशोक राणे, जाने-माने फिल्म आलोचक, फिल्म शिक्षक, शोधकर्ता, लेखक, स्क्रिप्ट लेखक और फिल्मकार हैं। वह भारतीय फिल्म अकादमी के निदेशक भी हैं। उन्हें दो राष्ट्रीय सम्मान दिए जा चुके हैं – 1996 में उनकी किताब सिनेमाची चितरकथा के लिए और दूसरा 2002 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म आलोचक के लिए। वह 70 के दशक से फिल्म पत्रकारिता कर रहे हैं और भारत के साथ ही विश्व सिनेमा पर भी विस्तार से लिखते आ रहे हैं। वह कई अंतरराष्ट्रीय फिल्मोत्सव का हिस्सा रह चुके हैं और बुसान, टोरंटो, रोट्टरडैम, मोन्ट्रियल और मॉस्को में हुए FIPRESCI के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में निर्णायक मंडल के सदस्य रह चुके हैं। वहीं भारत में वह महाराष्ट्र राज्य सम्मान, स्क्रीन अवॉर्ड, भारतीय पैनारोमा और राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के निर्णायक मंडल के सदस्य रह चुके हैं। इन्होंने टीवी सीरियल और फिल्मों के लिए स्क्रिप्ट भी लिखी है। उनके हिस्से में सात किताब, पांच वृत्तचित्र और बतौर लेखक-निर्देशक दो फीचर फिल्म हैं।

Ashok Rane is a noted film critic, film academician, researcher, writer, scriptwriter and filmmaker. He is also the director of the Indian Film Academy (IFA). He is the recipient of two National Awards – First, for his book 'Cinemachi Chittarkatha' in 1996 and second, as the Best Film Critic in 2002. He has been in film journalism since the early 1970s and has been writing extensively on Indian and world cinema. He has been attending various international film festivals and has also served as a member of the jury at the international film festivals of Fipresci in Moscow, Montreal, Rotterdam, Toronto and Busan and so on. At home, he has been a jury member for Maharashtra State Award, Screen Award, Indian Panorama, National Film Awards, etc. He has written scripts for TV serials as well as films. He has to his credit seven books, five documentaries and two feature films as writer-director.

प्रशस्ति –सिनेमा के प्रति अपने आजीवन प्रेम और इस माध्यम के विभिन्न पहलुओं को बेहद दिलचस्प और पाठक को बांध के रखने वाले अंदाज में प्रस्तुत करने के लिए लेखक को विशेष रूप से सम्मानित किया जाता है।

Citation - The author is given a special mention for the manner in which he encapsulates a lifetime of passion for cinema and the medium's many dimensions and presents it in a highly engaging style.



कन्नड़ सिनेमा
जगथिका सिनेमा विकास प्रेरणे, प्रभावा
विशेष उल्लेख
Kannada Cinema:
Jagathika Cinema Vikasa-Prerane-Prabhava
Special Mention

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE



डॉ. पी.आर. रामदासा नायडू एक फिल्म निर्माता, निर्देशक, शोधकर्ता और लेखक हैं। इनका जन्म 1951 को कोलार जिले के रायालापुदु में एक स्वतंत्रता सेनानी परिवार में हुआ। 1973 से इनका फिल्मी सफर शुरू हुआ। वे अभी तक 11 फिल्मों का निर्देशन, निर्माण और लेखन कर चुके हैं। जिनमें से 9 फिल्मों को अलग अलग श्रेणियों के लिए राजकीय सम्मान मिल चुका है। इनकी चार फिल्म इपफी के इंडियन पेनोरमा वर्ग में लगातार चार साल तक चयनित हुई है। दुनियाभर के 35 अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में इनकी फिल्म का प्रदर्शन हो चुका है। इन्होंने विश्व सिनेमा अध्ययन के लिए एक केंद्र की स्थापना भी की है। बतौर शोधार्थी इनके विश्व सिनेम पर 5 वॉल्यूम की श्रंखला के 3 भाग प्रकाशित हो चुके हैं। कन्नड़ सिनेमा में 20 साल के अपने शोध कार्य के लिए इन्हें कन्नड़ विश्वविद्यालय, हंपी ने डी.लिट की उपाधि भी प्रदान की है।

Dr. P.R. Ramadasa Naidu is a film producer, director, researcher and author from Karnataka. Born in 1951, to a freedom fighter family in Rayalpadu, Kolar district, he entered the film industry in 1973. Since then, he has written, produced, and directed 11 films and recipient of nine state awards in various categories. He has established a film and television studios in Karnataka. His four films were selected to the IFFI's Indian Panorama section in consecutive years. My films have been selected at 35 international film festivals in various sections. He has also founded a Centre for World Cinema Studies. Being a researcher now, he has published three volumes out of his five-volume series on the world cinema. Kannada University, Hampi in Karnataka has conferred D.LIT on him for his 20 years' research work on Kannada cinema. He is a founder member of the film producers association in Karnataka and served as its joint secretary for six years. He has also been a jury member of several international and state film festivals including the jury for Indian films sent to the Oscar awards. He is an executive committee member of Bangalore International Film Festivals as well as of Suchitra Films Society.

प्रशस्ति – इस किताब ने जिस तरह से विभिन्न बिंदुओं को समेटते हुए वैश्विक और स्थानीय पहलुओं को बराबरी पर लाते हुए इनके बीच के दायरे को समेटने का उल्लेखनीय काम किया है वो सराहनीय है।

Citation - The author gets a special mention for the enormous range the book covers and the way it juxtaposes the global and local and implies the revolutionary interactions between the two.



सोहिनी चट्टोपाध्याय
सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक
Sohini Chattopadhyay
Best Film Critic

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 75,000/-

सोहिनी चट्टोपाध्याय, एक स्वतंत्र पत्रकार और लेखिका है जो फिल्म, स्वास्थ्य और राजनीति पर लिखती रही है। इनका लेखन दुनिया भर के श्रेष्ठ प्रकाशन में प्रकाशित हुए हैं जिसमें न्यूयॉर्क टाइम्स, द गार्डियन, जुडॉयच जाइंटिंग, द हिंदू, मिनट शामिल हैं। इनका लेखन जर्मन और बंगाली में अनुवादित हो चुका है। वह कई फेलोशिप और सम्मानों से नवाजी जा चुकी हैं जिसमें 2019 में हांगकांग का मानवाधिकार प्रेस अवॉर्ड, 2017 में रिपोर्टिंग के लिए बाला कायलासम उल्लेख, 2015 में रिपोर्टिंग के लिए रामनाथ गोयंका अवॉर्ड और 2014 में मानवीय रिपोर्टिंग के लिए इंटरनेशनल रेड क्रॉस और प्रेस इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया अवॉर्ड शामिल है।

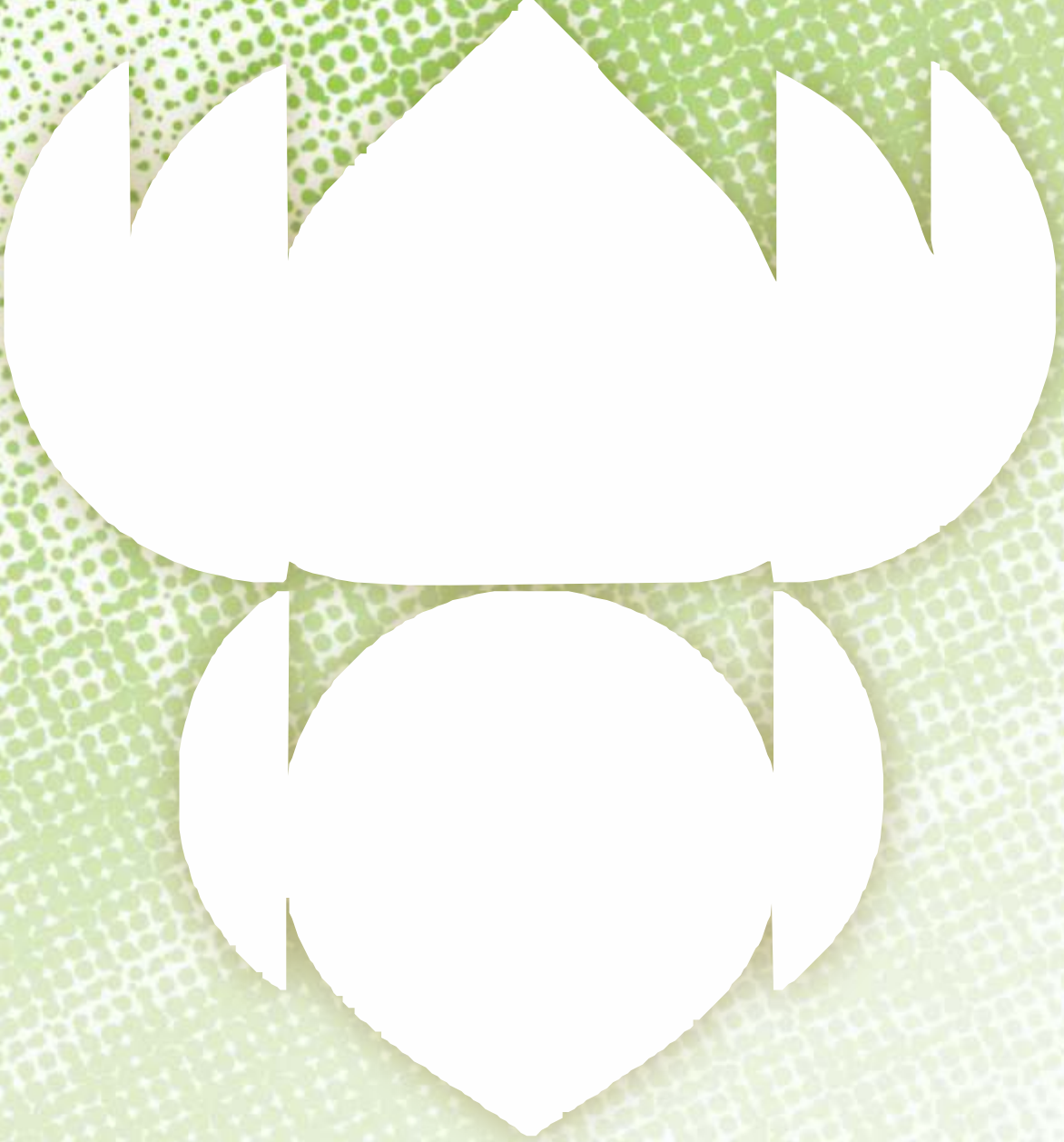
Sohini Chattopadhyay is an independent journalist and writer who writes on film, health and politics. Her writings have been published in the New York Times, The Guardian, Süddeutsche Zeitung, The Hindu, Mint, and other leading publications across the world. Her work has been translated into German and Bengali. She is the recipient of several fellowships and awards, including a merit at the Human Rights Press Awards at Hong Kong in 2019, the Bala Kailasam citation for reporting in 2017, the Ramnath Goenka Award for feature reporting in 2015, and the International Red Cross and the Press Institute of India Award for humanitarian reporting in 2014.

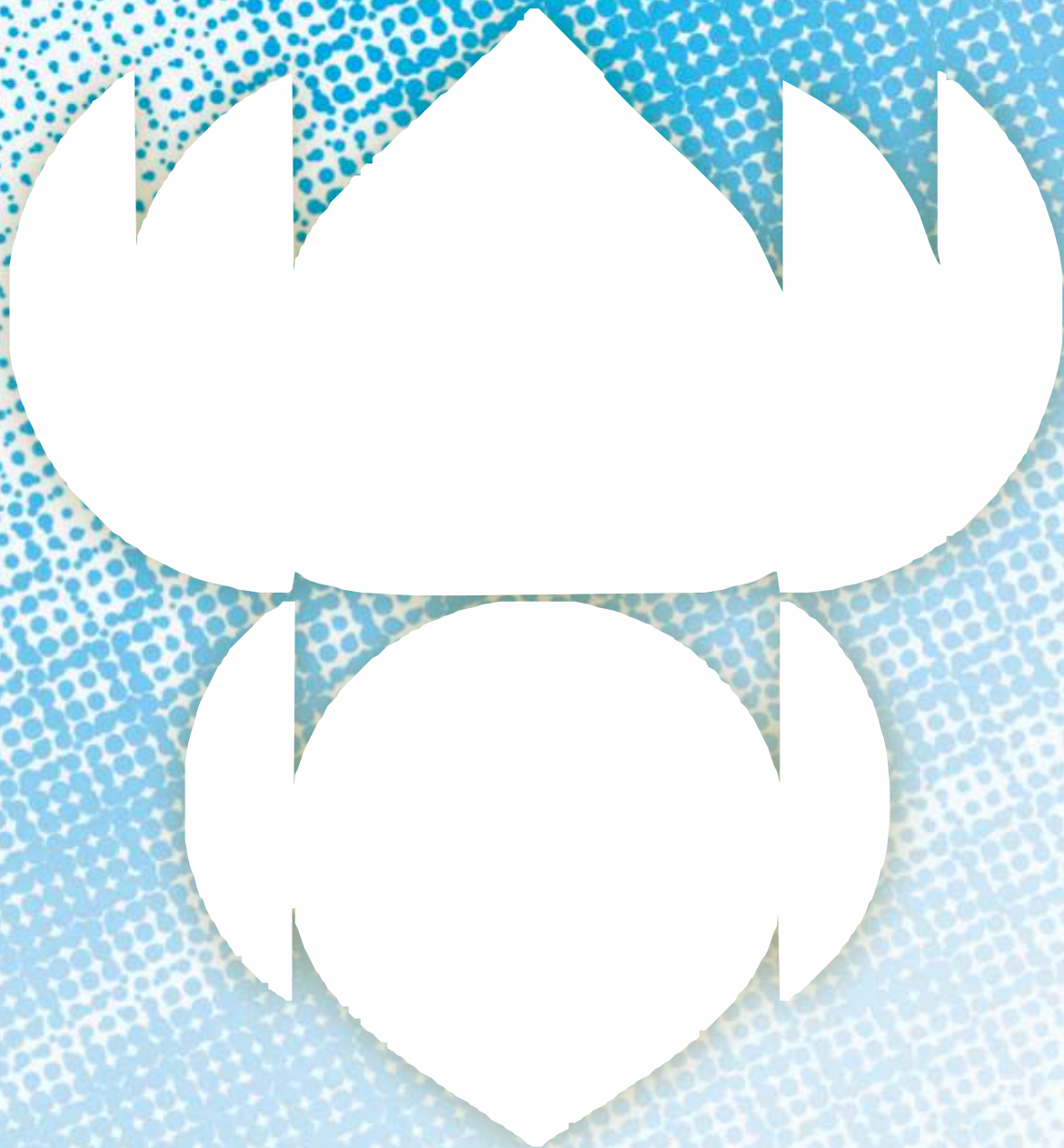
प्रशस्ति – सोहिनी चट्टोपाध्याय को भारतीय सिनेमा और समाज के बीच की कड़ी को बेहद पैनी और स्पष्ट तरीके से पड़ताल करने के लिए सर्वश्रेष्ठ फिल्म आलोचक का सम्मान दिया गया।

Citation - The award for the Best Critic is given to Sohini Chattopadhyay for the lucid and incisive manner in which she examines linkages between Indian cinema and society.

67^{वें}

आधिकारिक विवरणिका
THE OFFICIAL CATALOGUE





फ़िल्म अनुकूल प्रदेश पुरस्कार
FILM FRIENDLY STATE AWARD

67^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2019
NATIONAL FILM AWARDS 2019

राज्य सरकार द्वारा सिनेमा गतिविधियों और प्रमोशन के लिए समर्पित प्रयास, जो भारतीय सिनेमा के संवर्धन के लिए सकारात्मक माहौल बनाए, 'फ़िल्म अनुकूल राज्य' पुरस्कार के योग्य होगा।

A state government that makes dedicated effort in the direction of facilitating film shootings, and in creating a conducive environment towards promotion of Indian Cinema shall be eligible for the award for 'Most Film-Friendly State'.



सिक्किम (Sikkim)

सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म अनुकूल राज्य

Most Film-Friendly State

रजत कमल एवं प्रशस्ति पत्र Rajat Kamal & Certificate

प्रशस्ति (Citation)

सीमित संसाधन में भी राज्य को फ़िल्मिंग के लिए मुनासिब जगह के तौर पर विकसित करने के प्रयासों के लिए सिक्किम को यह सम्मान दिया जा रहा है. फिल्मकारों को फ़िल्मिंग के दौरान सहयोग प्रदान करना, मूलभूत ढांचे के विकास और स्थानीय हुनर को प्रोत्साहन देने जैसे प्रयास इस राज्य की पहल में शामिल थे.

The award is given to Sikkim for the efforts undertaken by it to develop the state into a filming hub despite its limited resources. Their initiatives included declaring incentives, offering support and cooperation for filmmakers for filming and developing infrastructure in the state as well as encouraging local skill/talent development.

Directorate of Film Festivals Team

Indrani Bose, Deputy Director, DFF

K. Prashant Kumar, Deputy Director, DFF

Gulshan Rai Juneja, Deputy Director, Accounts

Sushant Shrotriya, Official

Gautam Singh, Official

Ganesh Chand, Official

Neh Jyoti Verma, Official

Praveen Kumar Chawla, Official

Deepu Choudhary, Official

Roshan Vats, Official

Chandi Prasad, Official

Mahesh Chand, Official

Govind Ram, Official

Reshma Bakoliya, Official

Rajendra Kumar, Official

Deepak, Technical Assistant

Kailash Kumar, Official

Amit Kumar, Official

Projection and Technical Supervision, Siri Fort Auditorium and Film Division

S.K. Rohilla, Asstt. Engineer (Civil)

Mahipal Saini, Asstt. Engineer (Elect.)

Ashok Hitaishi, Film Division

ACKNOWLEDGEMENTS

फ़िल्म निर्माता / निर्माण समूह, विगत डीएसपीए विजेताओं की फ़िल्म से संबंधित सामग्री, फ़ोटोग्राफ उपलब्ध करवाने के लिए :
भारतीय राष्ट्रीय फ़िल्म अभिलेखागार, पुणे (भारत सरकार)

फ़िल्म प्रभाग राष्ट्रीय पुरस्कार और डीएसपीए पुरस्कार विजेताओं की दृश्य – श्रव्य प्रस्तुति के लिए

Film Producers/Production Houses for providing the film-related material Photographs of Past DSPA Winners:
National Film Archives of India, Pune (Government of India)

Films Division for DSPA and Doordarshan News for National Award Winners Audio Visual presentation





फ़िल्म समारोह निदेशालय

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
सिरी फोर्ट सभागार परिसर, अगस्त क्रांति मार्ग, नई दिल्ली-110049

DIRECTORATE OF FILM FESTIVALS

Ministry of Information and Broadcasting, Government of India
Siri Fort Auditorium Complex, August Kranti Marg, New Delhi – 110049.

www.dff.gov.in